पंजाब के लोक संगीत के अंतर्गत
गुरमीत बावा के गीतों का
सांगीतिक एवं सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन

लवली प्रोफेश्नल यूनीवर्सिटी की

स्कूल ऑफ बिजनेस एंड एप्लाइड आर्टस फैकल्टी

के अंतर्गत पी.एच.डी. 'परफार्मिंग आर्टस' की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध

शोधार्थी

रवजोत कौर 41300115

शोध-निर्देशिका

डा. सुष्मा शर्मा

सह- निर्देशक

डा. रोहित

फैकल्टी - स्कूल ऑफ बिज़्नेस एंड एप्लाइड आर्टस

लवली प्रोफेश्नल यूनीवर्सिटी

पंजाब

2018

लवली प्रोफेश्नल यूनीवर्सिटी

फगवाड़ा

घोषणा पत्र

मैं घोषणा करती हूँ कि यह शोध कार्य मेरी अपनी मौलिक शोध का परिणाम है। इस में जिन जिन विद्वानों के विचार अथवा संदर्भ दिए गए हैं, उनके स्त्रोतों के संबंध में संपूर्ण जानकारी दी गई है।

निर्देशिका
डा. सुष्मा शर्मा
सह-निर्देशक
डा. रोहित

शोधार्थी
रवजोत कौर

लवली प्रोफेश्नल यूनीवर्सिटी

फगवाड़ा

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि शोधार्थी रवजोत कौर ने अपना शोध प्रबंध 'पंजाब के लोक संगीत के अंतर्गत, गुरमीत बावा के गीतों का सांगीतिक एवं सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन', मेरे निर्देशन के अंतर्गत संपूर्ण किया है। यह शोधार्थी का मौलिक शोध प्रबंध है एवं उसके परिश्रम का परिणाम है। मैं प्रस्तुत शोध-प्रबंध को पी.एच.डी. की डिग्री के लिए योग्य मानती हूँ एवं मूल्यांकन के लिए प्रस्तुत करने के लिए संस्तुत करती हूँ।

डॉ. सुष्मा शर्मा
प्रो. संगीत विभाग
पोस्ट ग्रेजुएशन सरकारी कालेज, सैक्टर 49
चंडीगढ़

भूमिका

संगीत कला की उत्पत्ति के बारे में विचार करते हुए यह तथ्य स्पष्ट रूप में हमारे सामने आ जाता है के केवल भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में संगीत एवं अन्य ललित कलाओं का जन्म एवं विकास सबसे पहले पंजाब की पवित्र भूमि पर हुआ । यही वह भूमि है जिसने संगीत कला एवं अन्य ललित कलाओं का सृजन किया और यही पावन भूमि विश्व में समस्त कलाओं का स्रोत बनी।

संगीत-कला के दो पक्ष आदिकाल से ही प्रचार में आ गए थे जिन्हें देशी संगीत एवं मार्गी संगीत के नाम से जाना जाता था । यही दोनों पक्ष धीरे-धीरे क्रमशः 'लोक संगीत' एवं 'शास्त्रीय संगीत' के नाम से अस्तित्व में आए । 'शास्त्रीय संगीत' शास्त्रीकरण करने के बाद अस्तित्व में आया, जबकि 'लोक-संगीत' प्रारंभ से ही परम्परागत रूप में चलता आ रहा है। इसलिए यदि यह कह दिया जाए कि लोक संगीत ही शास्त्रीय संगीत की जननी है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी । दूसरी बात यह है कि प्राचीन ग्रन्थों में भी संगीत कला को लोक एवं शास्त्रीय पक्षों में बांटने के बारे में कोई भी चर्चा नहीं हुई। वास्तव में लोक संगीत एक ऐसा स्रोत है जिसने पेशावरों के संगीत को अनेकों राग एवं तालें दी हैं, भाषा को जीवित रखा है, उसको प्रफुल्लित किया है, एवं उसको प्रभावशाली शब्दों का भण्डार बनाया है। इसी लोक संगीत ने शास्त्रीय संगीत को लोकभाषी गीतों का एक विशाल भण्डार सौंपा है।

'लोक संगीत' को परिभाषित करते हुए यह कहा जाता सकता है नौ प्रकार के रसों से प्रभावित होकर मनुष्य जब स्वाभाविक रूप में गाकर, बजाकर, एवं नाचकर अपने मन के भावों को प्रकट करता है, उसको 'लोक-संगीत' का नाम दिया जाता है।

पंजाब विश्व की ऐसी भूमि है जिस पर सभ्यता, कला, भाषा एवं विद्या ने जन्म लिया और विकास की राह पकड़ी । कहा जाता है कि पंजाब वेदों की रचना भूमि है। संगीत के प्रारंभिक रूप को दर्शाते ग्रन्थ सामवेद की जन्म स्थली भी पंजाब है। सम्पूर्ण

राग एवं तालों की जननी भी यही भूमि है। पंजाब की लोक-धुनें आज सम्पूर्ण विश्व में सुनी जाती हैं । पंजाब के लोक-संगीत में और विशेष रूप से पंजाब के लोक-गीतों में यहाँ के लोक-जीवन की झलक सहज रूप में देखी जा सकती है। पंजाब के लोक-संगीत में बयान किए गए भावुक जज़्बे, अधूरी आकांक्षाएँ, दुःख-सुख के हाव-भाव एवं सांगीतिक धुनों में माधुर्य एवं रंजकता के गुण उभर कर सामने आते हैं । इनमें रूपमान होते हुए बिम्ब, प्रतीक कल्पना एवं प्रकृति-चित्रण, रस-अनुभूति का संचार इत्यादि इन्हें सुन्दरता एवं मान्यता प्रदान करते हैं।

लोक-संगीत एक ऐसी परम्परागत धरोहर है जिसकी रक्षा वही पवित्र आत्माएँ कर सकती हैं जिन्हें स्वयं ईश्वर ने सब्र एवं संतोष जैसे गुण प्रदान किए हैं। आज के युग में माँ धरती, पिता पानी एवं गुरु रूपी पवन की बेअदबी कर प्रदूषण ने मार गिराया है। यहाँ तक कि ज़िन्दगी का प्रत्येक पहलू ही इस प्रदूषण के कारण मलिन हो चुका है। इस समय में उन वारिसों को कोटि-कोटि प्रणाम करने को मन करता है जिन्होंने इस अमूल्य धरोहर को अपनी अनमोल गायकी द्वारा संभाल कर रखा है।

प्रस्तावित शोध-प्रबन्ध का विषय 'पंजाब के लोक संगीत के अर्न्तगत गुरमीत बावा के गीतों का सांगीतिक एवं सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन' लिया गया है। पंजाबी लोक-गायकी को प्रगति की ओर ले जाने, लोगों तक पहुँचाने एवं समय के साथ-साथ अग्रसर करने में लोक-गायकों एवं लोक-गायिकाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। जिस तरह हर क्षेत्र में स्त्रियाँ पुरुषों के साथ तो क्या, बल्कि उनसे भी आगे बढ़कर कार्य कर रही हैं, उसी तरह लोक-गायकी के क्षेत्र में स्त्रियों का विशेष योगदान रहा है। इसलिए शोधार्थी द्वारा पंजाबी लोक-गायकी में विशेष तौर पर स्त्रियों के योगदान को मुख्य रखकर गुरमीत बावा जैसी एक विलक्षण गायकी वाली लोक-गायिका के योगदान को उद्घाटित करने का प्रयत्न किया गया है। इसके अर्न्तगत गुरमीत बावा के

गाए हुए गीतों का हमारे समाज एवं संस्कृति पर क्या प्रभाव पड़ा उसको दर्शाने का प्रयास किया गया है।

शोध का उद्देश्य (objectives)

1. राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय विख्याति प्राप्त पंजाबी लोक गायिका गुरमीत बावा के व्यक्तित्व, उपलब्धियां, गायन क्षेत्र एवं लोक गायकी के प्रति योगदान के संबंध में व्यक्तिगत एवं एकल रूप में चर्चा करना।
2. गुरमीत बावा की विलक्षण गायन शैली के कुछ अनछुए एवं अनसुने पक्षों को जनसाधारण के सामने लाना।
3. गुरमीत बावा के गाए हुए गीतों का सांगीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष से अध्ययन करना।
4. गुरमीत बावा के गीतों का समाज एवं संस्कृति पर पड़े हुए प्रभाव को दर्शाना ।
5. गुरमीत बावा की लोक गायकी का उनकी समकालीन गायिकाओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन करना।

चयनित विषय की सार्थकता

गुरमीत बावा की रिकार्ड तोड़ने वाली लंबी हेक वाली विलक्षण गायन-शैली ने उसको पंजाब की ही नहीं, बल्कि संपूर्ण विश्व की लोक गायिका की उपाधि दिलवाई है। पंजाब की लोक गायकी को बुलंदी पर पहुंचाने का श्रेय गुरमीत बावा को ही जाता है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि बावा के गाए हुए गीत एवं लोकगीत स्त्री मन की पीड़ा के साथ सीधे तौर पर जुड़े हुए हैं । कहीं तो वह माँ-बाप का वियोग गाती है, तो कहीं वह भाई का इंतजार गाती है एवं कभी पति का वियोग। बावा के गीतों में कहीं सास-ननद के व्यंग्य हैं और कहीं पंजाब के सामाजिक रस्म-रिवाज़, तीज और गिद्धा दिखायी देते हैं। समाज में रहते हुए सभी पक्षों को गुरमीत बावा ने अपनी गायकी में पिरोने का प्रयत्न किया है। यही कारण है कि प्रस्तुत विषय अपने आप में मौलिक एवं

नवीन है। इसलिए शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत विषय के अंतर्गत अपनी शोध को सार्थक बनाने का प्रयत्न किया गया है।

परिकल्पना

1. पंजाब के लोक संगीत के पुनरोत्थान में गुरमीत बावा का बहुत बड़ा योगदान है।
2. गुरमीत बावा के गाए हुए लोक गीतों का हमारे समाज एवं संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ा है।
3. गुरमीत बावा अकेली ऐसी लोक-गायिका हैं जिन्होंने पंजाब के केवल परंपरागत लोक-गीतों को केवल परंपरागत लोक वाद्यों के साथ गाया है।
4. गुरमीत बावा की गायन शैली अन्य लोक गायिकाओं से बिल्कुल भिन्न एवं विलक्षण है।

प्रस्तावित शोध पद्धति

प्रत्येक शोध प्रबंध के विषय एवं तत्संबंधी निष्कर्षों तक पहुंचने के लिए किसी न किसी शोध पद्धति का आधार लेना आवश्यक होता है। प्रस्तावित विषय की शोध के लिए शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित शोध विधियों का आश्रय लिया गया है :-

1. वर्णनात्मक शोध विधि (Descriptive Method)
2. साक्षात्कार (Interview)
3. प्रश्नोत्तरी सर्वेक्षण (Questionnaire) Survey
4. विषय वस्तु विश्लेषण (Content Analysis)

प्रस्तावित शोध पद्धति का आश्रय लेते हुए इस शोध प्रबंध को कुल सात अध्यायों में बाँटा गया है। पहले अध्याय में लोक संगीत का अर्थ एवं परिभाषाओं का वर्णन करते हुए, पंजाब में इसकी उत्पत्ति एवं विकास के बारे में चर्चा की गई है। लोक संगीत के

भेद एवं वर्गीकरण के बारे में जानकारी देते हुए पंजाब के भौगोलिक एवं सांस्कृतिक परिवेश को उद्घाटित किया गया है। पंजाब में लोक-संगीत की परंपरा की उत्पत्ति एवं विकास किन किन चरणों में से हो कर गुज़रा इस बारे में जानकारी देने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तावित शोध प्रबंध से संबंधित जिस जिस साहित्य का पुनरावलोकन किया गया, उसके बारे में द्वितीय अध्याय में बताया गया है। इसके इलावा प्रस्तुत शोध प्रबंध को संपूर्ण करते हेतु जिस अनुसंधान कार्य विधि का प्रयोग किया गया, उस के बारे में भी इस अध्याय में चर्चा की गई है।

तृतीय अध्याय में गुरमीत बावा का जीवन परिचय देते हुए उनकी गायन शैली की विशेषताओं का वर्णन किया गया है। इसी अध्याय में पंजाब के सुप्रसिद्ध साहित्यकारों, गीतकारों एवं गायक कलाकारों का गुरमीत बावा विषयक आकलन किया गया है। इस कार्य हेतु इन सब के साथ साथ गुरमीत बावा से भी साक्षात्कार किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में सबसे पहले समाज एवं संस्कृति के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए लोक संगीत का समाज एवं संस्कृति के साथ परस्पर संबंध दर्शाने का प्रयास किया गया है। लोक-गीतों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिपेक्ष की विस्तृत जानकारी देते हुए गुरमीत बावा के उन सभी गीतों का विश्लेषण किया गया है जो समाज एवं संस्कृति के प्रत्येक पहलू से संबंधित है। इसी अध्याय में गुरमीत बावा द्वारा गाए हुए कुछ सुप्रसिद्ध गीतों की स्वरलिपियां भी दी गई हैं।

पंचम अध्याय में समाज एवं संस्कृति में समय समय पर हुए परिवर्तन एवं बाहरी प्रभावों को दर्शाया गया है। इसी तरह गुरमीत बावा की गायकी का हमारे समाज एवं संस्कृति पर क्या प्रभाव पड़ा, यह बताने का प्रयास इस अध्याय में किया गया है।

छठे अध्याय में गुरमीत बावा की गायन शैली का उनकी समकालीन लोक-गायिकाओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस तुलनात्मक अध्ययन से पहले पंजाब की लोक गायन शैलियों के बारे में संक्षिप्त जानकारी देते हुए पंजाब के लोक गायक कलाकारों का भी संक्षिप्त विवरण दिया गया है।

अंत में इस अध्याय में शोध प्रबंध के परिणामों को एकत्र किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रबंध के उत्तम परिणाम प्राप्त करने हेतु प्रश्नौत्तरी सर्वेक्षण का भी आश्रय लिया गया है जिसके परिणामों को भी इसी अध्याय में बताने का प्रयास किया गया है।

प्राक्कथन

मानव जीवन में संगीत के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता । क्योंकि संगीत को सब से उत्तम कला माना जाने का यही कारण रहा है कि केवल यही एक कला है जो मानव मन की भावनाओं की अभिव्यक्ति का साधन बनती है। मानव जीवन और संगीत परस्पर सम्पृक्त रहे हैं । देश के अन्य प्रांतों की भांति पंजाब में भी शास्त्रीय संगीत एवं लोक संगीत को विकसित करने के लिए यहां के संगीतज्ञों एवं विद्वानों ने अनेकों प्रयत्न किए । बात जब लोक-संगीत की होती है तो लोक संगीत को आदि काल से ही शास्त्रीय संगीत की जननी माना जाता रहा है। लोक-संगीत को विकसित करने के लिए हमारे पंजाब के लोक-गायक कलाकारों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। पंजाब में लोक-संगीत का विकास एवं इस विकास में हमारे लोक-गायक कलाकारों के योगदान कार्य का अध्ययन रोचक ही नहीं अपितु उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण भी है। खास कर जब इन कलाकारों में स्त्री गायक कलाकारों का नाम लिया जाता है तो हमारा सर उनके सम्मान में झुक जाता है। इन गायिकाओं में गुरमीत बावा जी का नाम अग्रणी गायिकाओं में लिया जाता है। शोध की दृष्टि से गुरमीत बावा का लोक-संगीत में योगदान एवं उनके गाए हुए गीतों का सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन मौलिक एवं उपयोगी है। अभी तक इस विषय पर किया गया कोई भी कार्य प्रकाश में नहीं आया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के समस्त अध्ययन को केवल गुरमीत बावा जी की गायकी, गायन शैली, उनके गीतों का सांगीतिक एवं सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन एवं उनकी गायकी का समाज एवं संस्कृति पर प्रभाव तक सीमित किया गया है। पंजाब के समस्त लोक गायक कलाकरों में केवल गुरमीत बावा ऐसी गायिका है जिन्होंने केवल लोक गीतों को ही गाया एवं विश्व भर में प्रचारित एवं प्रसारित किया । इसलिए प्रस्तुत शोध कार्य का

उद्देश्य उनकी गायकी एवं सांगीतिक योगदान का गहराई से विश्लेषण करना है। समस्त शोध प्रबंध को कुल सात अध्यायों में बाँटा गया है।

प्रथम अध्याय में पंजाब का भौगोलिक एवं ऐतिहासिक परिचय देते हुए यहां की लोक-संगीत परंपरा एवं उसका समाज एवं संस्कृति से संबंध को दर्शाया गया है।

द्वितीय अध्याय में साहित्य का पुनरावलोकन एवं अनुसंधान कार्य विधि के बारे में बताया गया है। तृतीय अध्याय गुरमीत बावा जी के जीवन वृत्त एवं कृतित्व से संबंधित है। इस अध्याय में गुरमीत बावा से संबंधित किए गए साक्षात्कार भी सम्मिलित किए गए हैं।

चतुर्थ अध्याय में समाज एवं संस्कृति को परिभाषित करते हुए गुरमीत बावा के गीतों का सांगीतिक एवं सामाजिक सांस्कृतिक अध्ययन किया गया है।

पाँचवे अध्याय में गुरमीत बावा की गायकी का समाज एवं संस्कृति पर पड़े हुए प्रभाव को दर्शाया गया है। छठे अध्याय में गुरमीत बावा की गायकी एवं जीवन सफर का उनकी समकालीन गायिकाओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

शोध का अंतिम अध्याय उपसंहार अथवा निष्कर्ष है। इस अध्याय में साक्षात्कार एवं प्रश्नावली के आधार पर संग्रहित विषय सामग्री का विश्लेषण, प्रयोगगत् निष्कर्ष, शोध की सीमाएं, भविष्य की संभावनाएं शोध समस्याएं एवं शोध संकेत दिए गए हैं । इस शोध कार्य को संपूर्ण करने हेतु शोधार्थी ने विभिन्न माध्यमों का आश्रय लिया जिसमें पुस्तकें, ग्रन्थ, पत्रिकाएं तथा मुख्य साक्षात्कार रहे हैं।

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी ने पंजाब के लोक-संगीत के अंतर्गत गुरमीत बावा के गीतों का सांगीतिक एवं सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन करने का अकिंचित प्रयास किया है। इस शोध कार्य में गुरमीत बावा की गायन शैली एवं उनके गाए हुए गीतों पर सांगीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से प्रकाश डाला गया है। यदि यह शोध

प्रबंध पंजाब के लोक-संगीत में गुरमीत बावा जैसी गायिका के योगदान को समझने एवं लोक-संगीत को और विकसित करने में तनिक भी उपयोगी होगा तो शोधार्थी अपने प्रयास को सफल समझेगा । शोधार्थी की अपनी कुछ सीमाएं होती हैं। अतः इस शोध कार्य में भी अनेक त्रुटियां रह गईं होंगी जो कि शोधार्थी की सीमाओं की सूचक है। अतः शोधार्थी क्षमायाचना करती हुई इस शोध प्रबंध को जन-जन की सेवा में सादर समर्पित करती है।

शोधार्थी

रवजोत कौर

कृतज्ञता ज्ञापन

सर्वप्रथम मैं कोटि-कोटि प्रणाम करती हूँ उस परम पिता परमेश्वर के चरणों में जिन्होंनें मुझे इस शोध कार्य को संपूर्ण करने का बल बख्शा। प्रस्तुत शोध-प्रबंध को मैं अपने परम पूजनीय पिता स्व. श्री राजिंद्र सिंह 'लीन' एवं परम आदरणीय ममतामयी देवी स्वरूपिनी माता श्रीमती सविंद्रपाल कौर जी को समर्पित करती हूँ।

यह शोध प्रबंध मेरी निर्देशिका परम आदरणीय डा. श्रीमती सुष्मा शर्मा जी, प्रोफेसर संगीत विभाग, पोस्ट ग्रेजुएशन सरकारी कालेज, सेक्टर 49, चंडीगढ़, एवं मेरे सह-निर्देशक डा.रोहित प्रोफेसर परफार्मिंग आर्टस, लवली यूनीवर्सिटी, फगवाड़ा, के सद्परामर्श एवं सौहार्दपूर्ण प्रोत्साहन का प्रतिफलन है। शोध प्रबंध की रूपरेखा बनाने से लेकर समापन तक उनके समूल्य व सारगर्भित सुझावों के लिए मैं हार्दिक आभारी ही नहीं किंतु आजीवन उनकी ऋणि रहूंगी । इस शोध प्रबंध के सम्पन्न होने का श्रेय उन्हीं को है जिनके निरंतर प्रोत्साहन एवं कुशल मार्ग दर्शन ने मेरा मार्ग प्रशस्त किया एवं गुरू शब्द की सार्थकता को सिद्ध किया।

मैं आभार व्यक्त करती हूँ अपनी प्रिय सखियों डा. रणजीत कौर, डा. मीनू नंदा, डा. अंजना कुमारी एवं डा. कुलविंदर कौर जी का जो कदम कदम पर मेरी प्रेरणास्रोत बनीं एवं अपने कीमती सुझावों से मेरी पथ प्रदर्शक बनती रहीं।

मैं आभार व्यक्त करती हूँ अपनी बड़ी बहन डा. श्रीमति सुखबीर चोपड़ा जी का जिनके ममतामयी स्नेह एवं प्रेरणामयी बातों ने मुझे पग-पग आगे बढ़ने का साहस दिया।

इस आभार प्रस्तुतीकरण में उन सब महान विभूतियों के प्रति सहृय आभार व्यक्त करती हूँ जिनके जीवन के अनुभवों को एवं शोध विषय संबंधी अनुभवों को मैने मुक्त साक्षात्कार के रूप में एकत्रित करके शोध रूपी मंडप का सृजन करने का प्रयास किया

है। साक्षात्कार किए गए प्रत्येक व्यक्ति विशेष का प्रत्येक विचार इस शोधरूपी यज्ञ में एक आहूति के समान है।

मैं आभार प्रकट करती हूँ संत हीरा दास कन्या महाविद्यालय वाला संघियां के प्रधान इंजी. स. सीतल सिंह जी संघा एवं प्रिंसीपल डा. सुरजीत कौर जी का जिनके सहयोग से मैं अपने शोध कार्य को सफलतापूर्वक संपन्न कर सकी । मैं आभारी हूँ अपनी बड़ी बहन तुल्य डा. श्रीमति जितेंद्र कौर जी की जिन्होंने प्रेरणारूपी स्फूर्ति का संचार करते हुए मुझे इस कार्य को करने को प्रेरित किया । मैं आभार व्यक्त करती हूं भाई तुल्य श्री राजेश शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर संगीत विभाग गुरू नानक देव विश्वविद्यालय का जिन्होनें मेरे शोध कार्य को सही दिशा प्रदान की।

मैं आभारी हूँ अपने भाई श्री ब्रहमजोत सिंह लीन का जिसके स्नेह ने मुझे पग-पग आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

मै अत्यंत आभार व्यक्त करती हूँ डा. इंदरपाल सिंह जी प्रिंसीपल आर्य जी. एम. टी. कालेज फगवाड़ा का जिन्होंने समय समय पर इस शोध कार्य को संपन्न करने में मेरी सहायता की।

अब मैं सहदय उस महान विभूति का आभार प्रकट करती हूँ जिनके विशेष सहयोग के अभाव में इस शोध कार्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। परम आदरणीय श्री सुरेश कुमार जी की मैं आजीवन कृतज्ञ रहूँगी। शोध कार्य के प्रारंभ से लेकर साक्षात्कार करने तक इन्होंने मुझे पूर्ण सहयोग दिया। इनके इस सहयोग के अभाव में मैं एक कदम भी आगे बढ़ने में असमर्थ थी। अत: अपनी सफलता का संपूर्ण श्रेय मैं उन्हीं को देती हूं।

अनुक्रमाणिका

क्र.सं.	प्रथम अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	**पंजाब का लोक-संगीत**	**1-33**
1.1	लोक-संगीत ; अर्थ एवं परिभाषा	
1.2	लोक-संगीत ; उत्पत्ति एवं विकास	
1.3	लोक-संगीत ; भेद एवं वर्गीकरण	
1.4	पंजाब का भौगोलिक एवं सांस्कृतिक परिवेष	
1.4.1	भूगोल एवं जन-जीवन	
1.4.2	भौगोलिक स्थिति एवं संस्कृति का अंतःसम्बन्ध	
1.4.3	पंजाब की भौगोलिक स्थिति एवं पंजाबी संस्कृति पर इसका प्रभाव	
1.4.4	पंजाब की संस्कृति	
1.4.5	पंजाबी संस्कृति के सामाजिक-सांस्कृतिक स्रोत	
1.5	पंजाब की लोकसंगीत परम्परा; उत्पति एवं विकास	
1.5.1	पंजाबी लोकसंगीत परम्परा की विशेषताएं	
1.6	विषय वस्तु का सामान्य परिचय	
	द्वितीय अध्याय	
2.	**साहित्य का पुनरावलोकन एवं अनुसंधान कार्य विधि**	34-39
2.1	साहित्य का पुनरावलोकन	
2.2	शोध का उद्धेश्य एवं सार्थकता	
2.3	अनुसंधान कार्य विधि	
	तृतीय अध्याय	
3.	**गुरमीत बावा ; जीवन वृत्त एवं कृतित्व**	40-82
3.1	गुरमीत बावा ; जीवन परिचय	
3.2	गुरमीत बावा की गायन शैली	

3.3 सुप्रसिद्ध साहित्कारों, गीतकारों एवं गायक कलाकारों का गुरमीत बावा विषयक आकलन

3.4 गुरमीत बावा ; साक्षात्कार

चतुर्थ अध्याय

4. **गुरमीत बावा के गीतों का सांगीतिक एवं सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन** 83-145

4.1 समाज, संस्कति; अर्थ, परिभाषा एवं विशेषताएं

4.2 समाज, संस्कृति एवं लोक-संगीत

4.3 लोक-गीतों का सामाजिक, सांस्कृतिक परिपेक्ष

4.4.1 लोक-गीतों का सामाजिक परिपेक्ष

4.4.2 लोक-गीतों का सांस्कृतिक परिपेक्ष

4.5 गुरमीत बावा के गीतों का सामाजिक,परिपेक्ष

4.6 गुरमीत बावा के गीतों का सांस्कृतिक परिपेक्ष

4.7 गुरमीत बावा के गीतों का सांगीतिक परिपेक्ष

पंचम अध्याय

5. **गुरमीत बावा के गीतों का सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव** 146-188

5.1 समाज एवं संस्कृति ; प्रभाव एवं परिवर्तन

5.2 वर्तमान पंजाब का समाज एवं संस्कृति

5.3 गुरमीत बावा की गायकी का सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव

5.4 प्रश्नौत्तरी सर्वेक्षण

षष्ठम अध्याय

6. **गुरमीत बावा एवं समकालीन लोक गायिकाओं की गायन शैली का तुलनात्मक अध्ययन** 189-219

6.1 पंजाब की लोक-गायन शैलियां ; विभिन्न प्रभेद

6.2 पंजाब के लोक-गायक कलाकार

6.3 गुरमीत बावा की समकालीन लोक-गायिकाएं

6.3.1 सुरिंद्र कौर ; जीवन, एवं गायन शैली की विशेषताएं

6.3.2 नरिंद्र बीबा ; जीवन, एवं गायन शैली की विशेषताएं

6.3.3 जगमोहन कौर ; जीवन, एवं गायन शैली की विशेषताएं

6.3.4 रणजीत कौर ; जीवन, एवं गायन शैली की विशेषताएं

6.3.5 सरबजीत कौर ; जीवन, एवं गायन शैली की विशेषताएं

6.3.6 गुरमीत बावा की गायन शैली की विशेषताएं
उपसंहार 220-227
संदर्भ ग्रंथ सूची 228-231
परिशिष्ठ 232-247

1. पंजाब का लोक-संगीत

मनुष्य के अस्तित्व से पूर्व ही संगीत इस धरती के कण-कण में मौजूद था । मनुष्य ने अस्तित्व में आते ही अनेकों प्रकार की ध्वनियां सुनी होंगी । नकल करने की प्रवृत्ति ने मनुष्य को प्रकृति के स्रोतों से उत्पन्न होने वाली ध्वनियों की नकल करने के लिए प्रेरित किया होगा। परिणामस्वरूप पत्तों की खड़खड़ाहट, बादलों की गड़गड़ाहट, पक्षियों की चहचहाहट, हवा की सरसराहट इत्यादि ध्वनियों से मनुष्य ने अपने अनुभव एवं मनोरूचि के अनुरूप उनको ग्रहण करने का प्रयत्न किया होगा । इस तरह स्वाभाविक रूप से ही मनुष्य की कुछ सहज प्रवृत्तियां जैसे हँसना, रोना, गाना इत्यादि में संगीत का प्रवेश हुआ होगा।

दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि मनुष्य ने अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए जब कोई साधन ढूंडा, तो उस की युवा भावनाओं एवं जज़्बों में से लोक गीतों एवं इनकी मधुर धुनों ने जन्म लिया ।

1.1 लोक-संगीत; अर्थ एवं परिभाषा

आदि काल से ही संगीत कला के दो पक्ष प्रचार में आ चुके थे ; देशी संगीत एवं मार्गी संगीत। यही दोनों पक्ष धीरे-धीरे क्रमशः लोक-संगीत एवं शास्त्रीय संगीत के नाम से अस्तित्व में आए । संगीत का शास्त्रीयकरण करने के बाद जो संगीत अस्तित्व में आया, वह शास्त्रीय संगीत कहलाया । इसलिए यह कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि लोक संगीत ही एक ऐसा संगीत है जो प्रारंभ से ही परंपरागत तौर से चलता आ रहा है । इसी लिए हमारे संगीतज्ञों ने लोक-संगीत को शास्त्रीय संगीत की जननी की उपाधि दी है । वास्तव में लोक-संगीत ही एक ऐसा संगीत है, एक ऐसा स्रोत है जिसने शास्त्रीय संगीत को अनेकों राग एवं तालें दी हैं, भाषा को जीवित रखा है, उसको प्रफुल्लित किया है एवं भाषा को अत्यंत प्रभावशाली शब्दों का एक भंडार सौंपा है ।

लोक-साहित्य का वर्गीकरण करते हुए लगभग प्रत्येक लोक-धारा वैज्ञानिक ने लोक-गीतों को लोक-साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा के तौर पर स्वीकृत किया है। प्रत्येक दृष्टि से देखा जाए तो लोक-गीत, लोक साहित्य का ही एक प्रमुख अंग है । लोक-गीत, लोक साहित्य का सबसे प्राचीनतम एवं मुख्य रूप है । सभ्याचार का चित्रण करने वाले लोक-गीत, साधारण जन-जीवन का उचित एवं स्वाभाविक चित्र प्रस्तुत करते हैं । लोक-गीत वास्तव में लोक-धारा के क्रियात्मक रूप की श्रेणी के साथ संबंधित है, क्योंकि इनका सृजन एवं विधि किसी न किसी क्रिया के साथ जुड़ी होती है। उसी क्रिया में से लोक-गीत का जन्म होता है। उसी क्रिया के संदर्भ में ही लोक-गीत के अर्थ बनते हैं । यही क्रिया, गीत को भाव-संचार का माध्यम बनाती है। लोक-गीत की आत्मा को समझने के लिए 'लोक' एवं 'गीत' दोनों शब्दों के अर्थों का स्पष्ट होना अत्यंत आवश्यक है ।

लोक :- लोक शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द 'Folk' एवं 'People' का समानार्थक शब्द है। 'Folk' जर्मन भाषा के शब्द 'Volk' का रूपांतरण है। अंग्रेज़ी में "Folk' एवं 'People' दोनो शब्द भिन्न-भिन्न जन समूहों का बोध करवाते हैं । 'Folk' के अर्थ लोक, राष्ट्र, जन-समूह अथवा किसी विशेष समुदाय से लिए जाते हैं । यह एक ऐसे लोगों का समूह है जिसकी चेतना लोक-मन की परंपरा के साथ जुड़ी चेतना के साथ अंतर्संबंधित होती है ।

'लोक' शब्द के संदर्भ में भारतीय दृष्टि का विस्तार डा. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने इस तरह किया है,

> ''लोक शब्द का अर्थ 'जनपद' जां ग्राम नहीं है, बल्कि नगरां अते पिंडां विच फैली ओह समुच्ची जनता है जिस दे विवहारिक ज्ञान दा आधार पोथीयां नहीं हन । ऐह लोक नगर विच पहचाणे, रुचि संपन्न अते संस्कत समझे जाण वाले लोकां दे मुकाबले वधेरे सरल जीवन नाल ओत प्रोत हुंदे हन। पहचाणे जाण

वाले रुचिकर लोकां दी समुच्ची विलासता अते कोमलता नूँ जीवित रखण लई जो वी वस्तुआं ज़रुरी हुंदीयां हन ओहनां नूं उत्पन्न करदे हन।''1

हिंदी के समस्त विद्वानों की तरह इस परिभाषा में पश्चिमी विद्वानों के विचारों का कोई प्रभाव नहीं है । इस के अनुसार 'लोक' गाँवों, शहरों एवं समस्त बस्तियों में फैली हुई एक इकाई है । इन का व्यावहारिक ज्ञान पुस्तकों के द्वारा नहीं बल्कि मौखिक परंपरा के द्वारा जीवित रहता है । 'लोक' वस्तुतः परिश्रमी जनता का प्रतीक है । इतिहास संस्कृति एवं समाजवाद की दृष्टि से यह 'लोक' की शुद्ध भारतीय परिभाषा कही जा सकती है ।

गीत :- 'गीत' शब्द अंग्रेज़ी भाषा के शब्द 'Lyric' से मिलता-जुलता है, जिसने अपने विकास के लिए लोक गीतों का प्रभाव ग्रहण किया है। 'गीत' काव्य का वह लघु रूपाकार है जो स्थाई एवं अंतरों में बंधा हुआ, किसी विशेष स्थिति के प्रभाव को प्रकट करने के लिए दो या तीन पंक्तियों में रचा जाता है । इसके मुख्य तत्त्व संगीत, कल्पना, कोमलता एवं दुहराव होते हैं ।

इंडो-आर्यन लैंगुएजिज़ डिक्शनरी के अनुसार;

'' 'गीत', गायन कला में कही जाने वाली कविता है।''[2]

बृहत हिंदी कोष के अनुसार;

''ग्रंथों को ही वाणी अथवा गीत कहा गया है।''[3]

'गीत' मनुष्य के प्रचंड भावों वाली विशेष परिस्थिति को दर्शाती हुई वह जज़बाती छंद प्रधान, संबोधनी एवं संगीतमई रचना है जिस में गीतकार स्वयं से वार्तालाप करता है। इस तरह 'लोक' एवं 'गीत' दोनों के संकल्पों को समझने के बाद 'लोकगीत' को एक संयुक्त संकल्प में बाँधना सरल हो जाता है ।

'लोक-गीत' का शाब्दिक अर्थ देखा जाए तो 'लोगों द्वारा रचित गीत' ही 'लोक-गीत' है । यह गीत उन लोगों द्वारा रचित होते हैं जिन की भावनाएं लोक संस्कृति से जुड़ी होती हैं।

संक्षेप में यह कहना चाहिए कि वह रचना जिस में किसी भी राष्ट्र के लोगों की भावनाएं पिरोई गई हों, जिसको सुन श्रोताओं को ऐसा लगे जैसे कि वह उन्हीं की कहानी है, एवं उन भावनाओं में खुशी, गमी, प्रेम, विरह, आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक इत्यादि पक्ष उन की अपनी मातृ-भाषा में प्रस्तुत हों और वह रचना मौखिक रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी अतीत से वर्तमान तक पहुंची हो एवं उसमें सभ्याचार के अवशेष प्रत्यक्ष रूप में नज़र आते हों, उस को 'लोक-गीत' का नाम दिया जाता सकता है । इस का आधार मनोवैज्ञानिक होता है।

लोक-संगीत ; परिभाषा

लोक-संगीत को परिभाषित करते हुए यह कहा जा सकता है कि नौ प्रकार के रसों से प्रभावित होकर मनुष्य जब स्वाभाविक रूप में गाकर, बजाकर, नाचकर अपने मन के भावों को प्रकट करता है तो उसको लोक-संगीत का नाम दिया जाता है ।

लोक-संगीत से भाव है, 'लोगों का संगीत', जो लोगों ने स्वाभाविक रूप में अपने मनोभावों को प्रकट करने के लिए पीढ़ी दर पीढ़ी विकासित किया । यही संगीत भूत-काल के लोगों की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भोगौलिक, ऐतिहासिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि से हम सब को अवगत करवाता है । इस तरह लोक-संगीत की प्रमुख विशेषता यह है कि यह व्यक्तिगत अनुभव की ही अभिव्यक्ति नहीं करता बल्कि समस्त भाईचारे की भावनाओं को प्रकट करता है।पंजाबी के सुप्रसिद्ध लेखक सोहिंद्र सिंह बेदी लिखते हैं;

> ‘‘संगीत दीयां जिनां स्वर लहरियां विचों कोई जाति आपणी आत्मा दे बोलां नूं पहचाणन लगदी है, उही लोक संगीत है।’’[4]

लोक-संगीत एक सहज संगीत है जिसके गीतों की धुनों को गायक किसी गुरू अथवा उस्ताद से नहीं सीखते ।

कोई भी संगीत जिसका सृजन लोगों द्वारा हुआ हो तथा वह परंपरागत तरीके से एक दूसरे को मिला हो, ‘लोक-संगीत’ कहलाता है। इंटरनैश्नल फोल्क म्यूज़िक कौंसिल ने 1952 में लंडन में लोक-संगीत की यह परिभाषा स्वीकार की;

> “The music that has been submitted to the process of oral transmission and dependent on the circumstances of continuity, variation and selection is called 'Folk music.”5

Rhodes के अनुसार;

लोक-संगीत एक तरह का सामाजिक व्यवहार है । "Interpreted in this light, it can reveal a great deal regarding the interests, thinking and feelings of the people."

Farlex Free dictionary के अनुसार;

"Music originating among the common people of a nation or a region and spread about or passed down orally often with considerable variation is called 'Folk music.'[7]

Oxford Dictionary में लोक संगीत को इस तरह परिभाषित किया गया है;

"Music that originates in traditional popular culture or that is written in such a style is called folk music. Folk music is typically of unknown authorship and is transmitted orally from generation to generation".[8]

प्यारे लाल श्री माल लिखते है;

‘‘लोक-संगीत से तात्पर्य ग्रामीण संगीत है। इस तरह लोक संगीत वह संगीत है जिस का स्वरूप रंजनकारी एवं किसी विशेष जन-समूह की सोच समझ तक ही सीमित न हो कर बहुजन समाज के अंतरमन को संगीत रूपी अमृत से सींचता हो।’’[9]

पंजाबी युनिवर्सिटी के डॉ गुरनाम सिंह जी अपनी पुस्तक में लिखते है;

लोक-संगीत सभ्याचार दी इक विशेष कलात्मक धारा है जो लोक मन दीयां प्रविरतियां सुहज चेतना मानसिक संरचना अते विकास गाथा दा जीवन्त प्रामाणिक साधन है। [10]

पंडित यशपाल जी के अनुसार;

किसे वी देश जां जाति दा संवेदनशील मनुख जदों अपनी अंदरूनी वलवलियां नू प्रगट करना लोचदा है तां उसदे बोल अते लय दे सुमेल नाल जो संगीत पैदा हुंदा है ओह लोक-संगीत है।[11]

Encyclopedia Britanica में लोक संगीत को इस तरह परिभाषित किया गया है;

"The Primitive spontaneous music has been called Folk music".[12]

डॉ गुरमीत सिंह जी अपने एक शोध पत्र में लिखते है;

लोक-संगीत से तात्पर्य है संगीत का वह प्रकार जिस की गायन एवं वादन परिपाटी किसी व्यक्ति द्वारा संचालित न की गई हो।[13]

Encyclopedia of Music & Musicians में लोकसंगीत के बारे में इस तरह लिखा गया है;

"Music that has come from the people and embodies something of vital and sentimental interest to them. It has no specific form and as it is usually handed down by oral tradition, it may undergo changes".[14]

डॉ करनैल सिंह थिन्द के अनुसार;

लोक संगीत लोक धुनां ते आधारित हुंदा है। ऐहनां धुनां विच सुरां दी संखेपता, अते सुभाविकता आदि गुण हुंदे हन। लोक भाषा दी मिठास अते सादगी लोक संगीत नू सब दा लोक प्रिय बनाउन वाले मुख तत्त हन।[15]

लोक-संगीत से तात्पर्य है - लोगों का संगीत । साधारण शब्दों में कहा जाए तो लोक संगीत विश्वव्यापी भाषा, कला एवं सौंदर्य है । डॉ रशपाल सिंह के एक शोध पत्र के अनुसार;

जिस सरल भाषा राहीं मनुख आपने मनोभावां नू सुरताल बद्ध करके श्रोतियां दे मनोरंजन लई प्रयोग करदा है उसनूं लोकसंगीत केंहदें हन ।[16]

संगीत पत्रिका के लोकसंगीत अंक में लोकसंगीत एवं लोकगीत को इस प्रकार सम्बन्धित किया गया है;

लोक-संगीत वास्तव में लोक गीत ही है क्योंकि दोनों एक दूसरे के पूरक एवं प्रेरक हैं।[17]

लोक संगीत की उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि 'लोक संगीत' वह संगीत है जो लोगों द्वारा ही जन्म लेकर उनके सामाजिक व्यवहार को दर्शाता हुआ पीढ़ी-दर-पीढ़ी परिवर्तित होता गया ।

1.2 लोक-संगीत : उत्पत्ति एवं विकास

लोक-संगीत एक ऐसी कला है, जिसके अंदर बहुत सी कलाओं का समावेश है । यह कला एक ललित कला होते हुए भी शाब्दिक कला से अपना नाता बनाए रखती है । लोक संगीत, लोक नृत्य, लोक वाद्य एवं लोक गीत के सम्मिश्रण से पैदा हुई लोक मानस की एक ऐसी कृति है जो मनुष्य के जज़्बों, भावनाओं, संवेदनाओं, उमंगों एवं मनोभावों की अभिव्यक्ति करती है। इस के रस को मनुष्य कानों के द्वारा सुन कर,

दिल की धड़कन के द्वारा महसूस कर अपनी मूल-अभिरूचि की तृप्ति करता है । जिस तरह लोक-कलाएं समय, स्थान एवं परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होती है, उसी तरह लोक संगीत का प्रभाव भी श्रोताओं पर भिन्न-भिन्न संदर्भों में एक जैसा नहीं होता क्योंकि इस कला का संबंध श्रवण एवं मौखिक परंपरा से कहीं अधिक है। इसीलिए इस की उत्पत्ति के संबंध में बहुत सी धारणाएं मिलती हैं । लोक धारणा यह है कि लोक संगीत की उत्पत्ति मनुष्य के जन्म के साथ ही शुरू हो जाती है। प्रकृति में से पैदा हुए मानवीय संघर्ष ने उस के लिए बहुत सी चुनौतियां खड़ी कर दीं । इन चुनौतियों के द्वारा पैदा हुई समस्याओं के समाधान की तलाश में से मनुष्य ने अपनी सोच एवं उस समय की परिस्थितियों के सामने अपनी ज़िंदगी को बहुत से नए अर्थ प्रदान किए ।

इन अर्थों ने मनुष्य को अपने सामने पैदा हुई बहुत सी कड़वी सच्चाईयों को भी स्वीकार करने के लिए मजबूर किया । इन कड़वाहटों को दूर करने के लिए उस ने अपनी ज़िंदगी में इन का प्रस्तुतीकरण इस तरह से किया कि यह उस की मूल अभिरूचि का माध्यम बन गई।

लोक संगीत रस्म-रिवाज़ों के जटिल प्रदर्शन में से अपना अस्तित्व ग्रहण करता हुआ आधुनिक युग में संपूर्ण कला का रूप धारण कर चुका है । प्रत्येक समाज की आर्थिक, भोगौलिक, राजनैतिक, सभ्याचारक, सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितियों ने समय-समय पर इसके मुखौटे को सजाने एवं संवारने में विशेष भूमिका निभाई । लोक संगीत, शास्त्रीय संगीत एवं प्रख्यान संगीत, यह तीनों भिन्न-भिन्न पहचान रखते हुए भी एक दूसरे में इस तरह सम्मिलित है कि किसी एक का अध्ययन दूसरे के बिना अधूरा सा है ।

लोक-संगीत एक ऐसा मौखिक एवं सामूहिक सृजन है जिस को मनुष्य ने अपने व्यावसायिक जीवन में से निखारा एवं उसके इर्द-गिर्द के प्राकृतिक वातावरण ने इसको

सींचा । नदियों की कल-कल, पत्तों की खन-खन, हवा की सांय-सांय, चिड़ियों की चीं-चीं इत्यादि ने लोक संगीत की ताल एवं धुन को न सिर्फ अपने माधुर्य से भर दिया बल्कि अपनी निरंतरता के साथ इसको निखारा है । पंजाबी लोकधारा विश्वकोष के अनुसार;

लोकसंगीत बंधनां तों मुक्त होण कारण पत्थर दी तरह कठोर नहीं बल्कि किसे दरखत दी टाहणी दी तरह लचकदार हुंदा है।[18]

यह लचीलापन, सहजता, सरलता एवं सादगी लोक संगीत को प्रकृति की ही तो देन है। लोक संगीत का जन्म तो आदि-मानव के जन्म से ही शुरू हो जाता है । इस लिए लोक-संगीत की उत्पत्ति एवं विकास का अध्ययन करने के लिए हमें इस संबंध में प्राप्त मिथ, एवं इसके शाब्दिक, ऐतिहासिक पड़ाव के बारे में जानकारी प्राप्त करनी आवश्यक है । एक पौराणिक मिथकीय कथा के अनुसार संगीत की उत्पत्ति 'कुकनूस' नाम के एक पक्षी से हुई है । लोक धारणा के अनुसार इस पक्षी की आवाज़ से हमारे पूर्वजनों ने राग-शिक्षा सीखी। यह माना जाता है कि इस पक्षी की चोंच में सात छिद्र होते हैं जो संगीत की सात ध्वनियों को पैदा करते हैं ।

'संगीत' शब्द अरबी भाषा के शब्द 'मौसिकी' से पैदा हुआ है । मौसिकी दो शब्दों के मिश्रण से बना है ; 'मौ' का अर्थ है आवाज़ एवं सिकी' का अर्थ है गंठी हुई अर्थात वह आवाज़ जो गंठी हुई हो । पौराणिक कथाओं के अनुसार संगीत कला का आविष्कार ब्रहमा जी के द्वारा हुआ जिन्होंने वेदों की रचना की । ब्रहमा जी ने संगीत शिक्षा शिव को थी जिनसे यह शिक्षा सरस्वती, नारद, गंधर्वों, किन्नरों, अप्सराओं एवं हनुमान जी तक पहुंचाई गई ।

विद्वान संगीतकार पं. दामोदर जी ने 'संगीत दर्पण' नामक ग्रंथ में स्वरों की उत्पत्ति पशु-पक्षियों की आवाज़ों से बताई है । उन के अनुसार मयूर की आवाज़ से षड़ज,

चात्रिक से ऋषभ, बकरे की आवाज़ से गंधार, कौए से मध्यम, कोयल से पंचम, मेंढक से धैवत, एवं गज की आवाज़ से निषाद स्वर की उत्पत्ति हुई है ।

वैदिक संस्कृति में सामवेद को संगीत कला का चश्मा कहा जाता है । आदि काल के ऋषियों, मुनियों ने यह कला सामवेद से प्राप्त की एवं इसका प्रचार मानव जाति में किया । नाट्य के दस प्रमुख अंगों में से संगीत एक है । भरत मुनि के नाट्य शास्त्र को संगीत का पाँचवा वेद माना जाता है । वैदिक काल में संगीत का क्षेत्र केवल ईश्वर की भक्ति था । इस कला को केवल शक्ति, भक्ति, पूजा, कर्म एवं ज्ञान तक ही सीमित रखा जाता था । इसीलिए आज भी भारतीय संगीत का आधार 'सत्यम शिवम् सुंदरम' को ही माना जाता है । वैदिक काल के बाद संगीत की स्थिति पहले जैसी सम्माननीय नहीं रही । संगीत जन-साधारण में प्रचारित होने लगा । संगीत समारोहों के नाम से स्वयंवर होने लगे ।

वैदिक संस्कृति के बाद प्राचीन काल में संगीत के लिए गांधर्व संगीत शब्द का प्रयोग भी किया जाता रहा है । गांधर्व इंद्र के दरबार के गवईए थे । संगीत गायन के समय अप्सराएं इनका सहयोग देती थीं । लेखक हरिवंश के अनुसार गांधर्व ब्रहमा की नासिका से पैदा हुए । तंबूर नाम के गांधर्व ने विश्व के लोगों को संगीत सिखाया एवं यह विश्व का सबसे प्रथम गायक माना जाता है ।

गांधर्व संगीत गायन में से 'मार्गी' एवं 'देशी' दो संगीत गायन शैलियां विकसित हुई । मार्गी संगीत उस संगीत को कहा जाता था जो गांधर्वों द्वारा धार्मिक उद्देश्य अथवा मोक्ष की प्राप्ति के लिए प्रयोग किया जाता था । किंतु जब संगीत साधारण जन-रूचि के अनुसार प्रयोग होता तो वह देशी संगीत का रूप धारण कर लेता था ।

जैसे जैसे समय गुज़रता गया, मार्गी संगीत शास्त्रीय नियमों के बंधनों में बँधता चला गया एवं देशी संगीत जन-रूचि के कारण लोक संगीत का रूप धारण कर गया ।

साहित्यावलोकन के आधार पर लोक-संगीत को सदैव शास्त्रीय संगीत का आधार माना जाता रहा है ।

लोक संगीत का मुख्य स्वर शब्द है । शब्द, भाषा की एक इकाई है एवं साहित्य का माध्यम भाषा है । इसलिए भाषा लोक संगीत का एक प्रमुख अंग है । क्योंकि लोक गीतों में सामूहिक जन-जीवन की अभिव्यक्ति भाषा के द्वारा ही होती है । डा. करनैल सिंह थिंद के अनुसार;

‘‘लोक काव रूपां तों भाव लोक गीतां दे विशेष रूप तों है, जिन्हां नू आम जनता ने कबूल करके प्रचलित कर दिता ।[19]

इनका जन साधारण के लिए आर्कषण देखकर ही विशिष्ट साहित्य रचयिता पुनः इनके रूपों की तरफ लौट आते है एवं अपनी अभिव्यक्ति का वाहन इनको बनाते है।

संगीत जब शब्दों का आश्रय लेकर स्वरों में गाया जाने लगा तो गायन, लोक गीत, एवं लोक धुनों की उत्पत्ति हुई । धीरे-धीरे स्वरों के साथ-साथ लय एवं ताल भी गीतों में शामिल हो गए। इस तरह ध्वनि, स्वर, स्वरमेल (Harmony), संगीतात्मक क्रम (melody),तुकबंदी (Rhyme),एवं रूप (Form),संगीत के प्राथमिक तत्त्व कहलाए जाने लगे ।

आधुनिक युग में भी संगीत विद्वानों ने संगीत को दो वर्गों में बांटा है ; शास्त्रीय संगीत एवं लोक-संगीत । उनके अनुसार लोक-संगीत को समझ कर, इसका विशलेषण कर, जब इसको नियम-बद्ध किया जाता है तो शास्त्रीय संगीत अस्तित्व में आता है। इस तरह हम कह सकते हैं कि प्रत्येक शास्त्रीय राग लोक संगीत की धुनों में से ही उपलब्ध होता है। टप्पा, खयाल, ठुमरी इत्यादि शास्त्रीय गायन शैलियों का आधार लोक-संगीत ही है ।

प्राथमिक स्तर पर तो लोक संगीत ग्रामीण अथवा कृषि सभ्याचार की ही उपज है किंतु शास्त्रीय संगीत, आर्थिक पक्ष से खुशहाल एवं श्रेष्ठ वर्ग की कला है, जो कि काफी हद तक संवारी हुई एवं नियमबद्ध होती है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि समय के साथ साथ जब किसी समाज में विशिष्ट वर्ग अपना अस्तित्व बना लेता है तो ऐसी श्रेणियों की रूचियां एवं स्वभाव बदलने आरंभ हो जाते हैं । सामाजिक रहन सहन में भी एक अंतर पैदा हो जाता है तो ऐसे हालात में लोक संगीत को नियमबद्ध करके प्रामाणित किया जाता है, जो कि शास्त्रीय संगीत के रूप में हमारे समक्ष आता है ।
बहुत से संगीत विद्वानों ने शास्त्रीय संगीत एवं लोक संगीत के मध्य एक तीसरा रूप सुगम संगीत माना है जो कि लोक संगीत के अत्यधिक समीप रहते हुए उसको निखारता एवं सजाता संवारता रहा है । दूसरे शब्दों में सुगम-संगीत, लोक-संगीत के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है । सुगम-संगीत के अंतर्गत फिल्मी गीत, गज़लें, कव्वालियां एवं काफियां, भजन इत्यादि आते हैं । जो श्रोता शास्त्रीय संगीत को समझने में असमर्थ होते हैं वह सुगम संगीत का आश्रय लेकर संगीत के आनंद का अनुभव करते हैं । सुगम संगीत हल्का-फुल्का एवं मनोरंजनकारी होता है। किंतु दुख की बात यह है कि आधुनिक युग में सुगम संगीत की आड़ लेकर लोक-संगीत के साथ मन-मानियां की जा रही हैं । जब कि सुगम संगीत किसी भी तरह लोक-संगीत नहीं है और न ही उसका स्थान ले सकता है।

संगीत आचार्यों का मत सर्वमान्य है कि शास्त्रीय संगीत का विकास लोक संगीत में से ही हुआ है। बहुत से रागों का आधार वह राग हैं जिनको लोक-राग की उपाधि दी गई है। इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण आसा, मुल्तानी, पहाड़ी, भैरव, झिंजोटी, गुजरी, सोरठ, भोपाली इत्यादि रागों से मिलता है । लोक संगीत ने शास्त्रीय संगीत को कई तरह के राग, ताल एवं शैलियां दी हैं।

जब लोक-संगीत शास्त्रीय संगीत जैसी महान एवं विस्तृत कला की जननी हो सकती है तो निश्चय ही यह एक संपूर्ण कला होगी ।

लोक संगीत का अपना ही एक स्वतंत्र विश्व है । इसका आधार न तो शास्त्रीय संगीत है और न ही इसको किसी भी लोक-प्रिय संगीत अथवा सुगम संगीत का नाम दिया जा सकता है।

विश्व प्रसिद्ध कलाकार पं. रवि शंकर जी का कहना है;

> ''हमारे देश में लोक-धुनों का इतना विशाल भंडार है कि जब हम सुनते हैं तो आश्चर्यचकित हो जाते हैं । प्रत्येक राज्य में विविध प्रकार के लोक-गीत एवं लोक-धुनें हैं । जिनका गायन भिन्न-भिन्न अवसरों पर किया जाता है ।''

हमारे लोक गीतों में शास्त्रीय संगीत को प्रेरित करने की असीम शक्ति है । हमारा लोक संगीत सरल, सरस एवं शीघ्र ग्रहण होने वाला है । हमारा लोक संगीत स्वाभाविक है । एक विचारवान के अनुसार सरलता अपने आप में सुंदर है । यह कथन लोक संगीत के ऊपर अच्छे से लागू होता है ।

1.3 लोक-संगीत ; भेद एवं वर्गीकरण

शास्त्रीय संगीत की तरह लोक संगीत में भी लोक गायन अथवा लोक-गीत, लोक वादन अथवा लोक वाद्य एवं लोक नृत्य तीनों ही पाए जाते हैं । लोक-गायन के अंतर्गत लोक-गीत, लोक-वादन के अंतर्गत लोक धुनें एवं लोक-नृत्य के अंतर्गत स्त्रियों एवं पुरूषों के नृत्य शामिल हैं । वास्तव में बहुत से विद्वानों ने लोक संगीत के इन तीनों प्रमुख भेदों में से लोक-गीतों को ही लोक-संगीत माना है। इसका कारण यह है कि लोक-गीतों के विविध प्रकारों को बहुत से आधारों पर वर्गीकृत किया गया है जिससे स्पष्ट होता है कि लोक गीत ही लोक-संगीत का प्रमुख आधार है। किंतु यही तथ्य सर्वमान्य है कि लोक संगीत को निम्नलिखित तीन प्रकारों में बाँटा गया है :-

1) लोक-गीत

2) लोक-वाद्य

3) लोक-नृत्य

लोक गीतों की भाषा खड़ी बोली होती है जिसको प्रत्येक मनुष्य, चाहे वह पढ़ा लिखा हो या अनपढ़, आसानी से बोल कर अथवा गाकर समझ सकता है । इन गीतों का विषय अकसर दिनचर्या से संबंधित कार्य ही होते हैं । जैसे कि खेतों में हल का महत्त्व, बोझा उठाना, कुएं से पानी भरना, कृषि से संबंधित कार्य, बाग़बानी, फसलें बीजना, फसलों का पकना एवं उनको काटना, पशु-पक्षियों का महत्त्व इत्यादि । इस के इलावा लोक-गीत त्योहारों एवं ऋतुओं से भी संबंधित होते हैं ।

लोक गीतों में विषय एवं स्वरूप के पक्ष से बहुत विविधता पाई जाती है । भिन्न भिन्न विद्वानों ने लोक गीतों का वर्गीकरण करने के लिए विषय एवं स्वरूप के पक्ष को आधार बनाया है।

डा. श्याम परमार लोक-गीतों के इस तरह से प्रकार मानते है :

लोक गीतों का सामान्य वर्गीकरणः

1 जातियों की दृष्टि से

2 संस्कारों एवं प्रथाओं की दृष्टि से

3 धार्मिक विश्वासों की दृष्टि से

4 कार्य के सम्बन्ध की दृष्टि से

5 रस सृष्टि की दृष्टि से [20]

श्री राम नरेश त्रिपाठी ने 'कविता कौमुदी' में लोक गीतों को निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकृत किया है ;

1) संस्कार संबंधी गीत

2) चक्की एवं चरखे के गीत

3) धर्म-गीत

4) ऋतुओं संबंधी गीत

5) कृषि संबंधी गीत

6) भिक्षा संबंधी गीत

7) मेलों, त्योहारों से संबंधित गीत

8) जाती गीत

9) वीर गाथाएं

10) गीत कथाएं

11) अनुभवी वचन [21]

डा. भूपेद्र सिंह खहिरा ने लोक काव्य का वर्गीकरण करने के लिए दो प्रमुख आधारों का आश्रय लिया है :-

1) संरचनात्मक आधार;

क) खुले काव्य रूप

ग) बँधे काव्य रूप

2) संचारात्मक आधार;

क) मौखिक

ख) क्रियात्मक[22]

डा. जसविंद्र सिंह के अनुसार समूचे लोक काव्य को लोक गीत नहीं माना जा सकता । उन्होंने लोक काव्य को तीन वर्गों में बाँटा है :-

क) प्रगीतक लोक काव्य

ख) वृत्तांतक लोक काव्य

ग) अर्ध-वृत्तांतक लोक काव्य

लोक-गीतों को वह प्रगीतक लोक काव्य के अंतर्गत रखते हैं । इसको वह लोक काव्य का एक बहु-चर्चित रूप मानते हैं ।

डा. करनैल सिंह थिंद, लोक गीतों को आठ श्रेणियों में वर्गीकृत करते हैं :-

1. अनुष्ठान गीत
2. कार्यरत गीत
3. प्रेम गीत
4. सूरमगती के गीत
5. नृत्य गीत
6. बाल-गीत
7. पेशावरों अथवा जातियों के गीत
8. विविध गीत

लोक गीतों की संचार प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए लोक गीतों का वर्गीकरण निम्नलिखित तौर पर किया जा सकता है :-

1. **मौखिक भेद :-**

1) कोमल काव्य :- बोलियाँ
2) नक्षख काव्य :- वार, कली, भेटा
3) चंचल काव्य :- टप्पा, जिंदुआ
4) त्रासदी काव्य :- हेअरा, कीरना, अलाहुणी
5) ठिठ काव्य :- सिठठ्णी, हेअरा, छंद पत्तल

2. **क्रियात्मक भेद :-**

1) लोक-गाथा
2) लोक-वार
3) घोड़ी, सुहाग, रीति गीत इत्यादि ।

लोक गीत का मौखिक भेद लचीला होता है, जिस को सामूहिक स्वीकृति प्राप्त होती है। समय, स्थिति एवं प्रसंग के अनुकूल मनुष्य अपनी अपनी रूचि के अनुसार इस में

थोड़ा बहुत परिवर्तन करता रहता है । 'बोलियां' खुशी के अवसर से संबंधित होने के कारण हर्षोल्लास के भाव का प्रतिनिधित्व करती हैं । यह मालवे का स्वीकृत रूप है । इस का गायन गिद्धा एवं भांगड़ा नृत्य शैलियों के साथ किया जाता है ।

किसी व्यक्ति के नक्षखों का वर्णन करने के लिए भेटा, वार एवं कली जैसे गायन रूपों का आश्रय लिया जाता है । इस के द्वारा खुशी, सम्मान एवं जोश से भरपूर भावों का संचार किया जाता है ।

जिंदुआ एवं टप्पा गायन रूप, लोक गीतों की एक ऐसी गायन शैली है जिसमें चंचल भावों की पेशकारी होती है ।

करूणामई भावों की प्रस्तुती के लिए हेयरा, कीरना एवं अलाहुणी जैसे लोक-गीत रूपों का प्रयोग किया जाता है । जब 'हेयरा' में संबोधन प्रत्यक्ष हो एवं आरंभ में हो तो वह ठिठ काव्य का अंग बन जाता है ।

लोक-गीतों के क्रियात्मक रूपों का प्रबंध कुछ कठोर होता है। इसमें अपनी इच्छा से कोई परिवर्तन नहीं किया जा सकता । इस के अंतर्गत ऐतिहासिक गाथाएं एवं वार गायन रूप आते हैं । मौखिक अथवा प्रवचनमुखी लोक गीतों में भाव बंधन मुक्त विधि के द्वारा प्रस्तुत होते हैं किंतु बंद रूपों में अथवा क्रियात्मक रूपों में इकहरापन एवं निरंतरता, भावों को एकाग्र रूप में प्रस्तुत करती है ।

सांस्कृतिक परिपेक्ष की दृष्टि से लोक गीतों का वर्गीकरण

लोक गीत किसी भी समाज के सभ्याचार के प्रस्तुतीकरण का एक माध्यम होते हैं । सभ्याचार में सभ्यता एवं संस्कृति दोनों ही निहित होते हैं । सांस्कृतिक परिपेक्ष की दृष्टि से मानवीय जीवन के विभिन्न पक्ष लोक गीतों का आधार बनते हैं । इन लोक गीतों की संरचना सामाजिक जीवन के साथ अंतर्संबंधित होती है । सांस्कृतिक परिपेक्ष की दृष्टि से लोक गीतों का वर्गीकरण निम्नलिखित ढंग से किया जा सकता है :-

1) मानवीय जीवन के स्वरूप का प्रस्तुतीकरण करने वाले लोक-गीत :-

मनुष्य नए नए रंग-ढंग में जीवन जीने की लोचा रखता है। वह खुशहाली एवं सुख से भरपूर जीवन बिताने के लिए कठिन मेहनत भी करता है। सांस्कृतिक संरचना के अनुसार मनुष्य एक समूह में रहता हुआ जीवन जीने का ढंग सीखता है। मानवीय जीवन का प्रस्तुतीकरण करने वाले लोक गीत निम्नलिखित पहलुओं से संबंधित होते हैं :-**क) जीवन एवं रहन-सहन :-** किसी भी राज्य की भूमि, वहां का ग्रामीण जीवन, खेत-खलिहान, रहन-सहन, पहरावा, वहां के नित्याप्रति जीवन से संबंधित प्रत्येक वस्तु का प्रत्यक्ष दर्शन वहां के लोक गीतों में होता है ।

ख) धर्म :- धर्म मनुष्य की जिंदगी का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। संपूर्ण भारतवर्ष में भिन्न भिन्न धर्मों के लोग मिल जुल कर रहते हैं । इसलिए धर्म का लोक गीतों में अभिव्यक्त होना स्वाभाविक है । हमारे धार्मिक रीति-रिवाज़ एवं लोक-विश्वास काफी मात्रा में इन लोक गीतों में रचे बसे हुए हैं । लोक धर्म का आधार लोक विश्वास होते हैं जो कि धार्मिक रीति-रिवाज़ों एवं अनुष्ठानों के द्वारा समाज में अपनी पकड़ बनाए रखते हैं । सभ्याचार को मूर्तिमान करते लोक गीत धार्मिक लोक गाथाओं के पात्रों का आश्रय लेकर मनोभावों को दर्शाते हैं ; जैसे कि गोपी चंद, हरिचंद, श्रवण, भरथरि हरि एवं पूरण इत्यादि ।

ग) त्योहार एवं ऋतुएं :- किसी भी राज्य के त्योहार एवं ऋतुओं से लोक गीतों का एक अटूट रिश्ता होता है। यह लोक-गीत त्योहारों एवं ऋतुओं के अवसर पर लोगों के हर्ष एवं उल्लास को प्रकट करते हैं। क्योंकि इन त्योहारों एवं खास कर ऋतुओं का मनुष्य के मन से गहरा संबंध होता है, अतः लोक-गीत इन मनोभावों को सहज रूप से अभिव्यक्त करते हैं ।

घ) हार-श्रृंगार :-हार-श्रृंगार हमारे सभ्याचार का एक महत्त्वपूर्ण अंग है जिसके द्वारा मनुष्य के व्यक्तिगत भावों की अभिव्यक्ति होती है । स्त्री के आभूषण, श्रृंगार की वस्तुएं, यहां तक कि वेश-भूषा भी लोक-गीतों का विषय होती है ।

मनुष्य की दिनचर्या से संबंधित लोक गीत जैसे कि खेतों में कार्य करता हुआ किसान, मेलों में हो रहा नौजवानों का शोरोगुल, लोरियां गाती हुई माएं इत्यादि सब में मनुष्य जीवन की उचित तस्वीर मिलती है ।

2) रिश्ता-नाता प्रबंध की प्रस्तुतीकरण वाले लोक-गीत

किसी भी क्षेत्र के सभ्याचार में रिश्ता-नाता प्रबंध का एक महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। यह रिश्ते केवल एक ज़ंजीर से बंधे नहीं होते बल्कि जीवन के भिन्न भिन्न पड़ावों पर यह एक दूसरे को प्रभावित भी करते हैं । इन रिश्तों की गहराई, पाकीज़गी, अहमियत, स्नेह, गिले शिकवे इत्यादि लोक गीतों के रूप में प्रस्तुत होते हैं । जैसे कि बहन-भाई, सास-बहू, ननद-भाभी, देवर-भाभी, बाप-बेटी, माँ-बेटी का रिश्ता इत्यादि।

3) मनोरंजन की प्रस्तुतीकरण वाले लोक-गीत

लोक गीतों के परिपेक्ष में सभ्याचार की जड़ें बहुत ही विशाल एवं गहरी है । वास्तव में सभ्याचार के द्वारा ही मनोरंजन होता है और यह मनोरंजन लोक खेल-तमाशे, लोक-नाट्य एवं लोक-कलाओं के रूप में किया जाता है ।

बचपन की खेलों से संबंधित बहुत से ऐसे लोक गीत मिलते हैं जो शिषु मन की अवस्था को प्रस्तुत करते हैं । लोक-नाट्य के अंतर्गत राम लीला, रास-लीला एवं लोक-गाथाओं से संबंधित लोक-नाट्य प्रस्तुत किए जाते हैं । प्रत्येक राज्य के प्रसिद्ध लोक नृत्य जैसे कि गिद्धा, भांगड़ा, लावणी, कजरी इत्यादि भी मनोरंजन का स्रोत है। इसी तरह बहुत से लोक गीत हमारी लोक कलाओं से संबंधित हैं जैसे कि मिट्टी के खिलौने बनाना, दीवारों पर बेल-बूटियां बनाना, फुलकारी, चरखा सजाना इत्यादि ।

4. भौगोलिक दृष्टि एवं प्रकृति चित्रण वाले लोकगीत

किसी क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति, उस क्षेत्र की सभ्याचारक रूपरेखा को प्रभावित करने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। चाहे वह प्रभाव प्रत्यक्ष रूप में हो अथवा अप्रत्यक्ष रूप में। मनुष्य का सामर्थ्य एवं शक्ति, उस की सृजनात्मक प्रकृति, उसकी वेशभूषा, उस का आचरण एवं कार्य-व्यवहार इत्यादि जीवन के महत्त्वपूर्ण पक्ष उसकी भौगोलिक स्थितियों एवं सामाजिक विरासत पर निर्भर करते हैं ।

जिस तरह अपने ऊपर लगे प्रतिबंधों को समाज के द्वारा स्वीकृत नियमों के अनुकूल ढाल कर मनुष्य अपना सभ्याचारक रूपांतरण करता है बिल्कुल उसी तरह गीतों के विषय वस्तु में मूल भावनाएं किसी सभ्याचारक समुदाय के अनुसार ढल कर प्रस्तुत होती है । इस तरह हम कह सकते हैं कि लोक-गीत लोक सभ्याचार की प्रस्तुती का एक विशेष एवं महत्त्वपूर्ण स्रोत होते हैं।

1.4 पंजाब का भौगोलिक एवं सांस्कृतिक परिवेश

भूमि की भीतरी एवं ऊपरी सतह का वैज्ञानिक अध्ययन भूगोल कहलाता है। कुछ भू-वैज्ञानिक भूगोल के अर्थक्षेत्र में धरती, मनुष्य एवं उसके व्यवसाय के अध्ययन को भी शामिल करते हैं, जब कि आधुनिक भू-वैज्ञानिक धरती से अधिक महत्त्व वातावरण को देते हैं।

1.4.1 भूगोल एवं जन-जीवन

बहुत से मानव वैज्ञानिक एवं समाज वैज्ञानिक इस बात पर बल देते हैं कि इर्द-गिर्द का वातावरण मनुष्य के जीवन पर अत्यधिक प्रभाव डालता है। मनुष्य की शारीरिक रूपरेखा, उसका व्यवसाय, उसकी मानसिक बनावट, भौगोलिक प्रभावों पर ही निर्भर करती है। मनुष्य एवं प्रकृति की संयुक्त शक्ति न केवल संस्कृति को जन्म देती है

बल्कि उसके अस्तित्व को बनाए रखने में भी मदद करती है। संत सिंह सेखों ने History of world civilization पुस्तक का अनुवाद करते हुए लिखा है;

> मनुख दी उर्जा अते योगता, उस दा पहरवा अते उस दा आचरण आदि जीवन दे महत्वपूर्ण पख वी भौगोलिक स्थितियां ते निर्भर करदे हन। [23]

भौगोलिक स्थितियां किसी क्षेत्र की सांस्कृतिक रूपरेखा निश्चित करने में कितना योगदान प्रदान करती है, इस संबंध में तीन धारणाएं मिलती हैं :-

क) पहला मत भौगोलिक स्थिति को सांस्कृतिक रूपरेखा निश्चित करने वाला प्राथमिक स्रोत मानता है। इस मत के समर्थक कुछ ऐसे पक्षों पर ज़ोर देते हैं जो मानवीय शक्ति से बाहर हैं जैसा कि पृथ्वी का चाँद एवं सूर्य से संबंध, पृथ्वी का विस्तार, खनिज पदार्थों का स्थान निर्धारण, भूमि के प्रकार, दरियाओं का अस्तित्व, विस्तृत भू-खंड एवं समुद्रीय क्षेत्र, मैदानी एवं पहाड़ी क्षेत्रों की रूपरेखा, नदियां एवं तालाब, समुद्र की लहरें एवं विद्युतीय शक्ति इत्यादि । इन पक्षों में परिवर्तन लाना मानवीय शक्ति है। 'बकल' ने 'History of civilization in England' में इस बात पर अधिक बल दिया है कि भौगोलिक तथ्यों का अत्यधिक प्रभाव किसी राष्ट्र की संस्कृति पर पड़ता है।

ख) दूसरे मत को मानने वाले, भौगोलिक स्थिति एवं संस्कृति के बीच किसी भी तरह का संबंध मानने से इन्कार करते हैं। उनका कहना है कि संपूर्ण राष्ट्र में कुछ इस तरह के कबीले भी हैं जो भौगोलिक हालातों के प्रभाव से दूर होते हैं । वे जहां भी जाते हैं उसी जगह की संस्कृति को अपना लेते हैं । पंजाब में भी ऐसे कबीले मिल जाते हैं जिन की भाषा एवं रस्म-रिवाज़ विलक्षण होने के बावजूद भी यह लोग हालात के अनुसार अपने आप को ढाल लेते हैं । इस के इलावा संस्कृति एवं सभ्याचार एक निरंतर गतिशील प्रक्रिया है जबकि भौगोलिक स्थितियों में परिवर्तन बहुत कम होता है । इस विचारधारा को मानने वाले किंगजले डेविस का मानना है कि;

जलवायु के दृष्टिकोण से यूरोप में पिछले पाँच शतकों से कोई परिवर्तन नहीं आया जब कि औद्योगिक क्रांति ने सामाजिक प्रणाली की रूपरेखा की बदल कर रख दी है । एक ही भौगोलिक वातावरण में भिन्न भिन्न प्रकार की संस्कृतियां अस्तित्व में आ सकती हैं एवं भिन्न-भिन्न वातावरणों में एक जैसी संस्कृतियां भी पनप सकती हैं।[29]

ग) तीसरा मत भौगोलिक हालतों के प्रभाव को न तो तुच्छ मानता है और न ही सांस्कृतिक रूपरेखा निश्चित करने वाला प्राथमिक एवं अंतिम तत्त्व ही स्वीकार करता है । इस मत के समर्थक भौगोलिक वातावरण को संपूर्ण वातावरण का ही एक अंग मानते हैं ।

'मैकाईवर' एवं 'पेज' के अनुसार;

मनुष्य के सांस्कृतिक एवं सभ्याचारक पक्ष को समझने के लिए केवल भौगोलिक स्थितियां ही नहीं बल्कि समस्त वातावरण को समझना आवश्यक होता है।[24]

परिणामस्वरूप हम यह कह सकते हैं कि भौगोलिक स्थिति संस्कृति को तो प्रभावित करती है किंतु इसको निर्धारित करने वाला प्राथमिक एवं एकाएक तत्त्व नहीं है । भौगोलिक स्थितियां संस्कृति के किसी पक्ष पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है तो किसी पक्ष पर अप्रत्यक्ष रूप में । इसलिए किसी क्षेत्र का सांस्कृतिक अध्ययन करते समय उसकी भौगोलिक स्थिति को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता ।

'संस्कृति' शब्द शाब्दिक अर्थों में जितना सरल लगता है, संकल्पात्मक पक्ष से वह उतना ही जटिल, गहरा एवं विशाल है । मनुष्य के सामाजिक अस्तित्व के कारण संस्कृति उस की एक विलक्षण प्राप्ति के रूप में जानी जाती है जो न केवल उसको प्रकृति के बाकी जीव-जंतुओं से अलग करती है, बल्कि विभिन्न मनुष्यों के बीच रहते हुए भी विभिन्नता के लक्षणों को निर्धारित करती है । संस्कृति मानवीय चेतना के पहले पड़ाव से ही अस्तित्व में आ चुकी थी, किंतु इसके वैज्ञानिक अध्ययन का कार्य

आधुनिक युग में शुरू हुआ । संस्कृति का अंग्रेज़ी पर्याय 'Culture' शब्द का प्रयोग प्रारंभ में कृषि एवं पशु पालन इत्यादि के अर्थों में होता था। बाद में पश्चिमी चिंतकों ने भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से 'कल्चर' का अध्ययन करके इसको मनुष्य जीवन की महत्त्वपूर्ण इकाई सिद्ध करने का प्रयत्न किया।

संस्कृति का अर्थ क्षेत्र स्पष्ट करने के लिए कुछ अंग्रेज़ी एवं अमेरिकन समाज वैज्ञानिकों ने प्रयत्न किए हैं । सबसे प्रथम प्रयत्न मानव वैज्ञानिक एडवर्ड.बी. टायलर की तरफ से किया गया। टायलर के अनुसार;
मनुष्य की विलक्षण योग्यताएं ही संस्कृति है, जो उसको समाज का एक हिस्सा होने से ही प्राप्त होती है।[25]

अमेरिकन वैज्ञानिक मानव हिरसकोवित्स संस्कृति को वातावरण का वह हिस्सा मानता है जिसका सृजन मनुष्य ने स्वयं किया हो अथवा मानवीय व्यवहार का सीखा हुआ हिस्सा ही संस्कृति है।[26]

अतः यहां पर एक बात स्पष्ट हो जाती है कि संस्कृति ग्रहण की जाती है न कि विरासत से प्रापत होती है ।

1.4.2 भौगोलिक स्थिति एवं संस्कृति का अंतःसम्बन्ध

संस्कृति किसी भी समाज की जीने की विधि होती है । मनुष्य का व्यक्तिगत विकास एवं उसकी रुचियां, विश्वास, खान-पान, वेश-भूषा एवं उसकी विचारधारा को वही समाज निर्धारित करता है जिसमें वह जन्म लेता है, बड़ा होता है एवं अंत काल में प्रवेश करता है। मनुष्य चाहे इस भूमि पर किसी भी क्षेत्र में विकसित हो रहा हो, उस का संबंध प्रकृति से बराबर बना रहता है। पृथ्वी के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में प्राकृतिक स्थितियां एक सी नहीं होती हैं। यही भिन्नता ही संस्कृति की रूप-रेखा को निर्धारित करने में अपनी भूमिका निभाती है । पृथ्वी के प्रत्येक क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियां

वहां के लोगों के जीवन को प्रभावित करती है । इसी तरह ही एक भिन्न भौगोलिक चौखटे में विकसित हो रही संस्कृति को दूसरे क्षेत्रों की संस्कृतियां भी भिन्न-भिन्न ढंगों से प्रभावित करती रहती हैं ।

पंजाब की संस्कृति के विलक्षण चित्र को सजाने संवारने में पंजाबी समाज की भौगोलिक सीमाओं एवं स्थितियों का विशेष योगदान रहा है । सत्य तो यह है कि पंजाबी संस्कृति के इतिहास को बनाने एवं संवारने में भी इस की भौगोलिक परिस्थितियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

1.4.3 पंजाब की भौगोलिक स्थिति एवं पंजाबी संस्कृति पर इसका प्रभाव

पंजाबी के सुप्रसिद्ध लेखक सुहिंदर सिंह बेदी पंजाब के इतिहास के बारे में लिखते है;

> जिस युग विच वेदां दी रचना होई, पंजाब सप्त सिंधू दे नाम नाल जाणिया जांदा सी, जो कि इरानी प्रभाव दे नाल हप्त हिन्दू बण गया। महाभारत, अग्नि पुराण अते ब्राहम्ण ग्रंथां विच पंच नद शब्द दा प्रयोग मिलदा है ।[27]

आज भी उस क्षेत्र को जहां पाँच दरिया सिंध दरिया में गिरते हैं, पंचनद कहा जाता है । पंजाब इसी पंच-नद का फारसी रूप है । गुरूबखश सिंह फ्रैंक के अनुसार;

> पंच+आब अर्थात पाँच दरियाओं की धरती । इस तरह पंजाब का नामकरण ही अपने आप में भौगोलिक विशेषता रखता है।[28]

1947 में जब भारत आज़ाद हुआ तो पंजाब भी टुकड़े-टुकड़े हो गया । इस पंजाब में कुल 18 ज़िले एवं 72 तहसीलें हुआ करती थीं । भारतीय पंजाब का पुनर्गठन 1966 ई में भाषा के आधार पर फिर से हुआ, जिसमें पंजाब के पास कुल 12 ज़िले बचे एवं डेढ़ दरिया रह गए।

संस्कृति का संबंध किसी जाति अथवा राष्ट्र की धरोहर के साथ होता है । इसलिए पंजाब की संस्कृति की बात करते समय हमें पंजाब का वह सारा क्षेत्र शामिल करना

होगा जिसने ऐतिहासिक प्रक्रिया के दौरान पंजाब के लोगों के जीवन का अथवा पंजाबियत का निर्माण करने में योगदान दिया है । इस क्षेत्र की भौगोलिक सीमा इस तरह बनती है।

डॉ जीत सिंह जोशी लिखते है;

> "उत्तर विच हिमाला परबत पंजाब अते पहाड़ी खेतर नू वख करदा है। पछम विच दरिया आदि काल तो ही पंजाब दी सीमा रहे हन। दखण पछम विच सिंध राज सिंध पार स्थित है। दखण विच राजस्थान दे मारूथल शामिल हन, पूर्व विच यमुना अते उत्तर पूर्व विच हिमाला दीयां शिवालिक पहाड़ियां हन"।[29]

इस पूरी सीमा योजना में पंजाब की संस्कृति के चिन्ह पूरी तरह विकसित रहे हैं । व्यक्ति का चरित्र अथवा आचरण मानव जाति का प्रमुख गुण है । पंजाबी लोगों के चरित्र निर्माण में इस की भौगोलिक स्थिति का विशेष योगदान रहा है । पंजाब के लोग दरिया दिल, गहरे, मैदानों की तरह सीधे सपाट, जिंदादिल एवं खुली ताज़ी हवा के समान ताज़गी से भरपूर होते हैं ।

पंजाबी लोगों का शोख अंदाज़, संकीर्णता रहित दृष्टिकोण, उदारता, उत्साहित किरदार, हमारे साहित्य एवं संस्कृति के विलक्षण गुण हैं। यह गुण पंजाब को इस की भौगोलिक स्थिति एवं ऐतिहासिक विशेषता की देन है ।

डॉ. सोहिन्द्र सिंह बेदी ने पंजाब को भारत का मुख्य द्वार मानते हुए इस की संस्कृति के ऊपर ईरानी, यूनानी, पार्थियन, तुर्क एवं मंगोलियन इत्यादि विदेशी हमलावर जातियों का प्रभाव माना है।[30] सीमावर्ती राज्य होने के कारण पंजाब के गुण अवगुण इसकी सांस्कृतिक विभिन्नता के लिए उत्तरदायी हैं।

पंजाब के पहाड़ भी पंजाबी संस्कृति को प्रभावित करते हैं। पंजाब के शीर्ष का छत्र हिमालय इस को नदियां एवं दरिया प्रदान करता है। इस की जलवायु, ऋतुएं एवं वर्षा

को प्रभावित करने वाला भी हिमालय ही है। हिमालय के वन ही पंजाब के लोगों को लकड़ी प्रदान करते हैं। हिमालय के उपवन पंजाब को फल देते हैं।

दरिया पंजाब की धरती का गहना है। भिन्न-भिन्न दरियाओं के कारण ही पंजाबी संस्कृति में अनेकों उप-संस्कृतियां मिलती हैं। दरियाओं के अस्तित्व के कारण ही पंजाबी संस्कृति प्रभावित होती है, जैसे कि :-

क) पंजाब की धरती दरियाओं के बहाव के साथ लाई गई मिट्टी के साथ बनी है। इसीलिए यह अत्यंत उपजाऊ धरती है। यही कारण है कि यहां के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है जिसमें यहां के लोगों को कुछ न कुछ सृजनात्मक कार्य करने के लिए बहुत सा खाली समय मिल जाता है। यही सृजन उनका सांस्कृतिक सरमाया है।

ख) सोहिन्द्र सिंह बेदी मानते हैं;

> वर्तमान पंजाब दे कोल तिन खेतर माझा, मालवा अते दोआबा हन। जो दरियावां दे कारण विलखणता रखदे हन। ऐहना तिनां खेतरां दे रस्म रिवाज, रीतियां, प्रतख रूप विच भिन्नता रखदीयां हन ।[31]

ग) पंजाब के दरिया केवल पंजाबी की धरती को ही नहीं सींचते बल्कि पंजाबी संस्कृति एवं सभ्याचार में से नीरसता एवं शुष्कता के भी समाप्त करते हैं । जैसे कि दरिया चिनाब प्रेम का प्रतीक है जबकि रावी दरिया स्वतंत्रता संग्रामियों के साथ संबंध रखने वाला दरिया माना जाता है।

1.4.4 पंजाब की संस्कृति

पंजाब की संस्कृति एक मिश्रित संस्कृति है । इसका मुख्य कारण यह है कि आर्य लोगों के आने से लेकर अंग्रेजों के राज्य तक यूनानी, तुर्क, मंगोलियन इत्यादि बहुत सी नस्लों एवं जातियों ने समय-समय पर पंजाब में निवास किया जिसके कारण यहाँ की संस्कृति पर बाहरी संस्कृतियों का प्रभाव पड़ता रहा। किंतु इस के बावजूद पंजाब की संस्कृति ने अपनी मौलिकता एवं पंजाबियत को हमेशा कायम एवं जीवित रखा है।

1.4.5 पंजाबी संस्कृति के सामाजिक-सांस्कृतिक स्रोत

पंजाबी संस्कृति के मूल स्रोत दो तरह के हैं-1) सामाजिक - जिसमें धर्म, इतिहास, भूगोल, भाषा, साहित्य एवं ललित कलाएं शामिल हैं । 2) सांस्कृतिक-जिसमें लोकधारा शामिल है। पंजाब का लोक साहित्य, लोक कलाएं, लोक विश्वास, रीति-रिवाज़, लोगों में प्रचलित मनोरंजन के ढंग इत्यादि सभी लोक धारा का अंग है ।

1) धर्म :- धर्म को संस्कृति का जन्मदाता माना जाता है । धर्म सांसारिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है । इस दृष्टिकोण के अनुसार यह व्यवहार एवं नियमों की रचना करता है एवं एक संगठन को प्रस्तुत करता है, जोकि अन्य कार्यों के इलावा अपने अनुयायियों में एकता पैदा करता है। धर्म का यह पक्ष संस्कृति के बौद्धिक एवं मानक अंगों के साथ संबंध रखता है।

धर्म एक सांस्कृतिक संस्था होने के कारण पंजाबी संस्कृति का मूल स्रोत है। पंजाबी संस्कृति के विकास एवं परिवर्तन में समय-समय पर भिन्न-भिन्न धर्मों ने विशेष भूमिका निभाई है। हिंदू धर्म के प्राचीन रस्म-रिवाज़, वहम-भ्रम एवं उनकी धार्मिक परम्पराओं का मुख्य स्रोत उनके प्राचीन धार्मिक ग्रंथ ही हैं जिनमें से उस समय के लोगों का सांस्कृतिक चित्रण देखने को मिलता है।

इसी तरह इस्लाम धर्म के प्रवेश के साथ मुस्लिम संस्कृति भी पंजाबी संस्कृति का हिस्सा बनी। मुस्लिम संस्कृति का मुख्य चित्रण उनके धार्मिक नेताओं, प्रवर्त्तकों एवं सूफी फकीरों के कलाम में मिलता है। जैसे कि बाबा फरीद जी के श्लोकों में पंजाबी संस्कृति का जीवन्त चित्रण देखने को मिलता है ।

सिक्ख धर्म की नींव गुरु नानक देव जी ने रखी । सिक्खों के धर्म ग्रंथ 'गुरु ग्रंथ साहिब' में पंजाबी जीवन एवं संस्कृति की तस्वीर प्रस्तुत की गई है।

2) इतिहास :- पंजाब का इतिहास भी यहां की संस्कृति का मूल स्रोत है। पंजाब में पश्चिम की तरफ से आने वाले आर्य, यूनानी, मुगल, पठान इत्यादि लोगों की भाषा, वेश-भूषा, खान-पान, रस्म-रिवाज़, धर्म, कला दर्शन इत्यादि पंजाब की संस्कृति में अच्छे से घुल-मिल गए हैं । इस तरह वह न तो खुद पंजाबी संस्कृति से प्रभावित हुए बल्कि पंजाबी संस्कृति को प्रभावित भी किया। इसके इलावा पुरातत्व इतिहास एवं वस्तुओं से भी हमें पंजाबी संस्कृति के बारे में ज्ञान प्राप्त होता है। जो सामग्री मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, संघोल एवं सुचेत से प्राप्त हुई है वहां से पंजाबी संस्कृति की प्राचीनता के बारे में जानकारी तो मिलती है, साथ ही पंजाबी लोक विश्वासों की जड़ें भी ढूंडी जा सकती हैं ।

3) भूगोल :- पंजाब की भौगोलिक स्थितियों ने भी पंजाबी संस्कृति को बहुत प्रभावित किया। यहां का वातावरण जलवायु, पाँच दरिया, पेड़-पौधे, यहां की धरती पर पैदा होने वाली फसलें एवं इनमें से गुज़र कर जाती हुई हवा हमारे मन-मस्तिष्क पर अद्भुत प्रभाव डालती हैं, क्योंकि प्रकृति हमारे जीवन को अत्यधिक प्रभावित करती है एवं प्रकृति ही मानवीय संस्कृति के भौतिक, मानक एवं बौद्धिक पक्षों का निर्माण करती है ।

4) भाषा एवं साहित्य :- पंजाबी संस्कृति का प्राथमिक आधार पंजाबी भाषा है। यह हमारी मातृभाषा ही होती है जिसमें हम अपने मन के भावों को प्रकट करते हैं। भाषा का संबंध किसी जाति अथवा धर्म से नहीं होता बल्कि एक सांस्कृतिक क्षेत्र में रहने वाले उन सभी लोगों की भाषा एक होती है। लोगों के मनोभाव, सुख-दुख, आशा-निराशा, इत्यादि सभी भाषा की ओढ़नी ओढ़ कर साहित्य का रूप धारण करते हैं । इस तरह पंजाबी लोगों के मनोभाव, आकाँक्षाएं, वीरता एवं ज़िंदादिली का स्रोत पंजाबी साहित्य ही है। साहित्य को ही संस्कृति का दर्पण माना गया है। पंजाबी साहित्य पंजाबी संस्कृति की अभिव्यक्ति करता है।

5) ललित कलाएं :- सौंदर्य को मानने की इच्छा ने कला को जन्म दिया। लोक कला का सबसे बड़ा गुण यह है कि यह सौंदर्य रस की तृप्ति करती है। ललित कलाएँ प्रत्येक घर का सौंदर्य एवं शृंगार हैं । सोहिन्द्र सिंह बेदी के अनुसार;

> लोकां दे घरां विच प्रयोग होण वालीयां दरीयां, गलीचे, फुलकारीयां, लकड़ी जां हाथी दंद तों बणीयां घरेलू कला कृतियां, मिट्टी जां धात तों बने बरतन अते ओहनां ते कीती गई नक्काशी अते कंधां ते बणे होए फुल्ल, चित्र अते देवी देवतियां दीयां मूरतां, ऐह सारीयां कलावां साडे जीवन विच सुन्दरता बिखेरदीयां अते साडीयां कला रूचियां नू संतुष्ट कर दिंदीयां हन।[32]

इन्हीं कलाओं से हमें पंजाबी संस्कृति की जानकारी मिलती है।

लोकधारा :- लोकधारा पंजाबी संस्कृति का मूल स्रोत है। यही पंजाबी संस्कृति की धरोहर है। इसमें लोक साहित्य, कला, लोक विश्वास, रस्म रिवाज़, लोक जीवन में प्रचलित खेल-तमाशे इत्यादि लोक जीवन से जुड़ी हुई सामग्री आ जाती है ।

लोक साहित्य में लोक काव्य, लोक कहानियां, मुहावरे, कहावतें इत्यादि शामिल हैं जिनमें पंजाबी जीवन का सही चित्रण देखने को मिलता है।

लोक गीतों में संपूर्ण पंजाबी संस्कृति का चित्रण होता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक का पंजाबी जीवन लोक गीतों में प्रस्तुत किया गया है। यही लोक गीत व्यक्ति के सुख-दुख एवं हर्ष-शोक की अभिव्यकित करते हैं ।

डॉ बलबीर सिंह पूनी के अनुसार;

> लोक विश्वास, वहम भ्रम, शगन अपशगन, जादू टूणे, रस्म रिवाजां दे अध्ययन तों सानूं पंजाबी लोक जीवन दे नितापृति जीवन दी जानकारी प्राप्त हुंदी है। हजारां सालां तों ऐही धार्मिक विश्वास साडी सभ्यता अते सभ्याचार दा हिस्सा हन। [33]

यहां यह बात स्पष्ट हो जाती है कि पंजाबी लोकधारा पंजाबी संस्कृति एवं सभ्याचार का ऐसा स्रोत है जिस मे हमें पंजाबी संस्कृति का सही चित्रण मिलता है।

1.5 पंजाब की लोक संगीत परंपरा : उत्पत्ति एवं विकास

लोक कलाओं के क्षेत्र में लोक संगीत का अपना विशेष महत्त्व है। लोक संगीत की तुलना एक ऐसे सदाचारी नियम से की जा सकती है जो कि आत्मा में समता पैदा कर मन को पंख लगा कर उड़ने की शक्ति देता है। वास्तव में संगीत में एक ऐसी शक्ति है कि यह निराश मन को हर्षोल्लास से भर देता है।

पंजाब में लोक संगीत की धारा प्राचीन काल से ही निरंतर चलती आ रही है। हमारी पौराणिक गाथाओं में मल्हार राग द्वारा वर्षा का होना, दीपक राग द्वारा अग्नि प्रज्जवलित होना, कृष्ण जी द्वारा मुरली के मधुर स्वर द्वारा पशु पक्षियों को एवं गोपियों को मंत्रमुग्ध करने की कहानियां प्रचलित हैं। कुछ पौराणिक कथाओं में नारद एवं उनकी वीणा का भी ज़िक्र मिलता है। गुरू नानक का साथी भाई मर्दाना की रबाब, गुरूवाणी गायन प्रथा में एक परंपरा का रूप धारण कर चुकी है। गुरूवाणी कीर्तन हमारी रूह में एक तरन्नुम सा छेड़ देता है । लोक संगीत का महत्त्व, पंजाब में गुरूवाणी के अलावा मध्यकाल के किस्सों, सूफी काव्य एवं आधुनिक काव्य को प्रभावित करने में भी है।

पंजाब में लोक संगीत परंपरा को लोकप्रिय बनाने में धर्म ने अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यहां के मंदिरों एवं गुरूद्वारों में नितापृति संगीत का प्रवाह चलता है। हिंदुओं एवं सिक्खों में यह परंपरा सदियों से चली आ रही है। श्री हरिमंदिर साहिब में भी रबाबी संगीतकारों द्वारा कीर्तन होता रहा है। यहां तक कि इस क्षेत्र में ढाडियों द्वारा वार-गायन परंपरा ने भी अपनी एक अलग ही पहचान बना ली है।

पंजाब के लोक-संगीत को प्रमुख तौर पर पंजाब के लोक-गीतों के साथ जोड़ा जाता है। पंजाब के लोक-गीतों में यहां के लोक जीवन की झलक प्रत्यक्ष रूप से देखी जा

सकती है। लोक गीतों की बड़ी संख्या संस्कारों, रीति-रिवाज़ों, त्योहारों एवं देवी देवताओं से संबंधित है। यह गीत पूजा की विधियों एवं धार्मिक विश्वासों के साथ भी जुड़े हुए हैं। इन गीतों में पुत्र का जन्म, नामकरण, मुण्डन, जनेऊ, विवाह इत्यादि शामिल है। यहां तक कि मृत्यु से संबंधित लोक गीत भी अलाहुणियां एवं कीरना इत्यादि के रूप में देखे जा सकते हैं।

ऋतुओं एवं त्योहारों से संबंधित लोक गीतों में वसंत पंचमी, सावन, रक्षा बंधन, होली, बैसाखी, लोहड़ी इत्यादि के गीत शामिल हैं। पंजाब के लोक-गीतों की सबसे बड़ी संख्या प्रेम गीतों की है। इन गीतों में माहिया, टप्पे, बोलियां, जिंदुआ, ढोला, इत्यादि का नाम लिया जा सकता है। लोक नृत्यों को भी लोक संगीत के बिना अधूरा समझा जाता है। गिद्धा, भांगड़ा, धमार, झूमर, लुड्डी इत्यादि के साथ भी बोलियां एवं टप्पे गाए जाते हैं। लोक गीतों की एक अन्य श्रेणी बच्चों के गीतों की भी है। जैसे कि लोरी, कीकली, थाल एवं पत्तल इत्यादि।

पंजाब में पेशावर जातियां जैसे कि तेली, धोबी, आजड़ी, जोगी, सपेरे, मिरासी, भाँड, गुज्जर, कुम्हार, इत्यादि ने अपने एक सीमित से घेरे में भी लोक गीतों का एक अलग ही संसार बसाया हुआ है।

पंजाब के जीवन का शायद ही कोई पक्ष ऐसा हो जिससे संबंधित लोक गीत न मिलते हों । डा. महेन्द्र सिंह रंधावा एवं देवेन्द्र सत्यारथी के अनुसार;

> ‘‘पंजाब दी संस्कृति इक गांदी, नचदी अते जूझदी होई संस्कृति रही है अते पंजाबी लोक गीत इसदे जन्मजात अमानतदार हन।[34]

इन लोक गीतों में प्रस्तुत किए गए भावुक जज़्बे, अधूरी आकांक्षाएं, दुख सुख के हाव-भाव एवं इस की सांगीतिक धुनों में मधुरता एवं रसिकता के गुण प्रत्यक्ष रूप से समाने आते हैं। इन गीतों की साहित्यक, सामाजिक, सभ्याचारक एवं ऐतिहासिक महत्ता

को कभी भी अनदेखा नहीं किया जा सकता। डा. जसविंद्र सिंह ने तो पंजाबी लोक गीतों के संबंध में अपनी भावना इस तरह से प्रकट की है कि पंजाबी लोक गीतों को लोक-काव्य कह दिया जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। उनके अनुसार;

> ''लोक काव विच गाए जान दी समरथा अते गीत दी बनावट दे कुछ तत्त जरूर हन पर समुच्चे लोक काव नूं लोक गीत मन्न लैणा इक तर्कहीन दृष्टि अते इक अंशिक जानकारी दा नतीजा है।[35]

डा. महेन्द्र सिंह रंधावा एवं देवेंद्र सत्यारथी के शब्दों में;

> ''पंजाब दे गीतां द्वारा असीं आपनी सभ्यता नाल रूबरू हुंदे हां । ऐह परंपरा साडे दिलां नू छूह जांदी है अते देश प्रेम नाल ओत प्रोत कर देंदी है।[36]

1.5.1 पंजाबी लोक संगीत परंपरा की विशेषताएं

पंजाबी लोक संगीत की अपनी एक अलग ही महक है। यह परंपरा अत्यंत विशाल एवं अमीर परंपरा है। इस में पंजाब की आत्मा बसती है। पंजाब के लोक संगीत में पंजाब का सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक पक्ष स्पष्ट रूप में झलकता है। पंजाबी लोक संगीत की इसी विशाल परंपरा को मुख्य रखकर यह कहा जाता है कि एक पंजाबी गीतों में ही जन्म लेता है, लोरियों और कीकलियों में पलता बढ़ता है, घोड़ियों, सिठ्ठणियों एवं गिद्धों में ब्याहा जाता है एवं उसका अंतिम संस्कार भी कीरनों के द्वारा लोक गीतों में ही होता है।

पंजाबी लोक गीत परंपरा के संदर्भ में उस पंजाबी संगीत परंपरा का अध्ययन भी ज़रूरी है जिसका सृजन विशेष रूप में पंजाबी लोक गीतों से प्रभावित हो कर हुआ है। इस तथ्य से पंजाब का संगीत से जुड़ा हुआ वर्ग भलीभांति वाकिफ़ है कि आसा सिंह मस्ताना, पूरण शाहकोटी, कुलदीप माणक, सुरेंद्र कौर, प्रकाश कौर, नरिंदर बीबा, वडाली ब्रदर्ज़, बर्कत सिद्धू, साबर कोटी, सरदूल सिकंदर, गुरदास मान, हंस राज हंस इत्यादि सभी गायक कलाकारों ने जिस गायन परंपरा को आगे बढ़ाया है वह निश्चित

ही पंजाबी लोक संगीत के सनातन तत्त्वों से प्रभावित है। इन सब कलाकारों ने शुद्ध लोक गीतों को भी गाया है एवं साथ ही साथ नंद लाल नूरपुरी, शिव बटालवी, धनी राम चात्रिक, सुरजीत पातर एवं अन्य कवियों की मनमोहक रचनाएं भी गाई हैं जो कि पंजाबी लोक संगीत गायन परंपरा के प्रभाव का ही नतीजा है।

जैसे-जैसे जीवन में परिवर्तन होता है, वैसे वैसे परंपरा भी आगे चलती है। हमारे आरंभ के पंजाबी लोक गीत, खेतों की बिजाई, कोहलू चलाना, चरखा कातना, इत्यादि गतिविधियों से जुड़े हुए हैं। जैसे जैसे गांवों से शहरों की तरफ, कच्ची गलियों से पक्की सड़कों की तरफ, बैलों से ट्रेकटरों का सफ़र शुरू हुआ तो इन सभी परिवर्तनों का लेखन कुछ ऐसे कवियों ने किया जिनके ऊपर प्राचीन लोक गीतों का प्रत्यक्ष प्रभाव झलकता है। इस संदर्भ में नंद लाल नूरपुरी का नाम वर्णनीय है.।

भारत के किसी भी क्षेत्र के लोक संगीत में माधुर्य, सरल भाव, सादगी इत्यादि सभी गुण अनुभव किए जा सकते हैं किंतु पंजाब के लोक संगीत में यह सभी गुण भरपूर मात्रा में मिलते हैं। पंजाब की लोक संगीत परंपरा हमारी सांस्कृतिक कदरों कीमतों को हमेशा संभाल कर ही चलती रही है। पंजाब के लोक संगीत में धुनों की बनावट, वाद्यों का प्रयोग, शब्दों का सलीका, इन सब तत्त्वों ने पंजाबियों के जीवन में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि पंजाबी लोक संगीत परंपरा में माँ की ममता, बहन भाई का प्रेम, बड़े बुजुर्गों का सम्मान, प्रेम की मर्यादा एवं पवित्रता, हर्ष एवं मस्ती सब कुछ देखने को मिलता है। यह परंपरा हमारे संस्कारों की पूँजी है। इसको संभालना एवं प्रदूषण रहित रखना हम सब की ज़िम्मेदारी है।

1.6 विषय वस्तु का सामान्य परिचय

लोक संगीत एक ऐसी परम्परागत धरोहर है जिसकी रक्षा वहीं पवित्र आत्माएँ कर सकती हैं जिन्हें स्वयं ईश्वर ने सब्र एवं संतोष जैसे गुण प्रदान किए हैं। आज के युग

में भूमि, जल एवं पवन, जिनको माँ, पिता एवं गुरू का दर्जा दिया गया है, को प्रदूषण ने मलिन कर दिया है। यही नहीं, जीवन का हर एक पहलू इस प्रदूषण का शिकार हो चुका है । ऐसे समय में हम सब उन पवित्र आत्माओं को कोटि-कोटि प्रणाम करते हैं, जिन्होंने हमारे लोक-संगीत को इस प्रदूषण से सुरक्षित करने का प्रयत्न किया है एवं अपनी अमूल्य गायकी के द्वारा इसको संभाल कर रखा है।

पंजाबी लोक गायकी को प्रगति की ओर ले जाने, लोगों तक पहुँचाने एवं समय के साथ-साथ अग्रसर करने में लोक-गायकों एवं गायिकाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। जिस तरह हर क्षेत्र में स्त्रियां पुरूषों के साथ ही नहीं बल्कि उनसे भी आगे बढ़कर कार्य कर रही हैं, उसी तरह लोक-गायकी के क्षेत्र में भी स्त्रियों का योगदान पुरूषों से भी अधिक रहा है। ऐसी ही एक लोक-गायिका है गुरमीत बावा, जिन्होंने लोक-संगीत की पवित्रता एवं शुद्धता को हमेशा से बनाए रखा है। किसी भी तरह की मिलावट एवं प्रदूषण से सुरक्षित रखकर लोक-संगीत को जन-साधारण में प्रचारित एवं प्रसारित किया है। यहां तक कि दूसरे देशों में भी अपनी गायकी के द्वारा लोक-गीतों को लोक-प्रिय बनाया। गुरमीत बावा जैसी एक विलक्षण गायिका का पंजाब के लोक-संगीत के प्रति एक बहुमूल्य योगदान को उद्घाटित करने के लक्ष्य से इस शोध कार्य का विषय लिया गया, 'पंजाब के लोक-संगीत के अंतर्गत गुरमीत बावा के गीतों का सांगीतिक एवं सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन।' गुरमीत बावा का गाया हुआ प्रत्येक गीत हमारे समाज एवं संस्कृति के प्रत्येक पहलू से संबंधित है। यही कारण है कि गुरमीत बावा की गायकी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से हमारे समाज एवं संस्कृति को प्रभावित करती है। इन सभी तथ्यों का अध्ययन करने हेतु ही शोधार्थी द्वारा इस विषय का चयन किया गया है।

संदर्भ

1. रणजीत सिंह, 'सभ्याचार पत्रिका, अंक 12, पंजाबी यूनीवरसिटी, पटियाला, पृष्ठ 35।
2. V.V. Bhide, A concise Sanskrit English Dictionary of Indo-Aryan languages, Pages 220-221. अनु
3. हरदेव बाहरी, बृहत हिंदी कोष, पृष्ठ 324
4. डा. सोहिन्द्र सिंह वणजारा बेदी, पंजाब दी लोकधारा, नैशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, दिल्ली, 1973, पृष्ठ 159
5. The International Folk music Council, London 1952,(Source Inernet.)
6. Rhodes, mfolkie.tripod.com, 28.07.2017
7. Folk Music, www.thefreedictionary.com
8. Folk Music, www.theoxforddictionaries.com
9. श्री प्यारे लाल जी माल, ''शास्त्रीय एवं लोक संगीत पर एक तुलनात्मक दृष्टि'', 'निबंध संगीत', पृष्ठ 86.
10. डा. गुरनाम सिंह, 'पंजाबी लोक संगीत विरासत', पृष्ठ 8
11. डा. यशपाल शर्मा, 'गायन कला', पृष्ठ 47
12. Encyclopedia Brittanica – Vol. (X)
13. डा. गुरमीत सिंह, ''लोक संगीत विच लोक गीतां दी भूमिका अते समाजिक प्रसंगिकता, सभ्याचार पत्रिका, लोक संगीत विशेषांक, (2013) पंजाबी यूनी. पटियाला, पृष्ठ 53
14. The Macmillan Encyclopedia of music and musicians, compiled and edited by Alberd. E Wier, The Macmillan Company, New York, 1938, RB597.
15. डा. करनैल सिंह थिंद, ''पंजाब का लोक विरसा, भाग 1, पृष्ठ 34.

16. डा. रशपाल सिंह, 'पंजाबी लोक संगीत प्रकाशनावाँ, विषा वस्तु, सार्थकता अते संभावनावाँ', सभ्याचार पत्रिका, लोक संगीत विशेषांक 2013, पंजाबी यूनी. पटियाला, पृष्ठ 205
17. संगीत पत्रिका, (लोक संगीत अंक), संगीत कार्यालय हाथरस, यू.पी. पृष्ठ 55
18. पंजाबी लोकधारा विश्वकोष. भाग-8, पृष्ठ 2029.
19. डा. करनैल सिंह थिंद, 'लोकयान ते मध्यकालीन पंजाबी साहित्य, पृष्ठ-137
20. डा. श्याम परमार, 'भारतीय लोक साहित्य, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 1954 पृष्ठ 64.
21. राम नरेश त्रिपाठी, 'कविता कौमुदी, भाग पाँचवां, पृष्ठ 45.
22. डा. भूपेन्द्र सिंह खैहरा, 'लोक धारा, भाषा ते सभ्याचार, पृष्ठ 50.
23. संत सिंह सेखो, विश्व सभ्यता दा इतिहास अनु., पृष्ठ 21
24. सविंद्र जीत कौर, समाज विज्ञान नाल जाण पछाण अनु. पृष्ठ 158
25. E.B. Tylor, Primitive culture, Pg-1
26. Herskovits Melville, Cultural Anthropology, Pg-305
27. सोहिन्द्र सिंह बेदी, 'पंजाब दी लोकधारा' पन्ना 3
28. गुरबख्श सिंह फरैंक, 'सभ्याचार मुढली जाण पछाण', पन्ना 89
29. जीत सिंह जोशी, 'सभ्याचार अते लोकधारा', पन्ना 33
30. सोहिन्द्र सिंह बेदी, 'पंजाब दी लोकधारा', पन्ना 1
31. सोहिन्द्र सिंह बेदी, 'पंजाब दी लोकधारा', पन्ना 2
32. सोहिन्द्र सिंह बेदी, पंजाब दी लोकधारा', पन्ना 214-15
33. बलबीर सिंह पूनी, ''पंजाब दी लोकधारा अते सभ्याचार', पन्ना 47
34. डा. महेन्द्र सिंह रंधावा, देवेन्द्र सत्यारथी, 'पंजाबी लोक गीत, पृष्ठ 25.
35. डा. जसविन्द्र सिंह, 'पंजाबी लोक साहित्य शास्त्र, पृष्ठ 42.
36. डा. महेन्द्र सिंह रंधावा, देवेन्द्र सत्यारथी, 'पंजाबी लोक गीत', पृष्ठ 85.

2. साहित्य का पुनरावलोकन एवं अनुसंधान कार्य विधि

2.1 शोध का उद्देश्य एवं सार्थकता

प्रस्तुत शोध का विषय अपने आप में पूर्ण रूप से सार्थक है। गुरमीत बावा जैसी महान लोक गायिका की गायन शैली एवं उनके द्वारा गाए हुए शुद्ध पंजाबी लोक गीतों का किसी भी पक्ष से अध्ययन अभी तक नहीं किया गया। इसलिए गुरमीत बावा की एकल रूप में चर्चा करते हुए उनके गीतों का सांगीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष से अध्ययन करना ही इस विषय का सर्वप्रथम उद्देश्य है। निम्नलिखित तथ्यों अथवा उद्देश्यों को पूरा करने हेतू ही शोधार्थी द्वारा इस विषय का चयन किया गया;

1. राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पंजाबी लोक-गायिका गुरमीत बावा की व्यक्तिगत एवं एकल रूप में चर्चा करना।
2. गुरमीत बावा के गायन में कुछ ऐसे परम्परागत गीतों को प्रकाश में लाना, जो जन-साधारण की जुबां पर नहीं आ सके।
3. गुरमीत बावा की विलक्षण गायन शैली की चर्चा करते हुए उनके कुछ अनछुए एवं अनसुने पक्षों को उद्घाटित करना।
4. गुरमीत बावा की गायन शैली का समकालीन गायिकाओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. गुरमीत बावा के गाए हुए गीतों का सांगीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन करते हुए उनका समाज एवं संस्कृति पर पड़े प्रभाव को दर्शाना।

2.2 साहित्य का पुनरावलोकन

प्रत्येक शोध कार्य को आरंभ करने से पूर्व उससे संबंधित साहित्य का अध्ययन, चयनित समस्या के बारे में विशिष्ट जानकारी प्राप्त करने में सहायक होता है। अध्ययन के दौरान ऐसी अनेकों परिस्थितियों अथवा समस्याओं का शोधकर्ता को सामना करना पड़ता है, जिन का समाधान करने हेतु निर्धारित योजना के विकल्प का

अन्वेषण करना पड़ता है। इस प्रकार शोधकर्ता साहित्य के पुनरावलोकन की मदद से यह जानने का संपूर्ण प्रयास करता है कि विभिन्न परिस्थितियों में वह अध्ययन को किन-किन दिशाओं में मोड़कर अभीष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति कर सकता है।

पुनरावलोकन से अभिप्राय है, वह विभिन्न प्रकार की पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएं, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध ग्रंथ, ज्ञान कोष तथा अभिलेख, जिनके अध्ययन से शोधकर्ता अपनी समस्या का चयन कर सकता है, परिकल्पना का निर्माण कर सकता है, एवं अपने अध्ययन की प्ररचना बना कर अपने कार्य को आगे बढ़ा सकता है। साहित्य के पुनरावलोकन से शोधकर्ता को इस बात का ज्ञान हो जाता है कि सैद्धान्तिक व क्रियात्मक दृष्टि से कितना कार्य, किस विधि से किया जा चुका है तथा उससे क्या निष्कर्ष निकल चुके हैं।

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए भी साहित्य का पुनरावलोकन किया गया जो निम्नलिखित हैं:-

1. सन् 1996 में गुरमीत बावा की सुपुत्री लाची बावा के द्वारा एम.फिल. की शोध उपाधि हेतु एकालेख प्रस्तुत किया गया, जिसमें गुरमीत बावा के व्यक्तित्व, गायन शैली एवं लोक संगीत से संबंधित उपलब्धियों का ज़िक्र किया गया। परंतु इस में उनके गाए हुए गीतों का सामाजिक सांस्कृतिक, धार्मिक अथवा किसी भी पक्ष में अध्ययन नहीं किया गया।
2. सन् 1999 में श्रीमति अल्का पांडे द्वारा 'Folk Music and Musical Instruments' शीर्षक के अंतर्गत एक पुस्तक प्रकाशित की गई जिसमें पंजाब के प्रमुख लोक वाद्यों के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी गई है । इस पुस्तक में पंजाब के कुछ प्रमुख लोक गायकों के विचार भी प्रस्तुत किए गए हैं । गुरमीत बावा की लोक गायकी में चिमटा, अल्गोज़े, मट्टियाँ जैसे परंपरागत लोक वाद्यों का प्रयोग देखने व सुनने को मिलता है । इसलिए गुरमीत बावा के विचार भी

इस पुस्तक में शामिल किए गए हैं। उनके विचार के अनुसार अल्गोज़ा एक कठिन वाद्य है जिसमें केवल तीन स्वर होते हैं। आज की लोक-गायकी में चिमटा, अल्गोज़ा जैसे परंपरागत वाद्य लुप्त होते जा रहे हैं। उनके विचारानुसार किसी वाद्य को तो बदला जा सकता है लेकिन लोक-गीत अथवा लोक-संगीत में किसी तरह की Improvisation अथवा innovation की इजाज़त नहीं है। अल्का पांडे की यह पुस्तक पहली बार USA में प्रकाशित की गई। इस पुस्तक में भी केवल परंपरागत लोक वाद्यों के बारे में चर्चा की गई है।

3. सन् 2003 में पंजाबी के एक सुप्रसिद्ध लेखक निंदर घुगियाणवी द्वारा 'साडीयां लोक गायिकावाँ' शीर्षक के अंतर्गत एक पुस्तक प्रकाशित हुई जिसमें पंजाब की प्रसिद्ध लोक गायिकाओं के बारे में जानकारी दी गई है । इन लोक गायिकाओं में गुरमीत बावा जैसी विख्यात गायिका का नाम अग्रणी है। किंतु इस पुस्तक में भी समस्त लोक गायिकाओं की तरह गुरमीत बावा का जिक्र भी संक्षिप्त रूप में किया गया है एवं उनके गाए हुए गीतों का किसी भी पक्ष से अध्ययन नहीं किया गया।

4. सन् 2011 में पंजाबी ट्रिब्यून में सिमीप्रीत द्वारा लिखित लेख प्रकाशित हुआ जिसका शीर्षक था, 'लम्मी हेक दी मलिका गुरमीत बावा' प्रस्तुत लेख में भी गुरमीत बावा की गायकी की विशेषताओं के बारे में बताया गया है। इस लेख का निष्कर्ष भी यहीं है कि गुरमीत बावा एक ऐसी गायिका है जिन्होंने लोक गीतों के शुद्ध रूपों को जन साधारण के समक्ष प्रस्तुत करके लोक गीतों की माँ कहलाने का सम्मान हासिल किया।

5. सन् 2011-12 में भुपिंदर कौर की तरफ से एम. फिल की उपाधि हेतू गुरू नानक देव विश्वविद्यालय में प्रो. गुरप्रीत कौर जी, मुखी संगीत विभाग के निर्देशन के अंर्तगत एक लघु शोध प्रबंध प्रस्तुत किया गया जिसका शीर्षक था, ' पंजाबी लोक गीतां दे प्रसंग विच इस्त्री कलाकारः जीवन वृत्त, व्यक्तित्व अते गायकी दा

विश्लेषणात्मक अध्ययन सुरिंदर कौर, नरिंद्र बीबा, गुरमीत बावा अते सरबजीत कौर दे विशेष संदर्भ विच'। इस शोध प्रबंध में इन सभी गायिकाओं के जीवन एवं व्यक्तित्व के बारे में चर्चा करते हुए इनकी गायकी का विश्लेषण किया गया है, किन्तु यह अध्ययन केवल इनकी गायकी की विशेषताओं का संक्षिपत विवरण प्रस्तुत करता है। सामाजिक, सांस्कृतिक अथवा किसी भी और पक्ष से कोई भी अध्ययन इसमें प्रस्तुत नहीं किया गया।

6.सन 2011 में ही रविंदरजीत कौर द्वारा एम.फिल.की उपाधि हेतु गुरु नानक देव विश्वविद्यालय में लघु शोध प्रबंध प्रस्तुत किया गया, 'पंजाबी संगीत नूं सुरिंदर कौर दी देन'। इस शोध प्रबंध में पंजाबी संगीत के प्रति स्त्रियों के योगदान की चर्चा करते हुए केवल सुरिंदर कौर के गाए हुए गीतों का विश्लेषण किया गया है।

7. सन् 2013 में पंजाबी यूनीवर्सिटी पटियाला की तरफ से वार्षिक पंजाबी सभ्याचारक पत्रिका का 12वाँ अंक प्रकाशित किया गया जो कि पंजाबी लोक संगीत को समर्पित था। इस पत्रिका में पंजाब की महान गायिका गुरमीत बावा के जीवन एवं उपलब्धियों के बारे में डा. जितेंद्र कौर ने एक लेख लिखा जिसका शीर्षक है, 'गुरमीत बावा अते पंजाबी लोक गीत'। प्रस्तुत लेखन कार्य में गुरमीत बावा को पंजाबी लोक संगीत के प्रति दिए गए योगदान को दर्शाया गया है। किंतु उनके द्वारा गाए हुए गीतों के अध्ययन की कमी इसमें भी नज़र आती है।

8. सन् 2015 में सिमीप्रीत कौर द्वारा लिखित एक पुस्तक प्रकाशित की गई जिसका शीर्षक है, 'गुरमीत बावा, लम्मी हेक दी मलिका।' इस पुस्तक में गुरमीत बावा के जीवन-परिचय के अतिरिक्त उनके द्वारा गाए हुए लोक-गीतों की विभिन्न शैलियों का ज़िक्र किया गया है जैसे कि घोड़ियां, सुहाग, जुगनी, मिर्जा इत्यादि। साथ ही बावा की गायकी से संबंधित सुप्रसिद्ध साहित्यकारों जैसे सुरजीत पातर, हरभजन सिंह, दिलीप कौर टिवाणा, देव थरीके वाला इत्यादि के महत्त्वपूर्ण विचार भी शामिल किए गए हैं।

9.सन 2015 में ही पंजाबी यूनीवर्सिटी पटियाला में राजिंदर सिंह गिल के निर्देशन के अंतर्गत, हरिंदर हुंदल द्वारा पी.एच.डी. की उपाधि हेतु एक शोध प्रबंध प्रस्तुत किया गया, 'पंजाबी लोक संगीत विरासत दी पुनर सुरजीती दा आलोचनात्मक अध्ययन'। इस शोध प्रबंध में पंजाबी लोक संगीत के पुनरोत्थान के लिए समर्पित लोक गायक कलाकारों की चर्चा करते हुए सुप्रसिद्ध साहित्यकारों, गीतकारों, एवं गायक कलाकारों के विचार साक्षातकार के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं।

10. पंजाबी यूनीवर्सिटी पटियाला के संगीत विभाग में सतवीर कौर द्वारा एम.फिल. की उपाधि हेतु एक लघु शोध प्रबंध प्रस्तुत किया गया जिसका शीर्षक था 'गुरदास मान के गीतों का समाज सभ्याचारक अध्ययन'। इस शोध प्रबंध में गुरदास मान द्वारा लिखे हुए एवं गाए हुए गीतों का समाजिक एवं सभ्याचारक पक्ष से अध्ययन किया गया है। इस प्रकार विभिन्न खोजार्थियों एवं विद्वानों द्वारा दिए गए विचारों का पुनरावलोकन करने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि गुरमीत बावा के जीवन, उपलब्धियाँ, लोक-संगीत के प्रति योगदान इत्यादि के बारे में तो भिन्न-भिन्न लेखन कार्यों एवं शोध कार्यों में जानकारी प्राप्त होती है किंतु उनके गाए हुए गीतों का सामाजिक, सांस्कृतिक अथवा किसी भी और पक्ष से अध्ययन कहीं भी नहीं किया गया। इसलिए शोधकर्ता को गुरमीत बावा के गाए हुए गीतों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन करने की प्रेरणा मिली। एवं इस विषय पर पूर्णतः शोध करना ही इस शोध प्रबंध का उद्देश्य एवं सार्थकता होगी।

2.3 अनुसंधान कार्य विधि

प्रत्येक शोध कार्य के लिए किसी न किसी शोध कार्य विधि का प्रयोग किया जाता है। इससे शोध कर्ता को अपने शोध कार्य को सफलतापूर्वक संपन्न करने के लिए एक दिशा मिलती रहती है। प्रस्तुत शोध कार्य के लिए भी निम्नलिखित कार्य विधियों को अपनाया जा रहा है।

1. वर्णनात्मक शोध विधि :- वह विधि जिसमें हालात को बदले बिना अथवा उनकी तोड़ मरोड़ किए बिना कोई सूचना इकट्ठी की जाए उसको वर्णनात्मक विधि कहा जाता है। संगीत से संबंधित सभी शोध कार्यों में अधिकतर वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया जाता है। प्रस्तुत शोध कार्य में भी वर्णनात्मक शोध कार्य विधि का प्रमुख तौर पर प्रयोग किया जाएगा।

2. साक्षातकार विधि :- आमने सामने बैठकर किसी से जानकारी इकट्ठी करने को साक्षातकार कहते हैं। प्रस्तुत शोध कार्य में साक्षातकार विधि का भी प्रयोग किया जा रहा है। इसके अंतर्गत गुरमीत बावा एवं उनकी समकालीन गायिकाओं का साक्षातकार लिया जाएगा। इसके अतिरिक्त प्रसिद्ध साहित्यकारों, संगीतकारों एवं गीतकारों के विचारों को भी सम्मिलित किया जाएगा।

3. प्रश्नौत्तरी :-सर्वे (Survey) अथवा सांख्यिकी अध्ययन (Statistical Study) करने हेतु बनाए गए कुछ प्रश्नो का तुलनात्मक संग्रह जिसमें उत्तर चयन करने की Option दी जाती है उसको प्रश्नोत्तरी कहते हैं। गुरमीत बावा की गायकी से संबंधित जन साधारण के प्रत्येक वर्ग के विचार जानने के लिए प्रश्नोत्तरी का प्रयोग किया जाएगा जिससे इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि गुरमीत बावा की गायकी ने किस वर्ग को किस हद तक प्रभावित किया एवं किस प्रकार से संपूर्ण समाज को प्रभावित किया।

4. विषयवस्तु विश्लेषण :- इस विधि का प्रयोग करते हुए गुरमीत बावा एवं समकालीन लोक-गायिकाओं की गायकी का तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा, जिससे गुरमीत बावा की गायन शैली की विलक्षणता को उद्घाटित किया जा सकता है।

इस प्रकार गुरमीत बावा संबंधित प्रस्तुत शोध कार्य में महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष हासिल होने की आशा की जा सकती है।

अध्याय-3

3. गुरमीत बावा :जीवन वृत्त एवं कृतित्व

पंजाब के माझा क्षेत्र में जन्मी गुरमीत बावा ने पंजाबी लोक-गायकी के क्षेत्र में वह स्थान हासिल कर लिया है जो कि आकाश में टिमटिमाते हुए ध्रुव तारे की तरह है। एक आकर्षक व्यक्तित्त्व की मलिका गुरमीत बावा ने अपनी साफ सुथरी गायकी के द्वारा पंजाब की संस्कृति एवं सभ्याचार को संभाल कर एक बेमिसाल उदाहरण प्रस्तुत की है। आज वह पंजाब के लोगों के दिलों पर राज कर रही है। सफलता की सीढ़ियां चढ़ते चढ़ते आज यहां तक पहुंचने के पीछे उनकी मेहनत एवं लगन प्रत्यक्ष देखने को मिलती है। गुरमीत बावा ने अपने जीवन-साथी श्री कृपाल बावा के साथ गाँव-गाँव एवं घर-घर जा कर बूढ़ी औरतों से परंपरागत गीतों को संग्रहित किया एवं उन गीतों को एक सुंदर लोक-गीतों की माला में पिरोया और इन सुंदर गीतों में अपनी आवाज़ का माधुर्य भर कर जन साधारण के सम्मुख प्रस्तुत किया।

3.1 गुरमीत बावा : जीवन परिचय

जन्म एवं बचपन :- गुरमीत बावा का जन्म 18 फरवरी 1944 को पिता उत्तम सिंह एवं माता राम कौर के घर गुरदासपुर के एक छोटे से गाँव 'कोठा' अलीवाल में हुआ। इस इलाके में बहुत सी नहरें निकलती हैं, अतः इस इलाके का सौंदर्य अत्यंत रमणीय है।

गुरमीत बावा अभी दो वर्ष की ही थीं कि उनकी माता श्रीमति राम कौर जी का देहांत हो गया। गुरमीत बावा जी की चार बड़ी बहनें एवं एक भाई भी था । इनके पिता एवं दादी ने इन सब बच्चों के पालन-पोषण में कोई कमी नहीं छोड़ी । सभी बहन भाईयों में सबसे छोटी एवं लाडली होने के कारण पिता ने इनको पूरा पूरा सहयोग दिया । अपने गाँव की यह पहली बेटी थी जिसने दसवीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त की । पढ़ लिखकर अध्यापिका बनना ही इनके जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य था । दसवीं कक्षा की

पढ़ाई खत्म कर बावा ने जे.बी.टी. की परीक्षा भी पास कर ली और अध्यापिका बन कर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर ही लिया । गुरमीत जी बचपन में विद्यालय में पढ़ते हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं बाल-सभाओं में अक्सर ही गाया करती थीं । अध्यापन के क्षेत्र में आए तो छोटी मोटी इकत्रताओं, सभाओं एवं महफिलों में गा कर अपना शौक पूरा कर लेती थीं । सबसे पहले गुरमीत बावा ने गाँव शिकार-माछियां डेरा बाबा नानक मिश्नरी स्कूल में अध्यापन कार्य किया।

वैवाहिक जीवन :- अध्यापन करते हुए गुरमीत बावा शौक के तौर पर कभी कभी गाया भी करती थीं किंतु गाने के कारण उनकी पहली सगाई टूट गई। क्योंकि उस समय में लड़कियों का पढ़ना एवं गाना अच्छा नहीं समझा जाता था। पिता के भरपूर हौसले एवं सहयोग ने गुरमीत बावा को पीछे नहीं हटने दिया। 1968 में इनके गाँव में मास्टर राम पाल पाली जी आए जिन्होंने गुरमीत बावा के पिता जी को एक लड़के के बारे में बताया जो कि गुरू नानक देव जी के वंश से था। गुरमीत जी की दादी एवं पिता के लिए यह बहुत बड़े गौरव की बात थी कि उनकी सुपुत्री बेदी वंश की बहू बन कर जाए। वह लड़का कृपाल बावा था जो कि डेरा बाबा नानक के बहुत बड़े बेदी परिवार से था। गुरमीत बावा के पिता, भाई एवं दादी ने इस रिश्ते पर पक्की मुहर लगा दी एवं 5 जून 1968 को गुरमीत बावा का विवाह बड़ी धूमधाम से कृपाल बावा के साथ हो गया। कृपाल बावा खुद भी एक बहुत अच्छे गायक थे जो कि अपने कालेज के दिनों में 'वारिस शाह की 'हीर' गाकर युवा मेले में स्वर्ण पदक हासिल कर चुके थे। एम.ए.बी.एड की डिग्री हासिल कर चुके कृपाल बावा खुद भी अध्यापन के क्षेत्र में थे। यह कृपाल बावा ही थे जिन्होंने गुरमीत कौर को विश्व प्रसिद्ध लोक गायिका गुरमीत बावा बना कर दुनिया के हर कोने में पहुंचाया। दोनों पति पत्नी अध्यापन का कार्य करते हुए गुरू की नगरी अमृतसर में आकर बस गए। इनकी तीन बेटियां हैं। लाची बावा, ग्लोरी बावा एवं सिमरत बावा। लाची बावा एवं ग्लोरी बावा अपनी गायकी के द्वारा इस परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं।

गायकी का सफर :- गुरमीत बावा ने कभी सोचा भी नहीं था कि एक दिन वह दुनिया के हर कोने में अपनी आवाज़ का जादू बिखेरने वाली गायिका बन जाएगी। लोक गायिका के रूप में गुरमीत को लोगों के सामने लाने का संपूर्ण श्रेय कृपाल बावा जी को जाता है। गुरमीत बावा बचपन में अपनी बहनों के साथ शादी-ब्याह के अवसरों पर कभी कभी गा लिया करती थी। अध्यापन क्षेत्र में कार्य करते हुए कभी-कभी वह विद्यालय की सभाओं में गा लिया करती। जब गुरमीत बावा अलीवाल में अध्यापन कार्य कर रही थी तो कांग्रेस की एक सभा डेरा बाबा नानक में हुई। वहां के प्रबंधक की गुरमीत के पिता जी से अच्छी जान-पहचान थी। उन्होंने गुरमीत के पिता जी को गुरमीत को इस सम्मेलन में गाने के लिए कहा। वहीं गुरमीत ने सबसे पहली बार गुरचरण बोपाराय का लिखा हुआ गीत गाया जिसके बोल थे ;

सोने रंगे फुल्लां वाले
तोरिए दे बन्ने बन्ने
हाणियां मैं फिरां पैलां पांवदी
गोरी खुशी विच नच्चदी ते गांवदी

इसी दौरान कृपाल बावा को गुरमीत बावा की आवाज़ सुनने का मौका मिला। तभी उनको एहसास हुआ कि अगर इस आवाज़ को लोगों के सामने लाया जाए तो चारों तरफ लोक-रंग की रौशनी ही रौशनी बिखर जाएगी। लेकिन गुरमीत बावा का लक्ष्य एक आदर्श अध्यापिका बनना ही था। वह अध्यापन से पूरी तरह संतुष्ट थी और गायिका नहीं बनना चाहती थीं। उम्र भर के रिश्ते की डोर में बंध जाने के बाद कृपाल बावा की पूरी कोशिश थी कि गुरमीत बावा गायिकी के क्षेत्र में कदम बढ़ाए। इस संबंध में गुरमीत ने अपने पिता जी से बात की तो उन्होंने गुरमीत से कहा कि अब उन पर पति का हक पिता से बढ़ कर है इसलिए उन्हें वहीं करना चाहिए जो उनके पति चाहते हैं। गुरमीत ने नौकरी छोड़ कर गायकी में आने का फैसला कर

लिया। लेकिन एक भय गुरमीत को अंदर ही अंदर खाए जा रहा था कि अगर इस क्षेत्र में उन्हें सफलता नहीं मिली तो वे क्या करेंगे। कृपाल बावा की दिन-रात की हुई मेहनत एवं गुरमीत की लगन की वजह से सफलता उनके कदम छूने लगी। इस सफलता ने गुरमीत के पूरे परिवार एवं पूरे गाँव का नाम रौशन कर दिया। गायकी के सफर का अगला पड़ाव था किसी को गुरू धारण करना। कृपाल बावा को यह बात अंदर ही अंदर खटक रही थी कि गुरमीत की कला को और निखारने के लिए किसी उस्ताद धारण करना अत्यंत आवश्यक है। दोनों के विचारानुसार मास्टर रामपाल पाली जी ही ऐसे गुणी उस्ताद थे जिनसे कुछ सीखने को मिल सकता था। इसलिए गुरमीत बावा ने सबसे पहले मास्टर पाली जी को गुरू धारण कर निरंतर छह महीने बड़ी लगन से गायिकी की शिक्षा हासिल की। साथ ही वह उन्हीं की संगीत कंपनी में शामिल हो कर मंच पर गाने लगी। इसी दौरान 1965 में भारत एवं पाकिस्तान के बीच जंग खत्म हुई ही थी। भारत के संचार एवं प्रसारण विभाग ने एक संगीत-नाटक डिवीज़न बनाया जिसके अंतर्गत फौजी जवानों के मनोरंजन के लिए देश के भिन्न-भिन्न भागों में सांगीतिक प्रोग्राम प्रस्तुत किए जाते थे। गुरमीत बावा को जिला होशियारपुर के नगर 'ऊँची बस्सी' में गाने का न्योता दिया गया। इस के बाद गुरमीत ने फौजी भाईयों के मनोरंजन के लिए बहुत से प्रोग्राम प्रस्तुत किए जहां से उसकी कला और भी निखरती गई।

गुरमीत बावा की सफलता की दूसरी पीढ़ी थी रेडियो स्टेशन जालंधर पर गाने का अवसर प्राप्त होना। यह एक ऐसा पड़ाव था जहां से गुरमीत की गायकी का सफर लोक-गीतों से आरंभ हुआ। उस समय जालंधर दूरदर्शन की स्थापना नहीं हुई थी, इसलिए सभी प्रोग्राम दिल्ली एवं अमृतसर से प्रसारित किए जाते थे। तभी कुछ समय के अंदर ही जालंधर दूरदर्शन का भी आरंभ हुआ तो इसके स्थापना दिवस पर सबसे पहला गीत गाने का सौभाग्य इसी महान गायिका को प्राप्त हुआ। इसका शुभारंभ गुरमीत बावा ने अपनी बुलंद आवाज़ में जुगनी गा कर किया;

मेरी जुगनी दे धागे बग्गे
जुगनी ओहदे मूंहों फब्बे
जिहनू सट्ट ईश्क दी लग्गे
ओ पीर मेरिया जुगनी कैंहदी आ
जिहड़ी नाम अली दा लैंदी आ।

इस तरह गुरमीत बावा को जालंधर दूरदर्शन की पहली महिला गायिका होने का सौभाग्य और श्रेय प्राप्त है। इसके बाद एच.एम.वी. संगीत कंपनी की तरफ से इनके बहुत से गीत रिकार्ड किए गए एवं पंजाब के घर घर में इनके गीत गूँजने लगे। इसी बीच गुरमीत बावा को अध्यापन क्षेत्र में पक्की नौकरी का प्रस्ताव मिला किंतु गुरमीत बावा की गायकी के क्षेत्र में लोक-प्रियता देखते हुए इनके पति कृपाल बावा ने न केवल यह प्रस्ताव ठुकरा दिया बल्कि अपनी नौकरी भी छोड़ कर गायकी के सफर में गुरमीत बावा का सहयोग देने का फैसला कर लिया। शायद उनको इस बात का आभास हो चुका था कि आने वाले समय में गुरमीत बावा के गाए हुए लोक-गीत जन-साधारण की एक ज़रूरत बनने वाले हैं। गुरमीत बावा की गायिकी के इस लंबे सफर में अगला पड़ाव था श्री नरेंद्र चंचल की कम्पनी Paradise music club में शामिल होना।

गुरमीत बावा ने इस सफर का आरंभ लोक-गीतों से किया। लोक-गीतों को लोक-वाद्यों के साथ गाना इनकी गायिकी की एक विलक्षण पहचान है। घड़ा, चिमटा, अल्गोज़ा, ढोलकी इत्यादि लोक-वाद्यों को लोक-प्रिय बनाने का श्रेय गुरमीत जी को ही जाता है एवं गुरमीत की लोक-प्रियता को दिन रात अपनी मेहनत एवं हौंसले से बढ़ाने का श्रेय कृपाल बावा जी को जाता है। यहीं कारण है कि गुरमीत जी अपना पहला गुरू अपने पति कृपाल बावा जी को ही मानती हैं।

व्यक्तित्व :- गुरमीत बावा एक अत्यंत सीधे-साधे व्यक्तित्व की स्वामिनी हैं। सादगी उनके व्यक्तित्व का ऐसा सबसे बड़ा गुण है कि सदैव सादा खाना एवं सादा पहनने वाली गुरमीत बावा अपने गीतों के साथ साथ अपने पहरावे के द्वारा भी पंजाब की संस्कृति एवं सभ्याचार का प्रचार-प्रसार करती रही हैं। आम गायकों एवं गायिकाओं की तरह इन्होंने कभी भी भड़कीले एवं चमकीले कपड़े नहीं पहने। सादा सलवार-कमीज़ एवं 'फुल्कारी' अथवा 'बाग़' इन की एक विलक्षण पहचान है जो कि पंजाबियत का प्रतीक है।

इनकी सादगी की एक और उदाहरण इस बात से भी मिलती है कि किसी भी कार्यक्रम में उन्होंने कभी भी ख़राब साऊंड सिस्टम की शिकायत नहीं की। वह अपनी दमदार आवाज़ को 5000 लोगों तक बिना किसी साऊंड सिस्टम के पहुंचाने की क्षमता रखती हैं। गुरमीत जी केवल वाद्यों पर निर्भर रहने की बजाय सीने के ज़ोर पर गाने में विश्वास रखती हैं। अपने हर कार्यक्रम का आरंभ गुरूवाणी का कोई 'शबद' अथवा पंक्तियां गा कर ही करती है। जैसे कि दशम गुरू, श्री गुरू गोबिंद सिंह जी एवं उनके साहिबजादों से संबंधित गीत, बुल्ले शाह की काफ़ी, बाबा फ़रीद के श्लोक इत्यादि।

गुरमीत बावा ने गाते हुए अथवा कभी भी किसी प्रकार के नशे का सेवन नहीं किया। यहां तक कि कभी चाय पी कर भी नहीं गाती। गुरमीत जी के परिवार ने आज तक माँसाहारी भोजन को कभी छुआ तक नहीं है। गुरमीत जी का मानना है कि गायिकी का जो गुण उस परमपिता परमेश्वर की देन है, उसे किसी भी तरह के माँसाहारी भोजन के साथ बरकरार रखा या बढ़ाया नहीं जा सकता। परमात्मा स्वयं ही गुणों को बढ़ाने में सक्षम है।

गुरमीत बावा परमात्मा में पूर्णतः आस्था रखने के साथ साथ सभी धर्मों का सम्मान करती हैं। उनके घर में भी प्रत्येक धर्म से संबंधित तस्वीरें एवं मूर्तियां देखने को मिलती है।

विदेश यात्रा :- गुरमीत बावा ने जहां भारत में अपनी गायकी की एक मिसाल कायम की है वहीं विदेशों में भी अपनी गायकी का लोहा मनवाया है। गुरमीत बावा वह गायिका है जिसको भारत सरकार द्वारा भिन्न-भिन्न देशों में अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में शमूलियत के लिए भेजा जाता रहा है। इस तरह बावा ने भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए भिन्न-भिन्न कार्यक्रमों एवं सम्मेलनों में भारत का नाम रौशन किया है।

गुरमीत जी की विदेश यात्रा का सफर उस समय शुरू हुआ जब Indian Counsil for cultures relations ने विदेशों में भारतीय मेले करवाने के लिए कलाकारों की एक सूची तैयार की तो राजीव गांधी ने गुरमीत बावा जी का नाम अपने हाथों से उस सूची में लिखा। राजीव गांधी जी का मानना था कि विदेशों में भारत का प्रतिनिधित्व केवल वहीं कलाकार कर सकता है जो अपने क्षेत्र की संस्कृति एवं सभ्याचार की अच्छे से जानकारी रखता हो।

सबसे पहली बार गुरमीत बावा ने 1987 में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए 'Festival of India U.S.S.R. में भाग लिया। फिर भारत सरकार की तरफ से 1988 में Festival of India, Japan में पहुंचे। 1987 में ही Georgia की राजधानी 'तबलिसी' में इंटरनैश्नल कला का आज़ादी दिवस मनाया गया। भारत की तरफ से उस मेले में गुरमीत बावा ने भाग लिया जहां उनके साथ और 18 देशों के कलाकार मौजूद थे। यहां गाते हुए गुरमीत बावा ने जब लंबी हेक लगानी शुरू की तो तालियां बजनी शुरू हो गईं। इन तालियों की गूँज में गुरमीत जी को पता नहीं चला कि वो हेक कितनी लंबी हो गई। जब कार्यक्रम खत्म हुआ और गुरमीत जी हॉल से बाहर निकलीं तो Georgia की एक औरत दौड़ते हुए गुरमीत बावा को मिलने आई और बोली, "Mam, You are the World's big lady. Your Ho..... was forty five seconds long." उस औरत ने अपनी घड़ी उतार कर गुरमीत बावा को पहना दी।

उस 45 सैंकड लम्बी हेक का रिकार्ड हमेशा के लिए 'Guiness book of World Recod' में शामिल हो गया।

सन् 1989 में Bosra Festival of Syria at Damascus', में गुरमीत बावा ने भारत की तरफ से एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1989 में ही पच्चीसवें 'जश्न-ए-आज़ादी फैस्टीवल आफ लिबिया' में बावा को भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए भेजा गया। 1995 में 'Festival of India' में भाग लेने के लिए थाईलैंड गईं।

'Common Wealth Games Cultural Festival' में भाग लेने के लिए 1998 में बावा कुआलालंपुर, मलेशिया भी गईं। गुरमीत बावा को फ्रांस सरकार के सहयोग से वहां की सोसायटी 'Cite-La Misque की तरफ से पंजाब के लोक गीतों का कार्यक्रम देने के लिए 2001 में पेरिस बुलाया गया। 2002 में रशिया-भारतीय सभ्याचारक कार्यक्रम में हिस्सा लेने के लिए भारत की तरफ से गुरमीत जी को भेजा गया। 2003 में गुरमीत बावा पाकिस्तान में लाहौर के अलहमरा स्टेडियम में कार्यक्रम देने के लिए गईं। कैनेडा में भी गुरमीत बावा तीज के कार्यक्रम के लिए दो बार जा चुकी है। गुरमीत बावा की विदेश यात्राओं का यह सफर अभी तक चल रहा है।

सम्मान एवं उपाधियां :-गुरमीत बावा को अपनी लोक गायकी के इस लंबे सफर के दौरान इतने सारे सम्मान एवं उपाधियां मिल चुकी है कि अब यह राष्ट्रीय ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय स्तर की गायिका बन चुकी हैं । जापान की एक कंपनी ने गुरमीत बावा की आवाज़ विदेशी लोगों तक पहुंचाने के लिए एक सी.डी बनाई जिसकी रिकार्डिंग 11 अप्रैल 1988 को जापान के ओसाका में हुई। उस का शीर्षक था, "The Love and Life in Punjab – Gurmeet Bawa.' इस सी.डी में नौ लोक-गीत, जुगनी, 'पाणियां नूं मैं चल्ली', मलकी-कीमा, वे लिया दे चंबा, घोड़ी, रात कहर दी, सस्सी पुन्नू, डिग पई नी गोरी एवं बोलियां शामिल हैं । आज भी यह सी.डी. World Music Library Newyork' में देखी जा सकती है । गुरमीत बावा की लोक गायिकी को सलाम करते

हुए इस सी.डी पर कंपनी के द्वारा अत्यंत सुंदर शब्दों की माला इस तरह डाली हुई है;

In India, not only is there classical music but there is a colourful folksong tradition as well. This disc is a recording of the folksong of the area around the Indus river in Punjab region, sung by Gurmeet Bawa. Her powerful voice, although produced by such a small body, is overwhelming.[1]

इतना बड़ा सम्मान मिलना एक औरत के लिए अत्यंत गर्व की बात है। इस के इलावा गुरमीत बावा जी को निम्नलिखित सम्मान एवं उपाधियां मिल चुकी हैं:

1. गुरमीत बावा पंजाब की पहली लोक-गायिका है, जिनको पंजाब सरकार ने सन् 1991 में 'स्टेट अवार्ड' देकर सम्मानित किया । पंजाब के फिरोज़पुर शहर में हुए कार्यक्रम में गवर्नर 'स्व. श्री सुरेन्द्र नाथ' जी ने स्वयं अपने कर-कमलों से यह सम्मान गुरमीत जी को दिया।
2. 20वीं सदी में जितने भी व्यक्तियों ने अपने-अपने क्षेत्रों में प्रशंसनीय कार्य किए हैं, चाहे वह किसी भी क्षेत्र अथवा देश से संबंध रखता हो, विश्व की उन महान शख्सियतों को 'American Biographical Institute America' ने सम्मानित किया है। सन् 2001 में पंजाबी लोक-गायकी के क्षेत्र में गुरमीत बावा द्वारा की गई सेवा से प्रभावित हो कर इस संस्था ने उन्हें Gold Medal of Honour देकर सम्मानित किया।
3. PTC पंजाबी चैनल ने गुरमीत जी को Life Time Achievement अवार्ड देकर सम्मानित किया।
4. भाषा विभाग पंजाब की तरफ से शिरोमणि गायिका अवार्ड एवं पंजाब कला परिषद की तरफ से 'पंजाब दा गौरव' अवार्ड से सम्मानित हुए।
5. मध्य प्रदेश सरकार ने देवी अवार्ड से गुरमीत जी को सम्मानित किया।

6. खालसा पंथ की त्रि-शताब्दी अवसर पर 11 अप्रैल 1999 को स्त्री सम्मेलन हुआ, जिसमें सदी की महान स्त्रियों को सम्मानित किया गया। उनमें से एक पंजाब की लोक-गायिका गुरमीत बावा थी जिनको 'सिरोपाओ' देकर सम्मानित किया गया। यह गुरमीत जी के जीवन की सब से बड़ी उपलब्धि है।
7. अक्तूबर 2012 में भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी ने आप को संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार देकर गौर्वान्वित किया।
8. पंजाब आर्ट थिएटर जालंधर की तरफ से के.एल. सहगल अवार्ड एवं शहीद ऊधम सिंह मैमोरियल फाऊंडेशन फिरोज़पुर सभ्याचारक मेले में आप को 'लम्मी हेक दी राणी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
9. गुरमीत जी को आकाशवाणी जालंधर की तरफ से 'Outstanding Artist' की उपाधि मिली।
10. Theatre of People, जालंधर की तरफ से गुरमीत जी को बीवी नूरां अवार्ड मिला।
11. गुरमीत जी को प्रो. मोहन सिंह यादगारी मेले में उस समय के पंजाब के मुख्य मंत्री स.बेअंत सिंह जी के हाथों से सम्मानित किया गया ।
12. "Common Wealth Cultural Festival, Koalalampur-98, मलेशिया में Art, Culture and Tourism विभाग की तरफ से गुरमीत बावा जी को सम्मानित किया गया।
13. मोहम्मद रफी सोसायटी अमृतसर ने गुरमीत जी को Best Folk Singer की उपाधि दी।
14. B.U.C. College बटाला की पंजाबी साहित्य सभा की तरफ से भी गुरमीत जी को सम्मान चिन्ह दिया गया।
15. महक सभ्याचारक एवं लोक-भलाई सभा की तरफ से जंडियाला में गुरमीत जी को सिक्कों में तोला गया।

16. गुरप्रीत धारीवाल यादगारी सभ्याचारक मेले में भी गुरमीत जी को सम्मानित किया गया।
17. माहिलपुर में अमर सिंह शौंकी यादगारी ट्रस्ट की तरफ से गुरमीत जी को सम्मानित किया गया।
18. चित्रकार सोभा सिंह यादगारी कमेटी श्री हरगोबिंदपुर ने 1998 में गुरमीत जी को सम्मानित किया।
19. Punjab Women Welfare College, Hoshiarpur एवं Punjab Art Theatre, Jalandhar की तरफ से 'कला श्री' की उपाधि गुरमीत जी को दी गई।
20. गुरमीत जी संगीत नाटक अकादमी एवं Indian Counsil for cultures selections की A-grade कलाकार हैं।
21. Punjab Folk Theatre की तरफ से गुरमीत जी को 'माण पंजाबण दा' उपाधि मिली।
22. हाशम शाह यादगारी ट्रस्ट, जगदेव कलाँ की तरफ से सन् 1993 में गुरमीत जी को 'पंजाब दी कोयल' ख़िताब दिया गया।
23. गुरमीत जी ने North Zone Cultural Centre, Cultural Affairs, Punjab, स्पिक मैके, दिल्ली के सहयोग से पूरे भारत में पंजाबी लोक-गीतों का प्रचार किया।
24. 2016 में पी.टी.सी पंजाबी चैनल की तरफ से गुरमीत बावा जी को लाईफ टाईम एचीवमैंट आवार्ड से सम्मानित किया गया।
25. दाखा में लोहड़ी के अवसर पर गुरमीत जी को 22C गोल्ड मेडल प्रदान किया गया। इस के अलावा श्री गुरू तेग बहादुर स्पोर्टस क्लब बाबा बकाला, सभ्याचारक क्लब योद्धा भैणी, जलालाबाद, शहीद ऊधम सिंह क्लब सुनाम, शहीद भगत सिंह क्लब, खटकड़ कलां एवं हुसैनी वाला, अदलीवाल रूरल थिएटर,गुरू नानक नैश्नल कालेज नकोदर, Health organization Amritsar, पंजाबी लेखक

सभा चंडीगढ़, संगम सभ्याचारक मंच महेड़ू,नेता जी सुभाष चंद्र बोस स्पोर्टस क्लब पंजोला, सभ्याचारक सथ दिल्ली, माझा रंगमंच एवं सभ्याचारक केंद्र तरनतारन, पंज दरिया सभ्याचारक केंद्र तरनतारन, शहीद नायब सिंह सभ्याचारक मंच पहलू वाला, नचदी जवानी कलचरल सोसायटी संग्रूर, पंजाब स्कत्रेत कलचरल सोसायटी चंडीगढ़, उ. नज़ाकत अली सलामत अली, शाम चौरासी, भारत नाटक संगीत कला केंद्र जालंधर, सर्व नौजवान फगवाड़ा, प्रकाश कला संगम मोहाली इत्यादि बहुत सी संस्थाओं द्वारा गुरमीत जी को सम्मान दिए गए हैं।

3.2 गुरमीत बावा की गायन शैली

लोक गीतों में प्रयुक्त होने वाली गायन शैली के बारे में डॉ जितेंद्र कौर लिखती हैं;

> पंजाबी लोक गीतों का प्रमुख लक्षण है आवाज़ का खुलापन एवं सुरीलापन। इसमें मींड, मुर्की, खटका आदि क्रियाओं का स्पष्ट प्रयोग किया जाता है। खुली, ऊंची एवं बुलंद आवाज़, स्वरों का विशेष लगाव, ताल की विविधता, भिन्न-भिन्न लय पैट्रन पंजाब की संगीत धाराओं की विशेषता है।[2]

यही कारण है कि पंजाब की संगीत परंपरा विश्व भर में विलक्षण स्थान रखती है। इन सभी गुणों से भरपूर गुरमीत बावा जी की लंबी हेक वाली दमदार आवाज़ की अपनी एक अलग ही पहचान है। पंजाबी गायकी के क्षेत्र में अपनी विलक्षण गायकी एवं लंबी हेक के दम पर ही गुरमीत बावा पंजाबियों के दिलों पर राज़ करती आ रही है।

गुरमीत बावा की गायिकी की विलक्षण पहचान उनकी लंबी हेक है। गुरमीत जी ने सबसे पहली बार अपनी सुरीली आवाज़ और लंबी हेक का जादू जियार्जिया की राजधानी टिबलिसी में दिखाया। 45 सैकंड लंबी हेक के साथ 'गिनीज़ बुक आफ वर्लड रिकार्डस' में अपना नाम लिखवाने वाली यह पहली लोक-गायिका हैं। इस लंबी हेक

का महत्त्व बनाते हुए लोक संपर्क विभाग के रिटायर्ड डिपटी डायरेक्टर स. भाग सिंह ने कहा था;

> 'की होया साडे पंजाब दे कोल पहाड़ नहीं हन, पंजाब दे कोल गुरमीत बावा दी उच्ची हेक तां है'। [3]

गुरमीत बावा एक ऐसी गायिका हैं जिन्होंने लंबी हेक के साथ मिर्ज़ा-साहिबां की लोक-गाथा को आठ तरह की भिन्न-भिन्न तर्ज़ों में गाया है।

पंजाबी लोक-गीतों को गाने वाली यह एक ऐसी विलक्षण गायिका है जो गाना शुरू करती है तो लोग अपनी साँसें रोक लेते हैं । गुरमीत बावा जैसी मिर्ज़ा गायकी अब तक कोई भी नहीं गा सका।[4]

गुरमीत बावा की गाई हुई 'जुगनी' इतनी लोकप्रिय हुई कि जब अपनी बाजू उठा कर लंबी हेक लगा कर वापिस आती हैं तो हर तरफ से तालियों की गूँज सुनाई देने लगती है।

मुंबई के वानखंडे स्टेडियम में 'अपना उत्सव' कार्यक्रम के दौरान जब गुरमीत बावा ने हेक लगाई तो बंगाल के सबसे ऊँची आवाज़ में हेक लगाने वाले एक गायक ने अपनी भाषा में कहा कि;

> ''यह पंजाब की कौन सी गायिका है जिसने अपनी हेक भीम के हाथी की तरह आस्मान में ही छोड़ दी।[5]

गुरमीत बावा की गायकी के बारे में बात करते हुए स. निरंजन सिंह साथी ने लिखा है;

> ओह कुड़ी सी जां बिजली दी तार, गायकी सी जां किसे जोगी दी लहरा वजांदी होई बीन। ओह इक तूफान दी तरह आई अते श्रोतियां नू हिला के रख गई।[6]

गुरमीत बावा ने लुप्त हुए पंजाब के लोक-गीतों को स्वर एवं तालबद्ध किया। गली-गली, गाँव-गाँव जा कर गुरमीत बावा ने बड़े बुर्ज़ुगों से मिल कर पुराने गीत इकट्ठे किए। गुरमीत बावा ने पंजाबी लोक-गीतों के लगभग सभी प्रकार गाए हैं जैसे कि सुहाग, घोड़ियां, जिंदुआ, वारॉं, प्रेम लोक-गीत, बोलियां, माहिया, ढोला, सम्मी, सस्सी पुन्नू, सोहनी-महीवाल, मिर्ज़ा साहिबां, मलकी कीमा, वीर-गाथाएं, लोरियां, शादी के गीत, जन्म के गीत, ऋतुओं के गीत, त्योहारों के गीत इत्यादि।

गुरमीत बावा की गायन शैली की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि उन्होंने इन सभी गीतों को इनकी असली धुनों एवं रीतों में गाया है। इन गीतों के सौंदर्य को और बढ़ाने के लिए गुरमीत जी ने पंजाब के परंपरागत लोक-वाद्यों जैसे कि अल्गोज़ा, चिमटा एवं ढोलक का प्रयोग किया। यहां तक कि सुहाग एवं घोड़ियां भी ढोलक एवं अल्गोज़े के साथ गाईं।

गुरमीत जी की गायकी में सरलता, माधुर्य एवं स्वाभाविकता देखने को मिलती है। गुरमीत बावा की गायन शैली के बारे में प्रो कुलबीर सिंह जी लिखते हैं कि;

> ''मैने कभी भी पंजाबी गायकी को पहले कभी इतनी गंभीरता से नहीं सुना था जितना दूरदर्शन के कार्यक्रम 'सुर-सांझ' में गुरमीत बावा को सुना एवं महसूस किया कि गुरमीत बावा लोक-धुनों एवं लोक-भाषा के साथ बहुत नज़दीक से जुड़ी हुई गायिका है । मैंने गुरमीत बावा को टुकड़ों में बहुत बार सुना था किंतु उसकी गायकी एवं विलक्षण गायन शैली का एहसास उस को संपूर्ण तौर पर सुन कर हुआ। कार्यक्रम 'सुर-सांझ' के अंतर्गत प्रस्तुत गीतों के द्वारा उसने इस बात को प्रामाणित कर दिखाया है कि जो शोहरत उसको मिली है वह उस की हकदार भी है''।[7]

3.3 सुप्रसिद्ध गायक कलाकारों, साहित्यकारों एवं गीतकारों का गुरमीत बावा विषयक आकलन

गुरमीत बावा इस सदी की एक महान एवं विलक्षण लोक गायिका है। पंजाबी लोक संगीत के सुप्रसिद्ध लोक गायक कलाकार, सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं गीतकारों के समक्ष अगर गुरमीत बावा का ज़िक्र आता है तो उनके शीर्ष एक स्नेह युक्त सम्मान के साथ झुक जाते हैं। उन सब के विचारानुसार यदि गुरमीत बावा को लोक-गायकी की माँ का दर्जा दे दिया जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी । लोक-गायकी अथवा लोगों की गायकी में रंग कर, लोगों की ही आवाज़ को अत्यंत ही सादगी एवं विनम्रता के साथ अपना मधुर स्वर देकर जिस प्रकार से गुरमीत बावा ने पंजाब की धरोहर को ज़िंदा रखा है, शायद ही आज के युग में कोई कलाकार रख पाया है। इस बात को प्रमाणित करने के लिए पंजाब के सुप्रसिद्ध कलाकारों, साहित्यकारों, गीतकारों एवं पंजाबी लोक गायकी से जुड़ी हुई कुछ जानी मानी शख्सियतों से साक्षात्कार किया गया जिसका विवरण इस अध्याय में किया गया है।

3.3.1 लोक संगीत का दूसरा नाम है गुरमीत बावा

आकाशवाणी जालंधर में सीनियर अनाऊंसर के तौर पर कार्यरत एक उच्च कोटि के नाटककार, गीतकार एवं नावलकार श्री राजकुमार तुली जी एक अत्यंत प्रतिभाशाली शख्सियत हैं। हिंदी, पंजाबी एवं रंगमंच में एम.ए. करने के बाद लोक-धारा पर एम. फिल कर चुके राजकुमार जी द्वारा लिखित सुप्रसिद्ध नाटक 'आज की ताज़ा खबर', एक और हरी राम मारा गया', 'जय भारती' एवं पुरूषक्षेत्र अनेकों बार प्रदर्शित हो चुके हैं। मल्की-कीमा पर आधारित लोक-नाटक भी तुली जी के द्वारा लिखित है जिसका दूरदर्शन जालंधर में बहुत बार प्रसारण किया जा चुका है। कला के आधार पर किए गए कार्यों के आधार पर आकाशवाणी में राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुके श्री राजकुमार तुली जी गुरमीत बावा को लोक संगीत का दूसरा नाम मानते हैं।

उनके विचारानुसार गुरमीत बावा एक ऐसी महान गायिका हैं जिन्होंने आज तक सिर्फ पंजाब के लोक-रंग को प्रचारित एवं प्रसारित किया है। इन्होंने कभी भी अपनी गायकी पर बाज़ारवाद (Commercialism) का रंग नहीं चढ़ने दिया। शुद्ध लोक-गीत गाने वाली गुरमीत बावा ने पंजाब को 'माझे दिया माल गुज्जरा' जैसे परंपरागत लोक गीत दिए हैं। यही कारण है कि वह आकाशवाणी जालंधर में 'ए' ग्रेड की कलाकार है। प्रत्येक वर्ष होने वाले ऑडिशन्स में आकाशवाणी द्वारा निर्धारित किए गए निर्णायक मंडल की वह एक सक्रिय सदस्या है। उनके द्वारा दिए गए ऑडिशन्स के परिणाम भी बहुत स्पष्ट एवं सब के द्वारा स्वीकृत होते हैं।

जब भी किसी की ज़ुबां पर लोक-संगीत का नाम आता है तो सब का ध्यान गुरमीत बावा जी की तरफ ही जाता है। गुरमीत बावा जी ने अपनी गायकी के द्वारा लोक-गायकी का एक ऐसा अक्स समाज में छोड़ा है कि आज भी गाँव अथवा शहर की बड़ी बूढ़ी औरतें गायकी के क्षेत्र में सबसे पहला नाम गुरमीत बावा का ही लेती हैं। लोक-गायकी का कोई भी मेला आयोजित होता है तो गुरमीत बावा जी को सबसे पहले अपनी प्रस्तुति देने के लिए निमंत्रित किया जाता है। समाज पर उनकी गायकी के प्रभाव का यह एक प्रत्यक्ष प्रमाण है।

राजकुमार तुली

नाटककार, गीतकार, सीनीयर अनाऊंसर आकाशवाणी जालंधर।

3.3.2 रिश्तों का एहसास करवाती है गुरमीत बावा की गायकी

सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों एवं लोक-कलाओं से जुड़ी एक महान शख्सियत का नाम है डा. इन्द्रजीत सिंह जी ।पंजाब टैक्निकल यूनीवर्सिटी में बतौर रजिस्ट्रार कार्यरत डा. इन्द्रजीत सिंह जी ने लोक संगीत के स्तर को ऊपर उठाने में बहुत बड़ा योगदान दिया है। 1970 में लायलपुर खालसा कालेज से M.Com करने के बाद लगभग 21 वर्ष इसी संस्था में 1998 तक Commerce विषय के व्याख्याता रहे डा. इन्द्रजीत सिंह जी ने 2008-09 तक गुरू नानक कालेज सुखचैनआणा साहिब फगवाड़ा में प्रधानाचार्य का

पद संभाला। उसके बाद 2009 से 2014 तक गुरू नानक देव यूनीवर्सिटी में बतौर रजिस्ट्रार कार्यरत रहे। स्कूल से लेकर कालेज तक डा. इन्द्रजीत सिंह जी ने खुद भी भांगड़ा की टीम में अपना प्रस्तुतीकरण दिया और फिर अगली युवा पीढ़ी को सिखाया। यहां तक कि डी.ए.वी. जालंधर, पंजाब यूनीवर्सिटी चंडीगढ़ और बहुत से विश्वविद्यालयों में अपनी टीम को लेकर भी गए। इन्हीं गतिविधियों की वजह से इनको 2008 में पंजाब आर्टस कौंसिल की तरफ से Life Time Achievement Award प्रदान किया गया। पंजाबी संगीत जगत के बहुत सारे महान सितारे मलकीत सिंह, के. एस.मक्खन, सरबजीत चीमा इत्यादि डा. इन्द्रजीत जी से भांगड़ा एवं गायकी सीख चुके हैं। डा. साहिब के शब्दों में, ''जब जब राष्ट्रीय स्तर पर अपनी टीम को ले जाने का मौका मिला, गुरमीत बावा जी को मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आज पंजाबी लोक-संगीत के शिरोमणी गायकों में सबसे पहले गुरमीत बावा जी का नाम लिया जाता है''। गायकी सदैव ही सीने के ज़ोर से गाई जाती है। बात चाहे लोक-गाथाओं की हो या लोक-बोलियों की, सुहाग की हो या घोड़ियों की, सब से मकबूल गुरमीत बावा की गायकी है। 'कहारो डोली ना चायो' जैसे गीत में जितनी सोज़ और दर्द उनकी आवाज़ में मिलता है, वो किसी और की आवाज़ में नहीं। गुरमीत बावा को सुन कर हम सब के दिलों में रिश्तों का एहसास जागृत होता है और आंखें नम हो जाती हैं। गुरमीत बावा के गीत सदैव सामाजिक पहलूओं से जुड़े होते हैं जो हमें यह एहसास करवाते हैं कि बेटियों का बिछोड़ा कितना दुखद होता है।

गुरमीत बावा के व्यक्तित्व के बारे में बात की जाए तो गुरमीत बावा सादगी की एक मूरत हैं। बच्चों की परवरिश, पारिवारिक जिंदगी की जिम्मेदारियां और रिश्तों की अहमियत, यह सभी बातें गुरमीत बावा के व्यक्तित्व के अत्यंत महत्त्वपूर्ण पहलू हैं। इनकी गायकी की विलक्षणता इस बात से नज़र आती है कि बहुत ही कम लोक गायिकाओं ने सिर्फ अल्गोज़ा और चिमटा के साथ गाया । गुरमीत बावा इतनी बुलंद इरादे वाली गायिका है जिन्होंने अल्गोज़े के केवल दो स्वरों की मदद से अपनी बुलंद

आवाज़ में गा कर गायकी का योद्धा होने का प्रमाण दे दिया। लोक-गायकी के भविष्य के बारे में डा. इन्द्रजीत जी बताते हैं कि गायकी के दौर बदलते हैं। जैसे कि आज लोक-गायकी नज़र-अंदाज़ हो रही है। चारों तरफ rap music का दौर चल रहा है किंतु यह एक लहर की तरह आएगी और चली जाएगी। लोक-गायकी अमर है और सदैव अमर रहेगी । इसी तरह गुरमीत बावा भी अमर रहेगी।

डा. इंद्रजीत सिंह

रजिस्टरार पंजाब टेक्नीकल यूनीवर्सिटी कैम्पस

होशियारपुर

3.3.3 नारी शक्ति एवं भावनाओं का प्रतीक है गुरमीत बावा की लंबी हेक

यह शब्द हैं पंजाबी साहित्य की एक प्रत्यक्ष तस्वीर डा. सुरजीत पातर जी के। डा. सुरजीत पातर जी ने पंजाबी साहित्य जगत को 'हवा विच लिखे हर्फ', 'बिरख अर्ज़ करे', 'हनेरे विच सुलगदी वर्णमाला', 'लफ़्ज़ां दी दरगाह', 'पतझड़ दी पाजेब', और 'सुरज़मीन' जैसी रचनाएं दी हैं। पंजाबी साहित्य अकादमी के प्रधान रह चुके डा. सुरजीत पातर जी ने 'शहीद उधम सिंह' एवं 'विदेश' जैसी पंजाबी फिल्मों के लिए संवाद भी लिखे। पंजाबी भाषा में इनको इतनी निपुणता हासिल है कि साधारण बातचीत में भी इनकी शब्दावली मंत्रमुग्ध कर देती है।

डा. सुरजीत पातर जी के शब्दों में गुरमीत बावा का गीतों का चुनाव हमारी लोक-परंपरा में से होता है। उन गीतों को सुनकर हमारे मन में बचपन की यादें ताज़ा हो आती है। वह पंजाब जिसको पूरन पुकारता था, जो पंजाब हमारी यादों में सपनों की तरह बसा हुआ है, उस पंजाब का एक परंपरागत अक्स गुरमीत बावा के गीतों में हमें देखने को मिलता है। गुरमीत बावा के गीतों में हमें कहीं भी बाज़ारवाद देखने को नहीं मिलता।

माँ, बेटी, पत्नी एवं बहन के रूप में एक मरियादा में रहने वाली औरत का नारीत्व एवं उसकी सुशीलता का प्रतीक है गुरमीत बावा। गुरमीत बावा की गायकी में एक प्यार का जज़्बा एवं स्नेह की गर्मी महसूस की जा सकती है। जो शब्द गुरमीत बावा गाती है उनकी आवाज़ भी उन शब्दों जैसी ही है। उनकी हेक में आपको पंजाबी नारी का एक दम-खम नज़र आता है। एक संघर्ष एवं जान नज़र आती है। उनकी गायकी सुनकर ऐसा प्रतीत होता है कि जो स्त्री इतनी लंबी हेक लगा सकती है वह कुछ भी कर सकती है। वह गाते हुए एक कमज़ोर अथवा अबला नारी नहीं प्रतीत होती। उसके सबल होने का दृश्य हमें उसकी बुलंद गायकी में मिलता है। वह माई भागो की तरह एक योद्धा होने का प्रतीक नज़र आती है। उसकी हेक यह दिखा देती है कि उसकी शक्ति एवं उसकी भावनाओं का क्षेत्र कितना है। गुरमीत बावा औरतों के लिए शक्तिशाली बनने के लिए एक पुकार भी है। चिमटा, अल्गोज़ा एवं मटिट्यां जैसे मर्दाना वाद्यों के साथ गाकर वह नारी शक्ति के उत्थान को प्रमाणित कर देती है। उसकी आवाज़ स्वरों का एक आरोह है। इस आरोह में उनकी भावनाओं की सरगम महसूस की जा सकती है।

गुरमीत बावा की गायकी की तुलना यदि सुरिंद्र कौर जी से की जाए तो सुरिंद्र कौर की गायकी एक शिक्षित भाव सीखी हुई गायकी है जिसमें शास्त्रीय संगीत की मुर्कियां सुनने को मिलती हैं जब कि गुरमीत बावा की गायकी में देशी संगीत अर्थात् लोक संगीत की प्रत्यक्ष झलक देखने को मिलती है। इसी तरह अगर नरिंद्र बीबा से तुलना की जाए तो गुरमीत बावा के गीतों में मर्दाना जोश के होते हुए भी एक नारीत्व कायम रहता है जबकि शक्ति वही नज़र आती है। इस बात से पता चलता है कि गुरमीत बावा एक पुरूष की तरह बुलंदियों पर तो पहुंची किंतु अपने नारीत्व को कायम रखा। गुरमीत बावा की गायकी का समाज पर पड़े प्रभाव के बारे में डा. सुरजीत पातर कहते हैं कि आज की गायकी जहां हमारी भावनाओं को खंडित करती है और जिस गायकी को हम दो मिनट से अधिक नहीं सुनना चाहते, वहीं गुरमीत बावा की गायकी

हमारी भावनाओं को गहराई देती है एवं हमें यह याद करवाती है कि हम कहाँ हैं। यह गायकी हमें मानव मन की गहराईयों से जोड़ती है। गुरमीत बावा जैसी गायकी का प्रत्यक्ष प्रभाव तो हमें नज़र नहीं आता किंतु ऐसी गायकी का धीमा प्रभाव अंदर ही अंदर समाज पर होता रहता है जो हम सबको सभ्य एवं सुशील बनाए रखता है।

लोक गायकी के भविष्य की बात की जाए तो नए लोक-गीत पैदा होने की संभावना बहुत कम हो गई है। आज कोई भी रचनाकार अपना नाम अपनी रचना में देखना चाहता है। जिस तरह लतीफे की रचना अपने आप ही हो जाती है उसी तरह लोक-गीत भी अपने आप ही बन जाता है किंतु आज Social media इस रचना में एक बहुत बड़ी रूकावट है। आज हमारी शैक्षणिक संस्थाएं हमारी लोक विरासत को संभाल रही हैं। गिद्धा, भांगड़ा और साहित्य यह सब खत्म नहीं हो रहे और न ही होंगे। जिस तरह हम गुरूवाणी को लोक वेद मानकर अब तक सुनते हैं और गाते हैं। उसी तरह गुरमीत बावा जैसी गायिका इस लोक संगीत को संभाले हुए है। क्योंकि लोक-संगीत विलक्षण है और विलक्षण रहेगा। आज भी लोग ऐसा संगीत सुनना चाहते हैं। हमारे पास लोक गीतों का अनमोल खज़ाना तो है लेकिन उसको गाने के लिए गुरमीत बावा जैसे गायक चाहिए।

डा. सुरजीत पातर

पंजाबी साहित्यकार एवं कवि

3.3.4 पंजाबी लोक रंग की प्रतीक है गुरमीत बावा

राज गायक एवं पदम श्री अवार्ड विजेता हंस राज हंस जी को कौन नहीं जानता। शायद ही किसी घर का बच्चा हो जिसको हंस के बारे में न पता हो। पंजाबी लोक-संगीत को अपनी गायकी से सराबोर करने वाले हंस राज हंस जी से गुरमीत बावा जी की गायकी के संबंध में बात करने का मौका मिला। अपनी मीठी वाणी से गुरमीत जी की गायकी के संबंध में उन्होंने बताया कि गुरमीत बावा जी पंजाबी

लोक-रंग की प्रतीक हैं। लोक-संगीत चाहे किसी भी क्षेत्र का हो, उसमें उस क्षेत्र के जन-जीवन की झलक मिलती है। इसी तरह गुरमीत जी की गायकी में पंजाब की मिट्टी की खुशबू आती है। गुरमीत जी पंजाब की एक ऐसी एकमात्र कलाकार हैं जिनकी आवाज़, सादगी, विनम्रता एवं पहरावे में पूरा पंजाब झलकता है। लोक-संगीत को जिंदगी के साथ संबंधित करते हुए उन्होंने बताया कि पहले-पहल जिंदगी बहुत ही स्वच्छ एवं शुद्ध थी। कहा जाता था कि जैसा अन्न वैसा मन। आज के युग में संगीत एक संपूर्ण उद्योग स्थापित कर चुका है। हर कोई गायक बनना चाहता है और यही लालसा उनके विनाश का कारण बनती है। आज के युग में आवश्यकता है एक संगीत आश्रम की जहां गुरमीत बावा जैसे कलाकार मिलजुल कर जन साधारण को और आने वाली युवा पीढ़ी को संगीत की शिक्षा दें। गुरू शिष्य परंपरा का फिर से पालन हो। हमारी सरकार को चाहिए कि इस विषय पर गंभीरता से सोचे और कदम उठाए। अगर जल्द ही ऐसा न हुआ तो लोक-संगीत बिल्कुल खत्म हो जाएगा और हमारे समाज का मार्ग दर्शन करने के लिए कुछ नहीं बचेगा। इसलिए अपनी संस्कृति को बचाने की जरूरत है।

हंस राज हंस

पंजाबी लोक गायक

3.3.5 समूची स्त्री वर्ग का गौरव है गुरमीत बावा

पंजाब यूनीवर्सिटी चंडीगढ़ के डायरेक्टर यूथ वैलफेयर, प्रो. निरमल जौड़ा पंजाबी साहित्य, सभ्याचार, संगीत एवं रंगमंच की एक जानी मानी शख्सियत हैं। प्रो. जौड़ा बरजिंदरा कालेज बरनाला से B.Sc. करने के बाद पंजाब एग्रीकल्चर यूनीवर्सिटी से M.Sc. करने के साथ-साथ सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में पूर्ण तौर से सरगरम रहे। 1995-96 में प्रो. निर्मल जौड़ा, कला के क्षेत्र में पंजाब स्टेट अवार्ड भी हासिल कर चुके हैं।

विज्ञान के छात्र होने के बावजूद संस्कृति एवं सभ्याचार से इनका गहरा रिश्ता रहा है। यही कारण है कि 2012 से लेकर अब तक यह पंजाब यूनीवर्सिटी में डायरैक्टर यूथ वैल्फेयर के पद पर निंरतर अपनी सेवाएं निभा रहे हैं। 'मालवा रंग मंच' पंजाबी रंगमंच को इन्हीं की देन है। गुरमीत बावा के बारे में प्रो. निर्मल जी ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि गुरमीत बावा समूची स्त्री वर्ग का गौरव है क्योंकि उन्होंने ऐसे वक्त में गाने का साहस किया जब स्त्रियों को घर से बाहर निकलने तक की इजाज़त नहीं थी और इस बात पर हम सब पंजाबियों को गर्व है कि तब से लेकर अब तक गुरमीत बावा निरंतर शुद्ध लोक गायकी गाकर पंजाब को गौरवान्वित कर रही हैं। इस बात का प्रमाण इस बात से मिलता है कि गुरमीत बावा का तीन पीढ़ियों ने लगातार सुना और अब चौथी पीढ़ी भी सुन रही है। इस बात का श्रेय उसके जीवन साथी कृपाल बावा जी को जाता है।

उनकी गायकी की विलक्षणता का सबसे पहला कारण यह है कि उन्होंने अपने गीतों का चुनाव कभी भी निम्न स्तर का नहीं किया। उनके गीत ऐसे रहे हैं जिनको परिवार में बैठ कर सुना जा सकता है। दोगाना गायकी की बात की जाए तो गुरमीत जी ने अन्य गायिकाओं की तरह कभी भी पेशावर गायकों के साथ दोगाना गायकी को तरजीह नहीं दी। दोगाना गायकी केवल अपने पति श्री कृपाल बावा जी के साथ ही गाई। उनकी जिंदगी में गायकी का सम्मान इस बात में देखने को मिलता है कि उन्होंने अपनी बेटियों को भी गाना सिखाया और अपनी ही परंपरा को आगे बढ़ाया। आज के समाज में उसकी गायकी का प्रभाव इस बात से देखने को मिलता है कि गुरमीत बावा जैसी गायकी हम जब भी सुनते हैं हमारा मन बार-बार उसको सुनने को करता है। किसी भी बुरी चीज़ की निंदा करने का सबसे बड़ा हथियार होती है अच्छी चीज़। इसी तरह बुरी गायकी की निंदा करने के लिए सबसे बड़ा हथियार है गुरमीत बावा की गायकी। उनके गाए हुए सुहाग, घोड़ियां, लोक-गाथाएं, 'कहारो डोली ना चायो'' और ''डिग्ग पई नी गोरी शीश महल तों' जैसे गीत शब्दों के एक अजायब घर की

तरह हैं। हमारे जगह-जगह पर बने विरासती गाँव में पड़ी हुई चक्कीयों और चरखे तब तक हमारी युवा पीढ़ी के लिए सार्थक नहीं हो सकते जब तक गुरमीत बावा के गीतों द्वारा उनके बारे में न बताया जाए। आज की नौजवान पीढ़ी में स्त्री गायिकाओं में तो कोई ऐसा नाम फिल्हाल सामने नहीं आता जो गुरमीत बावा जैसी गायकी की परंपरा को आगे बढ़ा रहा हो। लेकिन सूफी गायकी में नूराँ सिस्टरस का नाम लिया जा सकता है। आज पंजाबी संगीत इसी वजह से बदनाम हो रहा है कि नये गायक अथवा गायिकाओं की गायकी बाज़ारवाद पर निर्भर है। बाज़ार की चकाचौंध में उनके गुणों का पूरा फायदा उठाया जा रहा है। किंतु यह गायकी लंबे समय तक चलने वाली नहीं है। आने वाले समय में इन गायकों अथवा गायिकाओं का नाम किसी को याद नहीं रहेगा जब कि गुरमीत बावा, लाल चंद यमला जट्ट, सुरिंद्र कौर के नाम आज भी हम सब की जुबां पर हैं। आज विश्वविद्यालयों और महा-विद्यालयों में युवक मेलों में (Youth Festivals) लोक कलाओं को परखने के लिए गुरमीत बावा जी को बुलाया जाता है। सरकार का फर्ज़ बनता है कि ऐसे गायक और उनकी गायकी की संभाल की जाए। क्योंकि यह गायक हमारे समाज की सबसे बड़ी संपत्ति है। इन कलाकारों को सरकार की तरफ से वित्तीय मदद प्रदान की जानी चाहिए। उनकी आवाज़ को सरकार की तरफ से रिकार्ड करके संभालना चाहिए।

प्रो. निर्मल जौड़ा
डायरेक्टर यूथ वैल्फेयर
पंजाब यूनीवर्सिटी चंडीगढ़।

3.3.6 पंजाबी लोक संगीत में सबसे महान रूतबा है गुरमीत बावा का

राज गीतकार एवं राज कवी की उपाधि हासिल करने वाले पंजाब का गौरव 'चन्न गोरायां वाला' हज़ारों गीत लिखकर बड़े-बड़े कलाकारों को ख्याति दिलवा चुके हैं। पंजाब स्टेट अवार्ड से सम्मानित चन्न गोरायांवाला अपने सन्यासी धर्म गुरू श्री निरंजन

पंछी जी से नौ रसों की शिक्षा ले चुके हैं एवं लगभग 7 वर्ष उनके साथ रह कर इन रसों का अभ्यास कर चुके हैं। लगभग 20 वर्ष की आयु में ही लेखन कार्य शुरू करने वाले चन्न गोरायांवाला जी ने लगभग प्रत्येक रस से संबंधित गीत लिखे एवं उन गीतों को बड़े-बड़े कलाकारों से गवाया। लगभग 28 वर्ष की आयु में पंजाबी फिल्मों के अदाकार वरिंदर जी के साथ मुंबई चले गए। राज गायक हंस राज हंस की पहली संगीत एलबम 'कच्च दीया मुंदरां' के सभी गीत इन्होंने ही लिखे। लेखन के प्रति इनकी लगन एवं श्रद्धा इतनी सच्ची एवं पवित्र है कि ये अपनी आखिरी साँस तक लिखते ही रहना चाहते हैं। 'एकता दे पुजारी', 'सिवियां दे बोहड़' 'श्री रविदास महिमा' इत्यादि इनकी लिखी हुई सुप्रसिद्ध पुस्तकें हैं।

गुरमीत बावा के बारे में चन्न गोरायां वाला बताते हैं कि सभी कलाकारों में केवल एक गुरमीत बावा ऐसी लोक-गायक कलाकार है जो हमारी सभ्याचारक विरासत को संभाले बैठी हैं। उन का स्थान सभी कलाकारों में सबसे ऊपर है। उनकी गायकी की विलक्षणता उनका केवल अल्गोज़ा एवं चिमटा जैसे परम्परागत वाद्यों के साथ गाना है। समाज पर गुरमीत बावा का प्रभाव इस बात से देखने को मिलता है कि जहां दूसरे कलाकार एवं उनकी गायकी हवा के एक झोके की तरह आती एवं उड़ जाती है वहां गुरमीत बावा को समाज में एक अलग ही सम्मान दिया जाता है। गुरमीत बावा एक सदाबहार रहने वाली आवाज़ है। सरकार एवं समाज का लोक कलाकारों के प्रति रवईया चन्न गोरायां वाला को बहुत दुखी करता है। उनके शब्दों में गुरमीत बावा जैसे कलाकारों को उनके जीवित रहते ही कद्र करनी चाहिए एवं उनके सभी गीतों को एकत्र करके रिकार्ड करना चाहिए । आज जरूरत है अपनी विरासत को संभालने की। मरणोपरांत अवार्ड का कोई उपयोग नहीं अगर हम सब अपने लोक कलाकारों का जीवित रहते हुए सम्मान नहीं कर सकते । अपनी एक कविता के द्वारा वह सरकार को कहते हैं;\

जद कोई बरसी मेरी मनावे एह गल्ल सरकार दे कन्नी पावे

गीतां दी फुलवाड़ी मेरी भंग दे भा ना जाण देवे

एह मैनू तां नहीं संभाल सकी,

मेरे गीत संभाल लवे

आज के गायक एवं कलाकार बाज़ारवाद की तरफ भागकर अच्छा पैसा कमा रहे हैं किंतु हमारी विरासत को संभालने वाले कलाकार आज सरकार की तरफ से उम्मीद लगाए बैठे है सिर्फ असली सम्मान प्राप्त करने के लिए । आज के कलाकारों में नूरां सिस्टर्स का नाम लिया जा सकता है जो बाज़ारवाद को तरजीह न देकर सूफी गायकी के प्रति अपनी सच्ची श्रद्धा दिखा रही हैं।

चन्न गोरायां वाला

राज गीतकार/कवि

गोरायां

3.3.7 सरलता, सादगी एवं शुद्धता का प्रतीक है गुरमीत बावा

पंजाबी भाषा, पंजाब की लोक कला, विरासत, संस्कृति, संगीत एवं साहित्य को दुनिया के कोने कोने तक पहुंचाने वाले बहु-प्रतिभाशाली व्यक्तित्व का नाम है सतिंदर सत्ती। एक कवयित्री के तौर पर अपनी जीवन यात्रा का आरंभ करने वाली सतिंदर सत्ती ने एल.एल.बी. (LLB) एवं एल.एल.एम (LLM), गुरू नानक देव विश्वविद्यालय से की और इसी दौरान युवक मेलों में एक कुशल मंच संचालक के तौर पर एक अलग एवं विलक्षण पहचान बना ली। रंग मंच से अपनी यात्रा की शुरूआत करते हुए सत्ती ने 1992 में 'मिट्टी दा मुल्ल' नाटक में उत्तम अदाकारा की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद अगले ही वर्ष 1993में युवक मेले में एक और नाटक में फिर से उत्तम अदाकारा का सम्मान प्राप्त किया। एक चुम्बकीय व्यक्तित्त्व की धारणी सतिंदर सत्ती ने पंजाबी जगत

में अपनी एक विलक्षण पहचान बचा ली है। पंजाब एवं पंजाबियत का जिंदा रखने वाली सतिंदर सत्ती के बिना टेलीविज़न का कोई भी सम्मान समारोह अथवा अन्य कोई भी प्रोगराम अधूरा सा लगता है। पंजाब को सतिंदर सत्ती की इस अनोखी देन के फलस्वरूप 2004 में पंजाब के मुख्यमंत्री ने इनके 'पंजाब दी धी' का सम्मान प्रदान किया। कला एवं संस्कृति को समर्पित सतिंदर सत्ती को गुरू नानक देव विश्वविद्यालय की ओर से स्वर्ण पदक भी प्रदान किया गया।

अपने यहां तक के सफर का श्रेय सतिंदर सत्ती, दूरदर्शन के डायरेक्टर डा. लखविंदर जौहल को देती है जो सबसे पहले इनको पंजाब के लोगों के रूबरू लेकर आए। इस लंबे सफर के दौरान सत्ती जी को मिले सम्मान एवं उपाधियों की सूची तो निस्संदेह काफी लंबी है और निरंतर चलती आ रही है। उन से बातचीत करने का अवसर मिला तो हाल ही में उनको मिले अन्ना हज़ारे सम्मान का पता चला जो कि पुणे में 2016 में उनको मिला। गुरमीत बावा जी के साथ उनका बहुत गहरा संबंध है। उनके विचारानुसार जितना रस एवं सादगी गुरमीत बावा जी के गीतों एवं उनके व्यक्तित्त्व में मिलती है वो किसी और में नहीं मिलती। पंजाबी लोक संगीत को बिल्कुल शुद्ध रूप में प्रस्तुत करना केवल और केवल गुरमीत बावा जी के हिस्से में आया है। पंजाबी लोक गीतों में बिना कोई छेड़ छाड़ किए और अपनी आवाज़ में बिना किसी बनावट को पैदा करके गाना गुरमीत बावा जी की सबसे बड़ी विशेषता है। लगभग पिछले 50 वर्षों से निरंतर गाते हुए गुरमीत बावा जी आज भी बिना किसी वाद्य की सहायता से एक योद्धा की भांति स्वर लगा कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करने की शक्ति रखती हैं। यह सब उनको भगवान की तरफ से मिला हुआ एक बेमिसाल तोहफा है। सतिंदर सत्ती जी के शब्दों में गुरमीत बावा जी ने लोक गीतों के कद को और भी ऊंचा किया है। उनको अपने आप पर और अपने गायन पर इतना भरोसा एवं विश्वास है कि अन्य कलाकारों की भांति उन्हें हाथ पाँव उठाने की अथवा कमर मटकाने की आवश्यकता नहीं प्रतीत होती। परिवर्तन कुदरत का नियम है। जिस दौर में गुरमीत

बावा जी ने गाना आरंभ किया उस समय गायक अपने आप को लोगों का एक नुमाईंदा समझ कर गाते थे किंतु आज के गायकों की गायन शैली एवं व्यक्तित्व में यह भिन्नता स्पष्ट रूप से नज़र आती है कि आज के गायक अपने आप को कला की दुनिया का सितारा अधिक मानते हैं और कलाकार कम। एक दम से बुलंदियां छूने की इच्छा रखने की वजह से ही ज्यादा देर मैदान में टिक नहीं पाते और कुछ समय के बाद अलोप हो जाते हैं। दूसरी तरफ गुरमीत बावा जैसे कलाकार आज भी लोगों के दिलों पर राज कर रहे हैं और आज भी उनका नाम लेते ही हर एक सर आदर एवं सम्मान से झुक जाता है। आज के युग में गायकों की बात की जाए तो सतिंदर सत्ती जी के शब्दों में कोई भी गायक कलाकार अपनी विरासत को संभालने के उद्देश्य से नहीं गा रहा बल्कि कला की दुनिया का सितारा बनने के उद्देश्य से गा रहा है। आज की नई पीढ़ी के गायकों में रणजीत बावा जैसा गायक पंजाबी लोक संगीत को संभालने के उद्देश्य से गाने का प्रयत्न कर रहा है किंतु बाज़ारवाद की दौड़ में उसकी गायकी भी एक मजबूरी बनती जा रही है। गुरमीत बावा जी की समाज के प्रति सबसे बड़ी देन यह है कि उन्होंने लड़कियों को ऊंचा उठाने के लिए पंजाबी लोक संगीत की एक विशेष गायन शैली 'सुहाग' को बड़े स्नेह से संभाला है। उसके गाए सभी गीत अधिकतर स्त्रियों के लिए हैं। उन्होंने एक बात का प्रमाण प्रस्तुत किया है कि विवाह स्त्रियों की जिंदगी का अंत अथवा रूकावट नहीं है बल्कि विवाह के बाद भी स्त्रियां अपने आप को आगे बढ़ा सकती हैं। इस बात का प्रमाण गुरमीत बावा जी की अपनी जिंदगी से भी मिलता है जिन्होंने अपना गायन ही विवाह के बाद शुरू किया और जिनके घर बेटियों ने ही जन्म लिया। तीनों बेटियों को भी उसी शान से संगीत सिखाया और वही बेटियां आज उनका नाम रौशन कर रही हैं। लोक गायकी के भविष्य के बारे में सत्ती जी का कहना है कि लोक गायकी अमर है, वह कभी मर नहीं सकती। हां कुछ देर के बाद संगीत के क्षेत्र में बदलाव अवश्य आते हैं लेकिन लोक गायकी अपना दर्जा कभी भी नहीं खो सकती। हमारे लोक गायकों का सबसे

बड़ा फर्ज़ यह बनता है कि बाज़ारवाद की इस दौड़ में प्रत्येक वर्ष कम से कम एक लोक गीत अवश्य गाएं और उसको रिकार्ड करवाएं ताकि हमारी युवा पीढ़ी को लोक संगीत से जोड़ा जा सके।

सतिंदर सत्ती

प्रधान, पंजाब कला परिषद,

चंडीगढ़

3.3.8 अच्छी गायकी एवं उच्च व्यक्तित्त्व की धारणी हैं गुरमीत बावा

जालंधर दूरदर्शन के डायरेक्टर डा. लखविंदर सिंह जौहल एक अत्यंत प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के धारणी हैं। गुरू नानक देव विश्वविद्यालय में 'बरतानवी पंजाबी कविता विच सभ्याचारक तनाव ते पासार' विषय पर शोध कर चुके डा. जौहल ने दूरदर्शन में शामिल होने से पहले जर्नलिज़म किया और 7 वर्ष तक 'नवां जमाना' एवं 'अजीत' समाचार पत्र में कार्यरत रहे। 1985 में दूरदर्शन में शामिल होने के बाद डा. जौहल ने जालंधर, पटियाला एवं दिल्ली की शाखाओं में काम किया। दिल्ली में डी.डी. न्यूज़ एवं लगभग एक वर्ष ग्वालियर दूरदर्शन में भी रहे। 2015 तक निरंतर दूरदर्शन में सेवाएं निभाने के बाद यहीं से रिटायर्ड होकर फिर से नियुक्त हुए । लोक-गायकी के बारे में डा. लखविंदर जौहल ने बताया कि आज के युग में लोक गायकी को बहुत ग़लत तरीके से लिया जा रहा है। पापुलर गायकी को ही लोक-गायकी माना जा रहा है। सूफी गायकी एवं किस्सा गायकी को भी लोक गायकी माना जा रहा है। पंजाब के भिन्न-भिन्न विश्वविद्यालयों में युवक मेले करवाए जाते हैं जहां इस भेद का स्पष्ट होना अत्यंत आवश्यक है। आज के लोक गायक कलाकारों की बात की जाए तो बहुत से गायक ऐसे भी हैं जो इतने सुप्रसिद्ध तो नहीं हुए लेकिन उन्होंने कभी हल्का गीत नहीं गाया। जैसे कि पाली देतवालिया। इनके इलावा हंस राज हंस, गुरदास मान जैसे गायकों ने हमेशा हमारे समाज की आवश्यकताओं को सामने रखते हुए ही सभी गीत

गाए हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि यह गायक बाज़ारवाद की दौड़ में रहते हुए भी समाज को एक अच्छी दिशा प्रदान कर रहे हैं। ऐसे दौर में अगर गुरमीत बावा का नाम लिया जाए तो गुरमीत बावा और उनकी बेटियों ने सभ्याचारक गीतों से अतिरिक्त कभी कोई और गीत गाया ही नहीं। इनके गायन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये कभी बाज़ारवाद की दौड़ में शामिल हीं नहीं हुए। एक साफ सुथरी राह पर चलते हुए राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्मान भी हासिल कर लिए। गुरमीत बावा के साथ अगर दूसरे कलाकारों की अथवा आज के दोगाना गायक कलाकारों की तुलना की जाए तो वो गायक कलाकार केवल थोड़ी देर के लिए सुने जाते हैं और फिर अलोप हो जाते हैं। धीरे-धीरे उनका नाम तक लोग भूल जाते हैं। गुरमीत बावा के कंठ में और हेक में जो दर्द एवं जज़्बा सुनने को मिलता है वह किसी और गायक में सुनने को नहीं मिलता। इतने वर्षों से निरंतर उसी जज़्बे से गाना उनको लोक-गायकी के क्षेत्र में विलक्षण बनाता है। गायकी में एक ऐसा दौर भी आया जब जगह जगह दोगाना गायकी, अखाड़ा गायकी एवं विवाह शादियों में मंच पर कमर मटका कर गाया जाने लगा। ऐसे दौर में भी गुरमीत बावा जी ने इस बात की परवाह न करते हुए अपनी उसी गायन शैली को कायम रखा और कभी भी उस समय की प्रचलित गायन शैली को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। यहां डा. जौहल एक और बात जोड़ते हुए कहते हैं कि गायकी के साथ-साथ गायक का व्यक्तित्व भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है। गुरमीत बावा जी गायिका के साथ साथ एक अत्यंत विनम्र एवं स्नेहमई व्यक्तित्त्व की धारणी हैं। समाज एवं संस्कृति पर अगर गुरमीत बावा की गायकी के प्रभाव के बारे में बात की जाए तो डा. जौहल का कहना है कि जब जब समाज अच्छी कद्र-कीमतों की और संस्कारों की बात करता है तो ऐसे गायक कलाकारों का नाम सब से पहले लिया जाता है। ऐसी बेमिसाल चीज़ों का प्रत्यक्ष रूप से हमें प्रभाव चाहे न भी नज़र आता हो पर कई पीढ़ियों तक अपना प्रभाव छोड़ कर अमर हो जाता है। आज भी कहीं गुरमीत बावा का गीत टी.वी. या रेडियो पर चल रहा हो तो लोग

एक आनंद की अनुभूति करते हैं। क्योंकि जो कुछ लोक-मन के अंदर चल रहा होता है, गुरमीत बावा की आवाज़ उसके साथ एक तालमेल बना कर चलती है। गुरमीत बावा जैसी लोक गायकी को प्रोत्साहित करने के लिए चाहे हमारे विश्वविद्यालय एवं शैक्षणिक संस्थाएं अपना पूरा योगदान दे रही हैं किंतु हमारे पंजाबी गायकों को जागृत होने की आवश्यकता है। हमारी लोक-गायकी का भविष्य उज्जवल है और सदैव रहेगा क्योंकि इस का सीधा संबंध हमारे अंतर मन से है, हमारी आंतरिक शान्ति से है। यही कारण है कि आज पंजाब की लोक गायकी हर तरह की गायकी में प्रयोग की जा रही है। यहां तक कि हिंदी फिल्म जगत में भी पंजाबी गीतों का प्रयोग किया जा रहा है।

गुरमीत बावा जी के बाद अगर किसी गायक अथवा गायिका का नाम लिया जा सकता है तो वो उनकी अपनी बेटियां लाची बावा एवं ग्लोरी बावा ही हैं जो उनकी परंपरा को ही आगे बढ़ा रही हैं। इसलिए गुरमीत बावा की गायकी अमर है और सदैव रहेगी।

डॉ. लखविंदर जौहल

डायरेक्टर, जालंधर दूरदर्शन

3.3.9 गुरमीत बावा की आवाज़ में भावनाओं का एहसास है

पंजाब यूनीवर्सिटी के संगीत विभाग से सेवामुक्त प्रो. डा. अरविंद शर्मा ने पंजाब के लोक संगीत पर बड़ी गहराई से अध्ययन किया। डा. अरविंद शर्मा जी के पिता स्व. श्री धर्मेश चंद्र जी पंजाब यूनीवर्सिटी के संगीत विभाग के संस्थापक थे। पंजाब के होशियारपुर ज़िला के एक गाँव से संबंध रखने वाले डा. अरविंद शर्मा पिछले 40, 50 वर्ष से चंडीगढ़ पंजाब यूनीवर्सिटी में ही संगीत विभाग में अपनी सेवाएं निभा रहे हैं। दिल्ली यूनीवर्सिटी से एम.फिल. करने हेतु छात्रवृत्ति अर्जित करने वाले डा. शर्मा सबसे

पहले व्यक्ति थे। इनके पिता जी ग्वालियर घराने से संबंध रखने वाले महान संगीत विद्वान थे।

एम.फिल. करने के बाद डा. शर्मा ने चंडीगढ़ में ही सरकारी कालेज सेक्टर 42 में प्रिंसीपल के तौर पर काम किया। सन् 1989 में डा. शर्मा पंजाब यूनीवर्सिटी में नियुक्त हुए जो कि इनका एक सपना था और उसी सपने को डा. शर्मा ने जी जान से निभाया।

गुरमीत बावा की गायकी के बारे में बात करते हुए डा. शर्मा ने कहा कि गुरमीत बावा की आवाज़ में भावनाओं का एक एहसास है। आज के गायक तो एक खोखलेपन में जी रहे हैं जब कि पहले पहल गाने वाले गायक वास्तव में गाते थे और एक ही वाद्य के साथ गा जाते थे। आज की पीढ़ी में कोई भी गायक ऐसा नज़र नहीं आता जो लोक गायकी गाता हो। हम लोग खुद ही श्रोताओं को एक निम्न स्तर की गायकी परोस कर दे रहे हैं। लेकिन लोक गायकी का भविष्य धुँधला नहीं है। एक दिन ये उसी शान से वापिस आएगी। इसलिए लोक गायकी हमारी विरासत की जड़ है जो कभी भी खत्म नहीं हो सकती।

प्रो. डा. अरविंद शर्मा
संगीत विभाग
पंजाब यूनीवर्सिटी
चंडीगढ़।

3.3.10 लोक गायकी को ज़िंदा रखने वाली है गुरमीत बावा

वडाली ब्रदर्ज़ के नाम से जाने जाते भारत के सुप्रसिद्ध सूफी एवं लोक कलाकार पूरन चंद वडाली एवं प्यारे लाल वडाली को कौन नहीं जानता। ज़िला अमृतसर के गुरू की वडाली गाँव में रहने वाले वडाली ब्रदर्ज़ ने अपना सारा जीवन सूफ़ी एवं लोक संगीत को समर्पित किया है। पटियाला घराना के पं. दुर्गा दास एवं बड़े गुलाम अली खां जैसे

उच्च दर्जे के विश्व विख्यात कलाकारों को गुरू धारण कर संगीत की शिक्षा हासिल कर इन्होने केवल पंजाब ही नहीं बल्कि समूचे देश में अपनी गायकी का डंका बजाया। संगीत नाटक अकादमी अवार्ड(1992), पंजाब संगीत नाटक अकादमी अवार्ड(2003), लाइफ टाइम एचीवमैंट अवार्ड(पी.टी.सी. चैनल 2015), एवं पदम श्री अवार्ड विजेता(2005) वडाली ब्रदर्ज़ ने अपनी गायकी को इलैक्ट्रोनिक वाद्य यंत्रों से लगभग दूर रखते हुए पंजाब की लोक परंपरा को जीवित रखा। गुरमीत बावा एवं उनकी गायकी के संबंध में जब इनसे पूछा गया तो इनके मुख से पहला शब्द 'वाह' निकला। गुरमीत बावा की गायकी को शुद्ध एवं विलक्षण बताते हुए इन्होंने बताया कि आज के युग में यदि कोई लोक गायकी की संभाल कर रहा है तो वह है गुरमीत बावा। आधुनिक पंजाबी गायकी की बात करते हुए वह कहते हैं कि आज के युवा कलाकारों में से कोई भी एसा कलाकार नहीं है जो परंपरागत पंजाबी लोक गायकी को गाता हो। उनके शबदों में "पहलां दी गायकी ते हुण दी गायकी विच एही फरक है कि पहलां दी गायकी विच कन्न रस सी ते हुण दी गायकी विच सिर्फ अक्ख रस वेखण नूं मिलदा है।" गुरमीत बावा के बाद लोक गायकी के भविष्य के बारे में जब उनसे पूछा गया तो उन्होंने अत्यंत खूबसूरती से एक किस्सा सुनाते हुए उत्तर दिया कि औरंगज़ेब ने अपने राज्य में सेवकों को आदेश दिया कि संगीत को इतना गहराई तक दफ़न कर दो कि कई सदियों तक यह अपना सर न उठा सके। इस के बावजूद संगीत पहले से भी ज़्यादा विकसित रूप से सामने आया। इसी तरह लोक गायकी कभी मर नहीं सकती। परिवर्तन कुदरत का नियम है जिसका प्रभाव समय समय पर लोक गायकी पर भी देखने को मिला, किंतु लोक गायकी अपना वास्तविक गौरव कभी नहीं खो सकती।

पूरन चंद गुरू की वडाली

सुप्रसिद्ध सूफ़ी एवं लोक गायक

3.3.11 गुरमीत बावा की गायकी किसी भी बाहरी तत्त्व से प्रभावित नहीं रही

पंजाबी यूनीवर्सिटी पटियाला में संगीत विभाग के अध्यक्ष के रूप में कार्यशील प्रो.डा. यशपाल शर्मा इंदौर घराने के पं.अमरनाथ के शिष्य एवं उच्च दर्जे के शास्त्रज्ञ हैं। दिल्ली और कुरूक्षेत्र यूनीवर्सिटी से शिक्षा हासिल कर सन् 1987 से लेकर अब तक लगभग 30 वर्ष संगीत के क्षेत्र में इन्होंने अनेकों उपलब्धियां अर्जित कीं। संगीत विभाग के अध्यक्ष होने के साथ साथ ये coordinator cultural activities भी रह चुके हैं। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत पर लगभग 6 पुस्तकें एवं लगभग 20 शोध पत्र भी लिख चुके हैं। लगभग 15 शिष्य इनके निर्देशन के अंतर्गत पी.एच.डी. एवं 30 के करीब एम.फिल.की उपाधि हासिल कर चुके हैं। गुरमीत बावा के संबंध में इनसे बातचीत करने का अवसर प्राप्त हुआ तो इनके बहुमूल्य विचार सुनने को मिले। लोक गायकी के संबंध में प्रो.यशपाल जी अपने विचार प्रकट करते हुए कहते हैं "There is a very thin line between lok sangeet and popular sangeet". इनके विचारानुसार परंपरागत पंजाबी लोक संगीत और आज के प्रचलित पंजाबी संगीत में बहुत अंतर है। परंपरागत लोक संगीत आजकल एक museum का रूप लेता जा रहा है। इस का कारण यह है कि हर कलाकार संगीत के क्षेत्र में अपने आप को प्रचलित करने के साथ साथ अपने परिवार का पालन पोषण भी करना चाहता है। इसलिए उसे बाज़ारवाद का सहारा लेना ही पड़ता है। लोक संगीत एक किताबों की चीज़ बनती जा रही है। आज का कलाकार परंपरा का पालन करने की बजाय इस बात में अधिक विश्वास रखता है कि वह बाहर से कैसा दिखता है। कुछ मात्र कलाकार एसे हैं जो परंपरागत गायकी को संभालने का प्रयत्न कर रहे हैं किंतु हमारी सरकार की तरफ से उनको कोई प्रोत्साहन नहीं मिल रहा। एसे कलाकारों में से एक नाम है गुरमीत बावा का। एसे कलाकारों को सम्मान देना शायद हमारी सरकार की किसी नीति में शामिल ही नहीं है। बड़े दुख की बात है कि बाहर के देशों में तो अपनी संस्कृति को बचाने का यत्न किया जा रहा है किंतु अपने देश में अपने राज्य में इसको संभालने के लिए

कोई नीति नहीं अपनाई जा रही। यह भी संभव है कि हमारी आने वाली पीढ़ीयां लोक संगीत से वाकिफ़ ही न हों। दूसरी तरफ़ यह भी कहा जा सकता है कि हमारा लोक संगीत भी परिवर्तित हो रहा है। एक समय था जब सुरिंदर कौर का गाया हुआ गीत लोक गीत बन गया। हो सकता है कि आज का कोई प्रचलित गीत कल का लोक गीत बन जाए। विडंबना यह है कि हम इस परिवर्तन को स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं। हमारी शैक्षणिक संस्थाएं निस्संदेह इस परंपरा को संभालने का प्रयत्न कर रही हैं। गुरमीत बावा के बारे में विचार प्रकट करते हुए प्रो.यशपाल जी कहते हैं कि अगर गुरमीत बावा की तुलना उनकी समकालीन गायिकाओं से की जाए तो बाकी सब गायिकाओं की गायन शैली लोक रंग के इलावा अन्य शैलियों से भी प्रभावित रही है जब कि गुरमीत बावा की गायकी में शुरू से लेकर अब तक केवल लोक रंग ही नज़र आता हैं। गुरमीत बावा जी ने हमेशा शुद्ध पंजाबी लोक गायकी को ही गाया है। गुरमीत बावा के इलावा अगर किसी और गायक की गायकी में लोक रंग नज़र आता है तो यशपाल जी के अनुसार उन गायकों में हरभजन मान, वारिस ब्रदर्ज़, सतिंदर सरताज और विजय यमला का नाम लिया जा सकता है। प्रो.यशपाल जी ने बताया कि परंपरागत लोक कलाओं को बढ़ावा देने के लिए हर वर्ष पटियाला यूनीवर्सिटी में लोक मेला करवाया जाता है जिसमें गायकी के खुले अखाड़े लगाए जाते हैं। आज की युवा पीढ़ी इन कलाओं का आनंद तो अवश्य लेती है किंतु इसको अपनाने को तैयार नहीं है।

प्रो.यशपाल शर्मा
अध्यक्ष संगीत विभाग
पंजाबी यूनीवर्सिटी पटियाला

3.3.12 लंबी हेक की गायिका गुरमीत बावा ने हमेशा ठेठ गायकी को ही अपनाया

पंजाबी संगीत जगत में शायद ही कोई गायक कलाकार एसा हो जिसने सुप्रसिद्ध गीतकार शमशेर संधु का लिखा हुआ गीत ना गाया हो। पंजाबी भाषा एवं पंजाबी गायकी की गहराई तक जानकारी रखने वाले शमशेर सिंह संधु के लिखे हुए गीतों को अब तक लगभग 72 गायक कलाकार अपनी आवाज़ दे चुके हैं। इनके लगभग 500 गीत रिकार्ड हो चुके हैं। इन में से 150 के करीब गीत तो केवल सुप्रसिद्ध पंजाबी गायक सुरजीत बिंदरखीया ही गा चुके हैं। बिदरखीया के पेशकार शमशेर संधु ही रह चुके हैं। शमशेर संधु जी ने लेखन कार्य का आरंभ कविता एवं कहानी से किया। 1990-91 में इनका झुकाव गीत लिखने की तरफ़ हुआ। बिंदरखीया की गायकी और शमशेर संधु की गीतकारी इसी समय इकट्ठी शुरू हुई। इनका सबसे पहला गीत सरदूल सिकंदर की आवाज़ में रिकार्ड हुआ था। लगभग 8 पंजाबी फिल्मों के गीत भी शमशेर जी लिख चुके हैं। इन में से एक पंजाबी फिल्म 'कचहरी' नैश्नल अवार्ड भी जीत चुकी है। T-series के साथ लगभग 68 कैसेट्स और प्रोगराम कर चुके हैं। बिंदरखीया का गाया हुआ एक बहुत ही प्रचलित गीत बी.बी.सी.के टॉप टेन गीतों में लगभग तीन महीने चला जिसके बोल थे "दुपट्टा तेरा सत रंग दा"। यह गीत भी शमशेर संधु का लिखा हुआ था। इसी गीत के लिए बिंदरखीया और संधु दोनों को लंदन में सम्मानित किया गया। शमशेर संधु जी गीतकारी के साथ साथ 1976 से लेकर 1978 तक सिख नैश्नल कालेज बंगा में अध्यापन का कार्य भी कर चुके हैं। उसके बाद 30 वर्ष ट्रिब्यून समाचार पत्र में चीफ़ एडीटर के तौर पर कार्यशील रहे। ट्रिब्यून में यह बहुत सारे विषयों पर लिखते भी रहे हैं। हाल ही में शमशेर संधु के लिखे तीन चार गीत सुरजीत खान की आवाज़ में रिकार्ड होकर यू-ट्यूब पर आ चुके हैं। गुरमीत बावा और कृपाल बावा के साथ शमशेर संधु का बहुत पुराना और गहरा साथ रहा है। शमशेर जी ने गुरमीत बावा के बारे में अपने विचार प्रकट करते हुए

कहा कि गुरमीत बावा के बहुत कम गीत रिकार्ड हुए हैं। इन्होंने ज्यादातर स्टेज प्रोग्राम ही किए हैं। लंबी हेक की गायिका के नाम से जानी जाती गुरमीत बावा को मिर्ज़ा, जुगनी, मल्की कीमा जैसे गीतों से विश्व में ख्याति मिली। जहां तक गुरमीत बावा के बाज़ारवाद से हट कर रहने की बात आती है तो शमशेर जी का कहना है कि एसा नहीं है कि गुरमीत बावा बाज़ारवाद से बची रहीं। इन्होंने भी अपने आप को इस क्षेत्र में आज़माया किंतु अपनी गायकी को ज़्यादा देर तक बाज़ारवाद से प्रभावित नहीं कर सकीं। हो सकता है कि उस समय के श्रोताओं की मांग को मुख्य रखते हुए उन्होंने इस तरफ़ जाने की कोशिश की हो पर उस मजबूरी को अपनी गायकी पर हावी ना होने दिया और फ़िर से अपनी परंपरागत गायकी की तरफ़ लौट आईं। वास्तव में गीतों में अभद्र शब्दों का प्रयोग सदैव ही होता आया है। चाहे वह यमला जट्ट का ज़माना हो चाहे सुरिंद्र कौर का और चाहे गुरमीत बावा का। आधुनिक गायकी में भी हिंसा एवं अभद्र शब्दों का प्रयोग होना केवल गायक कलाकारों का कसूर नहीं है बल्कि यह सब कुछ सेन्सर बोर्ड द्वारा ही पास होकर श्रोताओं के सामने आता है। दूसरा सब से बड़ा योगदान हमारे मीडिया का है जो जलते हुए में तेल डालने का काम कर रहा है। गायकी में विलक्षणता की बात की जाए तो शमशेर संधु जी का कहना है कि सिर्फ गुरमीत बावा ही नहीं बल्कि उस समय की हर गायिका की गायकी अपने आप में विलक्षण थी। लोक गायकी के भविष्य के बारे में पूछने पर वह बताते हैं कि जिस प्रकार अनेकों प्रकार की नई नई मिठाइयां आने के बावजूद लड्डू एवं बर्फ़ी की जगह कोई मिठाई नहीं ले सकी उसी तरह लोक गायकी किसी भी तरह के तूफान का सामना करने के बाद भी अमर रहेगी। आज के युग में सतिंदर सरताज और कंवर गरेवाल जैसे कलाकार पंजाब की परंपरागत गायकी को बचाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

स. शमशेर संधु

सुप्रसिद्ध गीतकार

3.3.13 पंजाबीयत की पहचान है गुरमीत बावा

यह शब्द हैं माँ-बोली पंजाबी की तन मन से सेवा कर रहे डा. सतीश वर्मा जी के जिनको मिल कर एक गौरव का अनुभव हुआ। सन् 1966 में पंजाब की पुनर-बाँट के समय पंजाबी बोली की हो रही दुरदशा को महसूस करते हुए 10 वर्ष की आयु में ही इन्होंने प्रण कर लिया कि केवल पंजाबी बोली के लिए ही काम करेंगे। पंजाबी बोली, पंजाबी सभ्याचार एवं संस्कृति का गहनता से विश्लेषण कर चुके सतीश वर्मा जी ने यह सिद्ध कर दिया कि पंजाबी केवल सिखों की भाषा अथवा बोली नहीं है बल्कि पंजाब में रहने वाले प्रत्येक पंजाबी की बोली है। उनके शब्दों में, "मुझे जुबान गुरू गोबिंद सिंह जी ने दी, कलम गुरू नानक देव जी ने दी और मैं विश्वास का सिख बन गया।" अपने आप को पंजाब का ढाडी कहते हुए सतीश वर्मा जी ने पंजाबी में पी.एच डी., हिंदी और अंग्रेज़ी विषय में एम.ए. की डिग्री हासिल की और साथ ही अरबी, फारसी एवं संस्कृत भाषा भी सीखी। अब तक इनकी लगभग 62 किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं और 30 छात्रा को पी.एच.डी. के लिए कुशल निर्देशन दे चुके हैं। बहु-पक्षीय शखसियत के धारणी सतीश वर्मा जी एक कुशल कवि, नाटककार एवं अनुवाद कर्ता भी हैं। इसके साथ साथ रेडियो और टी.वी. के बहुत अच्छे कलाकार भी हैं।

पंजाबी सभ्याचार के साथ जुड़े होने के कारण गुरमीत बावा और कृपाल बावा के साथ इनके घनिष्ठ संबंध हैं। पिछले 25 वर्षों से गुरमीत बावा जी के साथ उनके प्रोगरामों में भी मंच संचालन कर चुके हैं। उनके विचारानुसार गुरमीत बावा ने केवल लोक गायकी ही गाई है और यह अत्यंत गर्व की बात है क्योंकि लोक गायकी शास्त्रीय संगीत की जड़ है। सतीश जी गुरमीत बावा की तुल्ना किसी और से ना करते हुए केवल पाकिस्तानी पंजाबी गायिका रेशमा से करते हैं। इन दोनों में यही समानता है कि दोनों ही अपनी जड़ से जुड़ी हुई हैं। उनके शब्दों में "गुरमीत बावा दी गायकी इक खुदरौ बूटे दी तरां है जो कि आपणे आप पैदा होई है।" गुरमीत बावा की तुल्ना

यदि इनकी समकालीन गायिकाओं से की जाए तो लंबी हेक के इलावा इनकी विलक्षणता इस बात में नज़र आती है कि दोगाना गायकी के दौर में भी गुरमीत बावा जी ने अपनी गायन शैली को नहीं छोड़ा। दोगाना गायकी गाई तो ज़रूर लेकिन अपने पति कृपाल बावा जी के साथ। लोक गायकी के भविष्य को लेकर सतीश वर्मा जी बहुत ही आशावादी हैं। उनका मानना है कि लोक गायकी में परिवर्तन अवश्य हुए हैं और होते रहेंगे किंतु इसका मयार कम नहीं होगा बल्कि बढ़ेगा। वाद्यों का गायकी पर हावी होना लोक गायकी पर एक आघात तो है लेकिन लोक गायकी का लोक तत्त्व कभी नहीं मर सकता। हमारे समाज एवं संस्कृति पर लोक गायकी अथवा गुरमीत बावा की गायकी का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से तो नज़र नहीं आता पर आज भी जब विवाह समारोहों में लेडीज़ संगीत का ज़िक्र होता है तो एकदम से गुरमीत बावा का नाम ही स्मरण हो आता है। जब भी पंजाबी सभ्याचार की बात आती है तो गुरमीत बावा का नाम ही दिमाग में आता है। गुरमीत बावा को एक सदाबहार पौधा कहा जा सकता है जो सदैव इसी तरह ही कायम रहेगा। गुरमीत बावा जैसी गायकी को संभालने के लिए आज की ज़रूरत है हमारे विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में आरकाइव्ज़ (Archives) का होना जहां लोक धुनों को संभाला जा सके। इस काम के लिए एक जुनून का होना अत्यंत आवश्यक है जिसकी कमी आज के दौर में खलती है।

डा. सतीश वर्मा
डीन युवक भलाई विभाग
पंजाबी यूनीवर्सिटी
पटियाला

3.3.14 गुरमीत बावा की तुल्ना केवल गुरमीत बावा से ही है

सुप्रसिद्ध पंजाबी लोक गायक एवं भांगड़ा कलाकार पम्मी बाई को पंजाब का बच्चा बच्चा जानता है। बचपन से ही घर में गायकी का माहौल होने के कारण संगीत इनको

विरासत में मिला। लेकिन इन्होंने कभी नहीं सोचा था कि गायकी को एक पेशे के तौर पर अपनाएंगे और एक पंजाब के एक नामवर गायक बन जाएंगे। उत्तर क्षेत्रीय सभ्याचारक केंद्र का प्रोग्राम डायरेक्टर होने के कारण पम्मीबाई को सुरिंदर कौर, नरिंदर बीबा, स्व. जगजीत सिंह एवं गुरमीत बावा जी के साथ भी बहुत से स्टेज प्रोग्राम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पेशे से वकील पम्मी बाई को संगीत का जुनून आखिर अपनी तरफ खींच लाया और पम्मी बाई ने एक व्यक्तिगत गायक के तौर पर संगीत जगत में अपने सफर का आरंभ किया। रेडियो पर आडीशन पास करने का श्रेय वे गुरमीत बावा एवं कृपाल बावा को ही देते हैं। वर्तमान समय की लोक गायकी की बात करते हुए पम्मी बाई इस बात पर दुख प्रकट करते हुए कहते हैं कि आधुनिकीकरण ने लोक गायकी पर आघात तो किया है, इस बात में कोई दो राय नहीं है। वर्तमान गायकी में गीतों में से साहित्य मनफ़ी होता जा रहा है। वर्तमान समय में उन गायकों को पसंद किया जाता है जो अपनी गायकी में थोड़ा बहुत आधुनिकता का तड़का भी लगाते हैं। इस का कारण यह है कि जो लोग अपनी विरासत एवं सभ्याचार से दूर हैं उनको अपनी संस्कृति के नज़दीक लाने के लिए उनके पहुंच क्षेत्र तक जाना ज़रूरी है। पम्मी बाई के विचारानुसार संगीत कभी भी बुरा नहीं होता बस गीत के बोल अच्छे होने चाहिए जिनमें हमारी सभ्यता और पंजाबीयत झलकनी चाहिए। पम्मी बाई खुद पर इस बात का गर्व महसूस करते हैं कि उन्होंने कभी कोई एसा गीत नहीं गाया जिसको परिवार में एकसाथ बैठकर ना सुना जा सके। उनके स्टेज प्रोग्राम में अभी भी परंपरागत लोक वाद्यों का प्रयोग होता है। पम्मी बाई का कहना है कि जिस तरह कोई भूला भटका आदमी वापिस अपने घर पहुंच जाता है उसी तरह धीरे धीरे लोक गायकी भी अपने पुराने रूप में लौट रही है। गुरमीत बावा के बारे में पम्मी बाई कहते हैं कि गुरमीत बावा एक legendry singer हैं जिन्होंने पंजाब की विरासत को संभालने का महान कार्य किया है। अपने ही बनाए हुए एक ही रास्ते पर चलने वाली गुरमीत बावा का पंजाबी संगीत को दिया हुआ योगदान कभी

भुलाया नहीं जा सकता। गुरमीत बावा की विलक्षणता इस बात में नज़र आती है कि गुरमीत बावा जी ने माझा क्षेत्र को पूरी तरह से प्रस्तुत किया। वर्तमान गायक कलाकारों में से पम्मी बाई को कोई भी एसा चेहरा नज़र नहीं आता जो परंपरागत गायकी को संभालने का प्रयास कर रहा है। उनके विचारानुसार इस गायकी को सुरक्षित रखने के लिए सरकार की तरफ से भी प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। साथ ही गायक कलाकारों को भी चाहिए कि वो गायकी को एक पेशे के तौर पर अपनाने के साथ साथ इस बात पर भी ध्यान दें कि वे समाज के लिए क्या कर रहे हैं। पंजाबी सभ्याचार के प्रति यही इनका योगदान होगा।

पम्मी बाई

पंजाबी लोक

गायक

3.4 साक्षात्कार - गुरमीत बावा

भारतीय परंपरा के अनुसार कला एवं समाज में एक गहरा संबंध है। एक कलाकार का समाज के साथ एक गहरा एवं अटूट रिश्ता होता है । सत्य तो यह है कि कलाकार समाज में ही पल्लवित होते हैं। हिंदुस्तानी संगीत को ऐतिहासिक पक्ष से देखें तो यह स्पष्ट होता है कि संगीत के साथ-साथ संगीतकारों ने भी बहुत से उतार-चढ़ाव देखे हैं।

सदियों पहले पंजाब के लोगों ने जिस तरह खाने के लिए गेहूँ की उपज की, पहनने के लिए कपास की बिजाई की, जुलाहों से कपड़ा बुनवाया, उसी तरह जीवन में एक तरंग पैदा करने के लिए लोक गीतों की रचना भी कर ली। डॉ महेन्द्र सिंह रंधावा के विचार अनुसार;

> “लोकगीत कदी वी किसे कवि ने इक जगह बैठ के नहीं लिखे, सगों बहुत सारीयां पीढीयां ऐहनां नू जोड़दीयां संवारदीयां अते शिंगारदीयां हन। जुगां तो

इस सांझी मेहनत ने ऐहनां नू ऐना पवित्र बणा दित्ता कि ऐह साडे जीवन दा इक अटुट्ट हिस्सा बन गये।" [8]

परिवर्तन प्रकृति का अटल नियम है। आधुनिक युग बहुत तेज़ी से परिवर्तित हो रहा है। मनुष्य, प्रकृति एवं समाज निरंतर विकासशील हैं। पंजाब का लोक संगीत अपना एक लंबा एवं प्राचीन इतिहास होने के बावजूद आज परिवर्तित हो रहा है। यहां तक कि लोक संगीत कलाकारों ने भी अपनी कला में नए दृष्टिकोण अपनाएं हैं। यहां तक कि साहित्यिक पक्ष और प्रस्तुतीकरण इत्यादि में भी बहुत बदलाव आ चुका है। जहां हर तरफ पंजाबी लोक संगीत पर पश्चिमी सभ्यता का रंग चढ़ा हुआ नज़र आता है, वहीं एक नाम ऐसा है जिस ने अपना समस्त जीवन लोक गीतों की शुद्धता को बनाए रखने में ही लगा दिया। वो नाम है श्रीमती गुरमीत बावा जी का। उन के शब्दों में,

''मैं लोक गीतां तों शुरू होके लोक गीतां विच ही खत्म होना चाहुंदी हां। ऐही लोक गीत मेरे लिए सब कुछ हन। मेरे जीवन दी पूँजी हन।" [9]

गुरमीत जी का कहना है;

"मैनू जो उपाधियां अते सनमान मिले ओहनां नू मैं ऐना महत्व नहीं दिंदी, जिन्ना लोकां तो मिले प्यार नू दिंदी हां। लोकां तों मिलिया प्यार अते सन्मान मेरे लई सब तों वडा अवार्ड हन"।[10]

लोक संगीत के प्रति समर्पित गुरमीत जी के जीवन के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए उनसे साक्षात्कार किया गया। इस साक्षात्कार की प्रश्नोत्तरी से उपलब्ध जानकारी निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत है :-

प्र1. गुरमीत जी, आपको गाने की प्रेरणा किस से मिली?

उ. जिस गाँव में हम रहते थे और जिस समाज का हम हिस्सा थे, उसमें गाना बजाना अच्छा नहीं समझा जाता था। हम सभी बहनें अच्छा गाती थीं और जिस विद्यालय में मैं पढ़ाती थी वहां बाल सभा में गाती थी। जब अध्यापन का कार्य शुरू

किया तो वहां मीटिंग्स में गाना सुना कर कभी कभी शौक पूरा कर लेती थी। लेकिन मेरे पति स. किरपाल बावा जी ने मेरे अंदर छुपे हुए गायिकी के जुनून को पहचाना और मुझे मास्टर राम पाल (पाली) जी के पास संगीत सीखने के लिए भेजा। इस तरह मेरे सबसे पहले प्रेरणा स्रोत मेरे पति स. किरपाल बावा जी ही बने।

प्र2. आपने सब से पहला गीत कब और कहां गाया?

उ. सबसे पहले मैने गुरचरण बोपाराए जी का लिखा हुआ गीत गाया जिसके बोल थे, ''सोने रंगे फुल्लां वाले तोरिए दे बन्ने बन्ने हाणिया मैं फिरां पैलां पाँवदी, गोरी खुशी विच नच्चदी ते गावँदी"।

यह गीत मैंने कांग्रेस पार्टी की एक जनसभा में, डेरा बाबा नानक में बिना किसी वाद्य के साथ गाया।

प्र3. दूरदर्शन अथवा रेडियो पर गाने की शुरूआत कब की?

उ. रेडियो पर तो मैंने अपनी शादी के एक वर्ष के अंदर अंदर ही गाना शुरू कर दिया था। वहां भी लोक गीत के साथ ही गाने की शुरूआत हुई । दूरदर्शन पर सबसे पहली महिला गायिका होने का गर्व मुझे प्राप्त हुआ जब मैने दूरदर्शन का शुभारंभ अपने इस गीत से किया,

''काहनूं ते पाईयां कोठड़ियां वे
काहनूं रखिया ई वेहड़ा''।

प्र4. आपने समाज एवं संस्कृति के किस-किस पहलू से सम्बन्धित गीत गाए हैं?

उ. मैंने समाज में रहते हुए प्रत्येक रिश्तेनातों के गीत गाए हैं। इसके इलावा प्रत्येक रस्म रिवाज, गहने, कपड़े, त्योहार और यहां तक कि मृत्यु से संबंधित गीत अलाहुणियां गायन शैली के अंतर्गत गाए हैं।

प्र5. आपको क्या लगता है कि आपके गाए हुए गीतों का हमारे समाज एवं संस्कृति पर क्या प्रभाव पड़ा?

उ. जिस समय में मैंने गाना शुरू किया, उस समय दोगाना गायिकी शुरू हो चुकी थी एवं बहुत से गायकों ने हमारे सामाजिक रिश्तों की एक धूमिल एवं गलत सी तस्वीर प्रस्तुत करनी आरंभ कर दी थी। उस समय मैंने उन गीतों का चुनाव किया जिनको गाने से उन रिश्तों में एक मिठास भरी जा सकती थी। उन गीतों को लोगों का ढेर सारा प्यार मिला। इस के अलावा हमारी संस्कृति से जुड़ी हुई बहुत सी ऐसी चीज़ें जो लोगों के सामने कभी भी नहीं लाई गई थीं, मैंने उनको सामने लाने का प्रयत्न किया जैसे कि अल्गोज़ा, मट्टीयां, चिमटा, गहने इत्यादि। कुछ ऐसे पारंपरिक गीतों को मैंने भिन्न-भिन्न गाँवों में जाकर वहां के बुजुर्गों से इकट्ठा किया जो आज तक लोगों ने कभी सुने ही नहीं थे। देखते ही देखते इन गीतों का प्रभाव लोगों में नज़र आने लगा।

प्र6. अपनी विलक्षण गायन शैली के बारे में कुछ बताइए ?

उ. पंजाबी लोक गीतों का प्रमुख लक्षण आवाज़ का खुलापन एवं सुरीलापन है। इसमें मींड, मुर्की एवं खटके इत्यादि का प्रयोग किया जाता है। इन गुणों को मैनें खुले रूप से अपनाने का प्रयत्न किया है। मेरी गायन शैली में लंबी हेक एक विलक्षण तत्त्व है जो मैंने सबसे पहले जियोर्जिया की राजधानी टिबलिसी में 45 सैकण्ड तक लगाई।

प्र7. कोई कलाकार जो आपकी गायन शैली को अपना रहा हो या अपनाने का प्रयत्न कर रहा हो, उस के बारे में बताइए ?

उ. अभी तक तो किसी कलाकार के बारे में मुझे जानकारी नहीं है। हाँ, मेरी छोटी बेटी ग्लोरी बावा को मैंने एक दो बार गाते सुना है जो इस गायकी को अपनाने का प्रयत्न कर रही है, किंतु वह एक व्यावसायिक गायिका के तौर पर सामने नहीं आना चाहती है। इसलिए मुझे लगता है कि मेरी यह गायन शैली शायद मेरे बाद ख़त्म हो जाएगी।

प्र8. अपनी समकालीन गायिकाओं के बारे में कुछ बताइए?

उ. मेरी समकालीन गायिकाओं में सुरिंदर कौर, नरिंदर बीबा, जगमोहन कौर, रणजीत कौर इत्यादि के नाम प्रमुख हैं जिनकी अपनी एक विलक्षण गायन शैली है।

प्र9. आपकी गायिकी पर एवं इस लंबे सफर पर किसी ने अब तक कोई पुस्तक अथवा शोध प्रबंध लिखा हो तो उसके बारे में बताइए?

उ. मेरी अपनी बेटी लाची बावा ने अपने एम.फिल. के शोध प्रबंध में मेरी गायिकी को अपना विषय चुना । इस के अलावा डॉ. अलका पांडे ने पंजाब में लोक संगीत पर एक पुस्तक लिखी जिसमें पंजाब के लोक गायकों के अंतर्गत मेरी लोक गायिकी पर भी एक अध्याय शामिल किया गया है। इसके अलावा बहुत से खोज पत्र लिखे जा चुके हैं।

प्र10. क्या आपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं के इलावा भी किसी और पहलू को अपनी गायिकी में छुआ है?

उ. जी हां, मैंने धार्मिक गीत भी गाए हैं जैसे कि गुग्गा पीर पर एक संपूर्ण फीचर बनाया गया था जिसे मैनें अपनी बेटियों के साथ गाया।

प्र11. आपके संगीत गुरु कौन थे?

उ. मेरे सब से पहले गुरु तो मेरे अपने जीवन साथी श्री किरपाल बावा जी हैं जिन्होंने मेरी गायिकी को पहचाना एवं उसको आगे बढ़ाया। उन्होंने ही मुझे मास्टर रामपाल जी के पास संगीत सीखने के लिए भेजा जो कि मेरे दूसरे गुरु थे। फिर पारंपरिक तौर पर मैंने श्री नरिंदर चंचल जी को अपना गुरु धारण किया। उन्हीं की म्यूज़िकल कम्पनी 'Paradise Music Club' की भी मैं सदस्य बनी।

प्र12. अगर आप गायिका नहीं बनती तो आप किस क्षेत्र को अपना व्यावसायिक क्षेत्र बनातीं?

उ. अध्यापन को, क्योंकि मेरी सबसे पहली रुचि अध्यापन कार्य में थी।

प्र13. अपने घर-परिवार के बारे में कुछ बताइए?

उ. मेरा जन्म 1944 में गुरदासपुर ज़िला के एक छोटे से गांव कोठा अलीवाल में हुआ। हम पाँच बहन भाई हैं। मेरी माता जी का देहांत बहुत पहले ही हो गया था जब मैं बहुत छोटी थी। अपने बहन-भाइयों में मैं सबसे छोटी हूँ। हमारे गाँव में मैं सबसे पहली लड़की थी जिसने दसवीं तक शिक्षा प्राप्त की। उसके बाद जे.बी.टी. करके अध्यापन का कार्य शुरू किया। सबसे पहले मैंने डेरा बाबा नानक, 'शिकार माछियां' गाँव में अध्यापन शुरू किया। फिर मेरी भेंट अपने विद्यालय में ही बेदी खानदान के लड़के किरपाल बावा जी से हुई जो कि गुरु नानक देव जी की 16वीं पीढ़ी से हैं । किरपाल जी भी अपने आप में एक मंझे हुए कलाकार हैं जिन्होंने अपने समय के युवा मेले में वारिस शाह की 'हीर' गा कर स्वर्ण पदक हासिल किया। हमारी तीन बेटियां हैं लाची बावा, ग्लोरी बावा एवं सिमरत बावा। तीनों को ही गायिकी विरासत में मिली है। बहुत अच्छा गाती हैं।

प्र14. आपने अपनी गायिकी के जौहर कौन कौन से देशों में दिखाए?

उ. 1987 में Festival of India U.S.S.R. में मैंने भारत का प्रतिनिधित्व किया। 1988 में Festival of India, Japan में फिर से भारत का प्रतिनिधित्व किया। 1989 में Bosra Festival of Syraat Danasar में भाग लिया। इसी वर्ष 25वें जश्न-ए-आज़ादी Festival of Libia में भारत की तरफ से भाग लिया। 1995 में Thailand का दौरा किया। 1998 में "Common Wealth Games Cultural Festival जो कि कोआलालम्पुर मलेशिया में हुआ, उसमें भारत का प्रतिनिधित्व किया। यह सिलसिला अब तक जारी है।

प्र15. आपके अनुसार कौन-कौन से ऐसे कवि हैं जिनके लिखे गीतों ने लोक गीतों का रूप धारण किया और आपने गाया ?

उ. नंद लाल नूरपुरी, चमन लाल शुग़ल, शिव बटालवी, गुरचरण बोपाराय इत्यादि।

प्र16. लोक गीतों की सेवा के लिए मिले हुए सम्मान एवं उपाधियों के बारे में बताइए?
उ. मुझे पंजाब की पहली लोक गायिका होने का गर्व प्राप्त है जिसको पंजाब सरकार ने सन् 1991 में 'स्टेट अवार्ड' देकर सम्मानित किया। सन् 2001 में American Biographical Institute, America ने मुझे Gold Medal of Honour देकर सम्मानित किया । मध्य प्रदेश सरकार ने 'देवी अवार्ड' प्रदान किया। भाषा विभाग पंजाब की तरफ से शिरोमिणी गायिका की उपाधि मिली। इनके अलावा PTC channel की तरफ से Life Time Achievement Award, संगीत नाटक अकादमी से राष्ट्रपति पुरस्कार, पंजाब आर्ट थिएटर से के.एल. सहगल अवार्ड, आकाशवाणी जालंधर से Theatre of People, Jalandhar की तरफ से नूराँ अवार्ड, मोहम्मद रफ़ी सोसायटी अमृतसर की तरफ से best Folk Singer Award, माहिलपुर यादगारी ट्रस्ट की तरफ से 'अमर सिंह शौंकी' अवार्ड, पंजाब वुमैन वैल्फेयर कालेज, होशियारपुर एवं पंजाब आर्ट थिएटर जालंधर की तरफ से कला श्री अवार्ड, पंजाबी फोक थिएटर की तरफ से 'मान पंजाबण दा' अवार्ड, हाशिम शाह यादगारी ट्रस्ट, जगदेव कलाँ की तरफ से 'पंजाब की कोयल' की उपाधि मिली।

प्र17. आधुनिक पंजाबी लोक संगीत के संबंध में आपके क्या विचार हैं?
उ. बड़े दुःख से कहना पड़ रहा है कि आज लोक गीतों के मायने ही बदल चुके हैं। पंजाबी गीत जिनमें पंजाबी संस्कृति का नामोनिशान तक नहीं, लोक गीतों की जगह लेने का प्रयत्न कर रहे हैं। पंजाबी संस्कृति एवं सभ्याचार की एक ग़लत तस्वीर प्रस्तुत की जा रही है। गीत भी ऐसे हैं जिनको परिवार में बैठ कर सुना ही नहीं जा सकता। यही कारण है कि हमारे पंजाब के लोग अपनी संस्कृति एवं सभ्यता से दूर होते जा रहे हैं।

प्र18. आज के युवा कलाकारों को कुछ संदेश देना चाहेंगी?

उ. बस यही कि लोक संगीत को लोक संगीत ही रहने दें, लोक पक्ष को अनदेखा न करें। उसकी ग़लत तस्वीर प्रस्तुत करके, लोगों को गुमराह न करें। खुद भी पंजाब की समृद्ध संस्कृति के साथ जुड़ें एवं लोगों को भी जोड़ने की कोशिश करें। यही उनका पंजाब के प्रति एवं पंजाब की संस्कृति के प्रति उचित योगदान होगा।

संदर्भ

1. सिमीप्रीत कौर, गुरमीत बावा- लम्मी हेक दी मलिका, 2015, पृष्ठ-35
2. डॉ. जितेंद्र कौर, गुरमीत बावा अते पंजाबी लोक गीत, पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला, सभ्याचार पत्रिका, अंक-12, पृष्ठ-105.
3. साक्षत्कार- श्री कृपाल बावा
4. डॉ. जितेंद्र कौर, गुरमीत बावा अते पंजाबी लोक गीत, पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला, सभ्याचार पत्रिका, अंक-12, पृष्ठ-106.
5. पी.पी. वर्मा, 'सोवीनार' 1991, प्रकाश कला संगम, H-372, फेज़ नं 1, मोहाली
6. स. निरंजन सिंह साथी मासिक पत्रिका, 'महिरम', अप्रैल 1989 पृ0 14.
7. प्रो. कुलबीर सिंह, दूरदशर्न समीक्षा : 1 अक्तूबर 1993.
8. महेन्द्र सिंह रंधावा, देवन्द्र सत्यार्थी, पंजाब के लोक गीत, पृष्ठ-9
9. गुरमीत बावा- साक्षात्कार
10.- वही -

अध्याय-4

गुरमीत बावा के गीतों का सांगीतिक एवं सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन

समाज, किसी परियोजना के अंतर्गत संस्कृति का सृजन नहीं करता, बल्कि समाज में संस्कृति का सृजन सहज रूप से ही होता रहता है। जबकि सभ्यता को कायम रखने के लिए निरंतर शिक्षा देनी पड़ती है। इसी सामाजिक केंद्र-बिंदु से ही लोक-गायिकी की मर्यादित धुनों का पता चलता है।

लोक-गायिकी अथवा लोक-गीतों का कारवाँ सदियों से सामाजिक सफर के कठिन रास्तों को तय करता हुआ अपने आप में बहुत कुछ शामिल करता हुआ चलता चला आ रहा है। इस तरह धीरे-धीरे लोक-गायिकी मनुष्य की आंतरिक वेदना की स्वर रचना के रूप में प्रसारित होती होती, सामाजिक स्वीकृति बन गई।

लोक-गीत मानवीय समाज एवं उस समाज में पनप रही संस्कृति के प्रकटीकरण का माध्यम होते हैं। संस्कृति एवं सभ्यता में वह सब कुछ शामिल किया जा सकता है जिसके साथ समाज की भौतिक प्रगति होती है। संस्कृति में मानवीय जीवन से संबंधित वह सभी कार्य सम्मिलित होते हैं जो वह अपनी मानसिक तृपति अथवा आनंद के लिए करता है। इस तरह से लोक-गीतों में वह सभी कुछ सम्मिलित है जो भौतिक पदार्थों एवं शरीर की आंतरिक एवं बाहरी भूख से संबंधित सामग्री के साथ संबंध रखता है। जिस तरह संस्कृति सामूहिक चरित्र को प्रकट करती है, उसी तरह लोक-गीत व्यक्तिगत चरित्र को ही नहीं बल्कि सामूहिक चरित्र को उभारते हैं। सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिपेक्ष की दृष्टि से मानवीय जीवन के विभिन्न पक्ष ही लोक गीतों का आधार बनते हैं। पंजाब के भौगोलिक वर्गीकरण से संबंधित इन लोकगीतों की संरचना मूलभूत रूप में सामाजिक जीवन के साथ अंतर्संबंधित होती है।

किसी भी क्षेत्र अथवा तत्त्व का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन करने से पहले सामाजिक एवं सांस्कृतिक शब्दों को समझना अत्यंत आवश्यक है और सामाजिक एवं

सांस्कृतिक शब्दों की जानकारी तब तक प्राप्त नहीं की जा सकती जब तक समाज एवं संस्कृति के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा नहीं की जाती। इसीलिए लोकगीतों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन करने से पूर्व समाज एवं संस्कृति के बारे में जानना अति आवश्यक है।

4.1 समाज ; अर्थ, परिभाषा एवं विशेषताएं

साधारण भाषा में 'समाज' शब्द का अर्थ है व्यक्तियों का समूह। किसी भी संगठित अथवा असंगठित समूह को समाज कह दिया जाता है जैसे कि ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज इत्यादि। किंतु समाज शब्द का यह अर्थ एक सामान्य अर्थ है। सत्य तो यह है कि जहाँ जीवन है वहाँ समाज भी है।

व्यक्ति और समाज में एक पारस्परिक निर्भरता होती है। दोनों की एक दूसरे के बिना कल्पना भी नहीं की जा सकती। जहाँ व्यक्ति ने अन्य व्यक्तियों के साथ सामाजिक संबंध स्थापित करके समाज की रचना तथा उसके विकास में योगदान दिया है, वहाँ समाज ने व्यक्ति को संस्कृति से परिचित कराकर एवं उसका समाजीकरण करके उसके विकास में अपना योगदान दिया है।[1] Durkheim ने सामाज की रचना का आधार सामाजिक तथ्यों को माना है जबकि Maciver and Page ने समाज को सामाजिक संबंधों का जाल माना है।

समाज की परिभाषा विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से दी हैं जो निम्नलिखित है;
Reuter के अनुसार;

> ''समाज वह अमूर्त शब्द है जो किसी समूह के दो या सभी सदस्यों के बीच पाए जाने वाले जटिल पारस्परिक सम्बन्धों का बोध कराता है।''[2]

Wright के शब्दों में;

''समाज व्यक्तियों का समूह नहीं है, यह समाज में रहते व्यक्तियों के पारस्परिक सम्बन्धों की एक व्यवस्था है।[3]

Maciver & page के अनुसार;

''समाज रीतियों, कार्यविधियों अधिकार व पारस्परिक सहायता, अनेक समूहों तथा विभाजनों, मानव व्यवहार के नियन्त्रणों तथा स्वतंत्रता की व्यवस्था है। इस सदैव बदलती रहने वाली तथा जटिल व्यवस्था को ही हम समाज कहते हैं। यह सामाजिक संबंधों का जाल है एवं सदैव परिवर्तित होता रहता है।[4]

समाज शब्द सभ्य मानव जगत का सूक्ष्म स्वरूप एवं सार है। सभ्य का प्रथम अक्षर स, मानव का प्रथम अक्षर 'मा', एवं जगत का प्रथम अक्षर ज, इन तीनों के सम्मिश्रण से समाज शब्द की उत्पत्ति हुई जो सभ्य मानव जगत का प्रतिनिधित्व करने वाला प्रतीकात्मक शब्द है।[5]

Dalai lama के शब्दों में,

"I truly believe that individuals can make a difference in society. Since periods of changes each such as the present one come so rarely in human history,it is upto each of us make the best use of our time to help create a happier world."[6]

A group of human broadly distinguished from other groups by mutual interests, participation in characteristic relationships, shared institutions and a common culture.[7]

जब हम समाज की बात करते हैं तो इस का क्षेत्र अति विशाल है। समाज के लिए संस्था, सभा, संगति, समुदाय, परस्पर संबंध इत्यादि अनेकों शब्द प्रयोग किए जाते हैं जो कि समाज शब्द की विशालता एवं विस्तार के सूचक हैं जिसके अंतर्गत समाज के

भिन्न-भिन्न अर्थ निहित है। अंग्रेज़ी भाषा में समाज के लिए Social एवं Society शब्द का प्रयोग करते हुए श्री गुरकृपाल जी लिखते हैं;

> Social का अर्थ है सामाजिक, Society का अर्थ है, समाज, बिरादरी, संस्था, अर्थात A scientific society, उच्च वर्ग शाखा, संगति, जैसे; To enjoy the Society of one's friends.[8]

इस तरह समाज को एक ऐसी संस्था के अर्थों में लिया गया है जो लोगों के परस्पर सहयोग से बनी हुई होती है।

यहाँ पर एक बात ध्यान में रखना अति आवश्यक है कि समाज एवं मानवीय समाज में बहुत बड़ा अंतर है। मानवीय समाज की एक प्रकृति एवं स्तर होता है जबकि पशुओं के समाज का सामाजिक स्तर एवं प्रकृति बिल्कुल भिन्न है। उनको अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समाज के लोगों पर निर्भर होना पड़ता है। जबकि मनुष्य न केवल अपनी शारीरिक आवश्यकताओं के लिए बल्कि सभ्याचारक एवं सांस्कृतिक जरूरतों के लिए भी समाज पर निर्भर होता है। प्रकृति ने मनुष्य को बुद्धि एवं शक्ति प्रदान की है एवं उससे भी बढ़कर बोलने के लिए ज़ुबान दी है जो कि उसको समाज एवं सभ्याचार में रहते हुए सभ्य बनाती है। इस तरह समाज एवं मानवीय समाज को परस्पर संबंधित करते हुए टी.आर.विनोद लिखते हैं;

> "समाज चाहे किसी भी प्रकार का हो, उसको बनाने एवं बदलने का, और समाज में रहकर कुछ सीखने का सामर्थ्य केवल मनुष्य के पास ही है। इसका कारण यह है कि अन्य जीव-जातियों की तरह मनुष्य की नस्ल बायोलोजिकल स्तर पर जीवित ही नहीं रह सकती। इसलिए प्रकृति के साथ एक लंबे संघर्ष के फलस्वरूप एक विशेष प्रकार का समाज अस्तित्व में आता है।" [9]

समाज वास्तव में मनुष्य के परस्पर संबंधों का ताना-बाना है, जिसके द्वारा हम एक दूसरे के साथ जीवन भर साथ निभाते हैं। जैसे कि माता-पिता एवं बच्चों का संबंध, पती-पत्नी का संबंध, रिश्ते-नाते इत्यादि सभी तरह के संबंध सामाजिक स्तर के संबंध हैं। इन सामाजिक संबंधों का जाल ही वास्तव में समाज है। समाज में समानता एवं असमानता, सहयोग एवं संघर्ष होने के बावजूद कोई भी व्यक्ति राजनैतिक, सामाजिक, शारीरिक एवं धार्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक दूसरे पर ही निर्भर होता है। इसलिए समाज व्यक्तिगत जीवन में रहते हुए भी व्यक्तियों के परस्पर संबंधों की ही व्यवस्था है।

समाज से संबंधित उपरोक्त परिभाषाओं से यह पता चलता है कि समाज के अंतर्गत बहुत सारी बातें शामिल होती हैं। समाज मानवीय संबंधों का समूह है एवं संस्कृति समाज की अमानत है जो कि विरासत के रूप में मनुष्य को मिलती है। समाज द्वारा बनाए गए सामाजिक प्रबंध, भौतिक एवं गैर अभौतिक पक्ष सभ्याचार में शामिल होते हैं। समाज में मनुष्य के नैतिक मूल्य, जात-पात, विवाह प्रबंध, खान-पान, रहन-सहन, रिश्ता-नाता इत्यादि आते हैं जो कि सभ्याचारक और सांस्कृतिक संबंधों की देन है।

समाज की विशेषताएं : समाज को भली-भांति समझने के लिए इसकी विशेषताओं को जानना अत्यंत आवश्यक है। समाज की कुछ प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं :-

1. समाज एक अमूर्त धारणा है क्योंकि समाज केवल व्यक्तियों का समूह ही नहीं है बल्कि उन व्यक्तियों के परस्पर संबंधों की एक व्यवस्था है।
2. समाज, सामाजिक संबंधों का एक जाल है। यह संबंध सामाजिक जागरूकता के आधार पर एक दूसरे के साथ अन्तःक्रिया करने पर विकसित होते हैं। जैसे कि संतान व माता-पिता का संबंध, पति-पत्नी, भाई-बहन एवं पड़ोसियों का परस्पर संबंध इत्यादि।

3. पारस्परिक जागरूकता समाज की एक प्रमुख विशेषता है क्योंकि इसी जागरूकता से ही लोगों को एक-दूसरे की सत्ता का आभास होता है।
4. समाज की रचना एवं उसके अस्तित्व को बनाए रखने के लिए समाज में समानता के तत्त्व काफी हद तक ज़िम्मेदार होते हैं। यह समानता विचारों एवं उद्देश्यों की समानता है जो कि लोगों को समाज में एक साथ रह कर कार्य करने के लिए प्रेरित करती है।
5. समानता के साथ-साथ विभिन्नता अथवा विविधता भी समाज का एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। उदाहरण के तौर पर स्त्री और पुरूष दोनों का समाज में होना अनिवार्य है। समाज के विभिन्न प्रकार के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार की प्रतिभा वाले व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। समाज में विभिन्नता लिंग, आयु, धर्म, शिक्षा, विचार, स्थान, संस्कृति, स्वभाव आदि के आधार पर पाई जाती है।
6. समाज में सहयोग एवं संघर्ष दोनों प्रकार की प्रक्रियाएं पाई जाती है। जहाँ सहयोग समाज के अस्तित्व का मौलिक आधार है वहाँ संघर्ष समाज को जीवित रखता है।
7. परस्पर निर्भरता समाज की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है। इस के बिना कोई भी व्यक्ति व समूह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकता।
8. मानव समाज एक परिवर्तनशील व जटिल व्यवस्था है। सामाजिक संबंध, समय व परिस्थितियों के बदलने के साथ-साथ बदलते रहते हैं। यह परिवर्तन प्राकृतिक दशाओं एवं आर्थिक परिस्थितियों इत्यादि के कारण होता है।
9. समाज केवल मनुष्य का ही नहीं होता, अन्य जीव-जंतुओं का भी समाज होता है परंतु चेतन रूप में पारस्परिक जागरूकता के आधार पर सामाजिक संबंध मनुष्य ही स्थापित कर पाता है और यही संबंध समाज की रचना करते हैं।

इस तरह मनुष्य अपने बौद्धिक एवं मानसिक विकास के आधार पर ही अपने समाज का निर्माण करता है एवं समाज मनुष्य की मानसिक क्रियाओं को संगठित करता है।

4.2 संस्कृति ; अर्थ, परिभाषा एवं विशेषताएं

संस्कृति की अवधारणा सार्वभौमिक अवधारणा है। संस्कृति शब्द की उत्पत्ति 'संस्कृत' शब्द से हुई है। संस्कृति एवं संस्कृत दोनों ही शब्द संस्कार से बने हैं। यहाँ संस्कार का अर्थ है कृत्यों की पूर्ति करना। इन कृत्यों को पूर्ण करके ही मनुष्य एक सांस्कृतिक जीव बनता है।

संस्कृति समाज को संगठित बनाए रखने वाला एक महत्त्वपूर्ण आधार है। मानव समाज में बहुत सी समितियां एवं संस्थाएं पाई जाती हैं जो कि हमारी संस्कृति का ही एक स्वरूप है जैसे कि कला, धर्म, साहित्य, परिवार, विवाह इत्यादि। संस्कृति को किसी समाज का दर्पण कहा जाता है। दूसरे शब्दों में संस्कृति समाज का प्रतिबिम्ब होती है। संस्कृति को भिन्न-भिन्न विद्वानों ने अपने ही ढंग से परिभाषित किया है। जैसे कि साहित्यकारों के लिए संस्कृति जीवन का प्रकाश एवं कोमलता है जबकि कुछ विद्वान संस्कृति का अर्थ नैतिक, आध्यात्मिक व बौद्धिक प्रगति से मानते हैं। संस्कृति की कुछ विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाएं निम्नलिखित हैं;

Maciver& Page के अनुसार;

> "Culture is the expression of our nature in our modes of living and our thinking, intercourse, in our literature, in religion, in recreation and enjoyment."[10]

हॉबल के अनुसार;

> "Culture is the sum total of integrated behaviour patterns."[11]

संस्कृति शब्द की व्याख्या करते हुए डा. जीत सिंह जोशी लिखते हैं;

भारती चिंतक सभ्याचार दा पर्याय, हिंदी शब्द 'संस्कृति दे मूल नूं उसे धातू नाल जोड़दे हन जिसतों संस्कृति दे संस्कार शब्दां दी उत्पत्ति होई है। इस शब्द नूं सजाना, संवारना, पवित्र करना, मंत्र द्वारा अभिव्यक्त करना आदि अर्थां विच ही प्रयोग कर लिया जांदा है।[12]

टायलर के अनुसार;

"Culture is that complex whole which includes knowledge, belief, art, moral law, custom and another capabilities acquired by man as a member of society."[13]

संस्कृति को मानसिक एवं भौतिक स्त्रोतों के तौर पर दर्शाते हुए टी.आर.विनोद लिखते हैं;

"मनुख दे भौतिक अते मानसिक दोनां तरां दे उत्पादन लई अंग्रेजी शब्द 'कल्चर' प्रचलित है, जो कि लातीनी भाषा दे शब्द 'कल्ट' तो बनिया है। इस दा मूल अर्थ तां भौतिक विकास ही है पर हौली-हौली ऐह शब्द मनुख दे मानसिक उत्पादन लई वी प्रयोग होन लगा"।[14]

मनुष्य एवं पशु समाज में अंतर का मुख्य आधार संस्कृति ही होती है। संस्कृति के द्वारा ही मनुष्य सामाजिक, एवं आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। प्रकृति ने मनुष्य को बोलने के लिए जुबान दी है और सोचने के लिए दिमाग दिया है। पशु-पक्षी अपनी सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मनुष्य पर ही निर्भर होते हैं किंतु मनुष्य केवल अपनी शारीरिक एवं मानसिक आवश्यकताओं के लिए ही नहीं जीता बल्कि वह सांस्कृतिक जरूरतों के लिए भी समाज पर ही निर्भर करता है। इसलिए संस्कृति केवल मनुष्य की निजी संपत्ति है। सत्य तो यह है कि मनुष्य अपनी संस्कृति की वजह से ही मनुष्य कहलाता है। संस्कृति मनुष्य को विरासत में मिलती है किंतु समय के साथ-साथ प्रत्येक नई पीढ़ी अपने सामर्थ्य के अनुसार इसको ग्रहण करती

है। इसलिए संस्कृति एक ऐसी सामाजिक विरासत है जो मनुष्य को अभ्यास के द्वारा सीखनी पड़ती है। एन्साईक्लोपीडिया अमेरिकाना में लिखा है;

> ''सभी मानव विज्ञानी मानते हैं कि संस्कृति विरासत से प्राप्त स्वभाव के सांझे एवं आदिम प्रवृत्तियों से विपरीत व्यवहार के ढंग को लिखने एवं ग्रहण करने से ही बनती है"।[15]

संस्कृति हमारे रहन-सहन, स्वभाव एवं जीवन की अनेकों क्रियाओं को दर्शाती है। संस्कृति मनुष्य की आदतें, पक्ष एवं नैतिक मूल्यों की अभिव्यक्ति करती है। संस्कृति स्थिर न होकर गतिमान होती है। समय के प्रवाह के साथ इस में नए विचार शामिल होते रहते हैं। इस तरह यह हमेशा गतिशील एवं क्रियाशील रहती है। इस संबंध में यह भी सत्य है कि जो सामाजिक मूल्य वैदिक युग की संस्कृति में थे, वह आधुनिक युग की संस्कृति में भी मिलते हैं किंतु परिवर्तित रूप में।

उपरोक्त सभी बातों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि सभी परिभाषाएं संस्कृति के अर्थ क्षेत्र को दर्शाती हैं किंतु प्रायः इसको विरासत में प्राप्त हुई देन कहा जाता है। संस्कृति समाज के द्वारा मनुष्य को दिया हुआ एक ऐसा तोहफा है जिसको मनुष्य समाज का एक हिस्सा होने के कारण ही ग्रहण करता है। इसलिए संस्कृति की परिभाषाएं अपने आप में एक निश्चित दायरे में नहीं बंधी होतीं क्योंकि संस्कृति का दायरा अत्यंत विशाल एवं विस्तृत है।

संस्कृति की विशेषताएं :- विद्वानों के द्वारा दी गई संस्कृति की परिभाषाओं के आधार पर ही इसकी विशेषताएं निर्धारित होती हैं जो कि निम्नलिखित हैं :-

1. जहां मानवीय समाज है वहां संस्कृति है क्योंकि किसी भी समाज की पहचान उसकी संस्कृति से ही होती है।

2. संस्कृति मानवीय व्यवहार है। मनुष्य के द्वारा बनाई गई वस्तुएं उसके ज्ञान क्षेत्र की उपलब्धियाँ होती हैं। इसलिए संस्कृति मनुष्य के द्वारा सृजन किया हुआ व्यवहार ही है जिसमें रहन-सहन, कला, साहित्य, ज्ञान, खाना-पीना एवं पहरावा इत्यादि आते हैं।
3. संस्कृति को समाज से सीखा हुआ व्यवहार ही माना जाता है। इसीलिए संस्कृति मनुष्य की एक सामाजिक विरासत है।
4. प्रत्येक समाज की संस्कृति एक दूसरे से भिन्न होती है। यही कारण है कि प्रत्येक समाज का रहन-सहन, खान-पान एवं पहरावा एक दूसरे से भिन्न ही होता है।
5. किसी भी संस्कृति का मुख्य आधार उसकी भाषा होती है। मनुष्य अपने मनोभावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति भाषा के द्वारा ही करता है। समाज में पनपते हुए रस्म-रिवाज, त्योहार इत्यादि संस्कृति का ही एक अंग है जिनको बोलचाल एवं लिखित रूप में परंपरागत तरीके से मनुष्य ग्रहण करता है।
6. संस्कृति में समाज के आदर्श एवं विचार शामिल होते हैं जिनका अनुसरण करते हुए मनुष्य अपनी संस्कृति की पहचान करवाता है। इसलिए किसी भी समाज का प्रतिबिम्ब उसकी संस्कृति में ही देखा जा सकता है।
7. संस्कृति एक ऐसा जटिल प्रबंध है जो मनुष्य को उसके सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक मूल्यों का आभास करवाता है।
8. संस्कृति एक गतिशील प्रक्रिया है। यह अपने निरंतर प्रवाह में चलते हुए परंपरागत विचारों में नए प्रतिमान स्थापित करते हुए चलती रहती है।

4.3 समाज, संस्कृति एवं लोक-संगीत

समाज एवं कला दोनों ही मनुष्य की आत्म चेतना एवं आत्म प्रकाशन का माध्यम है। मनुष्य दूसरे जीव-जंतुओं की तरह प्रकृति का एक हिस्सा हुआ करता था किंतु जैसे

ही मनुष्य के अंदर यह चेतना पैदा हुई कि वह दूसरे जीवों से भिन्न है तो उसने अपने आस-पास की परिस्थितियों को एक अर्थ एवं परिभाषा देने का प्रयत्न किया। धीरे-धीरे उसकी मूल संवेदना विकसित होती गई जिससे एक समाज का सृजन हुआ जिस के द्वारा वह अपनी मौलिक प्रवृत्तियों को नियमित करके उनका अनुसरण करने का प्रयत्न करता है। समाज मनुष्य की पहली विचारपूर्ण संरचना है और कला इस वैचारिक अवस्था का प्रकटीकरण है। कला वह क्रिया है जिसकी सहायता से कोई व्यक्ति अपनी अनुभूति एवं मनोभावों को दूसरों तक पहुंचाता है।

हाईमैन लैवी एवं हैलन सपैलडिंग ने साहित्य को समाज की उत्पत्ति मानते हुए लिखा है;

> ''साहित्य की वास्तविक रचना समाज के विशिष्ट अंग व्यक्ति का ही कर्म है। यह एक प्रकार से उसी समाज की ही उत्पत्ति होता है जो समाज व्यक्तियों के द्वारा ही कार्यशील रहता है"।[16]

कला एवं समाज के परस्पर संबंधों की महत्ता को वही लोग नज़रअंदाज़ करते हैं अथवा इन के संबंधों की महत्ता को कम करते हैं जो इसको केवल एक क्रीड़ा मात्र ही समझते हैं। कला एवं समाज का रिश्ता सदैव कायम रहने वाला रिश्ता है। इस रिश्ते की प्रकृति संबंधी मतभेद हो सकते हैं।

Adolfo, Sanchez Vasquez लिखते हैं;

> ''कला एवं समाज इस तरह से अनिवार्य रूप से अंतर्संबंधित हैं। कोई भी कला ऐसी नहीं जो सामाजिक प्रभावों से मुक्त रही हो और न ही कोई कला समाज को प्रभावित करने में असफल रही है परंतु कला एवं समाज का संबंध ऐतिहासिक होता है एवं इसी कारण यह समस्याएं भी पैदा करते हैं''।[17]

Howard Fast साहित्य को समाज का प्रतिबिंब मानते हुए लिखते हैं;

> ''साहित्य हर युग में उस समाज का सही सही प्रतिबिंब रहा है जिसमें इसकी उत्पत्ति होती रही है।''[18]

प्रतिबिंब में समरूपता का अंश होता है जबकि साहित्यिक कार्य समकालीन अथवा सामाजिक यथार्थ का हू-ब-हू प्रकटीकरण नहीं होता। बल्कि कलाकार अपने समकालीन यथार्थ से प्रभावित हो कर किसी कला के द्वारा अपने मनोभावों को इस तरह प्रस्तुत करता है कि वह समकालीन यथार्थ का प्रतिबिंब नहीं रहता, उसका प्रतिरूप हो जाता है। प्रतिबिंब जहां समरूपता को प्रकट करता है वहां प्रतिरूप उसके कलात्मक पक्ष को प्रकट करता है। Mathew Arnold साहित्य को जीवन की व्याख्या कहते हैं जबकि Deebonold साहित्य को समाज की अभिव्यक्ति कहते हैं। परंतु कला समाज की केवल व्याख्या अथवा अभिव्यक्ति ही नहीं करती बल्कि समीक्षा भी करती है। कलाकार समाज की समीक्षा करता हुआ सदैव नए समाज की बात करता है। कला स्थापित समाज से आगे की बात करती है। इस प्रक्रिया में यह आवश्यक नहीं है कि नए समाज का एक मॉडल सामने हो अथवा कलाकार जिस समाज का चित्रण कर रहा है वह वास्तविक हो अर्थात् कलाकार का समकालीन हो बल्कि यह काल्पनिक भी हो सकता है परन्तु प्रत्येक कल्पना की जड़ निश्चय ही सामाजिक यथार्थ में होगी।

जहाँ समाज, संस्कृति एवं कला की बात आती है तो संगीत कला का नाम सबसे अग्रणी कलाओं में आता है। संगीत कला को समस्त ललित कलाओं में सबसे उत्तम एवं श्रेष्ठ कला माना जाता है। संगीत कला के दो भेदों शास्त्रीय संगीत एवं लोक संगीत में से लोक संगीत एक ऐसा संगीत है जो समाज एवं संस्कृति का एक अटूट अंग माना जा सकता है।

श्री लक्ष्मी नारायण गर्ग द्वारा सम्पादित 'निबंध संगीत' में समाज, संस्कृति एवं कला के परस्पर संबंध के बारे में लिखा है;

"वैदिक युग से लेकर आधुनिक युग तक हमारा समाज, संस्कृति एवं कलाएं प्रभावित होती रही हैं। हमारा समाज समय-समय पर विभिन्न वर्णों, जातियों एवं संस्कारों के संपर्क तथा मिश्रण से गठित हुआ है, इसलिए विविध परतों को भेदकर किसी भी विषय के मूल में पहुंच जाना और उसका वास्तविक रूप हृदयगम कर पाना हर समय संभव नहीं है"।[19]

जैसे जैसे भौतिक साधनों का ह्रास-विकास होता है वैसे वैसे ही किसी सभ्यता की प्रगति तथा अधोगति हुआ करती है। परन्तु मानव समाज के प्रत्येक वर्ग पर सदैव इसका एक जैसा प्रभाव नहीं पड़ा। सामान्यतया अपेक्षाकृत, अधिक जागरूक एवं शिष्ट समाज को ही सभ्यतामूलक परिवर्तनों से लाभ मिलता रहा है। फिर भी कहीं न कहीं इस प्रभाव से लोक पक्ष भी सबल होता रहा है। एक समय में कभी-कभी लोक-विश्वासों तथा लोक-परंपराओं द्वारा भी शिष्ट समाज प्रभावित होता रहा है।

संगीत कला बहुत सी अवस्थाओं से गुजरती रही है। विद्वानों के मतानुसार भक्ति परक संगीत ही शास्त्रीय एवं लौकिक पद्धति का संगम बना, जिसमें लोक-संगीत के तत्त्व प्रबल वेग से उक्त प्रवाह में प्रविष्ट हुए। लोक-संगीत के यह तत्त्व इतने प्रबल हैं कि आज भी समाज में लोक संगीत का स्थान एवं महत्त्व अक्षुण्ण एवं सुरक्षित है।

लोक संगीत समाज एवं संस्कृति की मौलिक पहचान होता है। लेनिन का कहना था कि मुझे अगर कोई बता दे कि किसी देश की युवा पीढ़ी एवं लोगों के मुख पर किस तरह के गीत हैं तो मैं उस देश के भविष्य के बारे में आपको बता सकता हूं। समाज की किसी भी जाति के रूपाकार उसके लोक संगीत में सुरक्षित होते हैं। लोक-संगीत लोक-गीतों, लोक-धुनों एवं लोक-नृत्यों का समूह है। जिस तरह भारतीय संगीत में गायन की प्रमुखता है, उसी तरह लोक-संगीत में भी लोक-गीतों की प्रधानता है। लोक-धुनें, लोक-गीतों का अनुकरण करती हैं। लोक-गीतों के संगीत विधान में प्रत्येक आवाज़, लय, एवं समूचे विधि विधान का निर्धारण लोकमन एवं हस्त कार्य-व्यवहार

एवं वातावरण के अनुसार कार्य करता है। इस सृजन प्रक्रिया का सीधा संबंध जहां लोक-मानसिकता से है वहीं यह कार्यकर्ता के हस्त कार्य से ही विकसित होता है। जब तक लोक मन का चिंतन, एवं वातावरण के विभिन्न पहलुओं के अंतर्गत उसके समूचे सांगीतिक पैट्रन का निर्धारण नहीं किया जाता तब तक लोक संगीत का विश्लेषण असंभव है।

पंजाब की भूमि प्राचीन काल से ही भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का पालना मानी जाती रही है। वेदों की रचना इसी धरती पर हुई मानी जाती है। वैदिक काल में संगीत विकसित हो चुका था। इस का प्रमाण सामवेद की रचना है जिसकी तुलना संगीत कला के चश्मे से की जाती है। पंजाब की लोक धुनें आज संपूर्ण विश्व में सुनी जाती हैं।

पंजाब का लोक संगीत पंजाबियों के जन-जीवन पर आधारित है। व्यावहारिक स्तर पर देखा जाए तो पंजाबी लोक संगीत नाम की कोई परंपरा नहीं बल्कि यह माझा, मालवा, दोआबा, पोठोहार, मुल्तान, गुजरात इत्यादि पंजाबी क्षेत्रों की लोक संगीत परंपरा का समूह है। इन सभी क्षेत्रों के लोक-संगीत में अंदाज़ एवं अंगों की भिन्नता है जिस का सम्मिलित रूप ही 'पंजाबी लोक-संगीत' है। उत्तर भारतीय संगीत के परिपेक्ष में पंजाबी लोक संगीत की कुछ विलक्षणताएं एवं विशेषताएं हैं जो इस को महत्त्वपूर्ण बनाती हैं। यह विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

पंजाबी लोक-संगीत का प्राथमिक लक्षण नाद का खुलापन एवं सुरीलापन है। इसके अतिरिक्त मींड, खटका, मुर्की इत्यादि के साथ रसिक स्वरावलियों को उन के स्पष्ट स्वरूप में उद्घाटित किया जाता है।

1. पंजाबी लोक संगीत में भाव अभिव्यक्ति का खुलापन इसका दूसरा महत्त्वपूर्ण लक्षण है। इस तरह लोक-संगीत में खुलापन, लचीलापन एवं हूक संयुक्त रूप में उपरोक्त नायात्मक गुणों को आधार प्रदान करते हैं।

2. पंजाबियों के स्वभाव में एक खुलापन एवं पारे जैसे तरलता है जो इनके संगीत में प्रत्यक्ष रूप से झलकती है। पंजाबी लोक-संगीत में विविधता ही इसको मनोरंजक बनाती है।
3. लोक-संगीत में अधिक से अधिक आठ अथवा नौं स्वरों का प्रयोग ही माना जाता है।[21] परंतु पंजाबी लोक संगीत में बहुत से ऐसे गीत हैं जिनमें आठ से भी अधिक स्वरों का प्रयोग देखने को मिलता है जैसे कि डोली, सुहाग एवं प्रेम लोक-गीत इत्यादि। यहां तक कि कुछ एक लोकगीतों में तो केवल तीन स्वरों का प्रयोग भी होता है।
4. लोक-संगीत से संबंधित एक और धारणा है कि इसका विस्तार अर्ध-सप्तक तक ही होता है किंतु पंजाबी लोक-संगीत में पूरे सप्तक तक स्वर विस्तार कर लिया जाता है।
5. पंजाबी लोक-संगीत की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है बुलंद आवाज़। इसीलिए लगभग सभी लोक गीतों में पाँचवें स्वर को आधार मान कर गायन का आरंभ किया जाता है।
6. जी.एच.रानाडे के अनुसार;

   'पंजाबी लोक-संगीत की भिन्न-भिन्न स्वरावलियों के प्रत्येक अंतिम स्वर की स्वरमयी गूँज को कायम रखना इस का एक महत्त्वपूर्ण लक्षण है।[20]

   अंतिम स्वर को एक दम से छोड़ने की बजाय उसको लंबी हेक के रूप में आगे ले जा कर समाप्त किया जाता है।
7. लोक-संगीत में स्त्रियों एवं पुरूषों के गीतों में भिन्नता पाई जाती है। स्त्रियों के गीतों में करूणा, माधुर्य, एवं विरह इत्यादि के गुण देखने एवं सुनने को मिलते हैं जब कि पुरूषों के गीतों में खुलापन, कड़कपन एवं जोशपूर्णता जैसे गुण मिलते हैं।

8. पंजाबी लोग भावुक, स्पष्ट एवं सरल स्वभाव के धारणी है इसलिए इनके संगीत में भावुकता होना स्वाभाविक ही है। भावों का वेग एवं तीव्रता इन की गायिकी में स्पष्ट नज़र आती है जो पंजाब के लोक-संगीत को एक रूप प्रदान करती है।
9. पंजाबी लोग अपने जीवन के हर पल को ज़िंदादिली से जीते हैं। जहाँ ज़िंदादिली हो, वहाँ परिवर्तन का होना स्वाभाविक होता है। इसलिए पंजाबी लोक-संगीत सदैव परिवर्तनशील रहा है।

इस तरह पंजाबी लोक संगीत की प्रत्येक शैली, धुन, स्वरावली, ताल एवं लय-संरचना एक मौलिक प्रवृत्ति की धारिणी है। पंजाबी लोक संगीत विश्व की प्राचीनतम लोक परंपराओं में से एक है। इसीलिए लोक-संगीत का स्वरूप काफी भिन्न एवं स्पष्ट है।

4.4 लोक-गीतों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिपेक्ष

किसी भी क्षेत्र के लोक गीतों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिपेक्ष का अध्ययन करने से पहले यह जानना अत्यंत आवश्यक है कि उस क्षेत्र के लोक-गीतों का किस प्रकार से वर्गीकरण किया गया है। इस वर्गीकरण को आधार मान कर ही सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष का अध्ययन किया जा सकता है।

पंजाब के लोक गीतों का भिन्न-भिन्न प्रकार से वर्गीकरण किया गया है। भिन्न-भिन्न विद्वानों ने लोक-गीतों का वर्गीकरण करने के लिए विषय एवं रूप को आधार बनाया है:

डा. श्याम परमार ने लोक-गीतों को दो प्रकारों में बाँटा है ;

1) सरोदी गीत

2) प्रबंध गीत

श्री राम नरेश त्रिपाठी ने कविता कौमुदी में लोक गीतों का वर्गीकरण इस तरह किया है:

1) संस्कार संबंधी गीत

2) चक्की एवं चरखे के गीत

3) धर्म गीत

4) ऋतुओं संबंधी गीत

5) कृषि संबंधी गीत

6) भिक्षा संबंधी गीत

7) मेलों से संबंधित गीत

8) जाति गीत

9) वीर गाथाएं

10) गीत कथाएं

11) अनुभवी प्रवचन[21]

डा. करनैल सिंह थिंद ने लोक गीतों को इस तरह से वर्गीकृत किया है ;

1) ऋतुएं, दिन-त्योहार से संबंधित लोक-गीत

2) देवी-देवताओं से संबंधित लोक-गीत

3) प्रेम लोक-गीत

4) शौर्य के लोक-गीत

5) बच्चों से संबंधित लोक-गीत

6) पेशावर जातियों से संबंधित लोक-गीत

7) धार्मिक विश्वासों से संबंधित लोक-गीत

8) जन्म से लेकर विवाह से संबंधित लोक-गीत

9) मृत्यु से संबंधित लोक-गीत

डा. गुरनाम सिंह जी ने लोक-गीतों का वर्गीकरण इस प्रकार से दिया है;

काल-वाची लोक-गीत : इन गीतों में पंजाबी ऋतुएं, मेले, तिथियां, त्योहार इत्यादि से संबंधित काल-वाची लोक-गीत आते हैं।

आयु-वाची लोक-गीत : पंजाबियों के जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु तक की विभिन्न रस्मों एवं अवसरों पर गाए जाने वाले गीत इस वर्ग में रखे जा सकते हैं।

परंपरागत लोक-काव्य : परंपरागत लोक-काव्य का भी इस संगीत परंपरा में बहुमूल्य योगदान है। वीर साहित्य की वारें एवं धुनें परंपरागत लोक-काव्य की विलक्षण देन है।

फुटकल लोक-गीत : फुटकल लोक-गीतों में भी बहुत से लोक गीत एवं उन की धुनें प्रचार में हैं। इन में प्रेम लोक-गीत विशेष हैं। माहिया, टप्पे, जिंदुआ, बोलियां, जुगनी, इत्यादि इनमें सम्मिलित किए जा सकते हैं।[22]

विद्वानों द्वारा किए गए वर्गीकरण के आधार पर लोक गीतों का वर्गीकरण इस तरह से किया जा सकता है;

1) सामाजिक आधार पर लोक-गीतों का वर्गीकरण

2) सांस्कृतिक आधार पर लोक-गीतों का वर्गीकरण

1) सामाजिक आधार पर लोक-गीत :- इस वर्ग के अंतर्गत निम्नलिखित पक्षों से संबंधित लोक-गीत आ सकते हैं ;

क) संबंध लोक-गीत

ख) लोक-वर्ग लोक-गीत

ग) धार्मिक लोक-गीत

घ) भौगोलिक लोक-गीत

सांस्कृतिक आधार पर लोक-गीत :-सांस्कृतिक आधार पर निम्नलिखित पक्षों के लोक-गीत रखे जा सकते हैं ;

क) संस्कार संबंधी लोक-गीत

ख) लोक-गाथा लोक-गीत

ग) लोक-पर्व लोक-गीत

घ) लोक-नृत्य लोक-गीत

ङ) लोक-जीवन लोक-गीत

4.4.1 लोक-गीतों का सामाजिक परिपेक्ष

सामाजिक परिपेक्ष से संबंधित लोक-गीतों में संबंध लोक-गीत, लोक-वर्ग लोक-गीत, धार्मिक एवं भौगोलिक लोक-गीत शामिल किए जाते हैं जिनका विवरण इस तरह हैं;

संबंध लोक-गीत :- विवाह संस्था को केंद्र मानकर मानवीय संबंधों की जो विविध दिशाएं उद्‌घाटित होती हैं, उस आधार पर संबंध लोक-गीतों को निम्नलिखित तरीके से विवेचित किया गया है :-

1) माँ-बाप-बेटी संबंध गीत :- माँ बाप और बेटी के परस्पर संबंध से जुड़े हुए बहुत से लोक-गीत मिलते हैं। बेटी का आगमन लक्ष्मी का अवतरण माना जाता है।[23] लाड़-प्यार से पली बढ़ी बेटी जब जवान होती है तो पूरे अधिकार से पिता से वर याचना करती है।

1) मैं तैनूं बाबला आखया वे, मैनूं कान्हा जिहा वर टोल।
जाईं वे बाबला ओस घरे, जित्थे राजा उसारेगा महल।

2) नी साडा अज्ज मुकलावा तोर दे
जे माए तेथों चूड़ा नहीं सरदा
वंगां दे नाल मैनूं तोर दे।

दूसरी तरफ जब बेटी का रिश्ता तय हो जाता है तो बेटी अंदर ही अंदर अपने माँ बाप से बिछड़ने का ग़म लेकर कह उठती है:

अज्ज दी दिहाड़ी रख डोली नी माँ
रवाँ बाप दी बण के गोली नी माँ

2) बहन-भाई संबंध गीत :- मानवीय संबंधों में सर्वाधिक शुचि और पुनीत संबंध भाई बहन का माना जाता है। घर में अकेली बहन नित्य ईश्वर वंदना करती है और मनौती करती है एक भाई के लिए।

इक्क वीर देईं वे रब्बा,
सौंह खाण नूं बड़ा चित करदा।

इसी तरह राखी के पर्व पर बहन का रोम-रोम हर्षोल्लास से भर जाता है। इस अवसर पर भाई-बहन के संबंधों का सर्वाधिक भावनात्मक स्वरूप उद्‌घाटित होता है।

भैण कोलों वीर वे, बन्हा लै रखड़ी
सोहणे जिहे गुट्‌ट ते सजा लै रखड़ी

भाई के विवाह का अवसर भी बहन के लिए सर्वाधिक उल्लास का पर्व होता है। सेहराबंदी, वाग पकड़ाई एवं घोड़ी चढ़ने के अवसर पर वह फूली नहीं समाती :-

सुखां सुखदी नूं एह घड़ी आई वे
वीरा सानूं दे जा, वाग दी फड़ाई वे
सेहरे जोग्या वीरा वे तू सेहरा मंग वे
मामा तेरा पास बैठा, मंग लै, ना संग वे

पति-पत्नी संबंध गीत :- डॉ अविनाश कुमार के अनुसार;

'स्त्री-पुरूष संबंधों का प्रामाणिक स्वरूप विवाह संस्था में उद्‌घाटित होता है'।[24]

इन्हीं संबंधों में परस्पर मन-मुटाव होते रहते हैं। सास, ननद के साथ मन-मुटाव होने की शिकायत वो पति से इस तरह करती है :-

सस्स कोलों पुच्छेया ननाण कोलों पुच्छेया
आपे तां लईयां नी चढ़ा
बाहरों ता आया माही हस्सदा खेडदा
भाबी ने दिता ई सिखा

पत्नी का मायके जाना भी पति को अच्छा नहीं लगता;

भरी पीती बोली ना बुलाई मेरे नाल
झट्ट पेकियां नूं खिच्चीयां तियारीयाँ
अग्गा पिच्छा देख्या ना झट्ट-पट्ट
इक्क सुणी ना आवाज़ां पिच्छे मारीयां।

जेठ-देवर-भाभी संबंध गीत :- डॉ अविनाश कुमार के अनुसार;

> 'देवर-भाभी संबंधों में एक गुलाबी गंध-भीनी रसिकता रहती है और जेठ-भाभी संबंध में तिक्तता'।[25]

अविवाहित अथवा छड़ा जेठ जब भाई की अनुपस्थिति पर भाभी से हंसी मज़ाक करता है तो भाभी पति से शिकायत करती है :-

लंबें लंबे बाजरे चों वज्जण होकरे, जेठ चंदरा कसूता बोले
मेवा लै के मैं निकली, मेरा नरम कालजा डोले
कोल दी लंघण लग्गी वेख के ओह मैनूं कैंहदा
आजा चब्ब लै जेठ दे छोले।

भावज को देवर अधिक प्रिय लगने लगता है और जेठ का मूंह देखना भी उसे प्रिय नहीं लगता।

दयोर भावें दूद्ध पी जावे, जेठ नूं लस्सी नी देणी

देवर की शादी पर तो भावज अपनी खुशी को नाच कर झूम कर व्यक्त करना चाहती है।

नच्च लैण दे नी मैनू द्योर दे विआह विच

जीजा-साली संबंध गीत :- मूल-संकल्पना में जीजा साली का संबंध अत्यंत पवित्र माना जाता रहा है। छोटी सालियां प्रायः विनोद प्रिय होती हैं। छोटी साली और जीजा के बीच छोटी मोटी चुहुलबाज़ी एवं मधुर गुदमुदियां चलती ही रहती हैं।

बल्ले बल्ले नी गिद्धे विच साली नच्चदी

जीजा वार दे दुआनी खोटी

ननद-भौजाई संबंध गीत :- ननद भौजाई के संबंधों में एक संयुक्त भारतीय परिवार में ईर्ष्या की मात्रा अधिक पाई जाती है और मधुरता कम। व्यावहारिक धरातल पर इन संबंधों में कटुता धीरे-धीरे बढ़ने लगती है। वह बात-बात पर अपनी भावज के प्रति भाई के कान भरती है जिसके परिणामस्वरूप भाई अपनी पत्नी से दुर्व्यवहार करने लगता है।

सिक्खिया नणदां दा, क्यों गुत्त नूं, मरोड़े चाढ़ें

इसके विपरीत ननद भौजाई का परस्पर प्रेम एवं विश्वास भी कहीं कहीं गीतों में देखने को मिलता है। वह एक दूसरे के साथ अपने भेद भी बाँटती हैं।

घड़ा चुक्क लै ढाक ते रख लै, नणदे चोबरिए

जफ्फीयां पा नणाने, तेरे वीर ने छुट्टी अज्ज आणां

देवरान- जेठानी गीत :- देवरानी जेठानी का संबंध भी ननद-भौजाई की तरह ही कभी मधुरता एवं कभी कटुता से भरपूर नज़र आता है।

बल्ले बल्ले नी पेके दोवें भैणां नच्चीए

सौहरे नच्चीए दराणीयां जठाणीयां

बाहरों तां आया माही हस्सदा खेडदा

भाबी ने दित्ता ई सिखा

सास-बहू संबंध गीत :- सास बहू का परस्पर संबंध प्रत्येक समाज में तनावपूर्ण ही रहा है। बहू के आने पर सास को ऐसा प्रतीत होता है कि उसके पुत्र पर उसका अधिकार कम होता जा रहा है और उसको अपने अखण्ड स्वामित्व के बंट जाने का भय होता है। दूसरी तरफ वधु भी अपने पति पर पूर्णाधिकार चाहती है। यही कारण इस रिश्ते में कटुता का कारण बनते हैं।

सस्स नूंह दा मुकाबला, आहमो साहमणे

तेरी दिल्ली मेरा आगरा आहमो साहमणे

सस्स मर जू नणान सोहरे तुर जू

असीं दोवें मौज माणागे

प्रणय गीत :- प्रणय गीत लोक गीतों की प्राण चेतना है। प्रणय गीतों के बहुत से रूप लोक-गीतों में देखने को मिलते हैं। जैसे कि मिलनोत्कण्ठा की व्यग्रता, रूप दर्शन की व्याकुलता, प्रेमिका का ऊषाकालीन लालिमा सा रूप, संयोग गीत, वियोग गीत इत्यादि।

ठंडा बर्फ दा पी पाणी

बालो तेरे इश्क पिच्छे, गलीयां दी खेह छाणी

तंदूरी ताई होई ए

खसमां नू खाण रोटियां, चिट्ठी माहिए दी आई होई ए

तेरे दुद्ध दे गिलास विच्च मित्तरा

घुल जावां खण्ड बण के

जट्टी नहा के छप्पड़ चों निकली

सुलफे दी लाट वरगी

लोक-वर्ग लोक-गीत :- हमारा समाज कार्य क्षेत्र अथवा व्यवसाय के आधार पर बहुत से वर्गों में बंटा हुआ है जैसे कि कहार, कुम्हार, कृषक, जुलाहा, धोबी, नाई, मछुआरा, मोची इत्यादि। हमारे लोकगीतों में इन वर्गों का एवं इनके व्यवसाय का पर्याप्त चित्रण देखने को मिलता है। इन व्यवसायों के कर्मी अपने कार्यों में लीन मुद्राओं में कोई न कोई गीत गुनगुनाते रहते हैं :-

चल्ल चल्ल, चक्किया
फेर फेर तैनूं, मेरा जी बड़ा अक्किया
भरपूर जवानी खेतां दी
खेत जो गोडे, बीजे, वाहे
भर सरवर ने पाणी लाए
एह ताणा टुट्टे ना
एह बाणा टुट्टे ना
रब्बा एह तोड़ चढ़े

धार्मिक लोक-गीत :- पंजाब की भूमि अत्यंत मनोरम एवं पावन भूमि है। पंजाब का क्षेत्र चिन्तन, मनन, दर्शन एवं साहित्य रचना का महत्त्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। पंजाब को गुरूओं, पीरों, फकीरों की धरती कहा जाता है। यहां पर नित्य लोकोत्सवों, पर्वों एवं मेलों का आयोजन होता रहता है। अतः धार्मिक लोक-गीतों के स्वर यहां निरंतर गूँजते रहते हैं। माँ शेरांवाली का गुणगान करना हो या आनंदपुर साहिब का होला महल्ला उत्सव या फिर बाबा बालक नाथ को श्रद्धा रूपी रोट की भेंट चढ़ानी हो, प्रत्येक गुरू, पीर, फकीर से संबंधित लोक-गीत गाए जाते हैं।

आ पहुंचे, आ पहुंचे दरबार मैया जी असीं आ पहुंचे
चरण गंगा दा अमृत पीके, पुज्जे हां दरबार, असीं आ पहुंचे
बाहा टप्प के नी छन्दपुर दा

होला वेखांगे, चाईं चाईं नन्दपुर दा
जन्म गुरां दा पटने साहिब दा, हिंद तेरी शान बदले, पिता वारया
श्रद्धा भाव दे रोट दी जो जन, दर ते भेंट चढ़ावे
झोली चिमटे वालड़ा उसदे, सुतड़े भाग जगावे

भौगोलिक लोक-गीत :- पंजाब के लोक-गीतों में यहां के नदी-नाले, पत्तन, बेट-बेले, जलाशय, वृक्ष, ग्राम, नगर एवं उपनगर इत्यादि बड़े सुंदर रूप से चित्रित हुए हैं।

लंघ आ जा पत्तण झनां दा ओ यार लंघ आ जा पत्तण झनां दा
सिर सदका मैं जावां तेरे नां दा ओ यार लंघ आ जा .....

वगदी सी रावी विच सुरमा कीहने डोलिया
जिदण दी आई कदे हरस के ना बोलिया

वे मैं पाणी भरेनी आं पत्तणों
भैड़े नैण ना रैंहदे तक्कणों
तू जाण ते भावें ना जाण वे
मैडा ढोल जवानियां माण वे

4.4.2 लोक-गीतों का सांस्कृतिक परिपेक्ष

पंजाबी लोक गीतों के सांस्कृतिक पक्ष से संबंधित बहुत से लोक-गीत मिलते हैं जैसे कि; संस्कार संबंधी लोक-गीत, लोक-गाथा लोक-गीत, लोक-पर्व लोक-गीत, लोक-नृत्य लोक-गीत एवं लोक-जीवन लोक-गीत।

1) संस्कार लोक-गीत :-डॉ अविनाश कुमार के अनुसार;

'संस्कारों से ही संस्कृति बनती है। जीवन के अनेकों संस्कारों में से कुछ प्रमुख संस्कार हमारे लोक-गीतों में चित्रित होते हैं जैसे कि ; गर्भाधान संस्कार, जन्म संस्कार, मुण्डन संस्कार, विवाह संस्कार एवं मृत्यु संस्कार इत्यादि। इन सभी

संस्कारों में विवाह संस्कार ही मनुष्य जीवन का सर्वाधिक आनंदमय पर्व रहा है, इसीलिए मात्रा एवं अनुपात की दृष्टि से विवाह गीतों की ही सर्वाधिक रचना हुई है। विवाह संस्कार के अंतर्गत अनेकों प्रकार के माँगलिक कार्य होते है। इन सभी के संदर्भ में लोक-गीतों का नानाविध रूप सामने आता है'।[26]

जैसे कि बट्टणे के गीत, सेहराबंदी, खारे के गीत, घोड़ी चढ़ने के गीत, तेल चढ़ाने के गीत, डोली के गीत इत्यादि।

वाह वाह कटोरा बटणे दा, मल्दीयां दो जणीयां
बटणे च पाया तेल, जीवे लाड़े दा पे, बटणा अंग मलो

मत्थे ते चमकण वाल मेरे बनड़े दे
आ वे बन्ना तेरे शगनां दा सेहरा
सेहरे दीयां लड़ीयां चार मेरे बनड़े दे
, जदों चढ़िया वीरा घोड़ी वे
तेरे नाल भरावां दी जोड़ी वे
लटकेदे वाल सोने दीयां लड़ीयां
सोहणिया वीरा वे तैनू घोड़ी चढ़ेनी आं
अज्ज दी दिहाड़ी रख डोली नी मां
रवाँ बाप दी बण के गोली नी मां

इसी तरह जन्म संस्कार से संबंधित लोक-गीत भी हमारे समाज में गाए जाते हैं ;

गणपति मनाओ, करो मन बधाई
धन्न धन्न तेरी माए गोरी जिने तू पुत्र जाया
सो जा राजिया वे
तेरा बापू आया वे
खेड खिडौणे लिआया वे

जन्म से लेकर विवाह तक अनेकों प्रकार के लोक-गीत सुनने को मिलते हैं, किंतु पंजाबी समाज के संस्कार गीतों में मृत्यु से संबंधित गीत भी सुनने को मिलते हैं;

तैनू मौत पुछैन्दी आई धीए, हाए धीए
तेरा बैठी पावां मुल्ल धीए, हाए धीए

2) लोक-गाथा लोक-गीत :- अनेकों पौराणिक, ऐतिहासिक एवं अर्द्ध ऐतिहासिक गाथाओं द्वारा मानस मन की अभिव्यक्ति लोक कंठ से समय-समय पर होती रही है। ये गाथाएं निसर्ग जलधाराओं के रूप में विभिन्न उत्सवों, पर्वों पर प्रवाहित होती रहती हैं। ये लोक-गाथाएं भिन्न-भिन्न रूपों में सुनने को मिलती है जैसे कि ; पौराणिक, भक्त लोक गाथाएं, बलिदान लोक गाथाएं, साहस लोक-गाथाएं एवं प्रणय गाथाएं। उदाहरण के तौर पर शिव विवाह गाथा, चण्डी गाथा, भक्त प्रहलाद गाथा, बाबा बालक नाथ गाथा, गुग्गा जाहर पीर गाथा, गुरू बलिदान गाथा, भगत सिंह बलिदान गाथा, जट्ट जिऊणा मौड़ एवं जग्गा डाकू गाथा, सस्सी-पुन्नू गाथा, हीर-रांझा, सोहनी-महीवाल एवं दुल्ला-भट्टी गाथा इत्यादि।

गुस्से हो भगत बैठाया, अग्ग ते सैयाद ने
तत्ते थम्म पाइयां जफ्फियां भगत प्रहलाद ने

पिता वारेया ते लाल चारे वारे
हिन्द तेरी शान बदले

हेठ गुरां दे नीला घोड़ा
हथ विच्च बाज सुहाया

भरके रफल दुनाली, जीणे मौड़ ला लईसी
अहमद डोग्गर वल नूं जट्ट ने सिस्त टिका लई सी

सस्सीए बेखबरे, तेरा लुट्टिया शहर भंबौर
झनां दे विचाले सोहणी धाहां मारदी
महीवाल गल्ल सुणी सोहणी नार दी

3) लोक-पर्व लोक-गीत :- लोक पर्व लोक-गीत दो भागों में विभाजित किए गए हैं ;

क) ऋतु-मास-वासुर लोक-गीत

ख) विविध लोक पर्व लोक-गीत

ऋतु-मास-वासुर लोक-गीतों के माध्यम से प्रकृति के शुद्ध रूप के साथ-साथ मानवीय संवेदना, वेदना तथा सामाजिक क्रांति चेतना और ज्ञान भक्ति वैराग्य की व्यंजना हुई है।

पंजाब में प्रत्येक ऋतु अपने साथ एक भावना लेकर आती है। जैसे कि श्रावण की पहली वर्षा प्रकृति को नया जीवन देती है। बसंत ऋतु आने पर प्रकृति नव श्रृंगार करने लगती है। पतझड़ की ऋतु एक विरह की भावना समोए हुए आती है। ऋतु गीतों के साथ-साथ बारह मास गीत भी उपलब्ध होते हैं किंतु इनकी चेतना ऋतु गीतों से भिन्न होती है।

सौण महीना झड़ियां गरमी झाड़ सुट्टी
धरती पुंगरी टहकदियां डालियां ने
राह रोक लए छप्पड़ां टोभियां ने
नदियां, नालियां जूहां हंधालियां ने

वाह रुत बसंत आई ए, हर पासे रौणक छाई ए
पतझड़ ने डेरा पाया ए, फुल्लां ने फेरा पाया ए

किक्करा वे कंडियालिया कत्तक बदले तोर
नवें जुगां दे बुत विच नवें लहू दा दौर

किक्करा वे कंडियालिया आमे उत्तों चढ़िया पोह

हक्क जिन्नां दे आपणे आपे लैणगे खोह

पंजाब विविध त्योहारों, पर्वो एवं उत्सवों का लीला मंच है। ये उत्सव एवं त्योहार लोक मानस का रंगारंग उल्लासमय प्रदर्शन हैं। यहां के विविध त्योहार जैसे कि वैशाखी, तीज, दशहरा, करवा-चौथ, दीपावली, भाई दूज, गुरूपर्व, लोहड़ी, होली, शिवरात्रि इत्यादि के साथ संबंधित बहुत से लोक-गीत मिलते हैं;

झिंजड़ी दी वेल, कौड़ा कौड़ा तेल

वसाखी वाले मेले ते जिवें कुड़ियां दा मेल

सुच्चा पाणी भर कोर करूए

थाली खींजरियां दे नाल भरिए

फेणियां सेवीयां धर लवो भैणों

आओ भैणों

दीवाली के दीप जलाओ

माना भू पर अंधकार है

जग-मग नभ का आर पार है

तक्किया मैं बाबर दे दरबार इक मसताना जोगी

शिवां दा व्याह रचाया, रोडी वाले बाबे दे शिवाले नी

4) लोक-नृत्य लोक-गीत :- पंजाब में लोक नर्तन के अनेकों रूप मिलते हैं। यहां के संगीतमय उल्लास की थाप पर चरण स्वयं नर्तन मुद्रा में जाने लगते हैं और भुजाएं थिरकने लगती हैं और करतल ध्वनियां गुंजित होने लगती हैं। महिलाएं एवं पुरूष

दोनों से संबंधित लोक-नृत्य लोक-गीत यहां गाए जाते हैं। जैसे कि गिद्धा, किकली, रस्सी टप्पा, भंगड़ा, झूमर, लुड्डी इत्यादि।

डॉ गुरनाम सिंह के अनुसार;

> 'पंजाबियां दे ऐह सारे लोक नाच रूप पंजाबी जन जीवन दा भरपूर चितरण करदे हन क्यों कि ऐह पंजाबियां दे कार-विहार, मूल रूप विच किसान जीवन दे नाल सम्बन्धित हन'।[27]

किक्करां वी लंघ आई टाहलियां वी लंघ आई
लंघणा रह गया तूत, नी जे मेरी सस्स मर जे
मैं रो रो मारां कूक

किक्कली कलीर दी, पग्ग मेरे वीर दी
दुपट्टा मेरे भाई दा फिट्टे मूंह जवाई दा

रलमिल हस्सीए नच्चीए ते टप्पीए
आओ रस्सी वट्टीए, रस्सी टप्पा टप्पीए

साडे पिंड दे मुंडे वेख लो, ज्यो टाहली दे पावे
मलमल दे तां कुड़ते सोंहदे ज्यों बगला ताल विच नहावे
भंगड़ा पांदे मुंडियां दी, सिफत करी ना जावे

वे मैं पाणी भरेनी आं पत्तणों
भैड़े नैण ना रैंहदे तक्कणों
चिट्टे दंद वी ना रैंहदे हस्सणों
भावें जाणे ते भावें ना जाणे वे
मेरा ढोल जवानियां माणे

सम्मी मेरी वार मैं वारी

मैं वारी आं नी सम्मीए

5) लोक-जीवन लोक-गीत :- पंजाबियों का समस्त जीवन ही लोक-गीतों से जुड़ा हुआ है। पंजाबियों के जीवन के बहुत से पहलू ऐसे हैं जिनसे संबंधित लोक-गीत वह सदैव ही गुनगुनाते रहते हैं। जैसे कि चूल्हा चौंका करना, खेतों में काम करना, कृषि उपकरणों से संबंधित गीत, लोक-फैशन इत्यादि।

कोरे कोरे कुज्जे विच दहीं मैं जमौनी आं

तड़के उठ के रिड़कांगे

छड़े आणगे लस्सी नू छिड़कांगे

भरपूर जवानी खेतां दी

खेत जो बीजे, गोडे वाहे

भर सरवर ने पाणी लाए .....

बल्ले बल्ले नी सहुरे कोलों घुंड कढदी

नंगा रखदी कलिप वाला पासा

दुद्ध रिड़के झांजरां वाली

कैंठे वाला धार कढदा

मेरा घगरा सूफ दा

धरती सुंभरदा जाए नी

4.5 गुरमीत बावा के गीतों का सामाजिक परिपेक्ष

गुरमीत बावा ने अपने गाए हुए गीतों द्वारा पंजाबी संस्कृति एवं सभ्याचार की एक प्रत्यक्ष एवं सदैव ज़िंदा रहने वाली तस्वीर प्रस्तुत की है। बावा ने सामाजिक एवं

सांस्कृतिक परिपेक्ष की दृष्टि से लगभग प्रत्येक प्रकार के गीतों को गाया है। इन सब गीतों में संबंध गीत, प्रणय गीत, लोक-गाथा गीत, धार्मिक गीत, लोक-पर्व लोक-गीत इत्यादि प्रमुख हैं जिनमें अपनी सुंदर आवाज़ के द्वारा बावा ने जान डाल दी है। यहां तक कि हमारी संस्कृति से जुड़े हुए मृत्यु गीतों को भी गुरमीत बावा ने बाखूबी निभाया है।

सामाजिक परिपेक्ष की दृष्टि से किए हुए वर्गीकरण के अनुसार गुरमीत बावा ने प्रत्येक वर्ग के लोक गीत गाए हैं जिनका विवरण इस प्रकार है;

1.संबंध लोक-गीत :- गुरमीत बावा ने हमारे जीवन से जुड़े हुए लगभग प्रत्येक संबंध को अपने गीतों द्वारा प्रस्तुत किया है। जैसे कि;

क) माँ-बाप-बेटी संबंध गीत :- माँ बाप एवं बेटी का संबंध एक गहरा संबंध माना जाता है। गुरमीत बावा के गाए हुए गीतों में संबंध गीतों की संख्या सब से अधिक मिलती है। इन संबंध गीतों में सबसे ज्यादा गीत माँ-बाप एवं बेटी के संबंधों के साथ जुड़े हुए हैं।

नी बीबी चंदन दे ओहले ओहले क्यों खड़ी
मैं तां खड़ी सां बाबुल जी दे कोल
बाबुल वर लोड़िए

प्रस्तुत गीत एक कुँवारी बेटी के मनोभावों को व्यक्त करता है जिसको अपने लिए एक अच्छे से वर की तलाश है और वह चंदन के वृक्ष के पास खड़ी अपने बाबुल को अपने मनोभाव व्यक्त करती है कि उसको कैसा वर चाहिए। कुछ इसी तरह के मनोभाव व्यक्त करता हुआ गीत गुरमीत बावा की मीठी आवाज़ में हमारे कानों में रस घोलता है ;

ऊची ते माड़ी बाबुल सुत्तड़िया
मैं सुत्ते नू रही वे जगा
अैडी तां नींदर प्यारी ना करो
घर धी होई मुटियार

इसके जवाब में पिता के मनोभाव व्यक्त करते हुए वह गाती है;

सू लैण दे धीए मझड़ीयां
मेरा पक्कण दे नी कमाद
दाज बणावे नी तेरी माता राणी
तेरा अस्सू दा काज रचा

बाबुल के रूप में जवाब देती हुई गुरमीत बावा इन पंक्तियों को गाकर इनके साथ पूरा पूरा न्याय करती हुई प्रतीत होती है। गुरमीत बावा प्रत्येक गीत में एक बेटी, एक माँ और एक बहन का कर्त्तव्य अदा करती हुई नज़र आती है। क्योंकि जब वह इन गीतों को अपनी पूरी रूह से जाती है तो श्रोताओं को सच में ऐसा प्रतीत होता जैसे एक बेटी, एक बहन खुद ही रूदन करती हुई कह रही हो;

बीबी दे मापे क्यों रोंदे
ज्यों घटा सावण दी आई
तुसीं क्यों रोंदे ओ मापियो
ए जग हुंदड़ी आई

पंजाबी लोक-गीतों में सुहाग गायन शैली को संभाल कर रखने में गुरमीत बावा का एक महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। गुरमीत बावा के गाए हुए सभी सुहाग ही प्रंशसनीय है किंतु एक सुहाग जिसको श्रोताओं ने भरपूर प्यार दिया है, को गुरमीत बावा ने अपनी बेटियों लाची एवं ग्लोरी के साथ गाया है;

हरीए नी रस भरीए खजूरे
कीहने दित्ता ऐनी दूर ए
बाबुल तां मेरा कई देसां दा राजा
ओहने दित्ता ऐनी दूर ए

एक और डोली का गीत गुरमीत बावा ने अपनी बेटियों के साथ गाया है;

बाबुला चिट्टीयां चिट्टीयां कूँजां तेरे देस चों उडड्दीयां आईयां
बाबुला काहनू दूर विआहिया काहनूं कूँज विछोड़ा पाया

गुरमीत बावा जब भी माँ-बाप और बेटी के संबंधों को अपने गीतों में प्रस्तुत करती है तो हरेक आँख से अश्रुधारा बह उठती है;

बाबुल धरम करेंदिया, मैनू रख लै अज्ज दी रात
कीकर रखां बेटीए, नी जांझण बड़ी उदास

बहन भाई संबंध गीत :- बहन भाई के गहरे संबंध को गुरमीत बावा ने अपनी सुरीली आवाज़ में कुछ इस तरह से प्रकट किया है;

छम छम अखीयां चों वगदा ए नीर वे
लोहड़ी दा महीना आया मिल जाईं वीर वे

प्रस्तुत गीत गुरमीत बावा ने अपनी बेटी लाची बावा के साथ मिल कर ऑल इंडिया रेडियो की तरफ से प्रसारित किए गए एक लोक-गीत फीचर के अंतर्गत रिकार्ड किया। जिस तरह से एक बेटी अपने लिए वर की तलाश करने के लिए अपने बाबुल को अपने मनोभाव व्यक्त करती है, उसी तरह एक बहन के रूप में गुरमीत बावा अपने भाई को इस तरह से अपने मन की बात कहती है;

नी बीबी चंदन दे ओहले ओहले क्यों खड़ी

वह जवाब में कहती है;

मैं तां खड़ी सां वीरा जी दे कोल

वीरा वर लोड़िए

भाई जब उससे पूछता है कि उसको कैसा वर चाहिए तो वह जवाब में कहती है;

चन्नां विचों चन्न, तारियां विचों तारा

काहनां विचों काहन

कन्हईया वर लोड़िए

ओ वीरा, एहो जेहा वर लोड़िए

भाई की शादी में बहन की खुशी एवं चाव देखने वाला होता है। गुरमीत बावा ने लोक-गीतों की श्रेणी में घोड़ी को अपने ही अंदाज में गाया है। उस की आवाज में घोड़ी सुनकर ऐसा लगता है मानो गाँव में हो रहे भाई के विवाह में बहन बड़े ही चाव के साथ घोड़ी गा रही है;

जे वीर आया विच-विच राही

घोड़ी तां बद्धी वीरे हेठ फलाही

भैणां ने वीर शिंगारिया ई

भाबियां देवर घोड़ी चाढ़िया ई

इसी तरह एक घोड़ी गुरमीत बावा की आवाज़ में सुनने को मिलती है ;

उठ नी रवेल घोड़ी

वीरे वेहड़े जाह

वीरे दे मन शादियां

तेरी भाबी दे मन चाअ

घोडी पई सवल्लड़े राह

घोड़ी चुगदी हरिया घाह

घोड़ी रांगली रामा

गुरमीत बावा एक और गीत में बहन के रूप में भाई को बताती है कि सदियों से चली आ रही शादी की रीत को निभाते हुए अब उसको भी अपने घर जाना होगा। बहुत देर वह अपने भाई के घर ऐसे रहती रही है जैसे कि माखन में बाल नज़र आता है।

बाराँ ते बरसां वीरा इयों रही

ज्यों मखण दे विच वाल

हुण ना रैंहदी वे वीरा इक घड़ी

मेरा अन्न जल होया वे तयार

मेरा रांझे दे नाल प्यार

पति-पत्नी संबंध गीत :- नौकरी पर गए हुए पति को अपने अकेलेपन का दुख सुनाती हुए पत्नी की आवाज़ को गुरमीत बावा कुछ इस तरह के व्यक्त करती है;

काहनूं तां पाईयां कोठड़ीयां, काहनू रखिया ई वेहड़ा

वे नौकरा काहनू रखिया ई वेहड़ा

आप ता चलिया नौकरी पिछों वसूगा केहड़ा

इसके जवाब में पति कहता है:

तेरे तां वसण नू कोठड़ियां, तेरे कत्तणे नूं वेहड़ा

मैं तां चलिया नौकरी, छोटा भाई जो मेरा

पति पत्नी की छोटी मोटी शरारतें एवं नोक झोंक को भी गुरमीत बावा ने अपने इस गीत में व्यक्त किया है;

कोरा कोरा कुज्जा ठंडा ठार पाणी
सानूं छिट्टड़े मार जगांवदा ई
साडी अल्लहड़ी नींद गवांवदा ई

पति के इंतज़ार में पत्नी के भाव गुरमीत बावा के इस गीत में इस तरह व्यक्त होते हैं;

मेरे हत्थां दे वे छल्लिया
औंसीयां पौंदी दा, मेरा पोटा वी घस चल्लिया

पति को किसी और औरत के साथ बात करते हुए देख पत्नी का शक अभिव्यक्त करते हुए गुरमीत बावा एवं उनके पति की आवाज़ में यह गीत सुनते ही श्रोता आनंद विभोर हो उठते हैं ;

बड़ा लगें तू सलग,
हुण ते पता गिया ए लग तेरी उरली पुरली दा
कैंहदे जट्ट शौकीन बड़ा बेगानी खुरली दा

इस का जवाब देते हुए किरपाल बावा कहते हैं;

मैनूं समझ रता ना पैंदी, हरदम उल्ट सोचदी रैंहदी
तैनू कौण सिखौंदा ए
दस्स खां मैनू कौण ए जेहड़ा लूतियां लौंदा ए

जेठ-देवर-भाभी संबंध गीत :- नौकरी पर गया हुआ पति जब पत्नी को हौंसला देते हुए कहता है कि मेरे पीछे से मेरा छोटा भाई तुम्हारा पूरा खयाल रखेगा तो पत्नी को अपने देवर पर भरोसा नहीं होता। उसके मनोभाव गुरमीत बावा कुछ इस तरह व्यक्त करती है;

छोटा भाई तेरा वे ओह शरीक ए मेरा
मारूगा तेरे बच्चड़ियां नू जूड़ा पट्टूगा मेरा वे नौकरा

इसी तरह जेठानी के साथ चल रहे अच्छे संबंधों में दरार आने का कारण जेठ को मानती हुई वह कहती हैं;

मैं ते जेठाणी असीं कदे वी ना लड़ीयां
जेठ ने मारे मंदे बोल, वे लिया दे चंबा
लावां घड़े दे कोल

जीजा-साली संबंध गीत :- जीजा साली का रिश्ता एक बहुत ही सुंदर रिश्ता होता है जिससे प्यार, हँसी-मज़ाक एवं नोक-झोक चलती रहती है। गुरमीत बावा ने प्रत्येक रिश्ते को अपने गीतों में प्रतिबिम्बित किया है। जीजा साली संबंध का यह गीत श्रोताओं में बहुत प्रचलित हुआ;

गईयां जीजे नाल दोवें भैणां मस्सिया नहौण
ओथों लै गिया सानू जीजा बोबी फिलम वखौण
असां भीड़ च दुपट्टा वी गवा लिया
पिंड दियां मुंडिया ने सानूं तोड़ तोड़ चूँढीयां नाल खा लिया

ननद-भौजाई एवं देवरानी-जेठानी संबंध गीत :- इन रिश्तों का ज़िक्र लगभग प्रत्येक लोक गीत में मिलता है। गुरमीत बावा ने भी ननद भौजाई और देवरानी जेठानी के मधुर एवं कटु संबंधों को बहुत से गीतों में प्रस्तुत किया है। जैसे कि;

मैं ते दराणी असीं कदे वी ना लड़ीयां
दयोर ने मारे मंदे बोल वे लिया दे चंबा
लावां घड़े दे कोल
मैं ते जठाणी असीं कदे वी ना लड़ीयां

जेठ ने मारे मंदे बोल वे लिया दे चंबा
लावां घड़े दे कोल
मैं ते नणद असीं कदे वी ना लड़ीयां
नणदोईए ने मारे मंदे बोल वे लिया दे चंबा
लावां घड़े दे कोल

इसी तरह का एक और गीत ;

बैठ बैठ नी नणदे बोली बाज़ नणदे
तेरा वीर सभे कुछ जाणदा ई
वरजीं वरजीं नी ननाणे वीरे आपणे नू
साडे सालू दी आब गवांवदा ई
बैठ बैठ भाबी नी बोली बाज़ भाबी
मेरा वीर नियाणा कुछ ना जाणदा ई

सास-बहू संबंध गीत :-सास बहू का रिश्ता एक ऐसा रिश्ता है जिसको प्रत्येक लोक गीत में एक कटु संबंध के रूप में प्रस्तुत किया गया है; जैसे कि गुरमीत बावा के एक गीत में;

कच्ची खूही चम दा बोंका सस्सड़ी पाणी भरदी
इक घड़ा भंनदी दूजा सिर धरदी, दोष नूहां सिर मड़दी

एक और गीत में बहू अपने पति का ताना अपनी सास को मारते हुए उसकी शिकायत करती है पर सास अपने बेटे के बारे में कुछ सुनना पसंद नहीं करती;

बहू :- कोरा कोरा कुज्जा ठंडा ठार पाणी
सानू छिट्टड़े मार जगांवदा ई
वरजीं वरजीं सस्सू नी पुत्त आपणे नू

साडी अल्लड़ी नींद गवांवदा ई

सास :- बैठ बैठ नूंहे बोली बाज़ नूहें

मेरा पुत्त नियाणा कुझ ना जाणदा ई

प्रणय गीत :- गुरमीत बावा ने अपनी दमदार आवाज़ के द्वारा प्रेमी प्रेमिका के एक दूसरे के प्रति मिलनोत्कण्ठा की व्यग्रता, व्याकुलता एवं संयोग वियोग के भावों को प्रकट किया है। एक ऐसे ही भावों को व्यक्त करता हुआ गीत गुरमीत बावा ने अपनी मां के देहांत के बाद अपनी दादी से सीखा। यही गीत जब रेडियो एवं टेलिविजन पर गाया तो परदेस गए हुए फौजी पतियों के वियोग में बैठी हुई हर पत्नी का मन-भावन गीत बन गया।

डिग पई नी गोरी शीश महल तों

पा दियो नी मेरे माहिए जी नूं चिट्ठीयां

जा पहुंची चिट्ठी विच नी कचहरी दे

फड़ लई नी माहिए लंमी बांह करके

प्रस्तुत गीत में पत्नी अपने पति के आ जाने पर सभी दुख दर्द एवं पीड़ा को भूल जाती है। इस गीत को बहु-चर्चित करने का श्रेय गुरमीत बावा जी को ही जाता है। माहिया लोक गायन शैली को गाते हुए गुरमीत बावा जी ने प्रणय लोक गीतों की उदाहरण प्रस्तुत की है;

सप्प चढ़ गया सोटी ते

रुस्से नू मना लैनी आ

खंड पा के रोटी ते

सड़कां ते पई चांदी

माहिया सानूं माफ करीं

भुल्ल बंदिया तो हो जांदी

इसी तरह लोक बोलियां गाते हुए गुरमीत बावा प्रणय भाव को व्यक्त करती हैं ;

बल्ले बल्ले वे तेरी आई मैं मर जाँ

तेरा वाल वी विंगा ना होवे

तेरी आई मैं मर जाँ

बारी बरसीं खटण गया सी

खट्ट के लियांदा फीता

बई माहिए दीयां चोर अखीयां

दिल कढिया खड़ाक वी ना कीता

माही दीयां चोर अखीयां

लोक-वर्ग लोक गीत :- गुरमीत बावा ने भिन्न-भिन्न वर्गों से संबंधित लोक-गीत भी गाए हैं। जैसे कि सुनार, कहार, नाई, ललार, लोहार, बनिया, मालिन इत्यादि। जैसे कि;

कहारो डोली ना चायो

कि मेरा बाबल आया नईं

कि वीरा दूर खड़ा रोवे

किसे ने चुप कराया नईं

राणी तां कैहंदी वे राजा सुण मेरी बात वे

गागर दे सुच्चे मोती किसनू देईए

सुनियार मंगाइए राणीए

कैंठा घढ़वा लईए

गागर दे सुच्चे मोती उसनू देईए

ललारी मंगवा लईए

चीरा रंगवा लईए

गागर दे सुच्चे मोती उसनूं देईए
मालण मंगाईए राणीए
सेहरा गुंदवा लईए
गागर दे सुच्चे मोती उसनू देईए

काली तितली कमादों निकली
उडदी नू बाज पै गिया
पूरना ! नाईया ने वढ्ढ सुटिया
जग्गा सूरमा

दिल धक-धक करे भैड़ी नैण कोलों डरे
घर दस्स तू हाणिया जा के
वे नैण मेरे नाल पई आ
केहड़ा उठां मैं बहाना ला के

धार्मिक लोक-गीत :- गुरमीत बावा के द्वारा गाई हुई 'जुगनी' धार्मिक लोक-गीतों की शैली में सब से उत्तम उदाहरण है। जुगनी वास्तव में औरत के गले में पहना जाने वाला एक गहना है। किंतु गीत के रूप में गाई जाने वाली जुगनी एक प्रकार का ईलाही गीत है जो कि इश्क-हक़ीकी एवं इश्क मिज़ाजी का संयुक्त रूप है।

मेरी जुगनी दे धागे बग्गे
जुगनी ओहदे मूंहों फब्बे
जिहनू सट्ट इश्क दी लग्गे
ओ पीर मेरिया जुगनी कैंहदी आ
जिहड़ी नाम अली दा लैंदी आ
जिहड़ी नाम साईं दा लैंदी आ
साईं बिसमिल्ला तेरी जुगनी

जुगनी में गुरमीत बावा जन साधारण को यह संदेश देती हुई प्रतीत होती है कि पीर मुरशद को मिलने के लिए सिर्फ उसी का ही नाम लेना पड़ता है। मानव शरीर मिट्टी हो जाएगा। इसीलिए जुगनी की तरह पागल होकर ही ईश्वर को पाया जा सकता है। शेख़ फरीद जी का अपने प्रभु से मिलन का इंतज़ार और उस इंतज़ार के दौरान अपने शरीर एवं आंखों को कुर्बान कर बैठने की व्यथा को गुरमीत बावा कुछ इस तरह से बयाँ करती है;

पहलां यार दा दीदार कर लैण दे
फेर भावें अखां कढ़्ढ लईं
चुंझां मार मार तन मेरा कीता पिंजरा
माही ने सी आणा बण अरशां दा किंगरा
विच पिंजरे दे यार वड़ लैण दे
फेर भावें अखां कढ़्ढ लईं

इसी तरह गुग्गापीर की स्तुती करते हुए गुरमीत बावा ने अपनी मधुर आवाज़ में यह गीत गाया;

छनना भरिया दुद्ध दा
मेरा गुग्गा माड़ी विच कुददा
मैं वारी गुग्गे तों
मैं वारी गुग्गे तों

भौगोलिक लोक-गीत :- गुरमीत बावा ने बहुत से ऐसे गीत भी गाए हैं जिनमें पंजाब के लगभग सभी शहरों का ज़िक्र मिलता है। जैसे कि;

मैं चंडीगढ़ नच्चदी फिरां
सारे हिल गए दिल्ली दे चुबारे
अंबरसरों घड़ाई झांजर विच मढ़ाए तारे

शहर जलंधर धुम्मां पईयां सुण एहदे छणकारे

एक और गीत में पंजाब के बहुत से शहरों का नाम सुनने को मिलता है ;

रूप मेरे दा चानण होवे लौंग मारे लिश्कारे
शहर जलंधर जद मैं नच्ची एहगल्ल आखण सारे
बई औखी हो जू रात कट्टणी एथे होर ना नच्चीं मुटियारे

प्रस्तुत गीत में मोगा, लुधियाना, अमृतसर, चंडीगढ़, पटियाला इत्यादि शहरों में पंजाबी मुटियार के गीतों एवं नृत्य की सराहना की गई है।

एक और गीत में गुरमीत जी ने पत्तण का ज़िक्र किया है जो कि और भी बहुत से गीतों में मिलता है;

पाणीएं नू मैं चल्ली आं
मैनू पत्तण झनां वाला सददा

4.6 गुरमीत बावा के गीतों का सांस्कृतिक परिपेक्ष

गुरमीत बावा पंजाब की समस्त लोक गायिकाओं में एक ऐसी गायिका है जिन्होंने पंजाब के समाज एवं संस्कृति से संबंधित गीत ही गाए हैं। इस तरह से गुरमीत जी ने पंजाब के लोक जीवन एवं लोक संस्कृति को आज तक अपनी बुलंद आवाज़ के ज़रिए ज़िंदा रखा हुआ है। गुरमीत बावा के गाए हुए गीतों में हमें सामाजिक परिपेक्ष के साथ-साथ सांस्कृतिक परिपेक्ष भी देखने को मिलता है। उन गीतों के उदाहरण निम्नलिखित है;

लोक-गाथा लोक-गीत :- गुरमीत बावा ने पंजाबी सभ्याचार से संबंधित लगभग प्रत्येक लोक-गाथा को अपनी मधुर आवाज़ प्रदान की है। जैसे कि मिर्ज़ा-साहिबां, हीर-रांझा, सस्सी-पुन्नू, सोहनी-महीवाल, ढोल-सम्मी, मल्की-कीमा, जग्गा इत्यादि।

मिर्ज़ा गीत का वह रूप है जिसको पूरे ज़ोर एवं जोश के साथ गाया जाता है। मिर्ज़ा गाने वाले गायकों एवं गायिकाओं में दो-चार नाम ही आगे आते हैं और यह बात किसी से छुपी नहीं है कि गुरमीत बावा का गाया हुआ मिर्ज़ा दुनिया के कोने कोने में अपना डंका बजा चुका है। गुरमीत बावा ने मिर्ज़ा लोकगाथा को आठ प्रकार से गाया है जिसमें दमोदर एवं पीलू का मिर्ज़ा, दुल्ला भट्टी की तर्ज़ पर मिर्ज़ा एवं साहिबां के रूदन इत्यादि शामिल हैं। रियाड़ गांव के एक शायर का लिखा हुआ मिर्ज़ा गुरमीत बावा इस तरह से गाती है;

मिर्ज़ा तुर पिया बक्की लै के झंग सियालां नू
तुरिया जांदा लंघिया पिंड दीयां कबरां थाणी
है तैनू माण मिरज़िया सोहणी एस जवानी दा
कुझ दिन मेरे उत्ते वी सी रुड़ पुड़ जाणी

परंपारिक मिर्ज़ा को बावा इस तरह प्रस्तुत करती है;

जट्ट चढ़दे मिर्ज़े खान नू
वड्डी भाबी लैंदी थम्म
वे मैं कदे ना दयोर वंगारिया
मेरे कदी ना आयो कम्म

एक और प्रकार के मिर्ज़ें में गुरमीत बावा साहिबा का रूदन प्रस्तुत करती है ;

जे मैं मिर्ज़िया जाणदी
तैनू वैरीयां देणा मार
मैं हाकां मार जगांवदी
मेरी बक्की दा असवार
टुकड़े कर कर केरिया
मेरे गल दा चन्नणहार

गल लग के रोंदी लोथ दे
हेठा जंड दे साहिबां नार
लाह सिर दा सालहू पाड़िया
चूड़ा भन्निया दुहत्थड़ा मार
हत्थीं पुट्ट पुट्ट सुट्टदी मीडीयां
जो राती तुरी सवार

पंजाबी लोक गायकी में गुरमीत बावा ही एक ऐसी गायिका है जिसने मिर्ज़े को भिन्न-भिन्न प्रकार की तर्ज़ों एवं शैलियों में गाया है।

जुगनी

जुगनी एक प्रकार का इलाही गीत है जिसमें इश्क-हक़ीकी एवं इश्क मिज़ाजी का एक सुंदर मिश्रण देखने को मिलता है। यह गुरमीत बावा द्वारा गाया हुआ एक प्रसिद्ध लोक-गीत है। सबसे पहली बार जब गुरमीत बावा ने टेलीविज़न पर यह गीत गाया तब से लेकर बच्चे बच्चे की जुबां पर इसके बोल गुनगुनाए जाने लगे;

मेरी जुगनी दे धागे बागे
जुगनी ओहदे मूहों फब्बे
जिहनू सट्ट इश्क दी लग्गे
ओ पीर मेरिया जुगनी कहिंदी आ
जिहड़ी नाम अली दा लैंदी आ

जुगनी शब्द के भिन्न-भिन्न अर्थों को लेते हुए बहुत से नामवर गायकों एवं गायिकाओं ने जुगनी को अपने ही ढंग से गाया है। जैसे कि आलम लोहार ने जुगनी को एक औरत का नाम देते हुए इस तरह गाया;

जुगनी जा वड़ी जलंधर

टपपण गोरे वांग कलंदर

लोकी वड़ गए अपने अंदर

वीर मेरिया जुगनी कैंहदी आ

जेहड़ी नाम अली दा लैंदी आ

वास्तव में जुगनी औरत का एक गहना है जिसको रेशमी धागों में पिरोया जाता है। औरतें इसको गले में पहनती हैं। इसीलिए तो गुरमीत बावा द्वारा गाई हुई जुगनी इसके सही एवं उपयुक्त अर्थों का प्रमाण प्रस्तुत करती है।

सोहनी-महींवाल

सोहनी-महीवाल लोक गाथा को भी गुरमीत बावा ने परंपरागत शैली के अतिरिक्त एक और प्रकार से गाया है। गुरमीत बावा के द्वारा गाए हुए सोहनी-महीवाल के दो भिन्न-भिन्न प्रकार इस तरह हैं;

रात कहर दी सां-सां करदी

बद्दल पुरे दा आया

वल्ल झनां दे चल पई सोहणी

ते कुच्छड़ घड़ा टिकाया

दिल विच चाअ सी यार मिलण दा

खौफ रता ना खाया

दूसरा प्रकार जिसको बावा ने दूरदर्शन एवं रेडियो पर भी गाया है, इस प्रकार है ;

तैनू महरम राज बणाया वे

नाले रब्ब गवाह विच पाया वे

तैनू तरस रता ना आया

पार मैनू ला दईं वे

वे घड़िया रुस्स जाणा महीवाल

पार मैनू ला दईं वे

ढोल-सम्मी

ढोल-सम्मी एक ऐसी लोक-गाथा है जिसको बहुत ही कम लोक-गायिकाओं ने अपने स्वरों में पिरोया है। गुरमीत बावा ने इस लोक-गाथा को उस वक्त अपनी आवाज़ के जादू के द्वारा प्रस्तुत किया जब बटौर नगर में कांग्रेस पार्टी का एक सैशन चल रहा था। इस सैशन में इंदिरा गांधी जी एवं ग्यानी जैल सिंह जी भी सुशोभित थे। उस समय गुरमीत जी ने ढोल-सम्मी गाकर सभी श्रोताओं को हिला कर रख दिया था। यहां तक कि इंदिरा गांधी एवं ग्यानी जैल सिंह जी के मुख से भी वाह वाह निकल पड़ी। इस के बोलों को गुरमीत बावा जी ने कुछ इस प्रकार से प्रस्तुत किया;

तोता ढोल दा ओ आ के कैहंदा ढोलणा

एह की सोहणिया तेरी ओए दुनाई

विच सालीयां दे बैठ मौजां माणदैं

माता पिता दी याद ओए भुलाई

घर सौहरियां दे खावें तू चूरीयां

रूलदी गलीयां दे विच बुढ्ढड़ी तेरी माई

मलकी-कीमा

जहां मलकी-कीमा जैसी लोक गाथा को दलजीत कौर एवं सुदेश कुमारी ने दोगाना गायकी के रूप में प्रस्तुत किया है वहां गुरमीत बावा ने मलकी कीमा को अकेले ही गाया है;

मलकी खूह दे उत्ते भरदी पई सी पाणी

कीमा कोल आ के बेनती गुज़ारे

लम्मा पैंडा राही मरगे नी प्यासे

ओ छनना पाणी दा इक दे दे नी मुटियारे .....

जग्गा डाकू

जग्गा डाकू की लोक गाथा को अधिकतर पुरूष लोक गायकों ने गाया है क्योंकि यह लोक गाथा मरदाना एवं जोशीली आवाज़ के द्वारा श्रोताओं को प्रभावित करती है, किंतु गुरमीत बावा ने इस लोक गाथा को गाकर अपनी जोश भरी एवं गूँजदार गायकी का प्रमाण प्रस्तुत किया है;

जग्गा जम्मिया ते मिलण वधाईयां

वडडा होया डाके मारदा

जग्गे नू जवान करिया पंजा पाणीयां

लोक-पर्व लोक-गीत :- पंजाब को लोक-पर्वों की भूमि माना जाता है। यहां प्रत्येक लोक पर्व को अत्यंत उत्साह से मनाया जाता है। गुरमीत बावा ने पंजाब की इस भूमि के प्रत्येक लोक पर्व से संबंधित गीतों को अपनी आवाज़ दी है। जैसे कि श्रावण, लोहड़ी, बैसाखी, इत्यादि।

श्रावण मास में पंजाब में तीज का त्योहार बहुत ही उत्साह से मनाया जाता है। गुरमीत बावा ने अपनी बेटियों लाची एवं ग्लोरी के साथ तीज के गीत गाए हैं ;

काहनूं तां पाईयां कोठड़ियां

काहनू रखिया ई वेहड़ा नौकरा वे

तेरे तां वस्सण नू कोठड़ियां

तेरे कत्तणे तू वेहड़ा गोरीए ने

लोहड़ी के त्योहार पर एक पंजाबण मुटियार किस तरह अपने भाई के आने की प्रतीक्षा करती है उसको गुरमीत बावा ने कुछ इस प्रकार से बयान किया है;

छम छम अखीयां चों वगदा ए नीर वे
लोहड़ी दा महीना आया
मिल जावीं वीर वे

लोक-नृत्य लोक-गीत :- गुरमीत बावा जी ने पंजाब का सुप्रसिद्ध लोक नृत्य 'गिद्धा' में गाई जाने वाली लोक-बोलियों को अपने ही विलक्षण अंदाज़ में कुछ इस प्रकार से गाया है कि श्रोता नाचने को मजबूर हो जाते हैं:-

एह पंजाब दीयां कुड़ीयां वेख लो
लम्मीयां ते मुटियारां
बई भत्ता लै के जाण खेतां नू
ज्यों कूँजां दीयां डारां
हो घगरे जिनां दे छण छण करदे
गोटा दे लिश्कारां, नच्च लै मोरनीए
पंज पतासे वारा
बल्ले बल्ले वे तेरी आई मैं मरजां
तेरा वाल वी विंगा ना होवे
बल्ले बल्ले वे हस के ना लंघ वैरीया
मेरी सस्स भरमां दी मारी
बई जट्टीयां पंजाब दीयां
उच्चीयां ते लम्मीयां
झांजरा नू सभे छणकौणगीयां
अज गिद्धे विच धमकां पौणगीयां

लोक-जीवन लोक-गीत :- पंजाबी लोक जीवन का प्रत्येक पक्ष लोक गीतों से जुड़ा हुआ है। पंजाबीयों के जीवन के प्रत्येक पक्ष से संबंधित कोई न कोई लोक गीत हमें सुनने को मिल जाता है। गुरमीत बावा पंजाब की भूमि पर ही जन्मी एवं पली बढ़ी है। इसलिए लगभग प्रत्येक पक्ष से संबंधित गीत को गाती आई हैं। पंजाब का किसान जब खेतों खलिहानों में मेहनत कर रहा होता है तो उसकी पत्नी उसके लिए खाना लेकर जाती है जिसका भत्ता कहते हैं। भत्ता लेकर जाती हुई युवती को गुरमीत बावा अपने गीत के रूप में यूं प्रस्तुत करती है;

चन्ना वे चन्ना, हत्थ लस्सी दा छन्ना
तेरी रोटी वे बन्नां, अग्गे खाल दा बन्ना
पुल बन्न वैरीया, वे मैं किथों दी लंघां

उपरोक्त उदाहरणों से यह बात भली-भांति प्रमाणित हो जाती है कि पंजाबियों के जीवन का कोई भी ऐसा पक्ष नहीं जिससे संबंधित गुरमीत बावा ने गीत न गाया हो। पंजाबियों की रग़ रग़ में गुरमीत बावा के गीत बस चुके हैं। दूसरे शब्दों में यह कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि गुरमीत बावा के गीतों में पूरा पंजाब बसता है।

4.7 गुरमीत बावा के अध्ययन किए गए गीतों की शीर्षक सूची

गुरमीत बावा का गाया हुआ प्रत्येक गीत सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष से संबंधित है। उनके जिन-जिन गीतों का इन पक्षों से अध्ययन किया गया उनकी शीर्षक सूची निम्नलिखित है;

1. नी बीबी चंदन दे ओहले ओहले क्यों खड़ी
2. उच्ची ते माड़ी बाबुल सुतड़िया
3. सू लैण दे धीए मझड़ीयां मेरा पक्कण दे नी कमाद
4. बीबी दे मापे क्यों रोंदे

5. हरीये नी रस भरीए खजूरे

6. बाबला चिट्टीयां-चिट्टीयां कूँजां तेरे देस चों उडदीयां आईयां

7. बाबला धरम करेंदिया मैनूं रख लै अज दी रात

8. छम छम अखीयां चों वगदा ऐ नीर वे

9. जे वीर आया विच विच राहीं

10. उठ नी रवेल घोड़ी वीरे वेहड़े जा

11. बारां ते बरसां वीरा इयों रही ज्यों मक्खण दे विच वाल

12. काहनूं तां पाईयां कोठड़ीयां काहनूं रखिया ई वेहड़ा

13. कोरा कोरा कुज्जा ठंडा ठार पानी

14. मेरे हत्थां दे वे छल्लिया

15. बड़ा लग्गे तू सलग मैनू पता गिया ए लग

16. वे लिया दे चंबा लावां घड़े दे कोल

17. गईयां जीजे नाल दोवें भैणां मस्सिया नहौण

18. बैठ बैठ नी नणदे बोलीबाज़ नणदे

19. डिग पई नी गोरी शीश महल तों

20. सप्प चढ़ गया सोटी ते

21. कहारो डोली ना चायो मेरा बाबुल आया नईं

22. रानी तां कैंहदी राजा सुण मेरी बात वे

23. दिल धक धक करे भैड़ी नैण कोलों डरे

24. मेरी जुगनी दे धागे बग्गे जुगनी ओहदे मूहों फब्बे

25. पहलां यार दा दीदार कर लैण दे फेर भावें अक्खां कढ लईं

26. छन्ना भरिया दुद्ध दा मेरा गुग्गा माड़ी विच कुदद्रा

27. मैं चंडीगढ़ नचदी फिरां सारे हिल गए दिल्ली दे चुबारे

28. ऐथे होर न नच्चीं मुटियारे बई औखी होजू रात कट्टणी

29. मैनू पतण झनां वाला सददा पाणीएं नू मैं चल्ली आं
30. मिरजा तुर पिया बक्की लैके होके घोड़े ते असवार
31. जट चढ़दे मिरज़े खान नू वड्डी भाबी लैंदी थम्म
32. रात कहर दी सां सां करदी
33. तैनू महिरम राज़ बनाया वे
34. तोता ढोल दा कैंहदा ओ आ के ढोलणा
35. मलकी खूह दे उते भरदी पई सी पाणी
36. जग्गा जम्मियां ते मिलण वधाईयां
37. ऐह पंजाब दीयां कुड़ीयां वेख लो अल्हड़ ते मुटियारां
38. चन्ना वे चन्ना हथ लस्सी दा छन्ना

4.8 गुरमीत बावा के गीतों का सांगीतिक विश्लेषण

गुरमीत बावा ने पंजाब की परंपरागत लोक गायकी को उसकी वास्तविक एवं परंपरागत धुनों में ही गाया। यही नहीं अपितु उन्होंने गायन के साथ परंपरागत लोक वाद्यों का प्रयोग किया। उनके गाए हुए कुछ सुप्रसिद्ध लोक गीत चाहे और भी कई लोक गायक कलाकारों ने गाए, परंतु उनकी गायन शैली में उन गीतों का स्वरूप भिन्न एवं विलक्षण ही नज़र आता है। अपनी जोशपूर्ण खुली आवाज़ में जब वह लंबी हेक लगाती हैं तो एसा प्रतीत होता है कि जैसे सब कुछ ठहर सा गया हो। पंजाब के सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं कवि डा. सुरजीत पातर के शब्दों में, "गुरमीत बावा दे गीतां विच उस पंजाब दी झलक नज़र आउंदी है जिस पंजाब नूं कदे पूरन वाजां मारदा सी"।

गुरमीत बावा के गीतों का सांगीतिक विश्लेषण किया जाए तो पता चलता है कि उनके गाए हुए लोक गीत चाहे चार पांच स्वरों के इर्द-गिर्द घूमते हैं, किंतु एक विलक्षण गायन शैली के कारण उनमें पंजाब के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन की झलक सहज रूप से देखी जा सकती है।

गुरमीत बावा के कुछ सुप्रसिद्ध गीतों की स्वरलिपियां

गुरमीत बावा ने अपनी गायकी के लंबे सफर में हज़ारों गीत गाए, जिनमें से कुछ सुप्रसिद्ध लोक गीतों की स्वरलिपियां यहां दी जा रही हैं जो कि हमारी युवा पीढ़ी के लिए भरपूर जानकारी का स्रोत बन सकती हैं।

1.कहारो डोली ना चायो कि मेरा बाबुल आया नईं

कि वीरा दूर खड़ा रोवे किसे ने चुप कराया नईं

ताल- कहरवा

x				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
			प	प	प	प	प
			क	हा	s	रो	s
म	म	म	म	म	म	प	-
डो	s	ली	s	ना	s	चा	s
ध	-	-	ध	ध	-	ध	-
यो	s	s	कि	मे	s	रा	s
प	-	-	-				
न	ईं	s	s				

2. डिग पई नी गोरी शीश महल ता

पा दिओ नी मेरे माहिए जी नूं चिठीया

जा पहुंची चिठी विच नी कचहरी द

फड़ लई नी माहिए लम्मी बांह करक

ताल- कहरवा

X				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
म	म	म	प	ध	-	-	-
डि	ग	प	ई	नी	S	गो	श्री
प	म	प	ध	प	-	-	-
शी	S	श	म	ह	ल	तों	S
म	म	म	प	ध	-	-	-
जा	S	प	हुं	ची	S	चि	ठी
प	म	प	ध	प	-	-	-
वि	च	नी	क	चह	री	द	S
म	म	म	प	ध	-	-	-
फ	ड	ल	ई	नी	S	माहि	ए
प	म	प	ध	प	-	-	-
ल	म्मी	बां	ह	क	र	के	S

3. मेरी जुगनी दे धागे बग्गे

जुगनी ओहदे मूहों फब्ब

जिन्नूं सटट इश्क दी लग्ग

ओ पीर मेरिया जुगनी कैंहदी आ

ते नाम अली दा लैंदी आ

ताल- कहरवा

X				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
						नी	नी
						मे	री
नी	नी	नी	नी	ध	नी	नी	नी
जुग	नीदे	धा	गे	ब	ग्गे	जुग	नी
रें	नी	नी	नी	ध	नी	नी	नी
ओह	दे	मू	हों	फ	ब्बे	जि	न्नूं
ध	नी	नी	नी	ध	नी	नी	ध
स	ट	इश्क	दी	ल	ग्गे	जुग	नी
प	प	ध	नी	प	प	प	प
मेरि	या	जुग	नी	कैंह	दी	आ	ते
ग	प	ध	नी	ध	प	प	प
ना	म	अ	ली	दा	लैं	दी	आ

4. मैं ते जठाणी असीं कदे ना लड़ीआं

जेठ ने मारे मंदे बोल

वे लिआ दे चंबा

लावां घड़े दे कोल

ताल- कहरवा

X				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
					प	प	प
					मैं	ते	ज
प	म	म	ध	-	ध	ध	प
ठा	णी	अ	सीं	S	क	दे	ना
ध	ध	प	-	-	सं	सं	सं
ल	ड़ी	आं	S	S	जे	ठ	ने
ध	ध	ध	प	प	प	प	म
मा	रे	मं	दे	बो	ल	वे	लि
म	प	प	ध	-	म	म	प
या	दे	चं	बा	S	ला	वां	घ
ध	सं	ध	प	प	प	-	-
ड़े	S	दे	S	को	ल	S	S

5. हरीए नी रस भरीए खजूरे कीहने दिता एनी दूर ए

बाबुल तां मेरा कई देसां दा राजा ओहने दिता एनी दूर ए

ताल- दीपचंदी

x			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
म	प	-	प	-	ध	सं	ध	-	-	ध	-	प	-
ह	री	s	ए	s	s	s	नी	s	s	र	s	स	S
प	प	-	ध	-	ध	-	प	-	-	म	-	-	-
भ	री	s	ए	s	ख	s	जू	s	s	रे	s	s	s
म	प	-	प	-	ध	सं	ध	-	-	ध	-	प	-
की	ह	s	ने	s	दि	s	ता	s	s	ए	s	नी	s
ध	-	ध	प	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
दू	s	र	ए	s	s	s	s	s	s	s	s	s	s
म	प	-	प	-	ध	सं	ध	-	-	ध	-	प	-
बा	s	s	बु	ल	तां	s	मे	s	s	रा	s	क	ई
प	प	-	ध	-	ध	-	प	-	-	म	-	-	-
दे	s	s	सां	s	दा	s	रा	s	s	जा	s	s	s
म	प	-	प	-	ध	सं	ध	-	-	ध	-	प	-
ओ	ह	s	ने	s	दि	s	ता	s	s	ए	s	नी	S
ध	-	ध	प	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
दू	s	र	ए	s	s	s	s	s	s	s	s	s	s

6. जे वीर आया विच विच राहीं घोड़ी तां बद्धी वीरा हेठ फलाही

भैणां ने वीर शिंगारिया ई भाबीयां देवर घोड़ी चाढ़िया ई

ताल–कहरवा

X				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
म	प	ध	ध	प	प	-	-
जे	वी	र	आ	S	या	S	S
प	म	म	म	प	प	ध	-
विच	वि	च	रा	S	ही	S	S
म	प	ध	ध	प	प	-	-
घो	ड़ी	तां	ब	द्धी	वी	रा	S
प	म	म	म	प	प	ध	-
हे	ठ	फ	ला	S	ही	S	S
ध	ध	ध	प	म	प	ध	ध
भै	णां	ने	वी	S	र	शिं	गा
प	प	प	प	-	-	-	-
रि	या	S	ई	S	S	S	S
ध	ध	ध	प	म	प	ध	ध
भा	बी	यां	दे	वर	घो	ड़ी	चा
प	प	प	प	-	-	-	-
ढ़ि	या	S	ई	S	S	S	S

7. पाणीएं नूं मैं चली आं

मैनूं पतण झनां वाला सददा

पाणीएं नूं मैं चली आं

ताल-कहरवा

x				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
				प	प	प	ग
				पा	णी	एं	नूं
म	पनी	प	म	म	-	नी	नी
मैं	ऽऽ	च	ली	आं	ऽ	मै	नूं
प	प	प	प	प	ध	प	म
प	त	ण	झ	नां	ऽ	वा	ला
प	-	ध	-	प	प	प	ग
स	द	दा	ऽ	पा	णी	एं	नूं
म	पनी	प	म	म	-	-	-
मैं	ऽऽ	च	ली	आं	ऽ	ऽ	ऽ

8. रूप मेरे दा चानण होवे

लौंग मारे लिश्कारे

शहर जलंधर जद मैं नच्चां

एह गल आखण सारे

बई औखी होजू रात कटणी

एथे होर ना नच्चीं मुटियारे

ताल–कहरवा

X				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
म	-म	म	ध	ध	ध-	ध	सं
रू	पमे	रे	दा	चा	नण	हो	वे
ध	ध-	ध	प	ध	-	प	-
लौं	गमा	रे	लिश	का	s	रे	s
म-	-म	म	ध-	ध-	ध	ध	सं
शह	रज	लं	धर	जद	मैं	न	च्ची
ध-	ध-	ध	म-	प	ध	-	ध
एह	गल	आ	खण	सा	रे	s	बई
म	म	प	प	ध	-सं	ध	प
औ	खी	हो	जू	रा	-त	क	ट
प	-	सं	सं	-	ध	-	ध
णी	s	ए	थे	s	हो	रना	न
ध	-	प	म	प	ध	-	ध
च्चीं	s	मु	टि	या	रे	s	s

9. ना रो नी मेरी बीबी बीबी

डोली नू लगणे नापे

ना रो नी मेरी बीबी बीबी

विदिया करण तेरे मापे

ताल–कहरवा

X				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
							प
							ना
प	-म	म	म	म	प	प	ध
रो	Sना	मे	री	बी	बी	बी	बी
ध	ध	-	ध	प	म	प	ध
डो	ले	S	नू	ल	ग	णे	S
ध	प	-	-	-	-	-	प
ना	पे	S	S	S	S	S	ना
प	म	म	म	म	प	प	ध
रो	ना	मे	री	बी	बी	बी	बी
ध-	ध	-	ध	प	म	प	ध
विदि	या	S	क	र	ण	ते	रे
ध	प	-	-	-	-	-	-
मा	पे	S	S	S	S	S	S

10. मलकी खूह दे उते भरदी पई सी पाणी कीमा कोल आ के बेनती गुज़ारे
लम्मा पैंडा राही मर गए नी पियासे छन्ना पाणी दा इक दे दे नी मुटियारे

X				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
						ध-	नी
						मल	की
ध-	प	प	प	ग-	प	ध-	नी
खूह	दे	उ	ते	भर	दी	पई	सी
ध	नी	-	ग	-	-	ध	नी
पा	णी	S	S	S	S	की	मा
ध	-प	प	प	ग	-प	ध	-नी
को	Sल	आ	के	बे	Sन	ती	Sगु
ध	नी	-	ग	-	-	ध	नी
ज़ा	रे	S	S	S	S	ल	म्मा
ध	प	प	प	ग-	प-	ध	नी
पैं	डा	रा	ही	मर	गए	नी	पि
ध	नी	-	ग	-	-	ध	नी
या	से	S	S	S	S	छ	न्ना
ध	प	प	प-	ग	प	ध	नी-
पा	णी	दा	इक	दे	दे	नी	मुटि
ध	नी	-	-	-	-	-	-
या	रे	S	S	S	S	S	S

गुरमीत बावा के गाए हुए कुछ सुप्रसिद्ध गीतों का सांगीतिक अध्ययन करने से पता चलता है कि उनके अधिकतर गीत कहरवा ताल में हैं और तीन चार स्वरों के इर्द गिर्द घूमते हैं। लोक गीतों की पहचान ही इसी बात से होती है कि इन गीतों की भाषा तो सरल होती ही है बल्कि धुनें भी इतनी सरल होती हैं कि साधारण श्रोता भी इनका खूब आनंद उठाते हैं। गुरमीत बावा के गाए हुए सभी गीत सही मायनों में लोक गीत की परिभाषा का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

संदर्भ

1. Dr. S.P. Gupta, Fundamentals of Sociology, Bharat Prakshan Jallandhar, Pg37
2. उधरित --------वही---------
3. उधरित --------वही---------
4. उधरित --------वही--------- पृष्ठ-38
5. ब्रजेश हंजावालिया 'हम और हमारा समाज', अखिल भारतीय रैगर समाज, www.theragarsamaj.com
6. ---------वही----------
7. अमित कुमार शर्मा,'भारतीय संस्कृति का स्वरूप', कौटिलय प्रकाशन दिल्ली, 2006, Prakashblog-google.blogspot.in
8. Engilsh, Punjabi Dictionary Pg-216.
9. संस्कृति, सिद्धांत अते विहार पृ0 166
10. उधरित एस.पी. गुप्ता, Fundamentals of Sociology Pg-114
11. ----------वही----------
12. डा. जीत सिंह जोशी, 'सभ्याचार ते लोकधारा दे मूल सरोकार पृ. 20
13. उधरित एस.पी. गुप्ता, Fundamentals of Sociology Pg-114
14. टी.आर. विनोद, 'संस्कृति ते पंजाबी संस्कृति', पृ0 11
15. इन्साईक्लोपीडिया अमरिकाना, पृ0 375.
16. Hyman Levy, H. Spalding, 'Literature for an Age of Science, P.10.
17. Adolfo, Sanchez Vasque, 'Art and Society, P. 113-114.
18. Howard Fast, 'Lierature and Reality', P.1
19. श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग, निबंध संगीत, संगीत कार्यालय हाथरस, पृ. 88
20. रानाडे जी एच. 'हिंदुस्तानी म्यूज़िक - इट्स फिजिक्स एंड एस्थैटिक्स, पृ. 69
21. राम नरेश त्रिपाठी, 'कविता कौमुदी, भाग पाँचवा, पृ. 45

22. डा.गुरनाम सिंह,'संगीत निबंधावली', पब्लिकेशन ब्यूरो पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला,पृष्ठ 73

23. डा. अविनाश कुमार, ''लोक-गीतों का संपादन एवं मूल्यांकन'' पृ. 79

24.-----वही ------

25.----- वही ------

26.----- वही -------

27. डा. गुरनाम सिंह, संगीत निबंधावली, पृ. 110

अध्याय-5

गुरमीत बावा की गायकी का सामाजिक सांस्कृतिक प्रभाव

5.1 समाज एवं संस्कृति ; प्रभाव एवं परिवर्तन

प्रकृति के इर्द गिर्द मौजूद प्रत्येक वस्तु निरंतर गतिशीलता की प्रक्रिया से गुज़र रही है। प्रत्येक वस्तु जो अस्तित्व में आती है वह या तो विकसित होती है या फिर नष्ट होती है। यहां तक कि हमारे शरीर के अंदर जो टूट-फूट अथवा बढ़ने फूलने की प्रक्रिया है, निरंतर चलती रहती है। इसी तरह जब प्राकृतिक परिस्थितियों में कोई परिवर्तन आता है तो मनुष्य अपने आप को या तो उसके अनुकूल ढालने का प्रयत्न करता है या प्राकृतिक परिस्थितियों को अपने अनुकूल ढालने के लिए जूझता है। इस प्रक्रिया के दौरान ही मानवीय चेतना भिन्न-भिन्न आविष्कार ढूंढ लेती है जो कि सामाजिक अथवा सांस्कृतिक परिवर्तन का कारण बनते हैं। फलस्वरूप प्रत्येक समाज एवं संस्कृति में एक ताज़गी, नवीनता एवं विकासशीलता के अंश बने रहते हैं।

डॉ मलविंदर सिंह ने अपने शोध प्रबंध में लिखा है;

> 'समाज एवं संस्कृति में हो रहे परिवर्तन की गति धीमी भी हो सकती है और तेज़ भी। इसी तरह परिवर्तन की गति विकास अथवा विनाश किसी भी दिशा की तरफ हो सकती है। समाज एवं संस्कृति में परिवर्तन होने के भिन्न-भिन्न कारण हो सकते हैं। वह परिवर्तन आंतरिक पक्ष में भी हो सकते हैं एवं संरचनात्मक पक्ष में भी। आंतरिक परिवर्तन से अभिप्राय है; वह परिवर्तन जो किसी युग के आदर्शों एवं मूल्यों में दिखाई पड़ता है, जब कि संरचनात्मक परिवर्तन वह परिवर्तन है जो समाज अथवा संस्कृति के किसी अंग जैसे परिवार, वर्ग, जातीय हैसियत, समूहों के स्वरूपों एवं आधारों में नज़र आता है। इन प्रभावों के चलते अगर पंजाब की संस्कृति एवं समाज को देखें तो पंजाब में अतीत से ही भिन्न-भिन्न जातियों एवं नस्लों का प्रभाव रहा हैं।

आर्य लोगों के पश्चात् पंजाब में 'धाड़वीए' जाति के लोग आए और अपने साथ कई अन्य प्रकार की नस्लों के लोग लाए'।[1]

इस प्रकार वर्तमान पंजाब में कई नस्लों की मिश्रित संस्कृति स्थापित हुई। इसी कारण ही पंजाब की संस्कृति को सिर्फ पंजाबी संस्कृति ही नहीं बल्कि मिश्रित संस्कृति का नाम दिया जाता है और यहां के सभ्याचार को एक सफल व प्रतिभाशाली कला कृति वाला सभ्याचार कहा जाता है।

5.2 वर्तमान पंजाब का समाज एवं संस्कृति

पंजाब आरंभ से ही प्रतिभाशाली एवं गौरवपूर्ण रहा है। यहां की लहलहाती फसलें, हरे-भरे मैदान, कल-कल करती नदियां और उपजाऊ भूमि इसकी अमूल्य संपत्ति है। पंजाब की सांप्रदायिक एकता की पहचान इस बात से मिल जाती है कि यहां भिन्न-भिन्न जातियों एवं धर्मों के लोग मिलजुल कर रहते हैं। सुनार, कुम्हार, जुलाहा, बढ़ई, ब्राह्मण, राजपूत, क्षत्रिय, इत्यादि भिन्न-भिन्न जातियों के लोगों में हिन्दू, सिक्ख एवं मुस्लिम धर्म के लोगों की संख्या सबसे अधिक है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इन सब का आपस में प्रेम और भाईचारा पंजाब को संपूर्ण विश्व में एक अनुपम मिसाल बना देता है। पंजाब की एक और सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है यहां के मेले व त्योहार, जो कि विश्व प्रसिद्ध हैं। शिक्षा का प्रचार व प्रसार हो या औद्योगिक क्षेत्र, सभी क्षेत्रों में पंजाब का नाम अग्रणी राज्यों में लिया जाता है।

डॉ मलविंदर सिंह के अनुसार;

'भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के विकास में पंजाब का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि पंजाब की भूमि से ही भारत का संगीत विकसित हुआ क्योंकि सभ्य समाज की नींव सर्वप्रथम यहीं पर रखी गई'।[2]

पंजाब की इसी संगीत परंपरा को ही वास्तव में हिंदुस्तानी संगीत कहा जाता है। पंजाब की यह शास्त्रीय संगीत परंपरा हिंदुस्तानी संगीत का प्रतिनिधित्व ही नहीं करती बल्कि इस परंपरा ने हिंदुस्तानी संगीत के लिए एक विशाल संगीत तैयार किया है।

डॉ गुरनाम सिंह के अनुसार;

> 'हिंदुस्तानी संगीत विच पंजाब दी संगीत परंपरा दे अनेकां लच्छण जिवें स्वर-समूह, राग, गायन शैलियां आदि रूप अज वी प्रचलित हन'।[3]

डॉ मलविंदर सिंह के अनुसार;

> 'वर्तमान पंजाब में जिस तरह संगीत का विकास हो रहा है उसके फलस्वरूप यहां का समाज एवं संस्कृति भी दिन-ब-दिन विकसित हो रही है। यहां के समाज एवं संस्कृति में आधुनिकीकरण एवं नवीनीकरण के द्वारा एक नयापन आने लगा है। यहां पर एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि वर्तमान पंजाबी संगीत पंजाब के लोक-संगीत से प्रभावित है। वर्तमान संगीत में आज भी लोक-सांगीतिक रागों की झलक सुनने को मिलती है। जैसे ; सिंधूरा, काफी, आसा, मुल्तानी एवं पहाड़ी इत्यादि'।[4]

पिछले कुछ वर्षों में एक विचार स्पष्ट रूप में हम सब के सामने आया है कि पश्चिमी प्रभाव के तीक्षण वेग ने पंजाब की समस्त लोक-कलाओं, विशेष तौर पर संगीत एवं गायन को अत्यधिक प्रभावित किया है। यह कहना कोई अतिश्योकित नहीं होगी कि इस प्रभाव के कुछ बुरे पहलू भी हमारे सामने आए हैं। किंतु अगर ऐतिहासिक क्रम पर ध्यान डाला जाए तो इन कलाओं का रूप प्रत्येक युग में बदलता रहा है। वास्तव में इस परिवर्तन का कारण नए-नए आविष्कार एवं नई-नई मानवीय तकनीकें हैं। यहां तक कि कलाओं के क्षेत्र में भी नए-नए प्रयोग होते रहे हैं जो कि इनको प्रभावित करते रहे हैं।

यहां एक बात स्पष्ट करना आवश्यक है कि आधुनिकता से अभिप्राय यह नहीं है कि परंपरा का पूर्ण त्याग कर उसके विपरीत किसी चीज़ का सृजन किया जाए, बल्कि आधुनिकता का अर्थ है नए-नए तजुर्बों के द्वारा पहले से मौजूद चीज़ों में सुधार एवं नयापन लाना। जो आज आधुनिक है वही हो सकता है कल परंपरा बन जाए। ऐसे समय में फिर आधुनिकता की परिभाषा क्या हो सकती है।

कु.आकांक्षी के अनुसार;

> 'पंजाब की संगीत कला पर कई सदियों तक बाहरी तत्व अपना प्रभाव डालते रहे हैं। इसके फलस्वरूप पंजाब का लोक-संगीत भी बहुत प्रभावित हुआ। आर्य लोगों से लेकर मुग़ल एवं मुग़लों से लेकर अंग्रेजों तक पंजाब के लोक-संगीत पर अनेकों प्रभाव देखे जा सकते हैं। उदाहरण के तौर पर आधुनिक समय में भी पंजाबी लोक-संगीत में बहुत से राग अरब देशों के सुने जा सकते हैं'।[5]

5.3 गुरमीत बावा की गायकी का सामाजिक सांस्कृतिक प्रभाव

पंजाबी लोक-संगीत पर पड़े अनेकों प्रभावों ने पंजाबी जन-जीवन को बेहद प्रभावित किया है। इसका कारण भी पंजाबी सभ्याचार के ऊपर भिन्न-भिन्न हमलावरों के द्वारा हुए हमलों का प्रभाव है। अंग्रेज़ों के आने से पहले पंजाबियों के लोक-गीत यहां के वातावरण, पशु-पक्षी, मेलों एवं त्योहारों से संबंधित थे। भिन्न-भिन्न प्रकार के नए तकनीकी आविष्कारों ने इन लोक-गीतों को भी प्रभावित कर दिया। जैसे कि अंग्रेज़ों द्वारा रेल का आविष्कार हुआ तो रेल हमारे लोक-गीतों में भी नज़र आने लगी।

गडड़ी चढ़दी भनां लए गोडे
चाअ मुकलावे दा
जित्थे चल्लेंगा चल्लूंगी नाल तेरे टिकटां दो लै लईं'

पंजाबी लोक-संगीत पर पड़े प्रभावों ने सामान्य जन-जीवन के साथ-साथ हमारी संस्कृति पर भी बहुत प्रभाव डाला है। आज की भारतीय फिलमों में पंजाबी किरदार,

पंजाब की पृष्ठ-भूमि, पंजाब की सांगीतिक धुनों की मिलकियत देखी जा सकती है। यह सब हमारे संगीतज्ञों की बदौलत ही नहीं है बल्कि इसके पीछे हमारे पंजाब के लोक-संगीत की एक लंबी परंपरा एवं हमारे लोक-कलाकारों की लंबी तपस्या है। ऐसे ही लोक-कलाकारों में पंजाब की एक महान लोक-गायिका हैं गुरमीत बावा जिनकी परंपरागत लोक-गायिकी ने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में हमारे समाज एवं संस्कृति पर अपनी छाप छोड़ी है। गुरमीत बावा की परंपरागत लोक-गायकी एवं विलक्षण गायन शैली ने हमारे समाज एवं संस्कृति को निम्नलिखित तरह से प्रभावित किया है :-

1) पंजाबी लोक-संगीत का वैश्वीकरण :- पंजाबी लोक-संगीत को केवल पंजाब प्रांत एवं भारत देश तक ही सीमित न रख कर विदेशों तक पहुंचाने का श्रेय गुरमीत बावा को जाता है। संपूर्ण विश्व के बहुत से देशों में अपनी प्रस्तुति देने वाली इस महान गायिका ने पश्चिमी देशों को भी पंजाबी लोक-संगीत के स्वर एवं ताल पर थिरकने के लिए विवश कर दिया। इस बात का प्रमाण World music library Newyork में रखी हुई उस सी.डी. से मिलता है जिसको जापान की एक कंपनी ने 11 अप्रैल 1988 को ओसाबा में रिकार्ड किया। इस सी.डी का शीर्षक है, 'The Love and Life in Punjab – Gurmeet Bawa.' । इस सी.डी. में गुरमीत बावा के नौ लोक-गीत शामिल हैं। भारतीय मूल की पंजाबी गायिका होने के बावजूद विदेशों में सम्मान अर्जित करने वाली इस महान गायिका पर पंजाब को गर्व है।

2) युवक-मेलों में लोक-कलाएं :- पंजाब के समस्त विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में आयोजित किए जाने वाले युवक मेलों में लोक कलाओं के अंतर्गत लोक-गीतों को शामिल करने का श्रेय गुरमीत बावा जी को जाता है। पंजाब के सभी विश्वविद्यालयों में इस संदर्भ में गुरमीत बावा जी को निर्णायक मंडल में शामिल किया जाता है ताकि परंपरागत लोक-गीतों से विद्यार्थियों एवं श्रोतागण को भलीभांति परिचित करवाया जा सके। केवल लोक-गीत ही नहीं बल्कि गुरमीत बावा जी के परंपरागत लोक-पहरावे में

शामिल फुल्कारी एवं अन्य लोक-गहनों को देखकर भी प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने वाले विद्यार्थियों को प्रेरणा मिलती रही है। गुरमीत बावा के द्वारा गाए हुए सुहाग एवं घोड़ियां, लोक-बोलियां एवं लोक-गाथाएं आज भी युवक मेलों में बच्चे-बच्चे की जुबान पर सुने जा सकते हैं।

3) लोक-गायकी में परंपरागत लोक-वाद्यों का प्रयोगः- लोक-गायकी को प्रोत्साहित करने के साथ एक और महत्वपूर्ण योगदान गुरमीत बावा जी की गायकी ने हमारी संस्कृति को दिया है। वह है पंजाबी लोक गायकी में परंपरागत लोक वाद्यों का प्रयोग। आज भिन्न-भिन्न विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में आयोजित की जाती लोक कला प्रतियोगिताओं एवं युवक मेलों में चिमटा, अल्गोज़ा, घुंगरू, घड़ा, मट्टियां जैसे परंपरागत लोक वाद्यों का प्रयोग सहज रूप से देखा जा सकता है। यहां तक कि आज के लोक-गायकों का झुकाव भी Fusion एवं Remix से हटकर परंपरागत लोक-वाद्यों की तरफ बढ़ता जा रहा है।

4) विरासत केंद्र एवं विरासती गाँवों की स्थापना :- पंजाब के भिन्न-भिन्न शहरों में हवेली, विरासती पिंड, रंगला पंजाब एवं साडा पिंड जैसे लोक-गाँवों की स्थापना की जा रही है जहां हर तरफ गुरमीत बावा, सुरिंद्र कौर, नरिंद्र बीबा एवं अन्य लोक-गायकों एवं गायिकाओं के गीत गूँजते हुए सुनाई देते हैं। यही नहीं इनके व्यक्तित्व से जुड़ी हुई वह सभी वस्तुएं यहां प्रदर्शित की जाती हैं जिनका उद्देश्य केवल जन-साधारण को लोक-कला एवं लोक विरासत से जोड़ना है। इन केंद्रों में समय-समय पर कुछ अलग जोड़ने के लिए गुरमीत बावा जैसे लोक कलाकारों से सुझाव माँगे जाते हैं ताकि लोगों को ज्यादा से ज्यादा लोक-विरासत से जोड़ा जा सके।

5) विवाह-समारोहों में संगीत का बदलता स्वरूप :- परिवर्तन के इस दौर में इतिहास अपने आप को अवश्य दोहराता है। जिस समय में गुरमीत बावा ने गाना शुरू किया उस समय विवाह शादियों में विवाह से एक सप्ताह पहले ही घरों में सब लोग, विशेष

तौर पर घर की बड़ी बूढ़ी स्त्रियां सुहाग अथवा घोड़ियां गाया करती थीं। इस रस्म को संगीत का नाम दिया जाता था। इन्हीं गीतों को अथवा सुहाग एवं घोड़ियों को गुरमीत बावा ने घर घर गाँव-गाँव जाकर इकट्ठा किया और उनको अपनी गायकी के द्वारा सुरक्षित किया। फिर एक ऐसा दौर आया जब पश्चिमीकरण से प्रभावित होकर धीरे-धीरे यह सब लुप्त होने लगा और इस गायन की जगह डी.जे. संगीत ने ले ली। सुहाग और घोड़ियां क्या होती है यह सब भूलने ही लगा था कि गुरमीत बावा ने अपनी संभाली हुई विरासत को फिर से जागृत किया। गुरमीत बावा की मेहनत रंग लाई और वहीं परंपरागत माहौल फिर से पैदा होने लगा। आज विवाह शादी अथवा किसी भी तरह के समारोहों में डी.जे. की जगह 'सभ्याचारक ग्रुप' ने ले ली है। संगीत के कार्यक्रमों में खास तौर पर गुरमीत बावा जी को ही निमंत्रित किया जाता है ताकि शादी में आए हुए मेहमानों को मनोरंजन के रूप में पंजाब की विरासत से जोड़ा जा सके। इस कार्य को गुरमीत बावा की बेटियां लाची बावा एवं ग्लोरी बावा भी बाखूबी निभा रही हैं।

5) लोक-संगीत संगोष्ठियां एवं कार्यशालाएं :- पश्चिमी प्रभावों के रहते प्रत्येक प्रक्रिया प्रभावित हुए बिना कैसे रह सकती है। लोक-संगीत के गिरते हुए स्तर को ऊपर उठाने के लिए आज गुरमीत बावा जैसे गायक कलाकार तन मन से प्रयत्न कर रहे हैं। आज विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में लोक-संगीत से संबंधित संगोष्ठियां एवं कार्यशालाएं आयोजित की जा रही हैं ताकि हमारी आने वाली पीढ़ीयों में भी लोक-संगीत ज़िंदा रह सके। यही नहीं इन कार्यशालाओं में गुरमीत बावा जी को अतिथी के रूप में बुलाकर विद्यार्थियों को शुद्ध लोक-संगीत के संबंध में जानकारी दी जाती है। इस के साथ-साथ हमारे परंपरागत लोक-वाद्यों के बारे में भी बताया जाता है। कुछ महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में तो लोक विरासत केंद्र तक बनाए गए हैं जहाँ इन वाद्यों को सुरक्षित रखा गया है एवं गुरमीत बावा एवं उनके समकालीन गायक कलाकारों के गीत सदैव वहाँ गूँजते रहते हैं। इस विरासती केंद्र की एक

उदाहरण हँस राज महिला महाविद्यालय जालंधर एवं कन्या महाविद्यालय में देखी जा सकती है। कन्या महाविद्यालय को तो हैरीटेज संस्था (Heritage Institution) का दर्जा दिया जा चुका है। यहीं नहीं प्रत्येक वर्ष गुरू नानक देव विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस पर प्रत्येक वर्ष लोक प्रदर्शनी आयोजित की जाती है जिस में इस विश्वविद्यालय के भिन्न-भिन्न कालेज एवं रिजनल कैंपस लोक जीवन से संबंधित प्रत्येक तरह की वस्तुएं, यंत्र, वाद्य इत्यादि लेकर आते हैं। विजेता रहने वाली संस्था को नकद राशि एवं ट्राफी प्रदान की जाती है। इसी तरह शैक्षणिक संस्थाओं में लोक गीतों एवं लोक-संगीत को प्रचलित करने के लिए समय-समय पर लोक गायन प्रतियोगिताएं करवाई जाती हैं जहां गुरमीत बावा जी को ही निर्णायक के तौर पर बुलाया जाता है। इस तरह हमारे युवा वर्ग में भी लोक-संगीत अपनी एक पहचान बनाने में सक्षम हो रहा है। इन सब बातों का श्रेय गुरमीत बावा जैसे लोक कलाकारों को ही जाता है।

7) नारी का बदलता हुआ स्वरूप :- जिस समय में गुरमीत बावा ने गाना आरंभ किया, उस समय में नारी की दशा हमारे समाज में बहुत अच्छी नहीं थी। पढ़ाई लिखाई तो दूर की बात, औरत का घर से बाहर निकलना भी अच्छा नहीं समझा जाता था। ऐसे समाज में घर से बाहर निकलना, पढ़ना-लिखना, गाना सीखना और फिर सबके समक्ष गाना सिर्फ गुरमीत बावा जैसी कलाकार के हिस्से में आया। इन सब बातों का श्रेय गुरमीत बावा जी के माता-पिता एवं उनके जीवन साथी श्री कृपाल बावा जी को जाता है। गुरमीत बावा जी ने लोक गायकी को तो एक उच्च स्तर प्रदान किया ही है किंतु साथ-साथ समाज में योद्धा की तरह सधी हुई गायकी को प्रस्तुत करना और नारी को समाज में उच्च स्थान पर पहुंचाने का श्रेय भी गुरमीत बावा जी को जाता है। उनकी गायकी का सबसे बड़ा प्रभाव हमारी संस्कृति एवं समाज पर यही माना जाता है कि स्त्री गायिकाओं को भी आज हमारे समाज में मर्दों की भांति एक उच्च दर्जा प्रदान किया जा रहा है। अगर यह कहा जाए कि स्त्रियां इस क्षेत्र में मर्दों से भी आगे बढ़कर काम कर रही है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। हाल ही में

गुरमीत बावा जी को पी.टी.सी. पंजाबी चैनल की तरफ से आस्ट्रेलिया में लाइफ टाइम एचीवमैंट अवार्ड प्रदान किया गया है। यह अवार्ड इस बात को प्रामाणित करने के लिए सबसे बड़ी उदाहरण है।

गुरमीत बावा की गायकी का हमारे समाज एवं संस्कृति पर पड़ा प्रभाव चाहे प्रत्यक्ष रूप से नज़र न आता तो, परंतु यह कहने में कोई अतिश्योक्ति न होगी कि आज यदि पंजाब की लोक-कला को कोई संभाल कर बैठा है तो वो एक ही नाम है, और वो नाम है गुरमीत बावा का।

5.4 प्रश्नौत्तरी सर्वेक्षण

गुरमीत बावा जी की लोकप्रियता एवं उनकी गायकी का समाज एवं संस्कृति पर पड़े प्रभाव को दर्शाने के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। इस विधि के अंतर्गत 15 प्रश्नों की एक प्रश्नौत्तरी तैयार की गई। इस प्रश्नौत्तरी द्वारा किए जाने वाले सर्वेक्षण हेतु कुल तीन आधार निश्चित किए गए;

क) आयु के आधार पर
ख) लिंग के आधार पर
ग) क्षेत्र के आधार पर

इस कार्य के लिए आयु के आधार पर निम्नलिखित 3 वर्गों में बाँट की गई;

क) 20 से 35 वर्ष
ख) 36 से 50 वर्ष
ग) 50 से ऊपर

इसी तरह इस सर्वेक्षण के परिणामों को विश्वसनीय बनाने के लिए प्रश्नौत्तरी को पंजाब के भिन्न-भिन्न जिलों में बाँटा गया। क्षेत्र के आधार पर पंजाब के इलावा विदेशों में रहने वाले प्रवासी भारतीय लोगों को भी इस सर्वेक्षण में शमिल किया गया।

इस तरह से कुल 110 प्रश्नौत्तरियों के आधार पर सर्वेक्षण किया गया।

1. Distribution of respondents with respect to independent variables i.e. Age, Gender & Region

आयु, लिंग एवं क्षेत्र के आधार पर प्रतिवादियों की वर्ग बाँट

Category (वर्ग)	**Frequency** (आवृत्ति) **(N=110)**	**Percentage** (प्रतिशत)
A. Age wise (उम्र के आधार पर)		
20-35 वर्ष	35	31.82
36-50 वर्ष	41	37.27
50 से ऊपर	34	30.91
B. Gender wise (लिंग के आधार पर)		
स्त्री	53	48.18
पुरूष	57	51.82
C. Region Wise (क्षेत्र के आधार पर)		
भारतीय	90	81.82
प्रवासी भारतीय	20	18.18

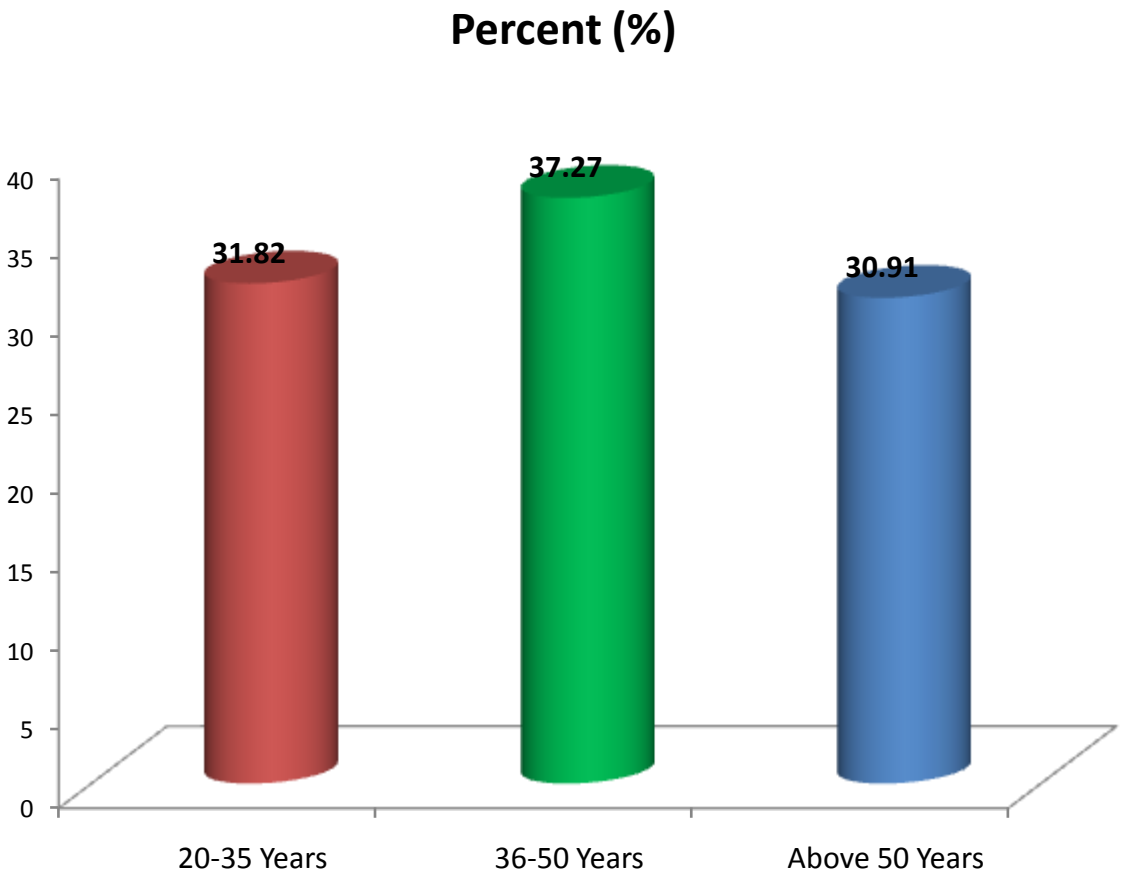

Fig 1. Distribution of Respondents with respect to independent variable Age

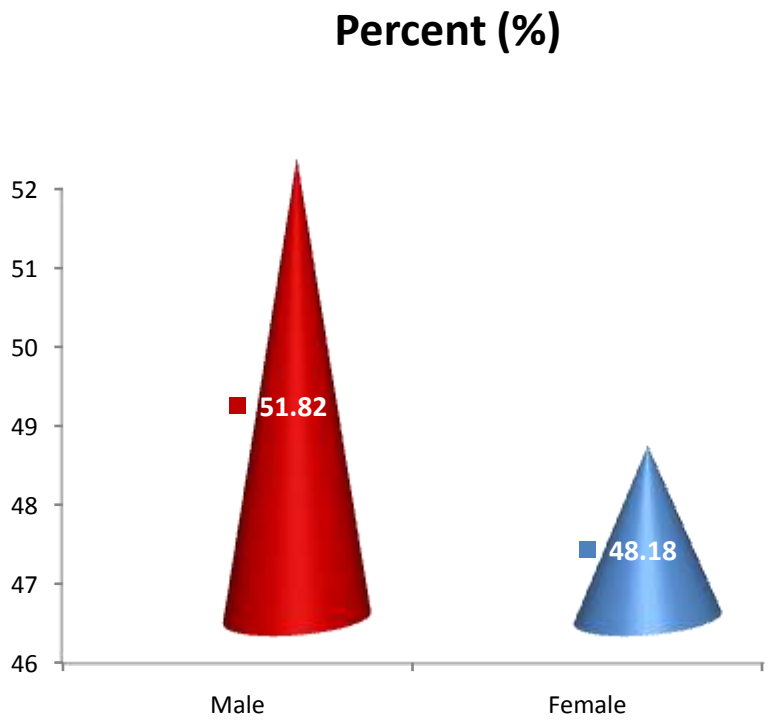

Fig 2. Distribution of Respondents with respect to independent variable Gender

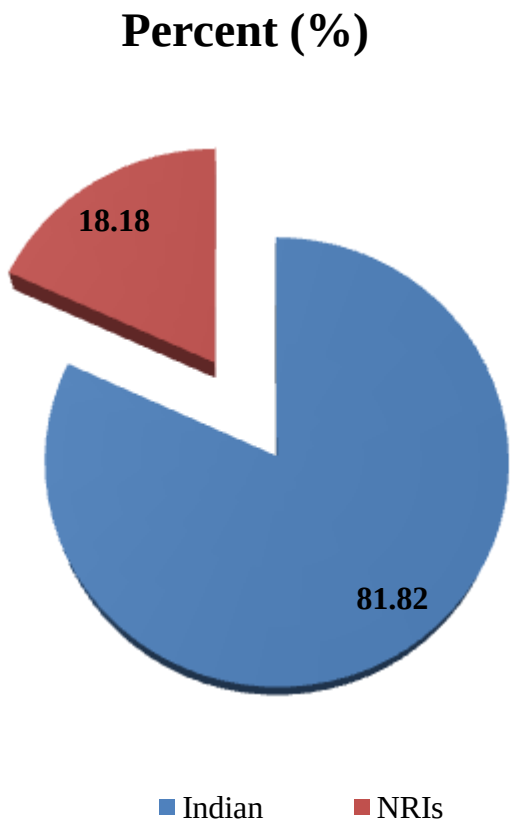

Fig 3. Distribution of Respondents with respect to independent variable Region

परिणाम एवं निष्कर्ष

प्र1. आप लोक संगीत में कितनी रूचि रखते हैं?

उ. 1) बहुत ज्यादा

2) ज़्यादा

3) औसतन

4) कम

5) बहुत कम

आयु के आधार पर

25 से 35 वर्ष के आयु वर्ग में सबसे अधिक प्रतिशत 13.64% रही, जो कि उन लोगों की थी जिन्होंने दूसरे विकल्प को चुना, परिणामस्वरूप इस आयु वर्ग के अधिकतर लोगों की लोक-संगीत में ज़्यादा रूचि है। 36 से 50 वर्ष के आयु वर्ग में सबसे अधिक वो लोग हैं जिन को लोक संगीत में बहुत ज़्यादा रूचि है। इस आयु वर्ग में अधिकतर प्रतिशत 15.45 रही जिन्होंने पहला विकल्प चुना । इसी तरह 50 वर्ष से ऊपर के आयु वर्ग में भी सबसे अधिक प्रतिशत 12.73% उन लोगों को रही जिनको लोक-संगीत में बहुत ज़्यादा रूचि है।

लिंग के आधार पर

कुल 110 प्रतिवादियों में से स्त्रियों की संख्या 53 थी जब कि पुरूषों की संख्या 57 थी। पहले प्रश्न के उत्तर से प्राप्त परिणामों में पुरूषों एवं स्त्रियों ने लगभग एक समान प्रतिशत ही प्राप्त किया जो कि पहले विकल्प के लिए था। इस तरह यह बात सिद्ध हो जाती है कि पुरूष एवं स्त्रियां दोनों की लोक संगीत में बहुत ज़्यादा रूचि है।

क्षेत्र के आधार पर

क्षेत्र के आधार पर प्रतिवादियों को दो वर्गों में बाँटा गया। पंजाबी एवं विदेशों में रहने वाले पंजाबी अथवा पंजाबी प्रवासी भारतीय। पंजाब में रहने वाले अधिकतर प्रतिशत

उन लोगों की मिली जिन्होंने पहले प्रश्न के लिए दूसरे विकल्प को चुना, अथवा उनकी लोक-संगीत में ज़्यादा रूचि थी। इसके विपरीत प्रवासी पंजाबी भारतीय लोगों में से अधिकतर लोगों ने पहले विकल्प को चुना। इस तरह पंजाब के भिन्न भिन्न ज़िलों में रहने वाले लोग लोक-संगीत में ज़्यादा रूचि रखते हैं जब कि प्रवासी पंजाबी भारतीय लोग लोक-संगीत में बहुत ज़्यादा रूचि रखते हैं।

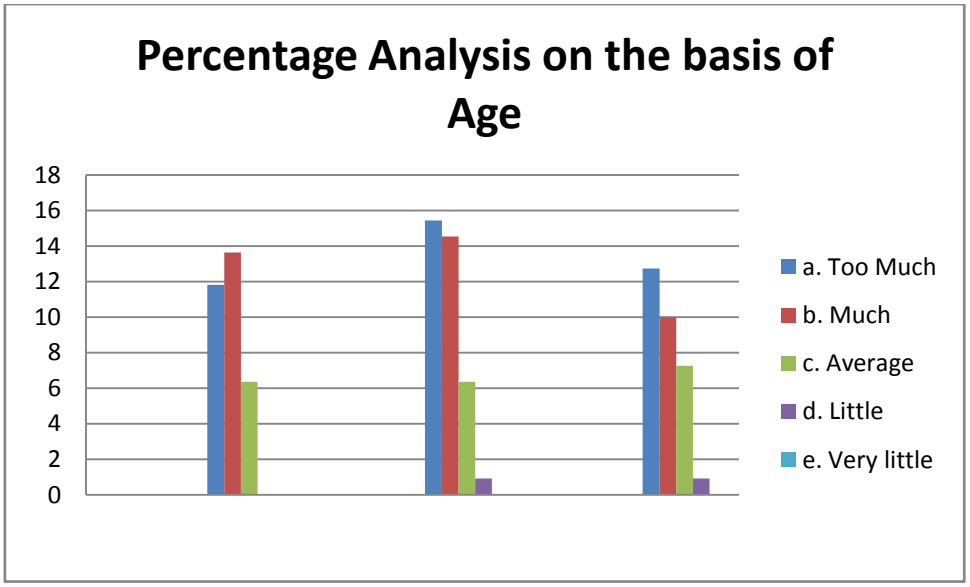
Percentage Analysis on the basis of Age
18
16
14
12
10
8
6
4
2
0
a. Too Much
b. Much
c. Average
d. Little
e. Very little

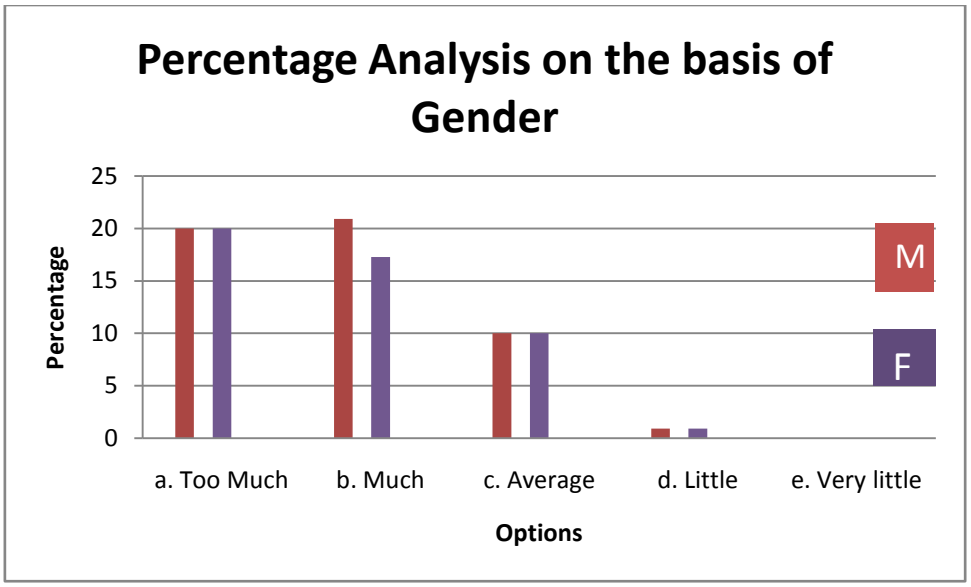
Percentage Analysis on the basis of Gender
25
20
15
10
5
0
Percentage
M
F
a. Too Much
b. Much
c. Average
d. Little
e. Very little
Options

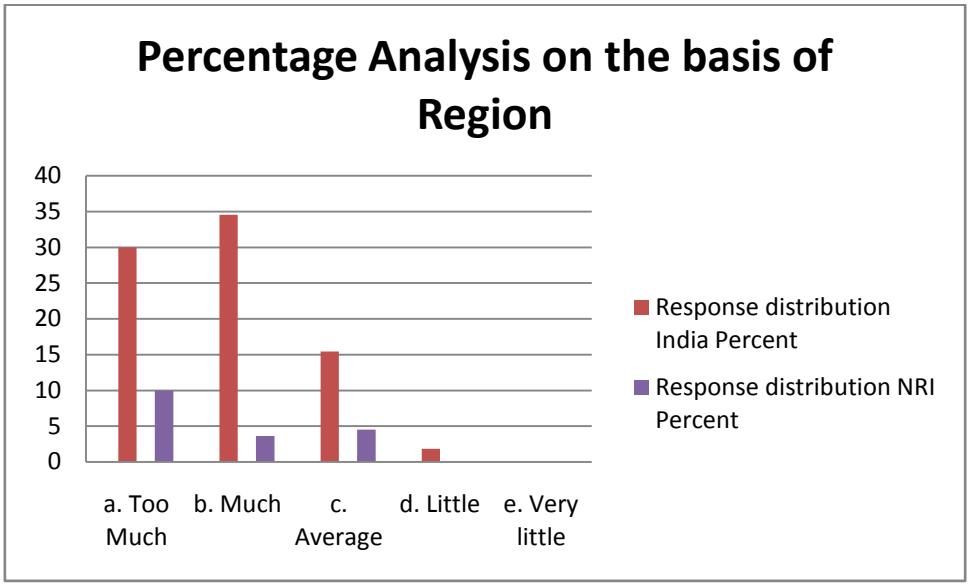
Percentage Analysis on the basis of Region
40
35
30
25
20
15
10
5
0
a. Too Much
b. Much
c. Average
d. Little
e. Very little
Response distribution India Percent
Response distribution NRI Percent

प्र.2. पंजाब की सुप्रसिद्ध गायिकाओं में से आपकी मनपसंद लोक-गायिका कौन सी है?

उ. 1) सुरिंद्र कौर

2) गुरमीत बावा

3) नरिंद्र बीबा

4) रणजीत कौर

5) यह सभी

आयु के आधार पर

20 से 35 वर्ष के आयु वर्ग में अधिकतर प्रतिशत उन लोगों की है जो गुरमीत बावा को अपनी मनपसंद गायिका मानते हैं ।

दूसरे आयु वर्ग में 36 से 50 वर्ष्ज्ञ की आयु के लोग आते हैं जिन में अधिकतर प्रतिशत सुरिंद्र कौर को पसंद करने वाले प्रतिवादी हैं । 50 वर्ष से ऊपर के आयु वर्ग में भी अधिकतर लोग सुरिंद्र कौर को ही पसंद करते हैं । इस तरह से 25 से 35 वर्ष की आयु के लोगों की पहली पसंद गुरमीत बावा ही है।

लिंग के आधार पर

इन प्रश्न के उत्तर में पुरूष और स्त्री दोनों वर्ग के प्रतिवादियों ने दूसरे विकल्प को ही अधिकतर प्रतिशत में चुना। परिणामस्वरूप यह बात सिद्ध होती है कि पुरूष एवं स्त्रियों दोनों की मन पसंद गायिका गुरमीत बावा है।

क्षेत्र के आधार पर

पंजाब में रहने वाले अधिकतर प्रतिवादी गुरमीत बावा को अपनी मन पसंद गायिका मानते हैं जब कि प्रवासी पंजाबी भारतीय लोगों में अधिकतर प्रतिशत उन लोगों की है जो या तो इन सभी गायिकाओं को एक समान पसंद करते हैं या फिर सुरिंद्र कौर को पसंद करते हैं।

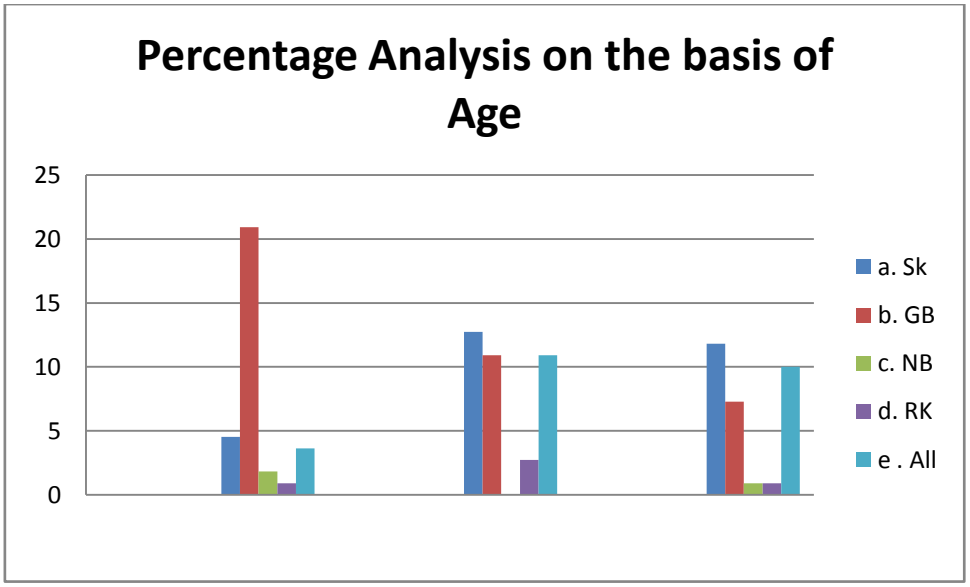
Percentage Analysis on the basis of Age
25
20
15
10
5
0
a. Sk
b. GB
c. NB
d. RK
e . All

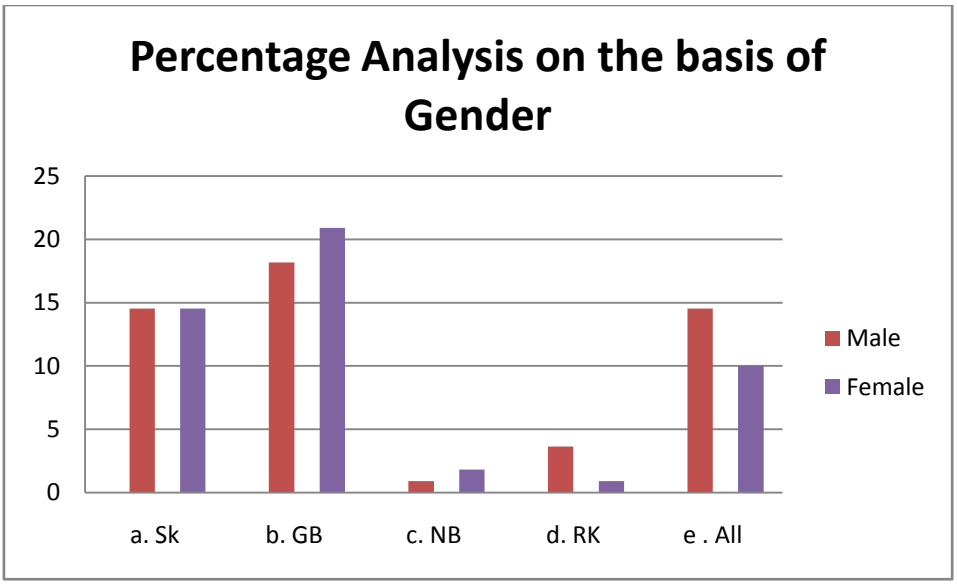
Percentage Analysis on the basis of Gender
25
20
15
10
5
0
a. Sk
b. GB
c. NB
d. RK
e . All
Male
Female

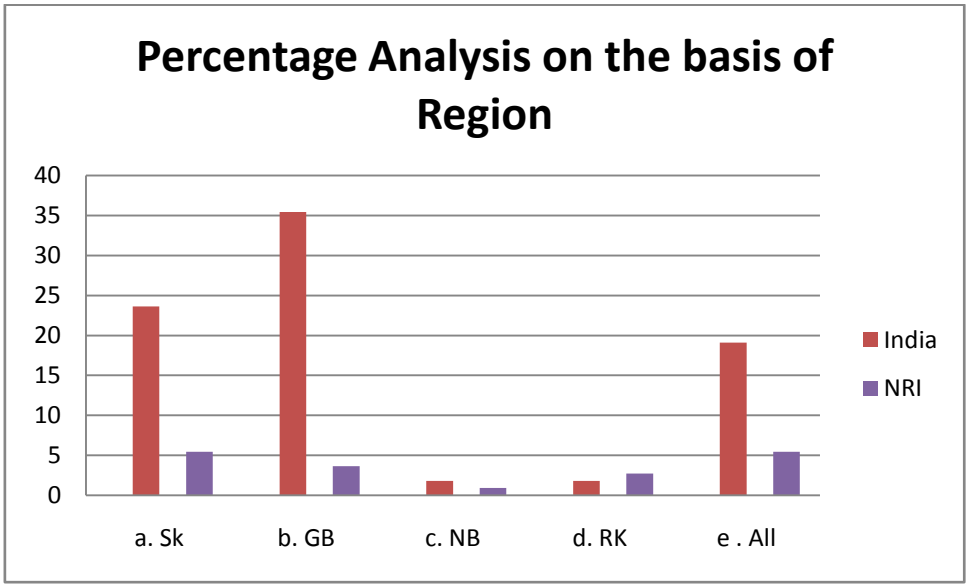
Percentage Analysis on the basis of Region
40
35
30
25
20
15
10
5
0
a. Sk
b. GB
c. NB
d. RK
e . All
India
NRI

प्र.3. आप इस बात से कितने सहमत हैं कि गुरमीत बावा पंजाब की एक महान एवं विलक्षण लोक-गायिका है?

उ. 1) बहुत ज़्यादा

2) ज़्यादा

3) औसतन

4) कम

5) बहुत कम

आयु के आधार पर

25 से 35 वर्ष के आयु वर्ग में अधिकतर प्रतिशत उन लोगों की है जो इस बात से ज़्यादा सहमत हैं कि गुरमीत बावा पंजाब की महान एवं विलक्षण लोक गायिका है। इसी तरह 36 से 50 वर्ष के आयु वर्ग में भी अधिकतर प्रतिशत इसी विकल्प को ही जाती है। जबकि 50 वर्ष से ऊपर के आयु वर्ग में अधिकतर प्रतिशत वाले लोग वो हैं जो इस तथ्य से बहुत ज़्यादा सहमत हैं।

लिंग के आधार पर

इसी तरह के परिणाम लिंग के आधार पर भी देखने को मिले। पुरूष प्रतिवादी इस बात से ज़्यादा सहमत हैं, जब कि स्त्रियां बहुत ज़्यादा सहमत हैं कि गुरमीत बावा पंजाब की एक महान एवं विलक्षण लोक-गायिका हैं।

क्षेत्र के आधार पर

पंजाब में रहने वाले एवं प्रवासी पंजाबी दोनों वर्गों में आने वाले प्रतिवादियों ने इस प्रश्न के लिए पहले विकल्प को ही चुना। इस तरह दोनों वर्गों के लोग इस बात से बहुत ज़्यादा सहमत हैं।

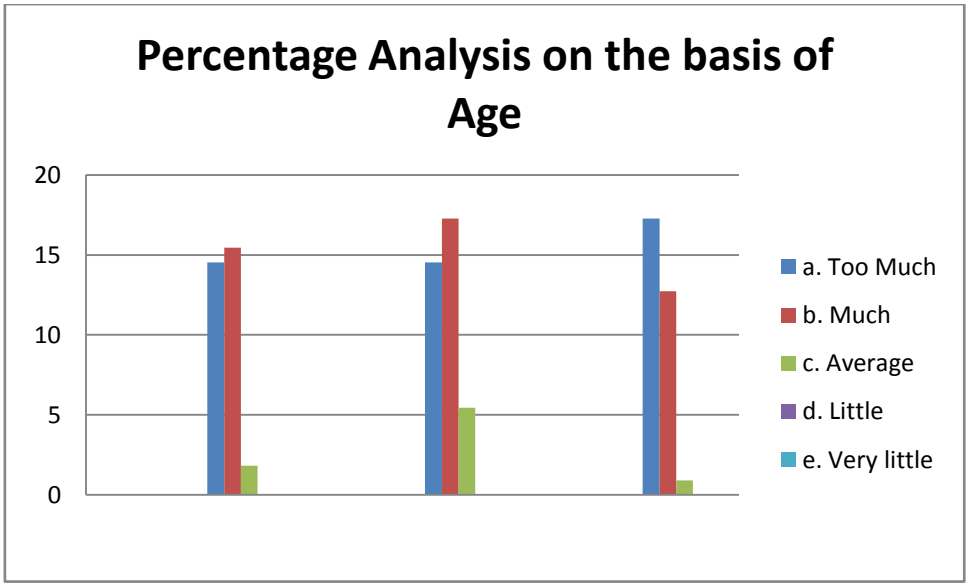
Percentage Analysis on the basis of Age
20
15
10
5
0
a. Too Much
b. Much
c. Average
d. Little
e. Very little

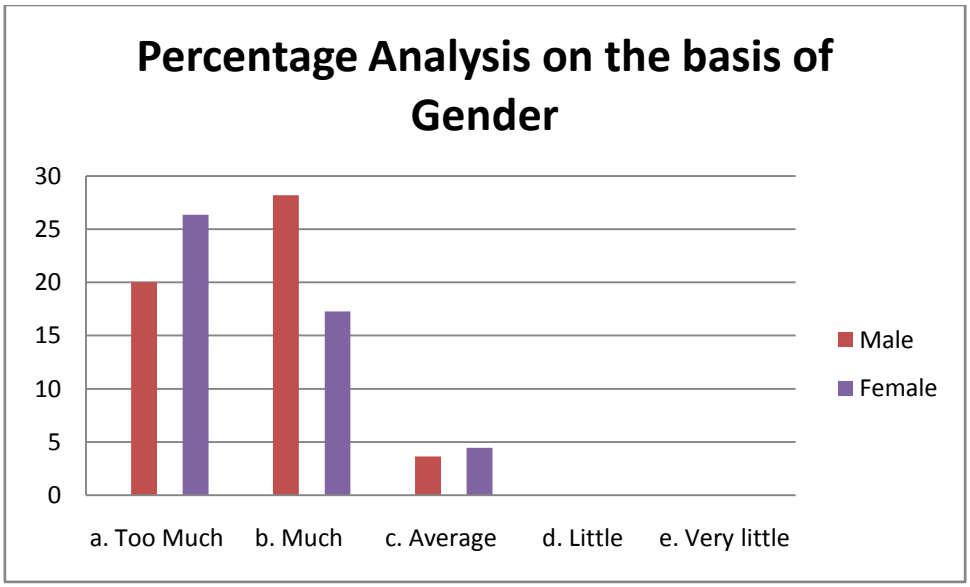
Percentage Analysis on the basis of Gender
30
25
20
15
10
5
0
a. Too Much
b. Much
c. Average
d. Little
e. Very little
Male
Female

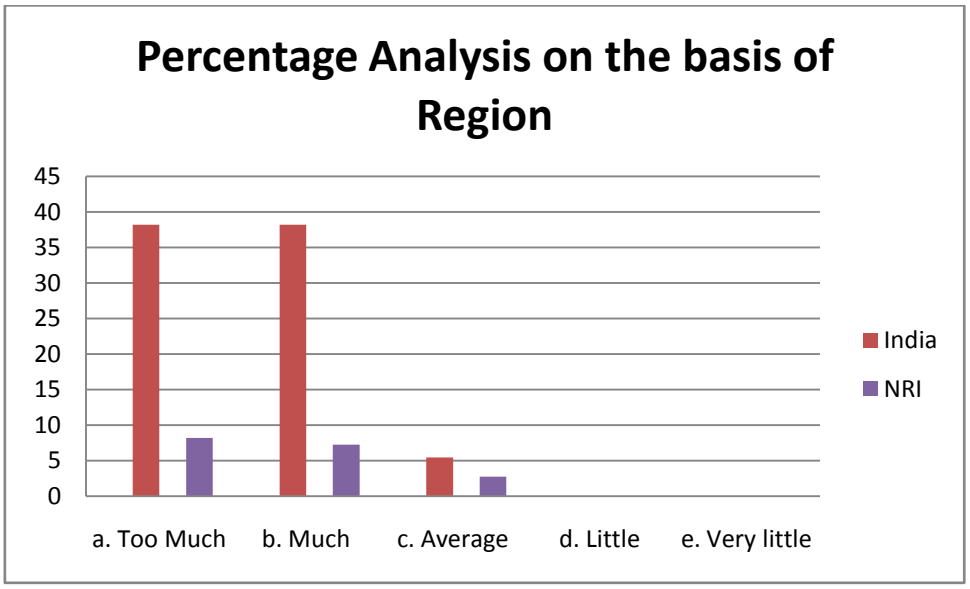
Percentage Analysis on the basis of Region
45
40
35
30
25
20
15
10
5
0
a. Too Much
b. Much
c. Average
d. Little
e. Very little
India
NRI

प्र.4. गुरमीत बावा की लोक-गायकी अन्य लोक-गायिकाओं से कितनी भिन्न एवं विलक्षण है?

उ. 1) बहुत ज़्यादा

2) ज़्यादा

3) औसतन

4) कम

5) बहुत कम

आयु के आधार पर

इस प्रश्न के उत्तर में 20 से 35 वर्ष के आयु वर्ग में अधिकतर प्रतिशत पहले विकल्प को मिली अर्थात् इस आयु वर्ग के लोग गुरमीत बावा की लोक-गायकी को अन्य लोक गायिकाओं से बहुत ज़्यादा भिन्न एवं विलक्षण मानते हैं। इसी तरह का परिणाम 36 से 50 वर्ष के आयु वर्ग में भी मिला। 50 वर्ष के ऊपर के आयु वर्ग में भी अधिकतर लोग गुरमीत बावा को अन्य गायिकाओं से ज़्यादा अथवा बहुत ज़्यादा भिन्न एवं विलक्षण मानते हैं।

लिंग के आधार पर

पुरूष प्रतिवादी गुरमीत बावा को अन्य गायिकाओं से ज़्यादा अथवा बहुत ज़्यादा भिन्न एवं विलक्षण मानते हैं जब कि स्त्रियां बहुत ज़्यादा भिन्न मानती हैं।

क्षेत्र के आधार पर

पंजाब में रहने वाले पहले विकल्प की चुनते हुए गुरमीत बावा को बहुत ज़्यादा भिन्न एवं विलक्षण मानते हैं जब कि प्रवासी पंजाबी इस बात से काफी हद तक तो नहीं बल्कि ज़्यादा सहमत हैं।

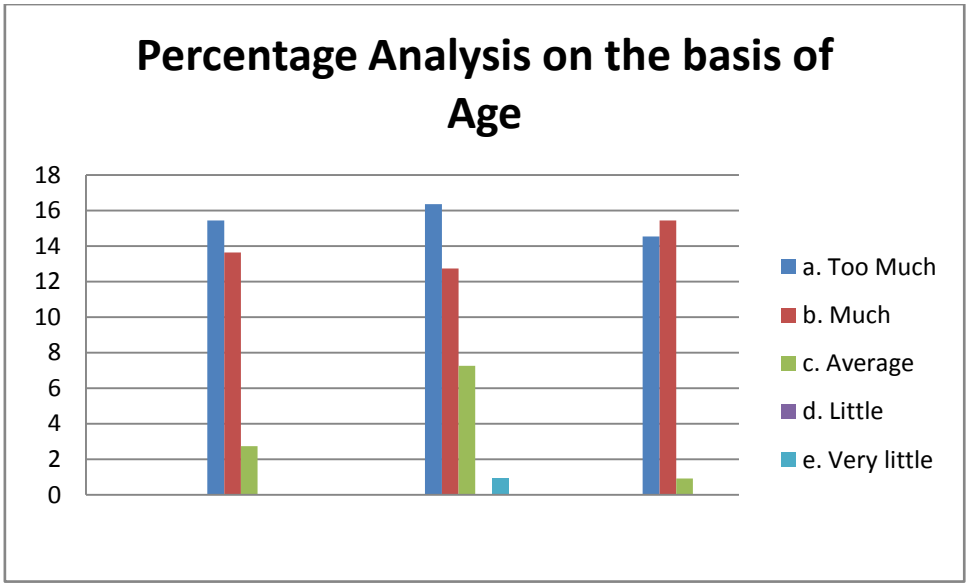
Percentage Analysis on the basis of Age
18
16
14
12
10
8
6
4
2
0
a. Too Much
b. Much
c. Average
d. Little
e. Very little

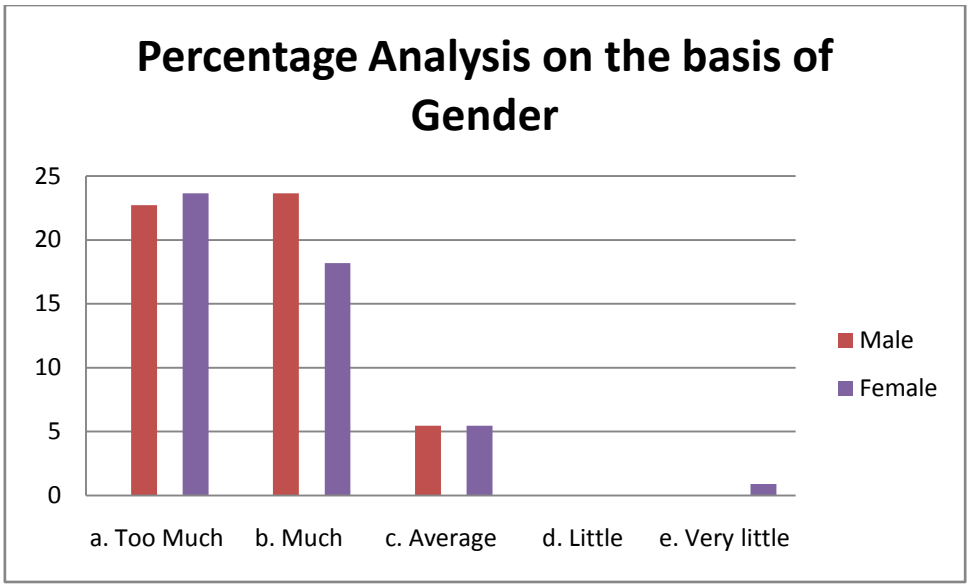
Percentage Analysis on the basis of Gender
25
20
15
10
5
0
a. Too Much
b. Much
c. Average
d. Little
e. Very little
Male
Female

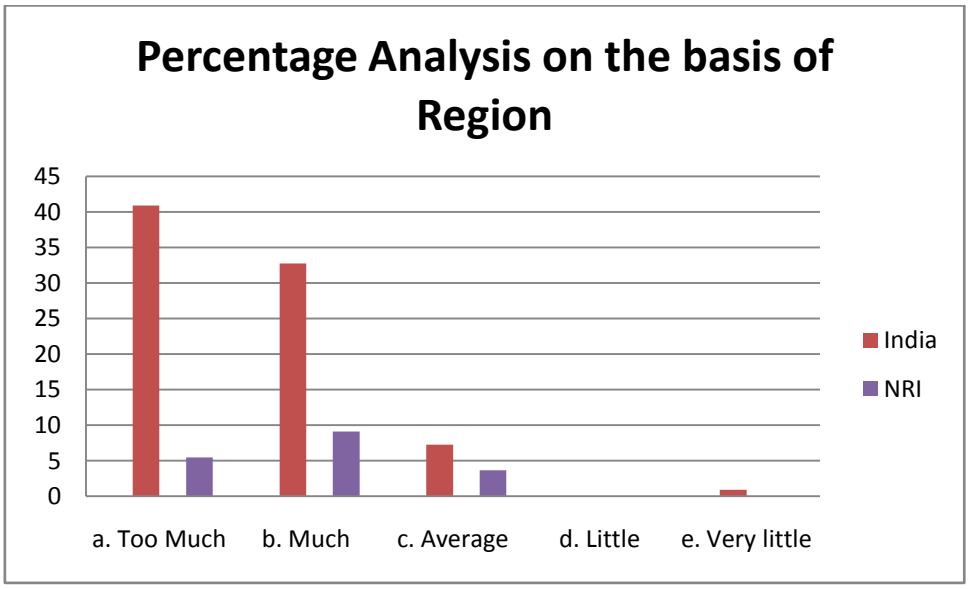
Percentage Analysis on the basis of Region
45
40
35
30
25
20
15
10
5
0
a. Too Much
b. Much
c. Average
d. Little
e. Very little
India
NRI

प्र.5. गुरमीत बावा ने अपनी गायकी में कौन-कौन से परंपरागत वाद्यों का प्रयोग किया है?

उ. 1) अल्गोजा एवं ढोल

2) चिमटा एवं ढोलक

3) घुंगरू एवं मट्टियां

4) डफली एवं ढोलक

5) यह सभी

आयु के आधार पर

इस प्रश्न के उत्तर से मिले परिणामों से यह पता चला कि कौन से आयु वर्ग के लोग गुरमीत बावा की गायकी के बारे में कितना जानते हैं। तीनों वर्गों से मिले परिणामों से यह सिद्ध हुआ कि अधिकतर लोग गुरमीत बावा की गायकी को बहुत अच्छे से जानते हैं। तीनों वर्गों में अधिकतर प्रतिशत उन लोगों की थी जिनके अनुसार गुरमीत बावा ने अपनी गायकी में इन सभी परंपरागत वाद्यों का प्रयोग किया।

लिंग के आधार पर

लिंग के आधार पर भी इसी तरह के परिणाम प्राप्त हुए। पुरूष एवं स्त्री दोनों वर्गों में अधिकतर प्रतिशत उन लोगों की थी जिन्होंने इसी विकल्प को चुना, अर्थात् उनके विचारानुसार भी गुरमीत बावा ने अपनी गायकी में इन सभी परंपरागत वाद्यों का प्रयोग किया।

क्षेत्र के आधार पर

पंजाबी एवं प्रवासी पंजाबी भारतीय इन दोनों वर्गों में भी अधिकतर लोगों ने पाँचवे विकल्प को ही चुना। अर्थात् गुरमीत बावा ने अपनी गायकी में इन सभी परंपरागत वाद्यों का प्रयोग किया है।

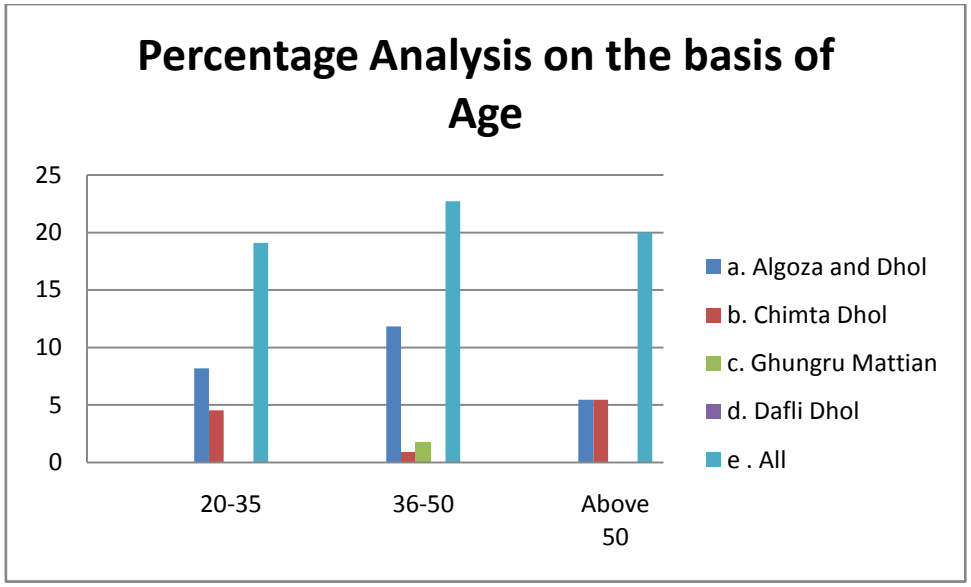
Percentage Analysis on the basis of Age
25
20
15
10
5
0
20-35
36-50
Above 50
a. Algoza and Dhol
b. Chimta Dhol
c. Ghungru Mattian
d. Dafli Dhol
e . All

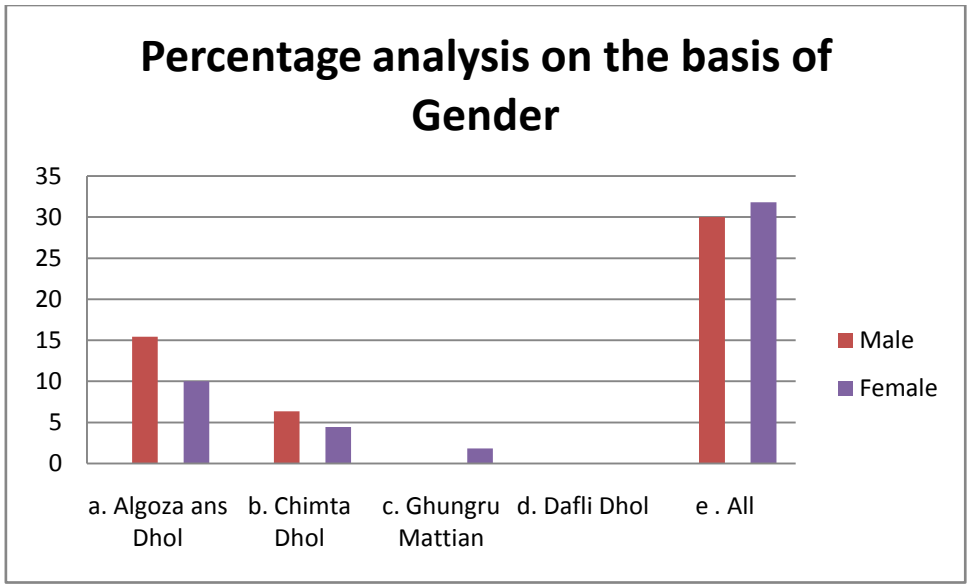
Percentage analysis on the basis of Gender
35
30
25
20
15
10
5
0
a. Algoza ans Dhol
b. Chimta Dhol
c. Ghungru Mattian
d. Dafli Dhol
e . All
Male
Female

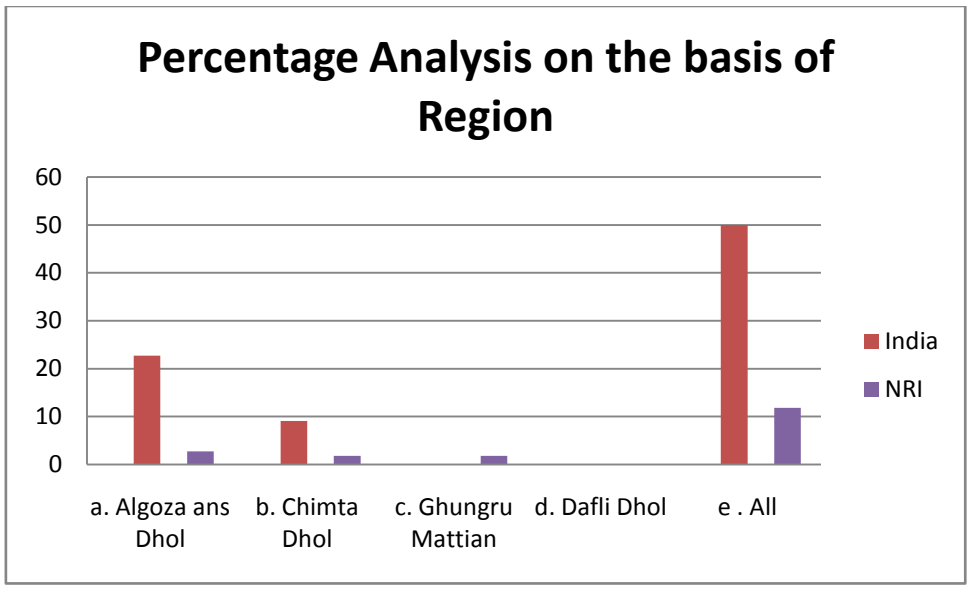
Percentage Analysis on the basis of Region
60
50
40
30
20
10
0
a. Algoza ans Dhol
b. Chimta Dhol
c. Ghungru Mattian
d. Dafli Dhol
e . All
India
NRI

प्र.6. गुरमीत बावा के कौन-से ऐसे परंपरागत लोक-गीत हैं जिन्होंने उनको पंजाबी लोक-गायकी में एक विशिष्ट पहचान दी?

उ. 1) सुहाग

2) घोड़ीयां

3) लोक-गाथाएं

4) लोक-बोलियां

5) यह सभी

आयु के आधार पर

आयु के आधार पर मिले परिणाम भी लगभग एक जैसे ही थे। सभी आयु वर्गों के लोगों में अधिकतर की राय यही रही कि गुरमीत बावा ने लोक-गायकी की इन सभी गायन शैलियों को गाया जिसकी वजह से उनको एक विशिष्ट पहचान मिली।

लिंग के आधार पर

इस प्रश्न के उत्तर में भी एक बार फिर से वही परिणाम मिले। पुरूष एवं स्त्री दोनों वर्गों में अधिकतर पुरूषों एवं स्त्रियों ने यहीं विचार प्रकट किया कि गुरमीत बावा ने सुहाग, लोक-गाथाएं, घोड़ियां, लोक-बोलीयां यह सभी गायन शैलियों को गा कर पंजाबी लोक-गायकी में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई।

क्षेत्र के आधार पर

इसी तरह पंजाबी एवं प्रवासी पंजाबीयों में भी सभी लोगों की राय यही रही कि गुरमीत बावा ने इन सभी लोक गायन शैलियों को गाया।

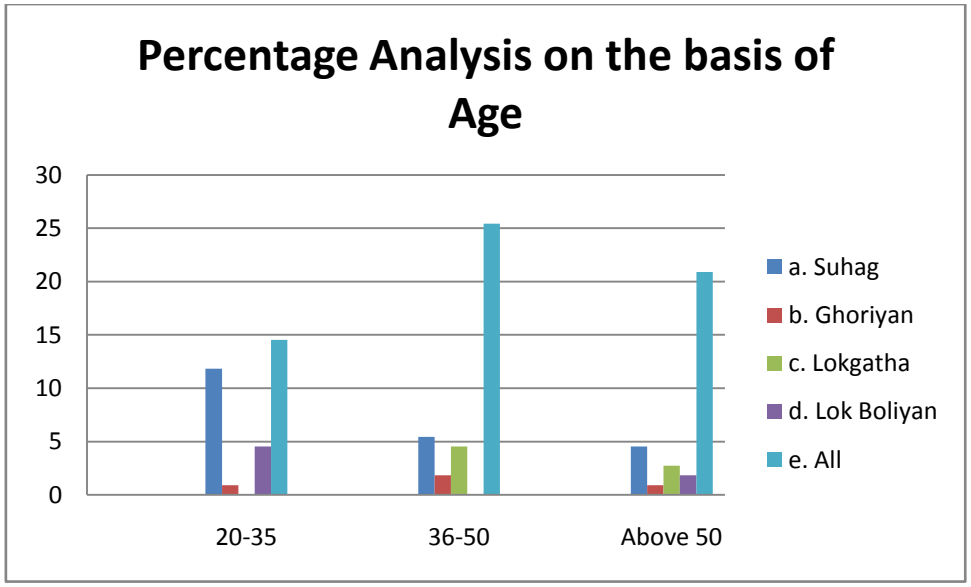
Percentage Analysis on the basis of Age
30
25
20
15
10
5
0
20-35
36-50
Above 50
a. Suhag
b. Ghoriyan
c. Lokgatha
d. Lok Boliyan
e. All

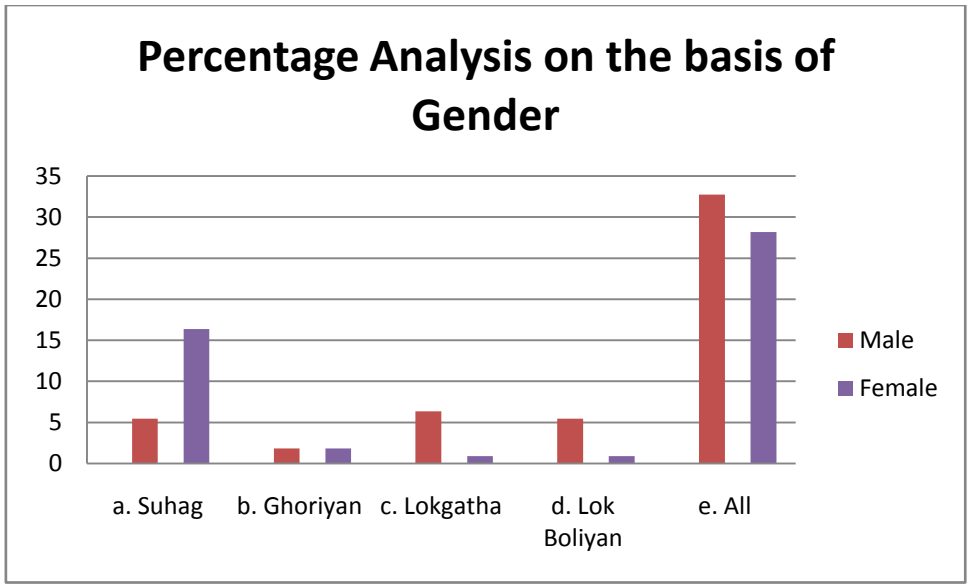
Percentage Analysis on the basis of Gender
35
30
25
20
15
10
5
0
a. Suhag
b. Ghoriyan
c. Lokgatha
d. Lok Boliyan
e. All
Male
Female

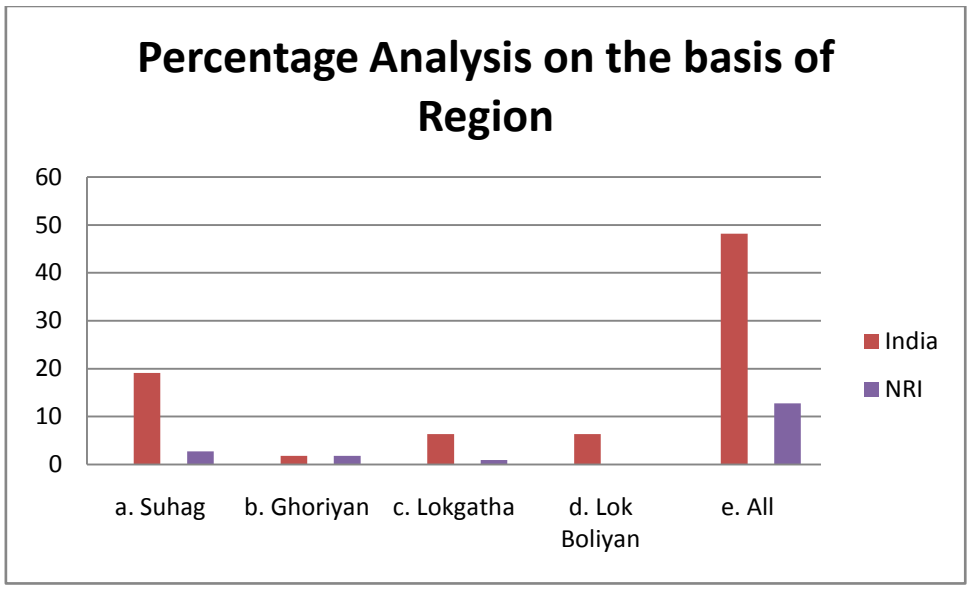
Percentage Analysis on the basis of Region
60
50
40
30
20
10
0
a. Suhag
b. Ghoriyan
c. Lokgatha
d. Lok Boliyan
e. All
India
NRI

प्र.7. गुरमीत बावा की गायकी की ऐसी कौन सी विशेषता है तो उनको विलक्षण बनाती है?

उ. 1) लंबी हेक

2) परंपरागत लोक गीत

3) परंपरागत लोक वाद्य

4) स्वरों का ठहराव

5) यह सभी

आयु के आधार पर

तीनों आयु वर्गों में अधिकतर प्रतिशत लोगों ने लंबी हेक को गुरमीत बावा की विलक्षणता का महत्त्वपूर्ण पहलू बताया।

लिंग के आधार पर

अधिकतर पुरूषों एवं स्त्रियों ने भी लंबी हेक को ही गुरमीत बावा की गायकी की महत्त्वपूर्ण विशेषता बताया।

क्षेत्र के आधार पर

इसी तरह पंजाब क्षेत्र के लोग एवं भारत से बाहर रह रहे पंजाबी लोगों में से अधिकतर लोगों का यही विचार है कि गुरमीत बावा की लंबी हेक ही उनको पंजाबी लोक-गायकी में विलक्षण बनाती है।

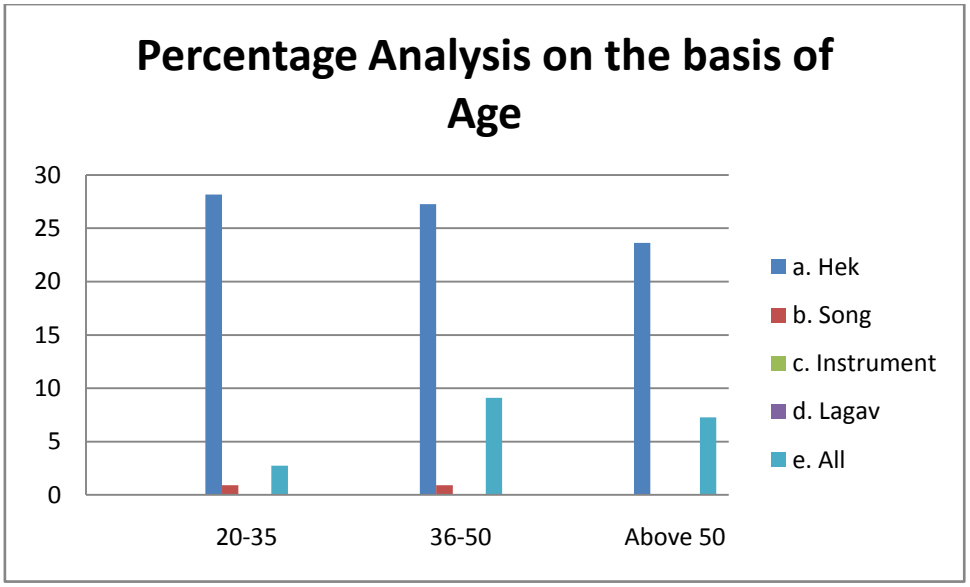
Percentage Analysis on the basis of Age
30
25
20
15
10
5
0
20-35
36-50
Above 50
a. Hek
b. Song
c. Instrument
d. Lagav
e. All

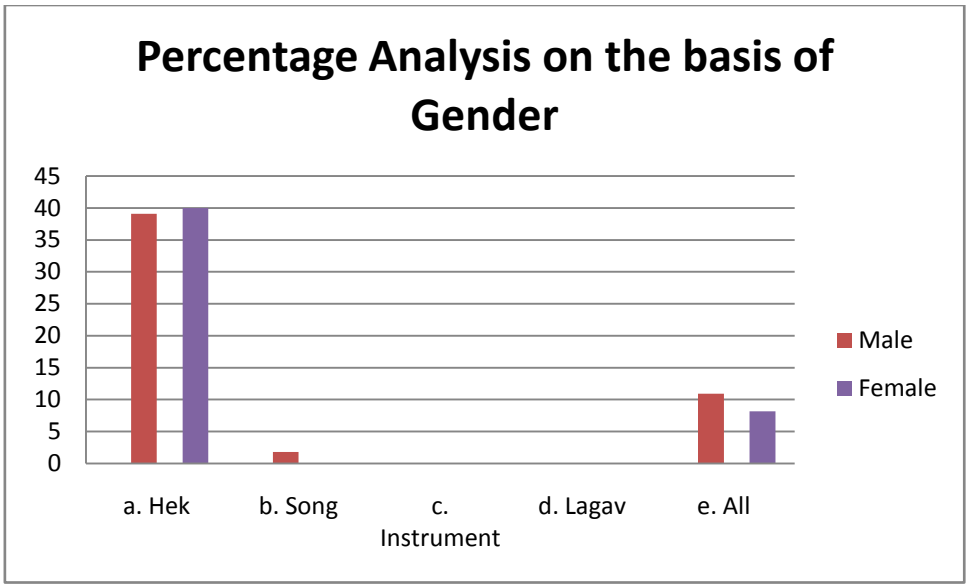
Percentage Analysis on the basis of Gender
45
40
35
30
25
20
15
10
5
0
a. Hek
b. Song
c. Instrument
d. Lagav
e. All
Male
Female

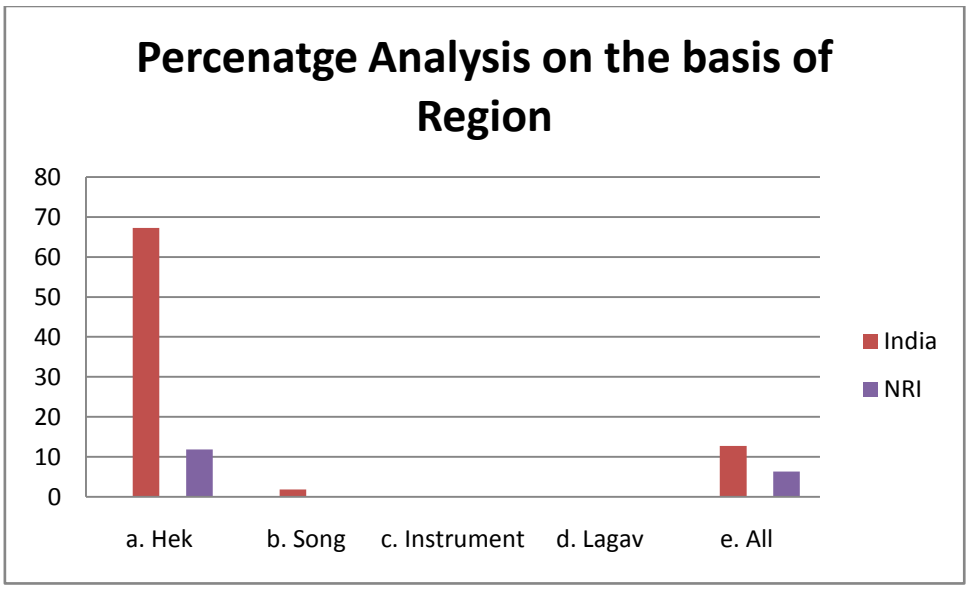
Percenatge Analysis on the basis of Region
80
70
60
50
40
30
20
10
0
a. Hek
b. Song
c. Instrument
d. Lagav
e. All
India
NRI

प्र.8. आप इस बात से कितने सहमत हैं कि गुरमीत बावा की गायकी समाज एवं संस्कृति पर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में प्रभाव छोड़ रही है?

उ. 1) बहुत ज़्यादा

2) ज़्यादा

3) औसतन

4) कम

5) बहुत कम

आयु के आधार पर

25 से 35 वर्ष के आयु वर्ग में अधिकतर लोग इस बात से 'ज़्यादा' सहमत हैं कि गुरमीत बावा की गायकी हमारे समाज एवं संस्कृति को प्रभावित कर रही है। 36 से 50 वर्ष के आयु वर्ग में अधिकतर प्रतिशत उन लोगों की है जो इस तथ्य से 'बहुत ज़्यादा' सहमत हैं जब कि 50 वर्ष से ऊपर वाले आयु वर्ग के लोग भी इस बात से 'ज़्यादा' सहमत हैं।

लिंग के आधार पर

पुरूष और स्त्रियों में से पुरूष अधिकतर इस तथ्य से ज़्यादा सहमत हैं जबकि स्त्रियां बहुत ज़्यादा सहमत हैं कि गुरमीत बावा की गायकी हमारे समाज एवं संस्कृति पर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में प्रभाव छोड़ रही है।

क्षेत्र के आधार पर

पंजाब में रहने वाले अधिकतर लोग इस तथ्य से ज़्यादा अथवा बहुत ज़्यादा सहमत हैं जब कि प्रवासी पंजाबी लोग इस बात से औसतन सहमत हैं।

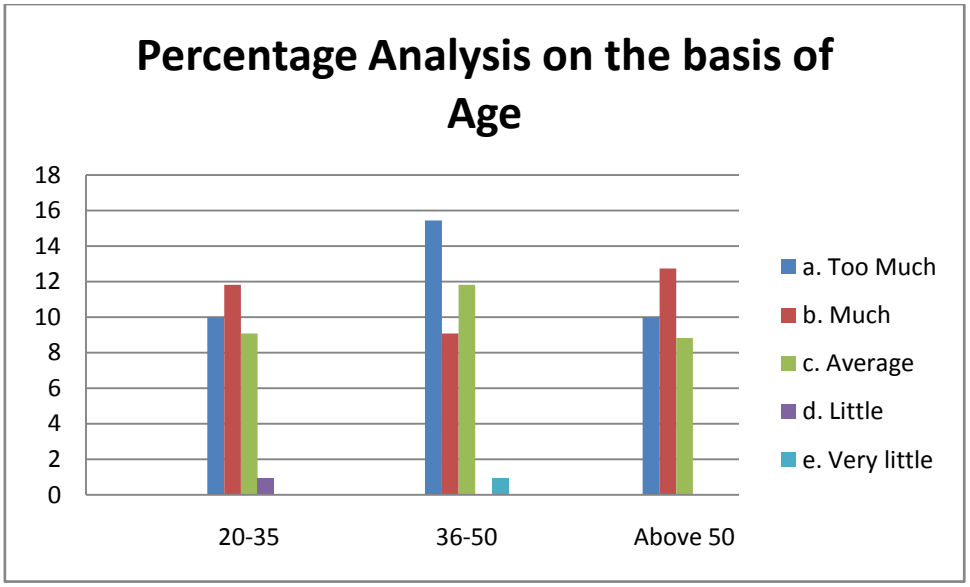
Percentage Analysis on the basis of Age
18
16
14
12
10
8
6
4
2
0
20-35
36-50
Above 50
a. Too Much
b. Much
c. Average
d. Little
e. Very little

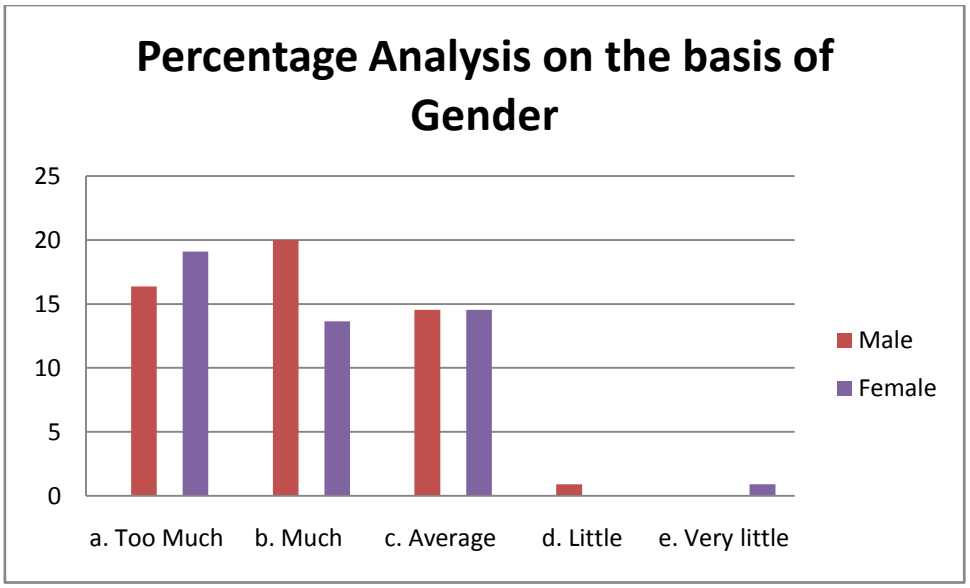
Percentage Analysis on the basis of Gender
25
20
15
10
5
0
a. Too Much
b. Much
c. Average
d. Little
e. Very little
Male
Female

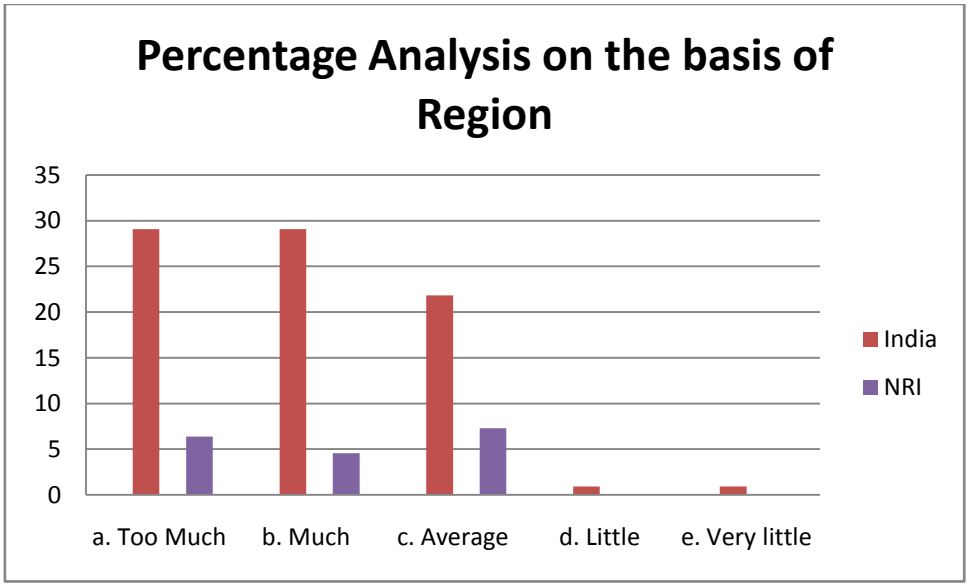
Percentage Analysis on the basis of Region
35
30
25
20
15
10
5
0
a. Too Much
b. Much
c. Average
d. Little
e. Very little
India
NRI

प्र.9. गुरमीत बावा ने अपने गीतों द्वारा समाज में पनप रही कौन सी सामाजिक समस्याओं के प्रति आवाज़ उठाई है?

उ. 1) नारी की निम्न दशा

2) कन्या भ्रूण हत्या

3) नैतिक मूल्यों में कमी

4) दहेज प्रथा

5) यह सभी

आयु के आधार पर

सभी आयु वर्गों में अधिकतर प्रतिशत उन लोगां की है जिनके विचारुसार गुरमीत बावा ने अपनी गायकी द्वारा इन सभी सामाजिक समस्याओं के प्रति आवाज़ उठाने का प्रयास किया है।

लिंग के आधार पर

पुरूष एवं स्त्री वर्ग के आधार पर भी अधिकतर पुरूष एवं स्त्रियां एक ही विचार रखते हैं कि गुरमीत बावा ने अपनी गायकी के माध्यम से समाज में पनप रहीं लगभग सभी बुराईयों के विरूद्ध आवाज़ उठाई है।

क्षेत्र के आधार पर

क्षेत्र के आधार पर भी दोनों वर्गों से एक समान परिणाम प्राप्त हुए। दोनों वर्गों में अधिकतर लोगों ने इसी बात पर सहमति दी कि गुरमीत बावा ने लगभग सभी समस्याओं के प्रति जन साधारण को अपनी गायकी के द्वारा जागृत करने का प्रयास किया।

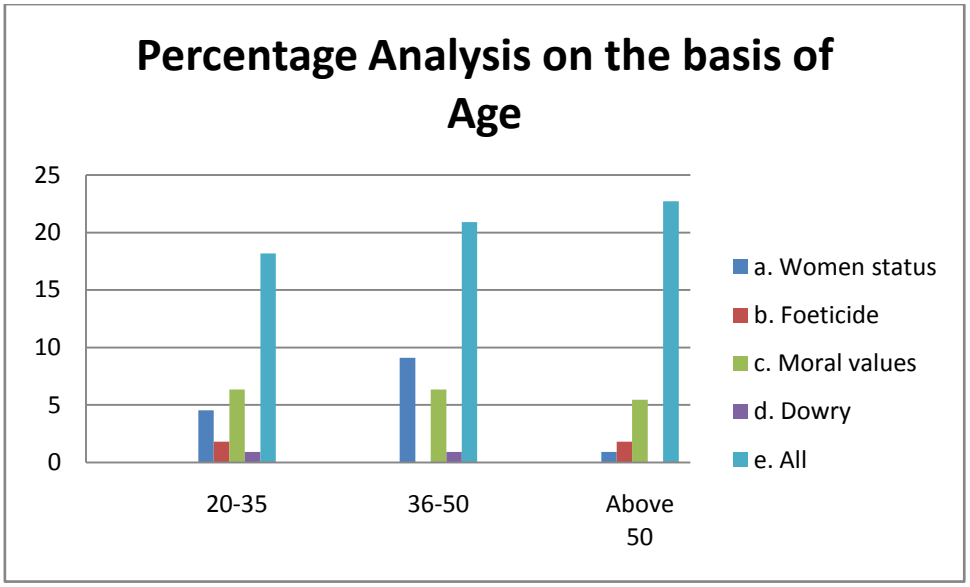
Percentage Analysis on the basis of Age
25
20
15
10
5
0
20-35
36-50
Above 50
a. Women status
b. Foeticide
c. Moral values
d. Dowry
e. All

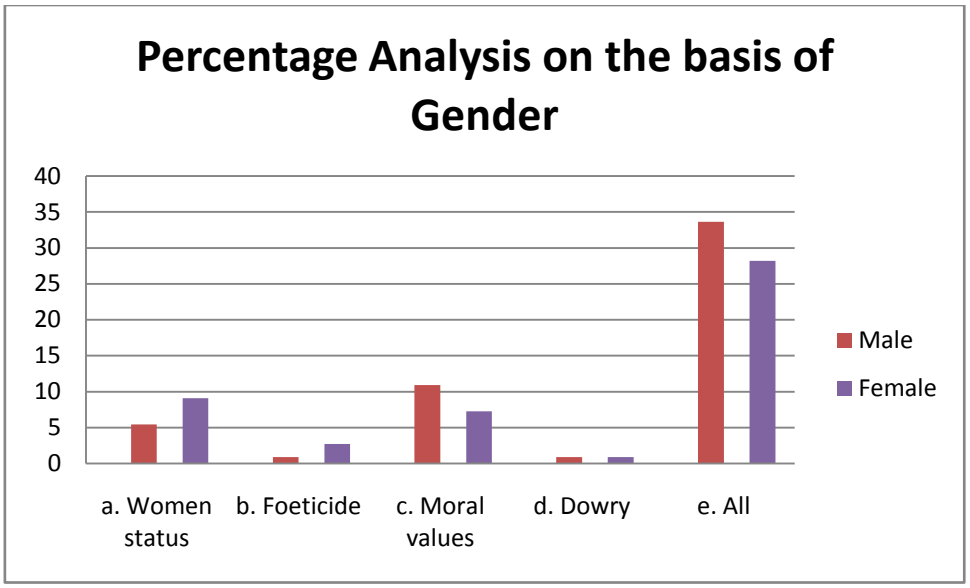
Percentage Analysis on the basis of Gender
40
35
30
25
20
15
10
5
0
a. Women status
b. Foeticide
c. Moral values
d. Dowry
e. All
Male
Female

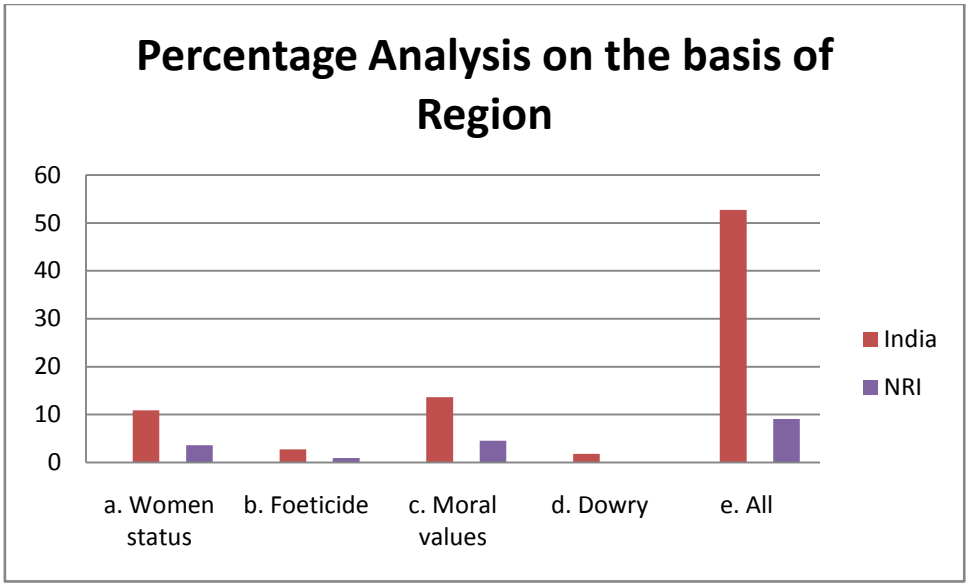
Percentage Analysis on the basis of Region
60
50
40
30
20
10
0
a. Women status
b. Foeticide
c. Moral values
d. Dowry
e. All
India
NRI

प्र.10. आप इस बात से कितने सहमत हैं कि गुरमीत बावा के गीत समाज एवं संस्कृति का प्रतिबिंब प्रकट करते हैं?

उ. 1) बहुत ज़्यादा

2) ज़्यादा

3) औसतन

4) कम

5) बहुत कम

आयु के आधार पर

आयु के आधार पर पहले दो वर्गों के परिणाम एक समान रहे जिसमें अधिकतर लोग इस बात से बहुत ज़्यादा सहमत हैं कि गुरमीत बावा के गीत समाज एवं संस्कृति का प्रतिबिंब प्रस्तुत करते हैं। 50 वर्ष से ऊपर के आयु वर्ग के अधिकतर लोग इस बात से बहुत ज़्यादा तो नहीं किंतु ज़्यादा सहमत हैं।

लिंग के आधार पर

पुरूषों की अधिकतर प्रतिशत संख्या इस बात से ज़्यादा सहमत है, जबकि महिलाएं बहुत ज़्यादा सहमत है कि गुरमीत बावा के गीत समाज एवं संस्कृति की तस्वीर प्रस्तुत करते हैं।

क्षेत्र के आधार पर

पंजाब में रहने वाले अधिकतर पंजाबी इस बात से ज़्यादा सहमत हैं, जब कि प्रवासी पंजाबी बहुत ज़्यादा सहमत हैं कि गुरमीत बावा अपने गीतों में समाज एवं संस्कृति का प्रतिबिंब प्रस्तुत करती है।

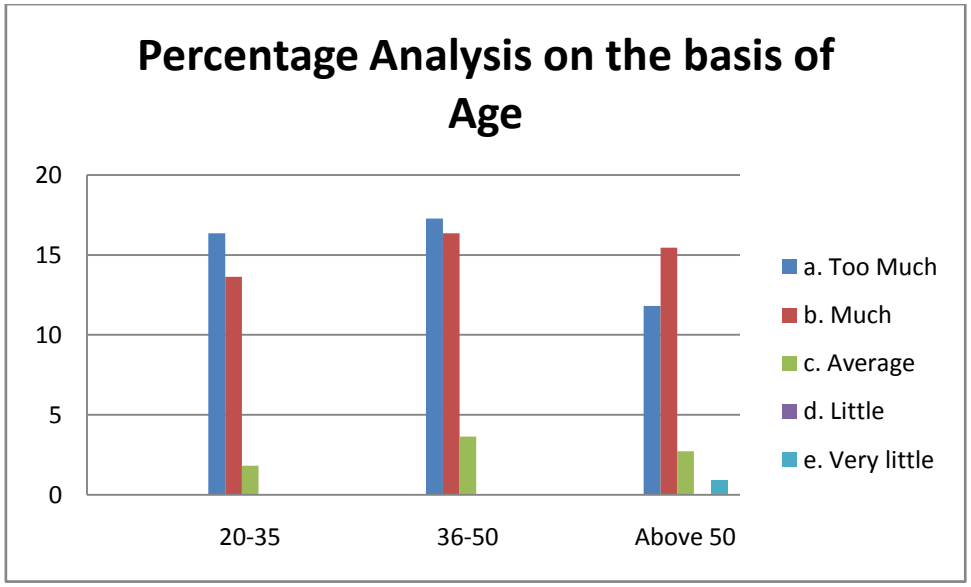
Percentage Analysis on the basis of Age
20
15
10
5
0
20-35
36-50
Above 50
a. Too Much
b. Much
c. Average
d. Little
e. Very little

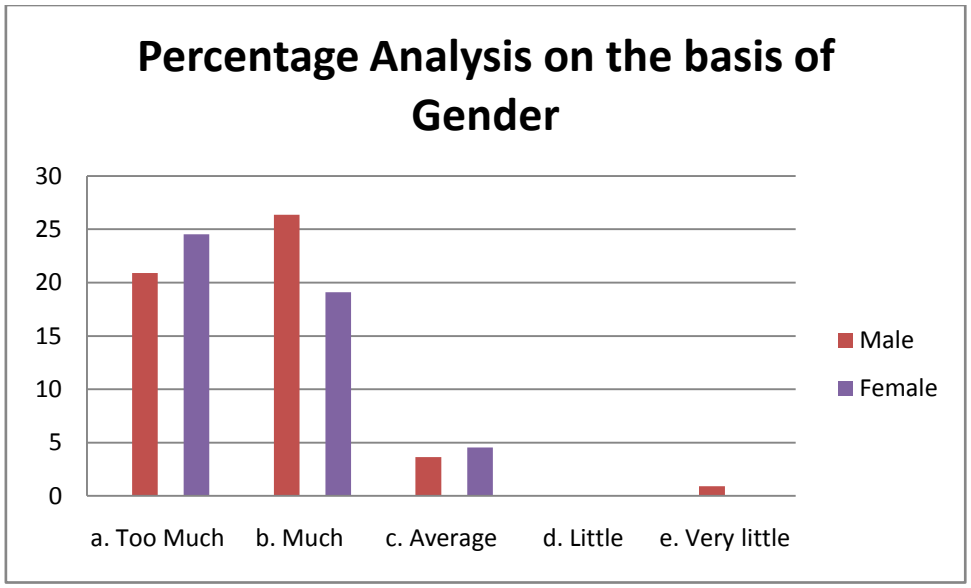
Percentage Analysis on the basis of Gender
30
25
20
15
10
5
0
a. Too Much
b. Much
c. Average
d. Little
e. Very little
Male
Female

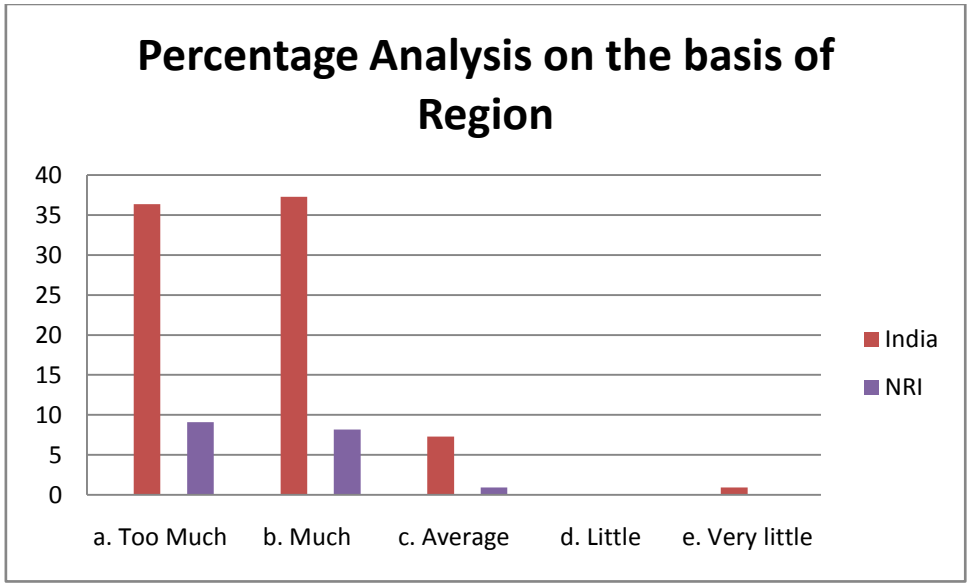
Percentage Analysis on the basis of Region
40
35
30
25
20
15
10
5
0
a. Too Much
b. Much
c. Average
d. Little
e. Very little
India
NRI

प्र.11 आप इस विचार से कितने सहमत हैं कि गुरमीत बावा की गायकी युवा वर्ग का मार्ग दर्शन करने में सक्षम है?

उ. 1) बहुत ज़्यादा

2) ज़्यादा

3) औसतन

4) कम

5) बहुत कम

आयु के आधार पर

सबसे पहले आयु वर्ग (25 से 35 वर्ष) ने इस बात पर बहुत ज़्यादा सहमति जताई कि गुरमीत बावा की गायकी युवा वर्ग का मार्ग दर्शन करने में सक्षम है। 36 से 50 वर्ष एवं 50 वर्ष से ऊपर के आयु वर्ग के अधिकतर लोगों ने इस बात पर ज़्यादा सहमति प्रकट की।

लिंग के आधार पर

पुरूष एवं स्त्रियां दोनों वर्गों की अधिकतर संख्या इस बात से ज़्यादा सहमत हैं कि गुरमीत बावा अपने गीतों के माध्यम से युवा वर्ग का मार्ग दर्शन करने में सक्षम है।

क्षेत्र के आधार पर

इसी तरह पंजाबी एवं प्रवासी पंजाबी दोनों वर्गों के अधिकतर लोग भी इस बात से ज़्यादा सहमत हैं कि गुरमीत बावा की गायकी युवाओं का मार्ग दर्शन कर रही है।

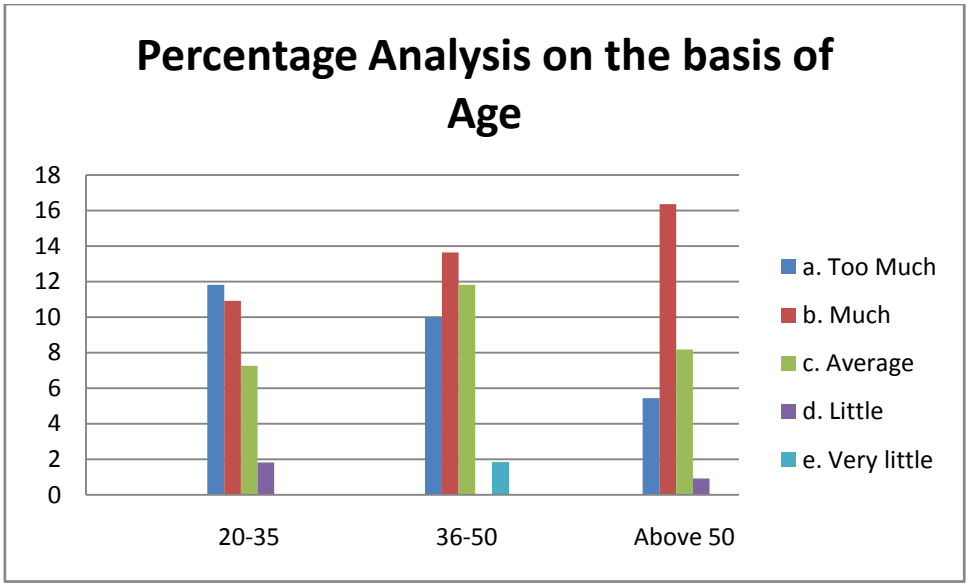
Percentage Analysis on the basis of Age
18
16
14
12
10
8
6
4
2
0
20-35
36-50
Above 50
a. Too Much
b. Much
c. Average
d. Little
e. Very little

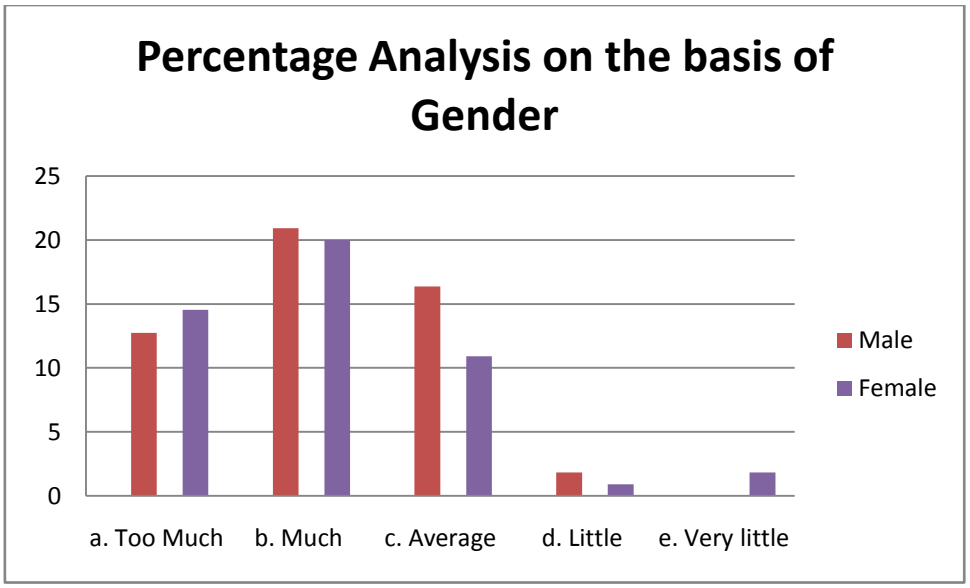
Percentage Analysis on the basis of Gender
25
20
15
10
5
0
a. Too Much
b. Much
c. Average
d. Little
e. Very little
Male
Female

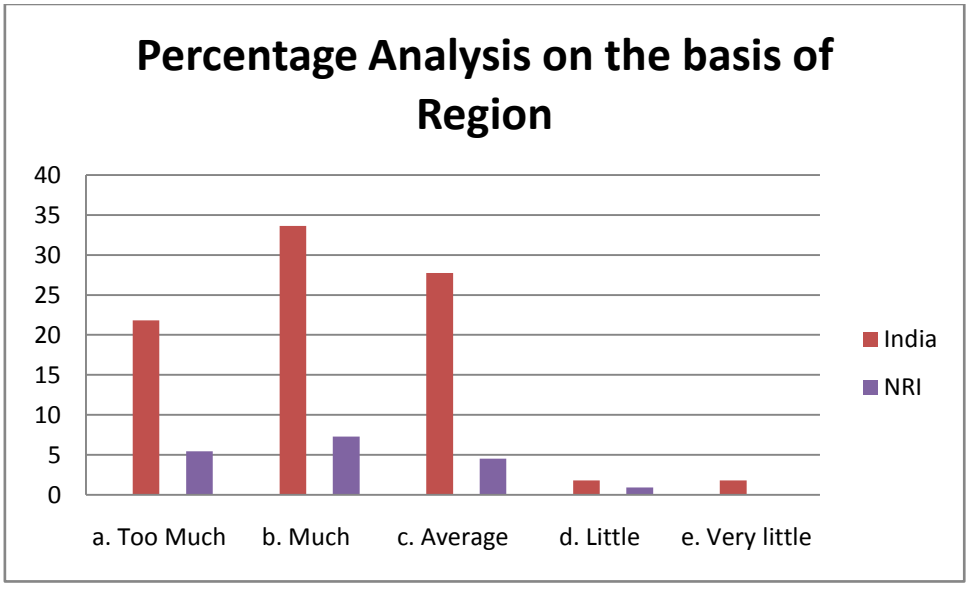
Percentage Analysis on the basis of Region
40
35
30
25
20
15
10
5
0
a. Too Much
b. Much
c. Average
d. Little
e. Very little
India
NRI

प्र.12 आप इस बात से कितने सहमत हैं कि पश्चिमी प्रभावों के बावजूद गुरमीत बावा जैसी लोक गायिका की गायकी अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाने में सक्षम है?

उ. 1) बहुत ज़्यादा

2) ज़्यादा

3) औसतन

4) कम

5) बहुत कम

आयु के आधार पर

25 से 35 वर्ष के आयु वर्ग एवं 36 से 50 वर्ष के आयु वर्ग में अधिकतर प्रतिशत लोग इस तथ्य से बहुत ज़्यादा सहमत हैं जब कि 50 वर्ष से ऊपर के आयु वर्ग के अधिकतर लोग इस बात से ज़्यादा सहमत हैं।

लिंग के आधार पर

लिंग के आधार पर एक बार फिर दोनों वर्गों के परिणाम एक समान रहे। पुरूष एवं स्त्रियां दोनों इस बात से बहुत ज़्यादा सहमत हैं कि गुरमीत बावा ने पश्चिमी प्रभावों के बावजूद अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है।

क्षेत्र के आधार पर

पंजाब में रहने वाले पंजाबी एवं प्रवासी पंजाबी दोनों ही अधिकतर प्रतिशत संख्या में इस बात से बहुत ज़्यादा सहमत हैं कि गुरमीत बावा ने पश्चिमी प्रभावों के बावजूद अपनी गायकी से पंजाबी लोक गायकी में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है।

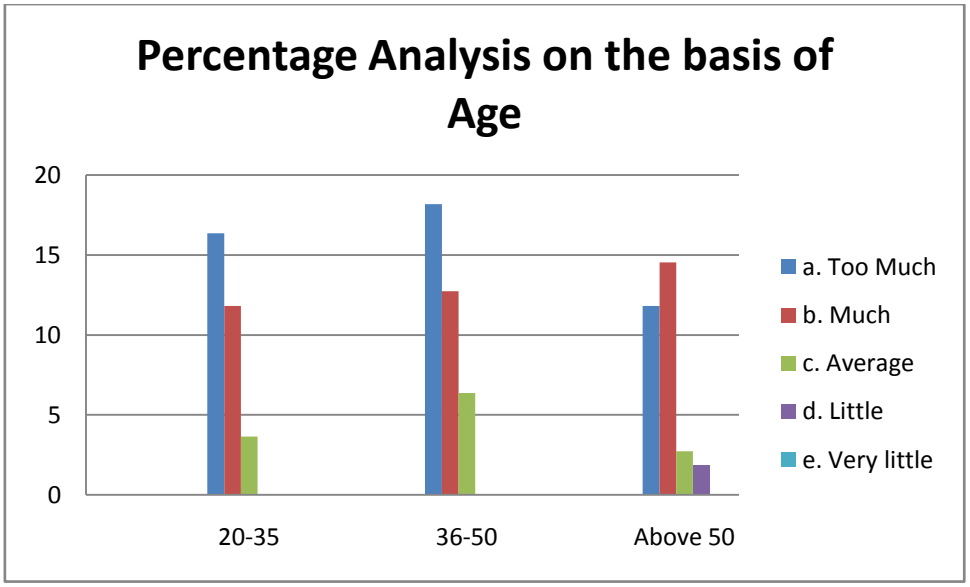
Percentage Analysis on the basis of Age
20
15
10
5
0
20-35
36-50
Above 50
a. Too Much
b. Much
c. Average
d. Little
e. Very little

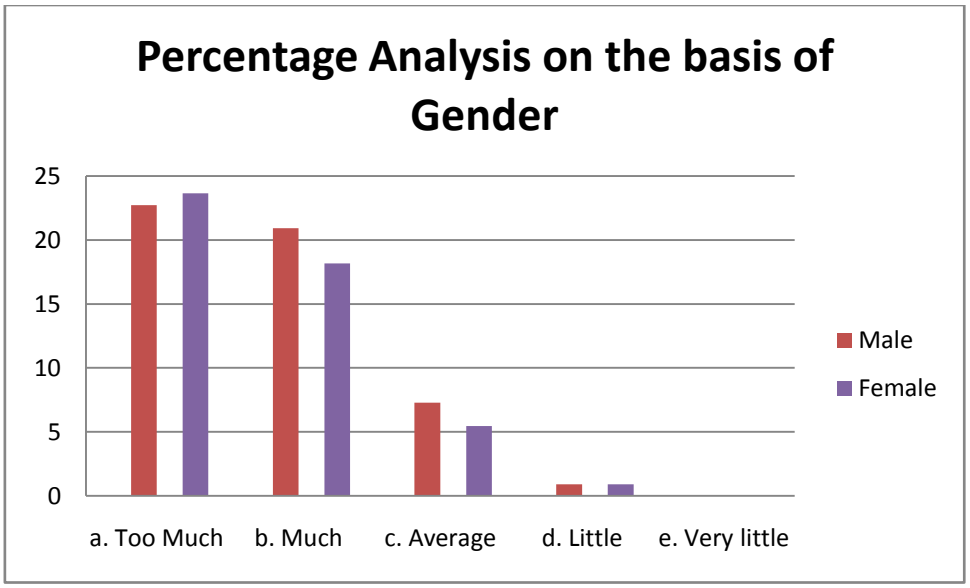
Percentage Analysis on the basis of Gender
25
20
15
10
5
0
a. Too Much
b. Much
c. Average
d. Little
e. Very little
Male
Female

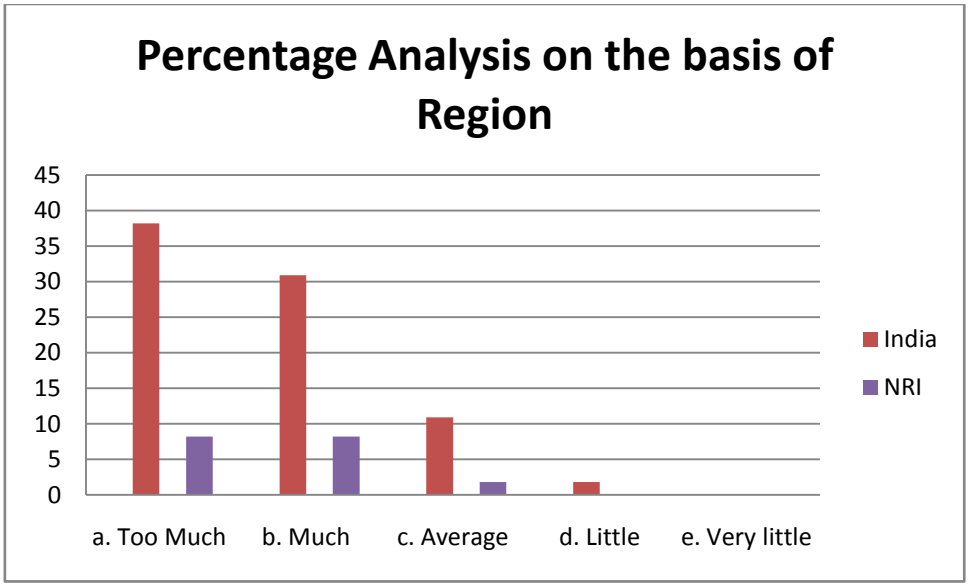
Percentage Analysis on the basis of Region
45
40
35
30
25
20
15
10
5
0
a. Too Much
b. Much
c. Average
d. Little
e. Very little
India
NRI

समग्र रूप में प्राप्त निष्कर्ष

उम्र, लिंग एवं क्षेत्र तीनों वर्गों के आधार पर समग्र रूप में निष्कर्ष निकाला जाए तो निम्नलिखित परिणाम प्राप्त होते हैं :-

1. पहले प्रश्न के उत्तर में प्राप्त परिणामों में यह पता चलता है सबसे अधिक 40 प्रतिशत लोगों की लोक-संगीत में बहुत ज़्यादा रूचि है।
2. सबसे अधिक 39.09% लोग गुरमीत बावा को अपनी मनभावन लोक-गायिका मानते हैं।
3. 46.36% लोग इस बात से बहुत ज़्यादा सहमत हैं कि गुरमीत बावा पंजाब की एक महान एवं विलक्षण लोक गायिका है।
4. 46.36% लोग गुरमीत बावा की लोक गायकी को अन्य लोक गायिकाओं से बहुत ज़्यादा भिन्न एवं विलक्षण मानते हैं।
5. 61.82% लोग इस बात की जानकारी रखते हैं कि गुरमीत बावा ने अपनी लोक-गायकी में अल्गोजा, ढोल, घुंगरू, मट्टियाँ, ढोलक इत्यादि सभी परंपरागत लोक वाद्यों का प्रयोग किया।
6. इसी तरह 60.91% लोग इस बात को मानते हैं कि गुरमीत बावा ने पंजाबी लोक-गायकी की लगभग सभी गायन शैलियों को गाया जैसे कि सुहाग, घोड़ियां, लोक बोलियां, लोक-गाथाएं इत्यादि।
7. सबसे अधिक प्रतिशत 78.09 उन लोगों की है जो इस बात से सहमति रखते हैं कि लंबी हेक उनकी गायकी की एक ऐसी विशेषता है जो उनको विलक्षण बनाती है।
8. 35.45% लोग इस बात से बहुत ज़्यादा सहमत हैं कि गुरमीत बावा की गायकी हमारे समाज एवं संस्कृति पर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में प्रभाव छोड़ रही है।

9. 61.82% लोग इस बात से सहमत हैं कि गुरमीत बावा ने समाज में पनप रही सभी बुराईयों के विरूद्ध आवाज़ उठाई जैसे कि ; नारी की निम्न दशा, दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या एवं नैतिक मूल्यों में गिरावट इत्यादि।
10. 45.45% लोग इस बात से ज़्यादा अथवा बहुत ज़्यादा सहमत है कि गुरमीत बावा के गीत हमारे समाज एवं संस्कृति का प्रतिबिंब प्रस्तुत करते हैं।
11. 40.91% लोग इस बात से बहुत ज़्यादा तो नहीं पर ज़्यादा सहमत हैं कि गुरमीत बावा की गायकी हमारे युवा वर्ग का मार्ग दर्शन करने में सक्षम है।
12. 46.36% लोग इस बात से बहुत ज़्यादा सहमत हैं कि पश्चिमी प्रभावों के बावजूद गुरमीत बावा ने पंजाबी लोक-गायकी में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है।

प्रश्नौत्तरी सर्वेक्षण के आधार पर गुणातमक विश्लेषण

प्रश्नौत्तरी के अंत में पूछे गए तीन प्रश्नों में प्रतिवादियों से पंजाबी लोक गायकी से संबंधित शैक्षणिक संस्थाओं की भूमिका, लोक गायक कलाकारों की भूमिका एवं सरकार की भूमिका के बारे में पूछा गया। इन प्रश्नों के उत्तर में लगभग सभी के मिले जुले विचार मिले। इनके विचारानुसार शैक्षणिक संस्थाओं में गुरमीत बावा से संबंधित प्रतियोगिताएं करवाई जानी चाहिए एवं पाठयक्रम का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। हमारी सरकार को लोक-गायक कलाकारों के प्रति उदार रवैया दिखाया जाना चाहिए। उनकी आर्थिक तौर पर सहायता करके उनको प्रोत्साहित किया जाना अत्यंत आवश्यक है। हमारे लोक गायक कलाकारों को पंजाबी गीतों के साथ-साथ लोक-गीतों को भी गाना चाहिए एवं अर्थहीन गायकी से परहेज़ करना चाहिए।

उपरोक्त सर्वेक्षण के आधार पर कुछ एसे तथ्य भी सामने आए जिन पर गंभीरता से विचार करना अत्यंत आवश्यक है। केवल 40 प्रतिशत लोग ही एसे पाए गए जिनकी लोक संगीत में बहुत ज़्यादा रूचि है। इसका एकाएक कारण पश्चिमी संगीत का लोक

संगीत पर प्रभाव माना जा सकता है। आज के श्रोता संगीत को सुनने की बजाय देखना अधिक पसंद करते हैं। आधुनिक संगीत के शोरोगुल ने कहीं न कहीं परंपरागत संगीत को आहत तो किया ही है। इसलिए हमारे परंपरागत लोक संगीत को बचा कर रखना एक गहरी चिंता का विषय बन गया है। इसी उद्धेश्य से लोक संगीत को प्रचारित एवं प्रसारित करने में जुटी हुईं गुरमीत बावा सच में प्रशंसा की पात्र हैं।

इसी तरह गुरमीत बावा जी को अपनी मनभावन लोक गायिका मानने वाले लोगों की प्रतिशत भी दूसरों की तुल्ना में कम पाई गई। सुरिंदर कौर की गायकी को पसंद करने वाले लोगों की संख्या ज़्यादा पाई गई। इस का कारण यह है कि गुरमीत बावा जी ने अपनी गायकी पर बाज़ारवाद को हावी नहीं होने दिया और परंपरागत गायकी पर अपनी पकड़ को मज़बूत रखते हुए केवल मंच प्रदर्शन को ही तरजीह दी। इसीलिए शायद जो लोकप्रियता सुरिंदर कौर जी के हिस्से में आई वो गुरमीत बावा जी को न मिल पाई हो। इस सब के बावजूद लगभग 50 प्रतिशत लोग इस बात को मानते हैं कि गुरमीत बावा इस सदी की एक महान एवं विलक्षण लोक गायिका है एवं उनकी गायकी उनकी समकालीन गायिकाओं से भिन्न एवं विलक्षण है।

भिन्न भिन्न आयु वर्गों में से कुछ वर्गों में चाहे गुरमीत बावा इतनी लोकप्रिय नहीं हो पाई किंतु इस बात की जानकारी सभी वर्गों के लोग रखते हैं कि गुरमीत बावा जी ने अपनी गायकी में केवल परंपरागत वाद्यों का ही प्रयोग किया है जैसे कि घुंगरू, अल्गोज़ा, मटिट्यां, चिमटा इत्यादि।

इसी तरह अधिकतर लोगों ने इस बात पर भी सहमति जताई कि गुरमीत बावा ने लगभग हर तरह की लोक गायन शैली को गाया है जैसे कि सुहाग, घोड़ीयां, लोक बोलीयां एवं लोक गाथाएं इत्यादि। गुरमीत बावा की लंबी हेक की विलक्षणता के बारे में तो छोटे बड़े एवं बूढ़े सब भलीभांति जानते हैं।

गुरमीत बावा की गायकी हमारे समाज पर कितना प्रभाव छोड़ रही है इस संदर्भ में सब से कम प्रतिशत संख्या प्राप्त हुई। इस का कारण है आज की प्रचलित गायकी एवं सोशल मीडीया का योगदान। गुरमीत बावा जैसे कलाकार लोक गायकी को प्रचारित एवं प्रसारित करने का अथक प्रयास तो कर ही रहे हैं और इस कार्य में काफी हद तक सफल भी हो रहे हैं किंतु हमारी युवा पीढ़ी इस को अपनाने के लिए तैयार नहीं है। फिर भी इस बात की उम्मीद की जाती है कि हमारे समाज पर प्रत्यक्ष अथ्वा अप्रत्यक्ष रूप में गुरमीत बावा की गायकी का जो भी प्रभाव पड़ रहा है उस से हमारे युवा भी आकर्षित हुए बिना नहीं रह पाएंगे।

गुरमीत बावा ने अपनी गायकी के माध्यम से समाज में पनप रही लगभग सभी बुराईयों के विरोध में आवाज़ उठाई है, इस बात से सहमति जताने वालों की प्रतिशत भी काफी ज्यादा मिली।गायकी के क्षेत्र में स्त्रियों का बढ़ चढ़ कर आगे आना इस बात का प्रमाण है। इस लिए सभी मानते हैं कि खास तौर पर नारी का स्तर ऊंचा उठाने का श्रेय तो गुरमीत बावा को ही जाता है। युवा वर्ग में इतनी लोक प्रिय ना होने के कारण काफी हद तक लोग इस बात पर सहमत नहीं होते कि गुरमीत जी की गायकी युवा वर्ग का मार्ग दर्शन करने में सक्षम है।

संदर्भ सूची

1. डा. मलविंदर सिंह, 'दोआबा क्षेत्र के गायक कलाकारों का संगीत के प्रसार में योगदान- एक विश्लेषणात्मक अध्ययन,' शोधप्रबंध अध्याय प्रथम, ''पंजाब का इतिहास व वर्तमान स्वरूप, पृं.14
2. डा. मलविंदर सिंह, ''दोआबा क्षेत्र के गायक कलाकारों का संगीत के प्रसार में योगदान, एक विश्लेषणात्मक अध्ययन,'' शोधप्रबंध अध्याय प्रथम, ''पंजाब का इतिहास व वर्तमान स्वरूप, पृं.16
3. डा. गुरनाम सिंह, 'पंजाबी संगीतकार', पृ. 3
4. डा. मलविंदर सिंह, 'दोआबा क्षेत्र के गायक कलाकारों का संगीत के प्रसार में योगदान, एक विश्लेषणात्मक अध्ययन,' शोधप्रबंध अध्याय प्रथम, 'पंजाब का इतिहास व वर्तमान स्वरूप' पृं.16
5. डा. कु. आकांक्षी, 'भारतीय संगीत और वैश्वीकरण', पृष्ठ. 25

अध्याय-6

गुरमीत बावा एवं समकालीन लोक गायिकाओं की गायन शैली का तुलनात्मक अध्ययन

6.1 पंजाब की लोक-गायन शैलियां - विभिन्न प्रभेद

संगीत वह ध्वनि है जो आत्मा को संपूर्ण ब्रह्माण्ड के साथ एक स्वर कर देती है। संगीत की जिन स्वर लहरियों में से कोई जाति अथवा समूह अपनी आत्मा की आवाज़ को शब्दों के द्वारा पहचानने लगता है, वही लोक-संगीत है। लोक-गीत किसी जाति के आंतरिक जज़्बों की तालबद्ध स्वाभाविक अभिव्यक्ति है जो होठों पर चलते-चलते, सदियों का फासला तय कर लेते हैं । इस तरह लोक-गायकी किसी एक व्यक्ति के निजी भावों के प्रस्तुतीकरण का माध्यम नहीं होती बल्कि संपूर्ण जाति के भावों का प्रवाह होती है।

लोक गीत जन-मानस का सर्वाधिक पूर्ण और सफल प्रतिनिधित्व करते हैं। अनादि काल से, बहुसंख्यक मानव हृदयों में प्रवाहित यह वह भावधारा है जिससे देश के जीवन और सांस्कृतिक विकास का पता चलता है। लोक गीतों की यह काव्यधारा मानवीय सभ्यता के कृत्रिम विधि-निषेधों से अनातंकित रह कर नित्य प्रवाहित रहती है।

पंजाबी लोक गीतों की भारतीय साहित्य में अपनी पृथक विशेषता है। यह बड़े विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि संगीत और ताल-स्वर की तीव्र गतिमयता की दृष्टि से भारतीय लोकगीतों में ये सर्वोच्च स्थान रखते हैं। इस विशेषता के कारण ये देश के अन्य राज्यों में भी उत्कंठा के साथ सुने जाते हैं।

अन्य लोक गीतों के समान इन में भी नारी हृदय की निर्मल, स्वच्छ, भोली-भाली एवं मुग्ध भावनाओं का चित्रण सबसे अधिक हुआ है। विवाह, बेटी की बिदाई, पतिप्रवास,

भाई का प्यार, मां की ममता आदि भावनाएं इन लोकगीतों में अधिक मिलती है और इसके साथ ही जीवन के व्यावहारिक रूप जैसे त्रिंजण आदि के गीत भी पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं।

वास्तव में पंजाब में रहने वाला प्रत्येक बच्चा बूढ़ा एवं नौजवान अपने आप में एक लोक-गायक ही है। क्योंकि जन्म लेते ही एक बच्चे के कानों में लोक-गीतों की मधुर ध्वनियां एवं ढोलक की ताल खनकने लगती है। उस बच्चे की आत्मा में लोक-संगीत एक-रस होकर रच-बस जाता है एवं जीवन भर विभिन्न रंग रूपों में उस के होठों पर खेलता रहता है।

लोक-गायकी वह गायकी है जो किसी उस्ताद अथवा गुरू में सीखी नहीं जाती, बल्कि जब हृदय में किसी गीत को गाने का भाव मचलता है तो मनुष्य सहज रूप से ही उसमें रच बस कर उसकी ध्वनि को सीख लेता है। किन्तु कभी-कभी कोई पेशावर गायक अथवा भट्ट इस सहज संगीत को अपनी कला एवं अनुभव के द्वारा निखार कर प्रस्तुत करता है।

पंजाबी लोक-गीत जिन लोक-धारणाओं एवं धुनों में गाए जाते हैं, वह शुद्ध रूप में लोक-शैलियों की धुनें एवं धारणाएं ही है जिन में सीधे-सादे पंजाबियों के दिलों की धड़कनें सुनाई देती हैं।

पंजाब की लोक-गायकी किसी भी प्रकार के बंधनों से मुक्त होने के कारण कठोर नहीं बल्कि एक वृक्ष की टहनी की भांति लचकदार है। इस में रूप की भिन्नता एवं स्वर-संगीत का स्थान परिवर्तन भी मिलता है। इनमें लय-शैली भेद भी देखने को मिलता है। पश्चिमी पंजाब में दिल की बातें 'माहिया' एवं 'ढोला' के द्वारा की जाती है, जबकि पूर्वी पंजाब में हृदय की आवाज़ को बोलियों के द्वारा प्रकट किया जाता है। पंजाबी लोक-गायकी की अनगिनत लोक धारणाओं में से 'माहिया', 'ढोला' एवं 'बोलियां' अपने आप में स्वतंत्र गायन शैलियां हैं। यह तीनों शैलियां इतनी लोकप्रिय

हुईं कि कुछ एक संस्कारी गीतों को छोड़कर बाकी बहुत से लोक-गीत इन्हीं शैलियों में ही रचे बसे मिलते हैं। इन काव्य रूपों को पंजाबियों ने भावनाओं एवं साधनाओं से सींचा है। इसीलिए यह गीत सदैव अमर हैं। पंजाबी लोक-गायकी की कुछ प्रसिद्ध गायन शैलियों का वर्णन इस प्रकार है:-

माहिया

माहिया धन-पोठोहार का एक बहुत ही प्यारा सा लोक काव्य रूप है। भावों में रचा एवं रसा हुआ एवं माधुर्य में भीगा हुआ होने के कारण कोई दूसरा काव्य रूप अथवा लोक गायन शैली इस के तुल्य नहीं पहुंच पाती। यह छोटे आकार का तीन पंक्तियों का गीत होता है। पहली पंक्ति में कोई चित्र अथवा दृष्टांत होता है। यह पंक्ति कभी-कभी प्रसंग रहित लगती है एवं मूल भाव से इसका कोई सीधा संबंध नहीं होता, किन्तु इसमें अचेतन मन की कोई स्वर लहरी होती है जो कि किसी अधूरी अथवा दबी हुई आकांक्षा का आभास करवाती है। अगली पंक्ति से चाहे इसका संबंध न भी हो, तो भी इस का गायक के मनोभावों के साथ एक रिश्ता होता है। यह पंक्ति टप्पे की लय को संतुलन में रखने अथवा अनुप्रास रचने के लिए भी रची जाती है। टप्पे का मूल भाव दूसरी एवं तीसरी पंक्ति में होता है। यह पंक्तियां किसी आंतरिक जज़्बे का शाब्दिक चित्र होती हैं।

तंदूरी ताई होई ए
बालण हड्डीयां दा
रोटी इश्के दी लाई होई ए

पाणी छन्ने विच्चों कां पीता
तेरे विच्चों रब्ब दिस्सिया
तैनूं सजदा ही तां कीता

माहिया, अधिकतर 'पहाड़ी',सिंधी, 'भैरवी' एवं सिंधड़ा इत्यादि रागों में गाया जाता है। वणजारा वेदी लिखित विश्वकोश के अनुसार;

> "माहिये दी इक अति प्रसिद्ध धुन मांड विच गाई जांदी है जो कि इक पुरानी करूणा मई रागनी है अते इस विच गाया होया माहिया सिद्धा दिल विच उत्तर जांदा है"।[1] इस गायन शैली को 'बालो माहिया' भी कहा जाता है।

डॉ जीत सिंह जोशी के अनुसार;

> 'बालो माहिया विच मर्द, औरत नूं बालो कहके संबोधित करदा है अते औरत मर्द नूं माहिया कहके संबोधित करदी है'। [2]

गड्डी चलदी ए तारां ते
अग्गे माहिया नित्त मिलदा
हुण मिलदा करारां ते

आ कोठे उत्ते आ बालो
अखीयां तरसदीयां
सानू मुखड़ा दिखा बालो[2]

ढोला

पंजाबी लोक-गायकी का एक और सुप्रसिद्ध काव्य रूप 'ढोला' है। इस गायन शैली में भी हृदय के आंतरिक भावों एवं मचलने हुए जज़्बों को अत्यंत मधुर एवं भावुक शब्दों में प्रस्तुत किया जाता है। इस गायन शैली का प्राथमिक विषय माहिए की तरह हुस्न-इश्क है, जो अनादि काल से ही मानवीय भावनाओं को अपने रंग में ओतप्रोत करता रहा है। इस की बहुत सी शैलियां प्रचलित हैं जैसे कि पोठोहारी ढोला, सांदलबार का ढोला।

पंजाबी लोकधारा विश्वकोष के अनुसार;

> 'पोठोहारी ढोला इक निबद्ध रूप विधान है। ऐह पंज सतरां दा हुंदा है अते दो टुकड़ियां विच वंडिया हुंदा है। पहले भाग विच तिन ते दूसरे विच दो सतरां हुंदीयां हन। दूसरे भाग दीयां दो सतरां पहले भाग दे प्रभाव नू डूंघाई नाल दरसाउंदीयां हन'।[3]

मेरा ढोला ते मैं हाणी
ढोले कंधा तों मंगिया पाणी
दुद्ध चा देसां, जीवें ढोला
ढोला रंगला
चिट्टी तेरी पगड़ी गुलाबी शमला

पोठोहारी ढोला अधिकतर पहाड़ी में कहरवा ताल में गाया जाता है। सांदलबार का ढोला भिन्न भिन्न तालों एवं लय में गाया जाता है। कानों पर हाथ रख कर, लंबी हेक के साथ इस तरह इस को गाया जाता है कि ऐसा प्रतीत होता है जैसे किसी युवती के दबे हुए अरमानों का कोई चित्र खींच रहा हो;

कन्नां नू सोहणे बुंदे
सिर ते छत्ते ने लंडे
केडी रिहाड़ करेंदे नू
नींदर कच्ची दे जागे
सुत्ती सुफना वाचिया
माही मिलिया खाबे
अभड़ भांदे हत्थ से जां ते मारे
ढोला कोल होवे तां जागे

बोलीयां

'बोली' पंजाब की लोक-गायकी का सबसे छोटा काव्य रूप है किंतु प्रभाव की दृष्टि से देखा जाए तो यह बहुत ही गहरी एवं रोमांचक होती है। इस में अपनी ही एक चंचलता होती है।

पंजाबी लोकधारा विश्वकोष के अनुसार;

> 'मूल रूप विच बोली इक ही तुक दी हुंदी है पर कुछ बोलियां दो, चार जां इस तों वध तुकां दीयां वी मिलदीयां हन। ज्यादातर बोलियां तिलंग राग विच ही गाईयां जांदीयां हन'।[4]

टांडे चूपणे चरी दे हाणीयां
घर च सिंधूरी अंबीयां

ढाणे लगदे मखाणियां वरगे
मित्तरां दी मुठ विच दो

घुंड कढ लै पत्तण ते अड़ीए
पाणीयां नू अग्ग लग जू

लाली मेरीयां अखां विच रड़के
अक्ख मेरे यार ही दुखे

लोरी

माँ की ममता का दूसरा नाम लोरी है। बच्चे को सुलाते समय, माँ जो गीत गाती है उसे लोरी कहते हैं। यह एक बोझल प्रकार की शब्दावली नहीं होती बल्कि हल्का-फुल्का मधुर सा संगीत होता है। इस की स्वर लहरियों में इतना रस होता है कि बच्चा इस में पूरी तरह भीग कर सो जाता है। हर पंक्ति के पीछे कुछ निरर्थक शब्दों का प्रयोग किया जाता है जिनमें से संगीत एक झरने की तरह बहता है जैसे

'ऊं', 'ऊं', 'ऊ', 'कूं' 'हूं'। लोरी की लय में एक ऐसी अनूठी मस्ती होती है जो बच्चों को सपनों की एक अलग ही दुनिया में ले जाती है। लोरियां अधिकतर तिलंग एवं भैरवी में गाई जाती हैं।[5]

सो जा काका तू
तेरी बोदी पै गई जूँ
कढढ्ण वालीयां मासीयां
कढाऊण वाला तू

नी वीर मेरा क्यों रोवे
सोने दे कटोरे विच मूंह धोवे

घोड़ीयां

डॉ करनैल सिंह थिंद के अनुसार;

> 'पंजाबी लोक-गायकी की एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण गायन शैली है 'घोड़ी'। यह एक प्रकार की रस्म है जो कि दूल्हे के घोड़ी चढ़ने पर निभाई जाती है। उस रस्म के दौरान गाए जाने वाले गीत को घोड़ी का नाम दिया गया। इस का गायन शादी से आठ दस दिन पहले से ही आरंभ हो जाता है। बारात की रवानगी के समय जब दूल्हा सेहरा बाँध कर, कल्गी सजा कर घोड़ी पर सवार होता है तो उस समय पर इस गायन शैली का गायन किया जाता है। इसमें दूल्हे को 'बन्ना' अथवा 'महाराजा' कह कर संबोधित किया जाता है'।[6]

इस गायन शैली में अधिकतर बहन की भाई के प्रति, उसकी शादी की खुशी प्रकट की जाती है।

वीरा कक्कीयां ते चंबीयां घोड़ीयां
तू ते किहड़ी दा असवार, नी चुण लियाओ
चुण लियाओ चंबा ते गुलाब

गुँद लियाओ वीरां दे हार
नी गुँद लियाओ
घोड़ी तां मेरे वीर दी
बिंद्रावन विचों आई

इस रस्म में बहन का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। बहन अपने भाई की घोड़ी की वाग गुँदाई की रस्म अदा करती है जिसके बदले में भाई से शगुन मांगती है।

घोड़ीयां उस पंजाब का प्रतिबिंब प्रस्तुत करती है जिसमें किसी न किसी रूप में पूरा गांव शामिल होता था। लड़के की शादी की प्रत्येक रस्म को एक धार्मिक कर्म समझ कर पूरा किया जाता था, परंतु आज शादियों में से घोड़ी ही अलोप हो गई है तो 'घोड़ी' गाने का सवाल तो बहुत बाद में आता है।

सुहाग

जिस तरह घोड़ीयां लड़के की शादी से संबंधित गायन रूप है, उसी तरह लड़की की शादी पर प्रत्येक रस्म को पूरा करते समय जो गीत गाए जाते हैं उनको 'सुहाग' की संज्ञा दी जाती है। जिस तरह 'घोड़ी' में दूल्हे के परिवार की ज़रूरत से ज्यादा ही प्रशंसा की जाती है एवं उस से संबंधित स्त्री किरदारों का भी ज़िक्र किया जाता है जैसे कि चाची, ताई, मां, बहन इत्यादि, दूसरी तरफ सुहाग में दुल्हन अथवा लड़की को बेचारी कह कर दर्शाया जाता है, जो कि अपनी मां एवं बाबुल को मिन्नतें करती हैं कि मुझे कुछ देर और अपने घर में शरण दे दो।

अज दी दिहाड़ी रख डोली नी मां
रवाँ बाप दी बण के गोली नी मां

डॉ करनैल ंसंह थिंद के अनुसार;

'सुहाग दा शाब्दिक अर्थ है खुशनसीबी जां चंगी किस्मत'।[7]

इन गीतों में लड़की का अपने मां-बाप के प्रति प्रेम, मायके घर से जुड़ी यादें एवं लड़की के वर एवं घर से संबंधित उस के जज़्बातों का वर्णन होता है। उसकी आकांक्षाओं एवं इच्छाओं का वर्णन होता है। उसका मायके घर से बिछड़ने के भावों का वर्णन होता है;

साडा चिड़ियां दा चंबा वे
बाबुल असां उड्ड जाणा
साडी लंबी उडारी वे
बाबुल केहड़े देस जाणा

इस तरह सुहाग लड़की की शादी के शगुन से संबंधित ऐसे गीत हैं जो कि सदियों से हमारी संस्कृति का अंग बन कर लोक-कंठ द्वारा हम तक पहुंचे हैं। इन में हमारी संस्कृति के एक विशेष पक्ष को बड़े सौंदर्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

सिठ्ठणीयां

'सिठठ्णी' पंजाबी लोक-गायकी का एक ऐसा रूप है जिस का उद्देश्य व्यंग्य, कटाक्ष अथवा तन्ज़ के द्वारा श्रोताओं का मनोरंजन करना होता है।

भाई काहन सिंह नाभा लिखते है;

> 'सिठठ्णी दा शाब्दिक अर्थ सिठठ् तों पैदा होया है जिसदा अर्थ है अशिष्ट बाणी, गाली-गलोच अते व्यंग दे नाल उच्चारण कीती होई बाणी'।[8]

लोक-साहित्य के दृष्टिकोण से देखा जाए तो सिठठ्णी एक ऐसा खुला गीत है जिस में एक सुलझे हुए ढंग से किसी से गाली-गलोच की जाती है। दूसरे शब्दों में जिस व्यक्ति को सिठठ्णी का लक्ष्य बनाया जाता है, उस के स्वभाव, आचार, व्यक्तित्व, आदतें, पहरावा एवं व्यवहार पर कटाक्ष करके उस पर व्यंग्य कसा जाता है। इस तरह

शादी पर इकट्ठे हुए सभी सगे संबंधियों एवं रिश्तेदारों का मनोरंजन किया जाता है। जैसे कि:

साडे वेहड़े मांदरी
मुंडे दी भैण बांदरी

कुड़ी तां साडी तिल्ले दी तार ए
मुंडा तां लगदा निरा घुमियार वे
जोड़ी तां फबदी नईं
निलज्जियों लज्ज तुहानू नईं

सिठठ्णीयां दादका एवं नानका परिवार द्वारा आपस में एक दूसरे को दी जाती हैं। इस दौरान विचोले को भी नहीं छोड़ा जाता। सिठठ्णीयों की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि इस में किए गए अपहास का कभी भी कोई बुरा नहीं मनाता। ऐसा करने से रिश्तों में नज़दीकियां बढ़ती हैं। इस तरह यह हमारे पंजाब के लोक जीवन का प्रतिबिंब बिल्कुल नवीन एवं भिन्न दृष्टि से प्रस्तुत करती हैं।

इन प्रमुख गायन रूपों के अतिरिक्त और भी पंजाबी लोक-गायन रूप हैं जैसे कि हेयरा, पत्तल, थाल, छंद परागा, कीकली, अलाहुणियां, कीरना, सद, इत्यादि।

पंजाब की लोक-गाथाएं

उपरोक्त गायन रूपों के इलावा पंजाबी लोक-गायकों की एक और गायन शैली है जिस को 'लोक-गाथा' के नाम से जाना जाता है। वास्तव में लोक-गाथा किसी यथार्थ ऐतिहासिक घटना अथवा बिंदु पर रचित कथा अथवा कहानी है जिसके लेखक के बारे में कोई जानकारी नहीं होती। इसमें किसी प्रसिद्ध घटना अथवा पात्र का वर्णन काव्यात्मक ढंग से किया गया होता है। चाहे इन लोक-गाथाओं में कोई शिक्षा अथवा उपदेश तो नहीं होता, फिर भी सीधे-असीधे तौर पर यह कोई न कोई संदेश ज़रूर दे

जाती है। इनकी भाषा सरल एवं सीधी होती है किंतु पाठकों एवं श्रोताओं पर तीक्षण प्रभाव छोड़ जाती है।

साहित्य कोष के अनुसार;

> 'अंग्रेज़ी भाषा में जिसको 'Ballad' कहते हैं, उसको पंजाबी में गाथा कहा जाता है। गाथा वह लोक-कथा होती है जिसमें किसी घटना अथवा पात्र का वर्णन हो, अर्थात् गाथा गीतों में गाई जाने वाली एक कहानी है। ऋग्वेद में भी यज्ञ के समय गाथा के गाए जाने की परंपरा थी'।[9]

साहितय कोष के अनुसार;

लोक गाथा के चार प्रमुख भेद प्रत्यक्ष रूप में प्राप्त होते हैं;

(1) प्रणय-गाथा

(2) वीर-गाथा

(3) ऐतिहासिक गाथा

(4) मिथिहासिक गाथा[10]

प्रणय-गाथा :-प्रणय गाथा पंजाबी लोक-गायकी का सबसे लोकप्रिय रूप है। इसमें किसी प्रेम-दंपत्ति की प्रेम कथा का चित्रण होता है जैसे; हीर-रांझा, सोहणी-महीवाल, मिर्ज़ा साहिबां, सस्सी-पुन्नू, मलकी-कीमा इत्यादि।

हीर आखदी जोगिया झूठ बोलें

कौण रूठड़े यार मनांवदा ई

वीर-गाथा :-वीर गाथा के इस प्रकार में शूरवीरों की मर्दानगी की प्रशंसा की जाती है। इन गाथाओं के नायक पहले से ही लोक-मनों में बसे होते हैं एवं यहीं गीतों का रूप धारण कर लेते हैं। जैसे कि जग्गा डाकू के जीवन से संबंधित लोक-गाथा;

जग्गा जम्मिया ते मिलण वधाईयां

वड्डा होया डाके मारदा।

ऐतिहासिक गाथा :- ऐतिहासिक गाथा के इस प्रकार में किसी ऐतिहासिक व्यक्ति का बलिदान अथवा उसकी शूरवीरता का वर्णन किया होता है। जैसे कि साहिबज़ादों की शहीदी, चमकौर का साका, भाई बिधी चंद की वीरता इत्यादि।

मिथिहासिक गाथा :- इस में गीत का केंद्र-बिंदु कोई मिथ होती है। जैसे कि गुग्गा पीर की गाथा।

डॉ नरेन्द्र मोहन के अनुसार;

> 'लोक-गीत हो या लोक-गाथागीत, वे जंगल के उन पेड़ों के समान हैं जिनकी जड़ें अतीत में अवस्थित हैं। वहीं से जीवन पाकर उसकी शाखाएं, कोपलें एवं फल आदि प्रस्फुटित होते हैं और वर्तमान को एक नई शक्ति एवं चेतना प्रदान करते हैं जिससे वह सजीव हो उठता है और उसके सांस्कृतिक अध्याय में एक नया परिच्छेद जुड़ जाता है'।[11]

6.2 पंजाब के लोक-गायक कलाकार

जिस व्यक्ति द्वारा लोक-गीतों का गायन किया जाता है, उस को लोक-गायक अथवा लोक-गायिका कहा जाता है। लोक-गायक नाम से ही यह प्रभाव मिलता है कि लोगों का गायक अथवा जन-साधारण का गायक। इसलिए जिस व्यक्ति के द्वारा लोक-गायकी के स्वरूप को ध्यान में रखते हुए गायन किया जाता है अथवा दूसरे शब्दों में जो कलाकार जन-साधारण के लिए गाता है उस को लोक-गायक कहा जाता है। डॉ जसबीर कौर के अनुसार;

> 'संगीत इक परिवर्तनशील कला है अते इस परिवर्तन दे नाल-नाल लोक गायकी दे अर्थां विच वी विस्थार होया है। इस परिवर्तन दे आधार ते किहा जा सकदा

है कि वर्तमान समय विच केवल लोक-गीत गान वाले कलाकार नू ही लोक-गायक जां लोक-गायिका नहीं किहा जांदा बल्कि जनसाधारण विच प्रवाणित हो चुकिया गायक, जो लोक-गीतां दे नाल-नाल होर गीतां दा गायन वी करदा होवे, लोक-गायक जां लोक-गायिका कहाउन दा हकदार हो जांदा है'।[12]

पंजाब की संस्कृति एक अमीर संस्कृति है, इस संस्कृति को सजीव रखने का पूरा-पूरा श्रेय हमारे लोक-गायक कलाकारों को जाता है, जिन्होंने भिन्न-भिन्न रूपों में इन गायन शैलियों को गाया एवं सजीव रखा।

इन कलाकारों ने अपनी कला में बहुत से नए-नए दृष्टिकोण एवं तजुर्बे अपनाते हुए एक लंबा सफर तय किया है। समय के साथ-साथ इन कलाकारों की गायकी के विभिन्न पक्ष जैसे कि साहित्यक पक्ष, प्रस्तुतीकरण एवं अदायगी में भी बहुत बदलाव आ चुका है। परंतु इन में से कुछ कलाकार ऐसे है जिन्होंने अब तक पंजाबी लोक-गायकी की अमीर परंपरा को सजीव रखा है।

6.3 गुरमीत बावा की समकालीन लोक-गायिकाएं

वर्तमान युग में किसी भी क्षेत्र में औरतें मर्दों से पीछे नहीं रही है, बल्कि उनसे भी आगे निकल कर कार्य कर रही हैं। ऐसा ही एक क्षेत्र है गायकी का क्षेत्र, जिसमें शायद महिलाएं, मर्दों से भी बढ़ कर सफलता हासिल कर रही हैं। पंजाब की लोक-गायकी में लोक-गायिकाओं के नाम लोक-गायकों से कहीं ज्यादा है। पंजाब की इन गायिकाओं ने पूरे भारत में ही नहीं बल्कि जहां जहां भी पंजाबी बसते हैं, अपनी गायकी द्वारा श्रोताओं को अपने साथ बाँध कर रखा एवं पंजाब की लोक-गायकी को संपूर्ण विश्व में प्रचारित एवं प्रसारित किया। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि यह गायिकाएं उस समय में गायकी के क्षेत्र में आईं जब गाना तो बहुत दूर की बात, लड़कियों के लिए गाना सुनने तक की भी मनाही थी। तरह तरह के प्रतिबंधों के

बावजूद वे तीक्षण संघर्ष का सामना करते हुए गायन के क्षेत्र में आगे ही आगे बढ़ती गईं। इस बात से यह बात भली-भांति प्रामाणित हो जाती है कि समाजिक एवं आर्थिक दबाव एवं विरोधी परिस्थितियों के बीच में से ही संवेदनशीलता एवं अमर कला का जन्म होता है। पंजाब के लोक-संगीत जगत की कुछ महान गायिकाओं जो कि गुरमीत बावा की समकालीन गायिकाएं रही हैं, का विवरण इस प्रकार है;

6.3.1 सुरिंदर कौर; जीवन एवं गायन शैली की विशेषताएं

'पंजाब की कोयल' के नाम से जानी जाती महान लोक-गायिका सुरिंदर कौर का नाम कौन नहीं जानता । लगभग 77 वर्ष की आयु होने तक वह विश्व के कोने कोने में अपनी आवाज़ का जादू बिखेरती रहीं। यदि इस महान गायिका को केवल पंजाब की ही नहीं बल्कि 'विश्व की कोयल' कह दिया जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। सुरिंदर कौर का जन्म 25 नवंबर 1929 को लाहौर में पिता श्री बिशन दास एवं माता श्रीमति माया देवी के घर में हुआ। सुरिंदर कौर केवल दसवीं कक्षा तक ही पढ़ाई कर सकीं। छोटी उम्र से ही सुरिंदर कौर गाने लगी थी। शुरू शुरू में परिवार ने इस बात का काफी विरोध किया पर फिर उसको केवल शबद एवं भजन गाने की आज्ञा दे दी। सुरिंदर कौर ने उस्ताद गुलाम अली खां से गायन सीखने की इच्छा प्रकट की, किंतु किसी कारणवश वह गुलाम अली के पास सीखने नहीं जा पाईं। फिर वह गुलाम अली खां के भानजे उ. इनायत हुसैन के पास सीखने जाने लगीं, जिनसे उनको शास्त्रीय संगीत की भरपूर जानकारी प्राप्त हुई। इनायत हुसैन के लावा सुरिंदर कौन ने नियाज़ हुसैन शामी सलामत, उ. अब्दुल रहमान खां, राम शरण, कुंदन लाल घोष इत्यादि उस्तादों से भी शिक्षा हासिल की।

सुरिंदर कौर का विवाह 1948 में प्रो.जोगिंदर सिंह सोढी के साथ हुआ। सोढी जी की पारखी नज़र ने सुरिंदर कौर की कला को पहचाना एवं उनका सबसे बड़ा सहारा

बने। बटवारे के बाद वे अपने पति के साथ कुछ वर्ष मुंबई में रहीं जहां उन्होंने गुलाम हैदर का संगीतबद्ध गीत, फिल्म शहीद के लिए गाया जो कि बेहद मकबूल हुआ;

'बदनाम न हो जाए मुहब्बत का अफसाना'

कुछ वर्ष मुंबई में बिताने के बाद वे दिल्ली में आ कर बस गए।

सुरिंदर कौर ने अपनी बहन प्रकाश कौर के साथ मिलकर लगभग 500 से भी अधिक लोक-गीत गाए हैं। इनके कुछ प्रचलित गीत यह हैं;

1. सड़के सड़के जांदीए मुटियारे नी
2. मांवां ते धीआं रल बैठीआं नी माए
3. नी मैं कत्तां परीतां नाल चरखा चंनण दा
4. सूई वे सूई जालमा सूई वे
5. नच्च लैण दे नी मैनूं वीर दे वियाह विच
6. चन्न वे कि शौंकण मेले दी

सुरिंदर कौर ने बहुत सारी पंजाबी एवं हिंदी फिल्मों में पार्श्व गायिका के तौर पर भी गाया जैसे कि नदिया के पार, प्यार की जीत, दो मुटियारां, सतलुज दे कंढे, कनीज़, रूप-लेखा, सांवरिया, सबक, बड़ी बहू, आंधियां इत्यादि।

अपनी बहन प्रकाश कौर के इलावा सुरिंदर कौर ने आसा सिंह मस्ताना, दीदार संधु, सतीश भाटिया, पम्मी बाई, सुरिंद्र कोहली, हरचरण गरेवाल जैसे गायकों के साथ भी दोगाने गाए। सुप्रसिद्ध लेखक निंदर घुगियाणवी लिखते हैं;

> 'जिथे सबतों वध लोकगीत गाउण वाली सुरिंदर कौर इक इकल्ली लोक गायिका है, ओथे सबतो वध दोगााने गान वाली गायिका वी सुरिंदर कौर ही है। इस तरह ओह संख्यात्मक अते गुणात्मक पख तो सारीयां गायिकावां दी श्रेणी विच सबतों पहले नंबर ते खड़ी होई नजर आंदी है'।[13]

सुरिंदर कौर ने पंजाबी लोक-गायकी को अमेरिका, कैनेडा, रूस, पोलैंड, चीन एवं पाकिस्तान इत्यादि देशों में भी प्रचारित किया। बलवंत गारगी सुरिंदर कौर के बारे में एक निबंध में लिखता है;

> ''सुरिंदर कौर की आवाज़ उस बाँसुरी की तरह है, जो वर्षों तक तेल में रसी रही हो। वह पंजाब के लोक-सांगीतिक विरासत का प्रकटीकरण है। उसने पंजाबियों के गहरे सपनों एवं उमंगों को अपने गीतों के द्वारा मूर्तिमान किया है एवं उनकी आकांक्षाओं को हुस्न बख्शा है"।[14]

सुरिंदर कौर को 'संगीत नाटक अकादमी' की तरफ से 'सदी की गायिका' उपाधि से नवाज़ा गया। भारत सरकार की तरफ से 2006 में 'पदम श्री' की उपाधि मिली। पंजाब सरकार की तरफ से सुरिंदर कौर के 75000 की नकद राशि से सम्मानित किया गया एवं गुरू नानक देव यूनीवर्सिटी की तरफ से डी.लिट. की डिग्री प्रदान की गई। अपने जीवन के अंतिम समय में सुरिंदर कौर की सेहत कुछ ज्यादा ही बिगड़ने के कारण, उनकी दो बेटियां उन्हें अमेरिका अपने पास ले गईं। वहीं पर 15 जून 2006 को उनका देहांत हो गया। पंजाब वासियों की तमन्ना थी कि उनको पंजाब में ला कर अग्नि दी जाए किंतु यह इच्छा पूरी न हो सकी।

सुरिंदर कौर की अमर आवाज़ एवं लोक-गायकी की विरासत को उनकी बड़ी बेटी डौली गुलेरिया और प्रफुल्लित कर रही है।

सुरिंदर कौर की गायन शैली की विशेषताएं

1. गंभीरता :- सुरिंदर कौर जी की गायकी में अत्यंत गंभीरता देखने को मिलती है। उनके स्वरों के लगाव की गंभीरता ही उनकी गायकों को चार चाँद लगा देती है। यह गंभीरता उनके प्रत्येक गीत के बोलों में भी नज़र आती है। जैसे कि शिव बटालवी के

गीतों को जिस गहराई से सुरिंदर कौर जी ने गाया है, शायद ही कोई लोक-गायिका अथवा गायक गा सके।

2. सुरीलापन :- मँझे हुए उस्तादों से शास्त्रीय संगीत की शिक्षा लेने वाली गायिका में ग़ज़ब का सुरीलापन होना तो स्वाभाविक ही है। बलवंत गार्गी अपने रेखा चित्र में लिखता है कि ''सुरिंदर कौर की आवाज़ उस बाँसुरी की तरह है जो कई वर्षों तक तेल में डूबी रही हो। वह पंजाब की लोक-सांगीतिक विरासत की अभिव्यक्ति है। उसने पंजाबियों के सपनों एवं उमंगों को अपने गीतों द्वारा मूर्तिमान किया एवं उनकी आकाँक्षाओं को हुस्न दिया"।

3. स्वर-लगाव की कोमलता :- सुरिंदर कौर जी की गायकी में एक लगाव की कोमलता प्रत्यक्ष रूप में सुनने को मिलती है। इतनी आसानी से वह तार सप्तक के स्वरों को छू जाती है कि इस बात का आभास ही नहीं होता कि उनको ऊंचे स्वर को पकड़ने में कोई कठिनाई हुई हो।

4. स्पष्ट उच्चारण :- गीत के बोलों का साफ एवं स्पष्ट उच्चारण इनकी गायकी की एक और विशेषता रही है। पंजाबी भाषा का सहज एवं स्पष्ट उच्चारण ही उनका पंजाबियों के दिलों पर राज करने का एक बड़ा कारण था। यहीं कारण था कि उनको 'पंजाब की कोयल' की उपाधि दी गई।

5. लोक-वाद्यों का प्रयोग :- सुरिंदर कौर जी ने अपनी गायकी में हारमोनियम एवं तबले के साथ साथ लोक वाद्यों का प्रयोग भी किया। घुंगरू का प्रयोग उनकी गायकी का एक विलक्षण पहलू रहा

6. खटका एवं मुर्की का प्रयोग :- सुरिंदश्र कौर जी की गायकी में खटका एवं मुर्की का प्रयोग अत्यंत सुंदरता के साथ सुनने को मिलता है। इतनी सफाई एवं स्पष्टता से

वह खटका एवं मुर्की का प्रयोग करती थीं कि उनकी गायकी में एक मँझे हुए शास्त्रीय संगीत कलाकार की झलक देखने को मिलती थी।

7. **भाव पक्ष एवं कला पक्ष का सुमेल :-** सुरिंदर कौर जी की गायकी में भाव एवं कला पक्ष दोनों का एक सुंदर सुमेल देखने को मिलता है। घरानेदार गायकी होने के कारण कला पक्ष होना तो स्वाभाविक ही है, किंतु साथ ही गीत के बोलों के अनुकूल भाव पक्ष को प्रस्तुत करना उनकी गायकी की बहुत बड़ी विशेषता रही है।

6.3.2 नरिंदर बीबा; जीवन एवं गायन शैली की विशेषताएं

पंजाबी लोक-संगीत के क्षेत्र में कुछ आवाज़ें ऐसी हैं जिन्होंने अपनी एक विलक्षण गायकी के द्वारा लोक-गायकी में एक अलग जगह बनाई है। उन आवाज़ों में से एक आवाज़ है स्व. नरिंदर बीबा जी की। लंबी हेक एवं अल्गोज़ों के साथ नरिंदर बीबा के द्वारा गाए हुए गीत एवं धार्मिक गीत आज भी घर-घर में सुनाई देते हैं।

नरिंदर बीबा यह भली-भांति जानती थी कि श्रोता क्या सुनना चाहते हैं। श्रोताओं की पसंद को ध्यान में रख कर वह झट से गीत की तर्ज़ बना कर गा लेती थी। वार गायन में नरिंदर बीबा का कोई मुकाबला ही नहीं था। उस के वार गायन को सुनकर श्रोता भी खूब जोश में भर जाते थे।

नरिंदर बीबा संगीत को एक आलौकिक शक्ति मानती थी। उसका मानना था कि संगीत और स्वर ही उसकी ज़िंदगी है जो अंतिम श्वास तक उसके साथ चलेंगे। अंतिम श्वास तक वह इस बहुमूल्य संगीत को लोगों में बाँट कर समाज की सेवा करना चाहती थीं। मंच प्रदर्शन से पहले वह मंच के आगे नत-मस्तक होती थी।

नरिंदर बीबा का जन्म सरगोधा पाकिस्तान के गाँव चक 120 में स. फतेह सिंह के घर 13 अप्रैल 1941 को हुआ। बंटवारे के बाद वे कुछ वक्त खमाणों और फिर

लुधियाना आ कर बस गए। 1957 में लुधियाना के ही सरकारी कालेज से बी.ए. की। गाने का शौक तो उनको बचपन से ही था। मंच पर सबसे पहली प्रस्तुती नरिंदर बीबा ने 17 वर्ष की आयु में दी। वह उस्ताद यमला जट्ट जी से अत्यधिक प्रभावित थी। इसलिए उन्हीं को गुरू धारण कर उन्हीं का ही लिखा गीत सबसे पहले गाया जिस के बोल थे;

ओहने कहीयां ते मैं सहीयां
नी मेहणा लोकां दा

उस्ताद जी के परमार्श पर नरिंदर बीबा ने मास्टर हरिदेव जी से शास्त्रीय संगीत भी सीखा। उसके बाद नरिंदर बीबा जी के गीत रेडियो का श्रृंगार बन गए। 1960 में एक कुशल मंच संचालक स. जसपाल सिंह के साथ उनका विवाह हो गया।

नरिंदर बीबा की आवाज़ को घर-घर पहुंचाने का श्रेय रेडियो को ही जाता है। उन्हीं दिनो, जब बीबा की गायकी अपनी चर्म सीमा पर थी, दोगाना गायकी काफी प्रचलित हो रही थी। बीबा ने भी अपने गुरूभाई जगत सिंह जग्गा के साथ अपनी जोड़ी बना कर मिर्ज़ा जैसी लोक गाथाओं को गाकर लोगों के दिलों में और भी जगह बना ली। बेली राम का अल्गोज़ा उनके गायन को चार चाँद लगा देता था। ऐसा लगता था कि जैसे समय ठहर गया हो। जगत सिंह जग्गा के इलावा बीबा ने हरचरण गरेवाल, दीदार संधु, मोहम्मद सद्दीक, मा. हरि देव इत्यादि के साथ भी काफी गीत गाए। पंजाबी फिल्मों मे भी मोहम्मद रफी एवं महेन्द्र कपूर जी के साथ भी बीबा ने अपनी गायकी के जौहर दिखाए।

बेली राम ने 32 वर्ष तक बीबा के साथ अल्गोज़े बजाए। अल्गोज़े की धुन पर बीबा कानों पर हाथ रख कर लंबी हेक लगाती थी तो श्रोता मंत्र मुग्ध हो जाते थे;

पासे हटजा ज़ालमा

मैं पंजाबण जट्टी आई

दुध मक्खणां नाल पली जवानी

खांदी दुध मलाई

देव थरीके वाला कहता है,

> ''सचमुच ही नरिंदर बीबा दे गीतां विच पंजाब बोलता सी, भावें ओह विछोड़े दा गीत होवे, जां धमाल पाउण वाला।''[26]

पंजाबी गायकी को समृद्ध करने में नरिंदर बीबा का बहुत बड़ा योगदान रहा है। नरिंदर बीबा ने 56 वर्ष की आयु पूरी कर, 1997 में 27 जून के दिन आखिरी श्वास लिए।

नरिंदर बीबा की गायन शैली की विशेषताएं

(1) खुली एवं खनकती हुई आवाज़ की मल्लिका :- नरिंदर बीबा की आवाज़ इतनी खुली एवं खनक से भरपूर थी कि बहुत ऊंचे स्वर अर्थात तार एवं अति तार सप्तक के स्वर भी वह थोड़ा सा मूंह खोलकर आराम से लगा लेती थीं। इस संदर्भ में उनके साथ हरमोनियम पर संगत करने वाले मा. नरिंदर सिंह जी का कहना था कि नरिंदर बीबा की आवाज़ इतनी खुली थी कि उन का गाया हुआ मिर्ज़ा शायद ही कोई गा सके।

(2) गायकी में गंभीरता :- नरिंदर बीबा जी खुद भी एक गंभीर स्वभाव की गायिका थीं। यही गंभीरता उनकी गायन शैली की एक विशेषता भी है। उनके गाए हुए सुहाग में इतनी गंभीरता झलकती है कि मन आनंदित एवं शांत हो जाता है।

(3) बोलों का सहज उच्चारण :- प्रत्येक गीत अथवा किसी भी तरह की गायन शैली को बीबा जी बहुत ही नम्र एवं सहज तरीके से गाती थीं। मिर्ज़ा जैसी ज़ोरदार गायकी को भी गाने के लिए स्वर लगाव में उनको कोई कठिनाई नहीं होती थी।

(4) स्वरों की मल्लिका :- नरिंदर बीबा जी एक अत्यंत सुरीली गायिका थीं। विशेष तौर पर उनके द्वारा गाए हुए धार्मिक गीत तो रौंगटे खड़े कर देने वाले होते थे।

(5) हेकदार गायकी :- पंजाबी लोक-गायकी में गुरमीत बावा के अतिरिक्त किसी गायिका ने 'हेक' का प्रयोग किया है तो वो नरिंदर बीबा जी हैं। वह भी मिर्ज़ा अथवा जुगनी गाते हुए हेक का प्रयोग करती थीं किंतु उनकी हेक लगाने का ढंग विलक्षण था।

(6) लोक-वाद्यों का प्रयोग :- नरिंदर बीबा जी ने हरमोनियम के साथ तो गाया ही किंतु भिन्न भिन्न लोक-वाद्यों का प्रयोग भी किया जैसे कि अल्गोज़े, घड़ा इत्यादि। सुप्रसिद्ध अल्गोज़ा वादक मा. बेली राम जी ने 34 वर्ष इनके साथ अल्गोज़े पर संगत की।

(7) मंत्र मुग्ध होकर गाना :- नरिंदर बीबा जी ने जो भी गायन शैली गाई उसमें पूरी तरह मंत्र मुग्ध हो कर उसके भावों का प्रस्तुतीकरण किया। चाहे वह गीत बिछोड़े का हो, चाहे धमाल से भरपूर। यह उनके गायन की बहुत बड़ी विशेषता थी।

6.3.3 जगमोहन कौर; जीवन एवं गायन शैली की विशेषताएं

जगमोहन कौर का जन्म 15 अक्तूबर 1948 को रोपड़ के एक गाँच बूरमाजरा में स. गुरबचन सिंह के घर हुआ। वह एक पढ़ी लिखी लड़की थी जिसने जे.बी.टी. करके अध्यापन को अपना कार्य क्षेत्र बनाया। बचपन से ही जगमोहन कौर को गीत-संगीत से काफी लगाव था। उसने सबसे पहले अपना संगीत गुरू संगीतकार एस. महेन्द्र को बनाया।

जगमोहन कौर ने दोगाना गायकी के दौर में के. दीप को अपना साथी चुना जो कि असल जिंदगी में भी उनके जीवन साथी बनें। जगमोहन कौर के मंच पर आने से पहले ही के. दीप. मंच संचालन किया करते थे एवं श्रोताओं का खूब मनोरंजन किया करते थे। फिर दोनों की जोड़ी ने तो पंजाबी लोक-गायकी के क्षेत्र में एक उथल पुथल ही मचा दी। गाते हुए मंच पर के. दीप जगमोहन को 'माई मोहणो' कह कर संबोधित करते थे।

जगमोहन का मंच पर गाने का अंदाज़ इतना खुला डुला एवं बेझिजक था कि कई बार तो वह दुपट्टा उतार कर एक तरफ रख देती थी और अपनी दिलकश अदाओं से श्रोताओं को पागल कर देती थीं। जगमोहन की समकालीन गायिकाओं ने मंच पर नाज़-नखरे एवं भिन्न-भिन्न अदाओं का अंदाज़ भी जगमोहन से ही सीखा।

जगमोहन कौर का गाया एक गीत आज भी श्रोताओं का खूब मनोरंजन करता है;

हो मेरा बड़ा करारा पूदना
नी मेरा बागीं रहिंदा पूदना

उसका गाने का अंदाज़ इतना दिलकश था कि श्रोता एक दम खामोश हो जाते थे। गाते हुए वह इतनी मस्ती में आ जाती थी कि उसे समय का भी ध्यान नहीं रहता था।

जगमोहन कौर, लोक-गाथा मिर्ज़ा का गायन अपने ही अंदाज़ में करती थी ;

हो गलीयां हो जाण सुन्नीयां
ते विच मिर्ज़ा यार फिरे

उसका गाया एक और गीत अत्यधिक प्रसिद्ध हुआ ;

घुंड विच नईं लुकदे
सजणा नैण कुआरे

जगमोहन कौर एक बहुत ही सुंदर व्यक्तित्व की मलिका थी। तीखे नयन-नक्श एवं चुस्त फुर्तीला शरीर, हर वक्त मुस्कुराता हुआ चेहरा उसकी पहचान थी। अपनी जादूमई आंखों से वह श्रोताओं को बांध लेती थी।

जगमोहन कौर को पंजाब की बहुत सी संस्थाओं ने सम्मानित किया। प्रो. मोहन सिंह फाऊंडेशन लुधियाना की तरफ से उसको 'प्रसिद्ध गायिका' की उपाधि देकर पुरस्कृत किया गया।

6 दिसंबर 1998 को वह हमेशा-हमेशा के लिए अपने श्रोताओं को अलविदा कह गई। शारीरिक तौर पर वह चाहे हम सब से अलग हो चुकी है, लेकिन श्रोताओं के दिल-दिमाग में हमेशा के लिए अमर रहेगी।

जगमोहन कौर की गायन शैली की विशेषताएं

(1) गायकी में चंचलता :- पंजाब की सुप्रसिद्ध लोक-गायिकाओं में जगमोहन कौर एक ऐसी गायिका थी जिनकी गायकी में चंचलता थी। उन्होंने अधिकतर वहीं गीत गाए जो कि चंचलता की माँग करते हों।

(2) अदाकारी से भरपूर गायकी :-जगमोहन कौर की गायकी दिलकश अदाओं से इतनी भरपूर थी कि वह श्रोताओं को बांध लेती थी।

(3) खुली एवं जोरदार गायकी :- चंचलता एवं दिलकश अदाओं के साथ जगमोहन कौर जी की गायकी में इतना खुलापन था कि उनकी गायकी में एक ज़िंदादिल मर्दानगी नज़र आती थी। यहीं कारण था कि श्रोता उनके गायन समारोहों में बँध कर बैठे रहते थे।

(4) सुरीलापन :- सभी विशेषताओं के ऊपर सबसे बड़ी बात यह थी कि वह एक बहुत ही सुरीली गायिका थीं। उनकी आवाज़ में एक अजीब सी कशिश थी जो सबको अपनी तरफ खींच लेती थी।

6.3.4 रणजीत कौर; जीवन एवं गायन शैली की विशेषताएं

दोगाना गायकी के युग में एक जोड़ी ऐसी है जिसको एक दूसरे से अलग करके उनका ज़िक्र नहीं किया जा सकता वह जोड़ी है मोहम्मद सिद्दीक एवं रणजीत कौर की। इस जोड़ी की सफलता के साथ साथ ही दोगाना गायकी के दौर में और भी जोड़ियां शामिल होती गईं और पंजाबी लोक-गायकी के परिवार में बढ़त होती गई।

रणजीत कौर का जन्म 19 अक्तूबर 1950 में रोपड़ के एक गाँव उच्चा खेड़ा में हुआ। रणजीत को बचपन से ही गाने की प्रेरणा, आसा सिंह मस्ताना, सुरिंदर कौर एवं प्रकाश कौर की गायकी से मिली। वह अक्सर रेडियो पर इनको सुना करती थी। किसी भी समारोह पर वह सुरिन्दर कौर का गाया गीत ही गाया करती थी;

चन वे कि शौंकण मेले दी

रणजीत के पिता स. आत्मा सिंह जी का संगीत के प्रति बहुत लगाव था। वह अक्सर ही घर में सांगीतिक महफिलें सजाया करते थे। इन महफिलों में पटियाला संगीत घराने के उ. बाकर हुसैन एवं फतेहगढ़ साहिब से फक्कर साहिब का भी आना जाना रहता था। रणजीत कौर ने इन्हीं उस्तादों से सीखना शुरू कर दिया।

मैट्रिक तक की पढ़ाई पूरी करने के बाद रणजीत कौर ने हरचरण गरेवाल एवं चांदी राम के साथ मंच पर दोगाना गाना शुरू कर दिया। इन के इलावा रणजीत कौर ने रंगा सिंह मान, साबर हुसैन साबर एवं जगजीत सिंह जीरवी के साथ भी गाया।

मोहम्मद सिद्दीक के साथ रणजीत कौर का पहला प्रोग्राम 1987 में राजोआणा गाँव में प्रस्तुत हुआ। बाबू सिंह मान का यह गीत गाते ही इस जोड़ी की पहचान शहरी लोगों में भी हो गई;

असीं अल्हड़पुणे विच अैवें अखीयां ला बैठे,
दिल बेकदरां नू दे के कदर गुआ बैठे

धीरे-धीरे यह जोड़ी गाँव के अखाड़ों का श्रृंगार बनने लगी। बाबू सिंह मान ने इस जोड़ी के लिए, लोगों के जन-जीवन, रिश्ते-नाते, रहन-सहन को मुख्य रख कर सैंकड़ों ही गीत लिख दिए जो रिकार्ड होते ही लोक-गीतों का रूप धारण कर गए जैसे;

1. धरती नू कली करादे
   नच्चूंगी सारी रात
2. लंबी सीटी मार मित्तरा
   घर भुल्लगी मोड़ ते आ के

रणजीत कौर ने बहुत से गीत अकेले भी गाए जिनमें लोक-गाथाएं बहुत प्रसिद्ध हुईं

1. नणाने बेईमाने, अखां फेर गई रकाने
2. ना मारो पूरन नू, राजिया होजू खतम कहानी
3. मलकी भरदी पई सी खूह दे उत्ते पाणी

रणजीत कौर ने मोहम्मद रफी, महेन्द्र कपूर, सुरेश वाडेकर, दिलराज कौर के साथ भिन्न-भिन्न फिल्मों में पार्श्व गायिका के तौर पर गाया। 1970 में रणजीत ने मलेशिया, कैनेडा, इंग्लैंड, जरमन इत्यादि बहुत से देशों का दौरा किया और वहां अपनी कलाकारी के जौहर दिखाए।

1988 में रणजीत के पिता स. आत्मा सिंह जी की मौत हो गई। इस गहरे सदमे के फलस्वरूप रणजीत की आवाज़ दबने लगी। धीरे-धीरे सब कुछ रणजीत से छूटता चला गया। 1994 में रणजीत ने इटली के हरजीत सिंह के साथ विवाह कर लिया।

संगीत रणजीत कौर की रग-रग में बसा हुआ है। आज वह पहले की तरह रियाज़ में समय बिताती है एवं अपनी आवाज़ को बेहतर बनाने का प्रयत्न कर रही है। उसको इस बात का दुख है कि उसके बुरे समय में सब से उसका साथ छोड़ दिया, लेकिन वह फिर भी मुस्कुराते हुए चेहरे के साथ सबको मिलती हैं।

रणजीत कौर की गायन शैली की विशेषताएं

(1) आवाज में तीक्षणता :- रणजीत कौर जी की गायन शैली की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उनकी आवाज़ में एक विलक्षण सी तीक्षणता है। पंजाब की समस्त लोक-गायिकाओं में रणजीत कौर जैसी अलग सी तीक्षणता किसी की भी आवाज़ में नहीं है।

(2) लचकता (लचीलापन) :- रणजीत कौर की आवाज में एक लचकीलापन भी देखने को मिलता है। गीत के बोलों को अंत में एक लचकदार ढंग से छोड़ने की विशेषता इन्हीं की गायन शैली में ही मिलती है।

(3) सुरीलापन :- पटियाला घराने की शिष्या होने के कारण आवाज़ में सुरीलापन होना तो स्वाभाविक ही है। कुछ वर्ष गायकी से दूर रहने के कारण इनकी गायन की यह सभी विशेषताएं कुछ दबने ज़रूर लग गई थीं किंतु रणजीत कौर जी ने हिम्मत रखते हुए फिर से अपनी गायकी को नया रूप देने का प्रयत्न किया है।

6.3.5 सरबजीत कौर; जीवन एवं गायन शैली की विशेषताएं

पंजाब की सुप्रसिद्ध लोक-गायिका सरबजीत कौर जिनको सरबजीत कोके वाली भी कहा जाता है, का जन्म 15 अक्तूबर 1954 को कपूरथला ज़िला के ढंढूपुर गांव में हुआ। इनकी माता जी का नाम श्रीमति अमरजीत कौर एवं पिता का नाम स. किशन सिंह था जो कि आर्मी में पैट्रोल विभाग में कार्यरत थे। यही कारण था कि सरबजीत जी को एक अत्यंत ही अनुशासित वातावरण में पलने बढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। इनकी माता जी का इनके बचपन में ही देहांत हो गया, परंतु पिता जी ने कभी भी सभी बहन भाईयों को मां की कमी खलने नहीं दी। सरबजीत अपने सभी भाई बहनों की सबसे लाडली एवं चहेती बहन रही।

पिता जी की आर्मी में रहते हुए जालंधर में बदली हो जाने के कारण सरबजीत जी का अधिकतर समय एवं जीवन जालंधर में ही व्यतीत हुआ है। जालंधर में रहते हुए बहुत अच्छे विद्यालयों में सरबजीत जी ने शिक्षा ग्रहण की।

लगभग 17-18 वर्ष की आयु में इनका विवाह संगीत से ही संबंधित सुप्रसिद्ध संगीतकार रवी शर्मा जी से हो गया। सरबजीत के घर पहली बेटी का जन्म हुआ जिसका नाम मीनाक्षी रखा गया। उसके बाद बेटे का जन्म हुआ। बच्चों के बड़े होने तक पति पत्नी में तनाव पैदा होने लगा जिसकी वजह से इन दोनों ने अलग होने का निर्णय ले लिया। इस निर्णय के बाद सरबजीत जी ने अपने बच्चों के साथ-साथ अपने सांगीतिक क्षेत्र को भी बड़े संघर्ष करते हुए हिम्मत के साथ संभाला।

सरबजीत जी को बचपन से ही संगीत के साथ अत्यंत लगाव था। वह प्रत्येक सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेतीं और हमेशा अव्वल रहतीं। गायकी उनको परमात्मा की तरफ से मिला हुआ एक अनमोल उपहार है जिसकी वह सदैव ही कद्र करती है। सबसे पहली बार बचपन में इनको चरण दास सफ़री जी ने सुना और अत्यंत प्रभावित भी हुए। उन्हीं का कहना था कि एक दिन यह लड़की पंजाब एवं पंजाबियत का नाम रौशन करेगी।[27]

इस तरह सरबजीत जी के सबसे पहले संगीत गुरू चरणदास सफरी जी बने। उनके बाद मास्टर सतीश जी से शिक्षा ग्रहण करनी आरंभ की।

स्टूडियो में गाते हुए संगीत की बारीकियां समझाने में माहिर श्री चरणजीत आहूजा जी का नाम भी सरबजीत अत्यंत आदर सहित लेती है एवं उनको भी अपने गुरू का दर्जा देती हैं। इस सब के साथ-साथ वह अपना सबसे बड़ा गुरू उस परमपिता परमेश्वर को मानती है जिन्होंनें संगीत कला को उनके अंदर पैदा करके इस धरती पर भेजा।

सरबजीत जी ने 13 वर्ष की आयु में ही सांगीतिक समारोहों में हिस्सा लेना आरंभ कर दिया था। जालंधर रेडियो स्टेशन पर भी पहली बार आडीशन 13 वर्ष की आयु में ही पास कर ली। धीरे-धीरे इनके गीत रेडियो पर प्रसारित होने लगे और बहुत से गीत रिकार्ड भी होने लगे। समाज एवं रिश्तेदारों के विरोध के बावजूद अपने पिता जी के साथ एवं हौंसले के कारण सरबजीत जी छोटी ही उम्र में स्वर-मल्लिका कहलाने लगी।

सरबजीत जी की गायकी की सबसे पहली विशेषता रही है कि इनकी गायकी शुरू से ही बहुत साफ एवं संस्कृति और सभ्याचार को प्रस्तुत करने वाली रही है। दूसरी विशेषता यह है कि सरबजीत जी ने हमेशा अकेले ही गाना पसंद किया। दोगाना गायकी की तरफ कभी भी आकर्षित नहीं हुई। ग़ज़ल गायकी इनकी पहली पसंद थी, किंतु गुरू लोगों ने इनको पंजाबी लोक गायकी के लिए तराशा एवं जन साधारण के सम्मुख ले कर आए।

सरबजीत जी ने लोक गीतों की विभिन्न शैलियों को गाया है जैसे कि घोड़ीयां, सुहाग, सिट्ठणीयां एवं बोलीयां इत्यादि। इनकी गाई हुई एक घोड़ी अत्यंत प्रचलित हुईं जो कि आज भी लोगों को ज़ुबां पर आते ही सरबजीत जी का नाम स्मरण हो आता है;

जद चढ़िया वीरा घोड़ी वे
ओहदे नाल भरावां दी जोड़ी वे
लटकेंदे वाल सोने दे
सोहणिया वीरा वे तैनू
घोड़ी चढ़ेनी आं

सरबजीत जी के द्वारा गाया हुआ एक प्रसिद्ध लोक-गीत कोका इतना प्रचलित हुआ कि इनको सरबजीत कोके वाली के नाम से जाना जाने लगा;

कोका घढ़वा दे वे माहीया कोका

वे हाणीयां

कोका घढ़वा दे वे माहीया कोका

गली गली वणजारा फिरदा

देंदा फिरदा होका

वे हाणीया, कोका .....

एक और गीत सरबजीत जी का अत्यंत प्रचलित हुआ;

वे लै दे माए कालियां बागां दी मैंहदी

सरबजीत ने बहुत सारी विदेश यात्राएं भी की जैसे कि कैनेडा, सिंघापुर, अमेरिका, बैंकाक इत्यादि । सरबजीत जी का पंजाबी फिल्म संगीत में भी बहुत बड़ा योगदान है। मामला गड़बड़ है, जग्गा जट्ट, ललकारा जट्टी दा, गभरू पंजाब दा, उच्चा दर बाबे नानक दा जैसी बड़ी फिल्मों में इन्होंने अपनी आवाज़ का जादू बिखेरा है। सरबजीत जी ने पंजाब ही नहीं बल्कि कश्मीरी, डोगरी एवं हरियाणवी गीत भी गाए हैं।

सरबजीत जी को स्व. श्री राज कपूर जी के हाथों से 'कला श्री' अवार्ड मिला। प्रो. मोहन सिंह यादगारी क्लब लुधियाना की तरफ से भी सम्मानित किया गया। इसके अलावा फिरोजपुर में शौंकी अवार्ड एवं प्रकाश कौर अवार्ड भी दिया गया। इस तरह के और भी बहुत से सम्मान एवं उपाधियां सरबजीत जी हासिल कर चुकी हैं।

आज सरबजीत जी लोक-गायकी में रेडियो की ए-ग्रेड कलाकार है। 60 वर्ष की आयु में भी उनकी गायन शैली में वहीं माधुर्य है। हमारे पंजाब को ऐसी कलाकार पर गर्व है।

सरबजीत कौर की गायकी की विशेषताएं

(1) मधुर आवाज़ :- सरबजीत कौर की आवाज़ में इतना माधुर्य है कि सरूप रानी सरकारी कालेज अमृतसर में पंजाबी विभाग के मुखी प्रो. सतनाम सिंह गिल कहते हैं

कि सरबजीत कौर की आवाज़ इतनी मधुर एवं सुरीली है कि उसको सुनकर यह पता चलता है कि पंजाब की लोक-गायकी आज भी ज़िंदा है।

(2) खूबसूरत अदाकारा :- सरबजीत कौर की गायिकी की एक बहुत बड़ी विशेषता यह है कि सुरीली गायिकी के साथ-साथ वह एक खूबसूरत अदाकारा भी है। प्रत्येक गीत को वह इतनी सुंदर अदाकारी से प्रस्तुत करती है कि सुनने व देखने वाले के मन को अपनी मनमोहक अदाओं से मोह लेती है।

(3) स्वर लगाव में कोमलता :- सरबजीत कौर की गायकी में स्वरों को कोमलता से प्रस्तुत करने का एक हुनर शामिल है। इस संदर्भ में पंजाब की सुप्रसिद्ध लोक-गायिका मनमोहन कौर जी का कहना है कि सरबजीत कौर के गीतों की सुंदरता ही उनके द्वारा लगाए गए स्वरों को कोमलता से प्रस्तुत करना है।

(4) शब्दों का विनम्र उच्चारण :- सरबजीत अपने प्रत्येक गीत में शब्दों को बड़े ही विनम्र ढंग से प्रस्तुत करती हैं। गीत के बोल अथवा शब्दों का ऐसा प्रस्तुतीकरण उसके गीतों की सुंदरता को और भी बढ़ा देता है।

(5) नवीन शैली की धारणी :- सरबजीत कौर ने पंजाबी लोक-सांगीतिक परंपरा को एक नवीन शैली की देन दी है। 'घोड़ी', गाते समय अंतरे के आखिरी शब्द को लंबा करके छोड़ना सिर्फ सरबजीत की ही विशेषता है।

(6) वाद्यों का प्रयोग :- सरबजीत कौर जी ने पहले पहल परंपरागत वाद्यों के साथ गाया किंतु आज कल वह आधुनिक वाद्यों के साथ भी गा रहे हैं।

6.3.6 गुरमीत बावा की गायन शैली की विशेषताएं

(1) लंबी हेकदार गायकी :- गुरमीत बावा की गायकी की सबसे बड़ी एवं विलक्षण शैली है उनकी लंबी हेक। इसी विशेषता ने उनको समस्त पंजाबी लोक-गायकी की श्रेणी में एक अलग पहचान दी है। 45 सैकण्ड लंबी हेक लगा कर यह महान गायिका

अपना नाम गिनीज़ बुक आफ वर्ल्ड रिकार्डज़ में दर्ज करवा चुकी है। चाहे वह मिर्ज़ा हो या जुगनी, ढोला हो या माहिया, विभिन्न प्रकार की गायकी में उनका अपना हेक लगाने का विलक्षण ढंग है।

(2) जोश-पूर्ण गायकी :- गुरमीत बावा की गायकी के सम्बन्ध में प्रसिद्ध कवि सुरजीत पातर जी कहते हैं;

"गुरमीत बावा जब गाती है तो ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि कोई योद्धा रण जीतने के लिए मैदान में निकला हो"।[16] एक स्त्री होते हुए पुरूषों की तरह जोशपूर्ण गायकी गाते हुए भी वह एक स्त्रीत्व को कायम रखती है।

(3) केवल लोक-वाद्यों का प्रयोग :- गुरमीत बावा समस्त गायकों एवं लोक गायकों में सबसे पहली गायिका हैं जिन्होंने कभी हरमोनियम का प्रयोग नहीं किया। स्वर देने के लिए उन्होंने केवल अल्गोज़े का प्रयोग किया और ताल के लिए ढोलक, चिमटा, मट्टियां इत्यादि।

(4) सुरीलापन :- हरमोनियम और तबला ऐसे वाद्य हैं जो कि स्वर एवं ताल के लिए गायकी में सबसे उपयुक्त वाद्य माने जाते हैं। गुरमीत जी एक ऐसी गायिका हैं जिन्होंने हारमोनियम का प्रयोग किए बिना ही लोक-गायकी में स्वरबद्ध एवं तालबद्ध होकर अपनी एक अलग पहचान बनाई है। बिना हारमोनियम के भी, केवल अल्गोज़े के साथ अत्यंत सुरीली आवाज़ में गाना अपने आप में एवं बहुत बड़ी विशेषता है।

(5) सरलता एवं खुलापन :- गुरमीत जी की गायकी में सरलता के साथ-साथ खुलापन भी देखने को मिलता है। जब वह सुहाग गाती हैं तो उनकी सरलता देखकर मन शांत हो जाता है और जब मिर्ज़ा, जुगनी जैसी लोक-गाथाएं गाती है तो एक खुलापन देखकर मन आनंदित हो जाता है एवं जोश से भर जाता है।

(6) वास्तविकता एवं मौलिकता को कायम रखने वाली गायिका :- गुरमीत जी एक ऐसी लोक गायिका है जिन्होंने केवल और केवल लोक-धुनों को ही गाया है। यहीं नहीं लोक-धुनों की मौलिकता एवं वास्तविकता को कायम रखा है। इन्होंने लोक-गीतों को गली-गली, गाँव-गाँव जा कर ढूंडा और फिर उनको उसी तरीके से गाया जैसे कि गाँव की बुजुर्ग पीढ़ी गाती थी।

6.4 गुरमीत बावा एवं उसकी समकालीन गायिकाओं की परस्पर तुलना

	सुरिंद्र कौर	**नरिंद्र बीबा**	**सरबजीत कौर**	**गुरमीत बावा**
1. शिक्षा	दसवीं कक्षा तक	बी.ए., एम.ए. (संगीत वोकल)	अंडर मैट्रिक	दसवीं, जे.बी.टी
2. संगीत शिक्षा	उ. इनायत अली खां से संगीत शिक्षा ली	उ. लाल चंद यमला जट्ट एवं मास्टर हरी देव से संगीत शिक्षा ली	मास्टर सतीश एवं चरनजीत आहूजा से संगीत शिक्षा ली	मास्टर रामपाल पाली एवं श्री नरेंद्र चंचल से संगीत शिक्षा ली
3. घराना	पटियाला घराना	घरानेदार गायकी नहीं	घरानेदार गायकी नहीं	घरानेदार गायकी नहीं
4. सांगीतक सफर का आरंभ	13 वर्ष की आयु में रेडियो द्वारा यू-वाणी में ऑडीशन दी	15-16 वर्ष की आयु में सीधी लोगों के संपर्क में मंच द्वारा	13 वर्ष की आयु में बच्चों के वर्ग में रेडियो पर ऑडीशन दी	18 वर्ष की आयु में अपने पति की बदौलत संगीत जगत में कदम रखा
4. लोक-गायिकी	परंपरागत लोक-गीत एवं सांस्कृतिक,	परंपरागत लोक-गीत एवं अन्य गीत भी	परंपरागत एवं अन्य सामाजिक धार्मिक गीत भी	केवल परंपरागत लोक-गीत एवं गीत गाए

	सभ्याचारक गीत गाए	गाए	गाए	
5. वाद्यों का प्रयोग	परंपरागत एवं नवीन वाद्यों के साथ गाया	परंपरागत के साथ-साथ अन्य वाद्यों का प्रयोग किया	परंपरागत एवं नवीन वाद्यों का प्रयोग किया	केवल परंपरागत वाद्यों का प्रयोग किया।
6. हेक	हेक का प्रयोग नहीं किया	कुछ हद तक हेक को अपनाया	हेक को बिल्कुल नहीं अपनाया	लंबी हेक को अपनाकर रिकार्ड कायम किया ।
7. दोगाना गायकी	बहुत से कलाकारों के साथ दोगाना गायकी को अपनाया	दोगाना गायकी में भरपूर योगदान दिया	दोगाना गायकी में योगदान नहीं दिया।	केवल अपने पति श्री कृपाल बावा के साथ गाया
8. फिल्म संगीत	अनगिनत फिल्मों में गाया	कुछ एक फिल्मों में गाया	बहुत सारी फिल्मों में गाया	कुछ सुप्रसिद्ध फिल्मों में गाया

संदर्भ

1. वणजारा बेदी, 'पंजाबी लोकधारा' विश्व कोष, भाग आठवां पृ. 2032.
2. जीत सिंह जोशी, 'लोकधारा अते पंजाबी लोकधारा', पृ. 48-49
3. वणजारा बेदी ; 'पंजाबी लोकधारा विश्व कोष, भाग आठवां पृ. 2032
4. - वही - पृ. 2033
5. - वही -
6. डा. करनैल सिंह थिंद, 'पंजाब दा लोक विरसा', पृ. 134
7. - वही - पृ. 136
8. भाई काहन सिंह नाभा, गुर शब्द रत्नाकर महान कोष, पृ. 195
9. रतन सिंह जग्गी (सं.), साहित्य कोष, पृ. 469
10. - वही -
11. डा. नरेंद्र मोहन, 'पंजाब के लोक गाथा गीत', पृ. 5
12. डा. जसबीर कौर, 'पंजाबी लोक गायकी ; दशा एवं दिशा' सभ्याचारक पत्रिका, पंजाबी लोक संगीत विशेषांक, अंक 12, 2013 पंजाबी यू. पटियाला ।
13. निंदर घुगियाणवी, 'साडीयां लोक गायिकावां', पृ. 20
14. - वही - पृ. 21
15. - वही - पृ. 54
16. साक्षात्कार सुरजीत पातर

उपसंहार

जिस तरह एक समुद्र अपने तल में अनेकों प्रकार के बहुमूल्य मोती एवं रत्नों को समोए बैठा है, उसी प्रकार लोक-संगीत रूपी सागर में वो लोग जो शुद्धता, सात्विकता, सरलता एवं भक्ति भावना द्वारा संगीत की सेवा करते हैं, संगीत के रत्न कहलाते हैं। पंजाबी लोक-संगीत का एक ऐसा ही रत्न है गुरमीत बावा जिन्होंने अत्यंत सरलता, सादगी एवं शुद्धता के साथ पंजाबी लोक संगीत में रच बस कर इसको प्रचारित एवं प्रसारित किया एवं विश्व के कोने कोने तक पहुंचाया। जिस प्रकार हीरे मोती की अपनी एक विशेषता होती है उसी तरह गुरमीत बावा की गायकी, उनकी सादगी, उनकी लंबी हेक एवं स्वर लगाव उनकी एक सबसे बड़ी विशेषता एवं विलक्षणता है। इन्हीं विशेषताओं को उद्घाटित करने, एवं उनके गीतों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलू से अध्ययन करने हेतु ही शोधकर्ता द्वारा इस शोध कार्य को छह अध्यायों में बाँटा गया।

शोध प्रबंध के पहले अध्याय 'पंजाब का लोक संगीत' में लोक-संगीत का अर्थ एवं परिभाषा बताते हुए उस की उत्पत्ति एवं विकास के बारे में जानकारी दी गई है। वास्तव में लोक-संगीत की उत्पत्ति तो आदि मानव के जन्म से ही शुरू हो गई थी। लोक संगीत को निखारने एवं सींचने का कार्य इर्द-गिर्द के प्राकृतिक वातावरण ने किया, जिसके परिणामस्वरूप लोक-संगीत धीरे-धीरे विकास के पथ पर बढ़ता गया। विकास के इस पथ पर लोक-संगीत ने शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, भक्ति संगीत जैसी संगीत पद्धतियों को जन्म दिया। आज लोक-संगीत अपने आप में एक संपूर्ण कला मानी जाती है जिसका अपना एक स्वतंत्र विश्व है।

लोक-संगीत के तीन भेद माने जाते हैं ; लोक-गीत, लोक-वाद्य एवं लोक नृत्य। इस अध्याय में लोक-गीतों को भिन्न आधार पर वर्गीकृत किया गया है, क्योंकि शोध प्रबंध का सीधा संबंध केवल लोक-गीतों से है।

जब लोक-संगीत के अंतर्गत पंजाब के लोक-संगीत की बात आती है तो पंजाब के भौगोलिक एवं सांस्कृतिक परिवेश के बारे में जानकारी देना आवश्यक हो जाता है। किसी भी राज्य की भौगोलिक परिस्थितियां वहां के जन-जीवन को निश्चय ही प्रभावित करती हैं। इस तरह भौगोलिक स्थिति एवं संस्कृति का आपस में सीधा संबंध हो जाता है। अतः पंजाब की भौगोलिक स्थिति ने भी यहां की संस्कृति पर प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव डाला। पंजाब के लोगों का ज़िंदादिल एवं दरिया दिल होना इस बात की प्रत्यक्ष उदाहरण है। पंजाब के दरिया यहां का गहना माने जाते हैं जिनके बहाव से लाई हुई मिट्टी से यहां की उपजाऊ धरनी ने यहां के लोगों को सृजनात्मक बनाया है। यही कारण है कि पंजाब के तीन क्षेत्र माझा, मालवा एवं दोआबा अपनी अपनी विलक्षणता रखते हैं।

इन सभी कारणों ने ही पंजाब की लोक-संगीत परंपरा को विकसित किया। पंजाब के जीवन का प्रत्येक पक्ष लोक-गीतों से जुड़ा हुआ है। यहां की लोक-संगीत परंपरा ही हमें हमारी सभ्यता एवं सभ्याचार को बाँधे रखती हैं। पंजाब के लोक संगीत में सरलता, मधुरता एवं सादगी जैसे गुण भरपूर मात्रा में देखने को मिलते हैं।

दूसरे अध्याय में गुरमीत बावा एवं उनके गायन से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन एवं अनुसंधान कार्य-विधि को दर्शाया गया है। गुरमीत बावा से संबंधित जितने भी साहित्य का पुनरावलोकन किया गया, उसमें किसी ने भी गुरमीत बावा की एकल रूप में चर्चा नहीं की गई और न ही उनके गाए हुए गीतों का सामाजिक, सांस्कृतिक अथवा किसी भी अन्य पक्ष से अध्ययन किया गया है। यही कारण था कि शोधार्थी द्वारा इस विषय को चुना गया। गुरमीत बावा जैसी महान लोक-गायिका का जीवन, उपलब्धियां एवं उनके गीतों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष से अध्ययन करना ही इस विषय का उद्देश्य एवं सार्थकता रही जिसके लिए वर्णनात्मक शोध विधि के साथ साथ साक्षात्कार एवं प्रश्नौत्तरी सर्वेक्षण विधि का भी प्रयोग किया गया।

तीसरा अध्याय 'गुरमीत बावा ; जीवन वृत्त एवं कृतित्व' में गुरमीत बावा के समस्त जीवन उनकी गायन शैली एवं उनकी उपलब्धियों का वर्णन करते हुए उनके लोक संगीत के प्रति योगदान को विस्तृत रूप से दर्शाया गया है। पिता एवं पति के सहयोग से गायकी के क्षेत्र में सफलता की सीढ़ीयां चढ़ती हुई गुरमीत बावा आज पंजाब के लोगों के दिलों पर राज कर रही हैं। एक योद्धा की भांति संघर्ष करते हुए समाज में एक मिसाल बन कर गुरमीत बावा ने यह प्रमाणित किया कि एक औरत जो भी चाहे कर सकती है। देश विदेश में ढेरों सम्मान प्राप्त करने वाली गुरमीत बावा की गायकी में सादगी तो प्रत्यक्ष नज़र आती है किंतु उनके व्यक्तित्व में भी वहीं सादगी एवं नम्रता देखने को मिलती है। एक उच्च एवं सरल व्यक्तित्व की धारणी गुरमीत बावा ने पंजाब के लोक-संगीत को विश्व के कोने कोने तक पहुंचाया एवं पंजाब को गौरवान्वित किया। इनकी गायन शैली की सबसे बड़ी विलक्षणता लंबी हेक है। इसके इलावा इनकी गायन शैली की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि इन्होंने सभी लोक-गीतों को उनकी वास्तविक धुनों एवं रीतों में गाया है। इन लोक गीतों को केवल परंपरागत वाद्यों के साथ गाकर लोक गीतों के सौंदर्य को और भी बढ़ाया।

इसी अध्याय में पंजाब के सुप्रसिद्ध साहित्यकारों, गीतकारों, लोक गायक कलाकारों इत्यादि से गुरमीत बावा विषयक आकलन भी संग्रहित किए गए। डा. सुरजीत पातर, श्री हंस राज हंस, चन्न गोरायां वाला, डा. इंद्रजीत सिंह, श्री राजकुमार तुली, डा. लखविंदर जौहल, डा. अरविंद शर्मा, प्रो. निर्मल जौड़ा, सतिंदर सत्ती, वडाली ब्रदर्ज़, पम्मी बाई, शमशेर संधु, प्रो.डा.यशपाल शर्मा, डा. सतीश वर्मा एवं देव थरीके वाला जैसी महान शखसियतों से साक्षात्कार किए गए। इन सभी के विचारानुसार गुरमीत बावा एक ऐसी महान लोक गायिका हैं जो आज भी पश्चिमी प्रभावों के बावजूद पंजाब की लोक विरासत को संभाल कर बैठी है। यही कारण है कि पंजाब का लोक-संगीत अमर है। इस अध्याय में गुरमीत बावा से किया गया साक्षात्कार भी सम्मिलित किया गया है जिससे उनके जीवन से जुड़ी बहुत सी महत्त्वपूर्ण बातों का पता चला।

चौथा अध्याय 'गुरमीत बावा के गीतों का सांगीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन' में सर्वप्रथम समाज एवं संस्कृति को परिभाषित किया गया है। समाज एवं संस्कृति की अपनी अपनी महत्त्वपूर्ण विशेषताएं हैं। समाज मनुष्य के परस्पर संबंधों का एक ताना बाना होता है जिसमें मनुष्य के नैतिक मूल्य, जात-पात, विवाह प्रबंध, खान-पान, रहन-सहन इत्यादि आते हैं। संस्कृति एक ऐसा आधार है जो समाज को संगठित बनाए रखता है। संस्कृति के अंतर्गत कला, धर्म, साहित्य, परिवार, विवाह इत्यादि आते हैं। संक्षेप में संस्कृति को समाज का दर्पण माना जाता है। इसी अध्याय में समाज एवं संस्कृति का लोक संगीत से संबंध दर्शाया गया है। कोई भी कला, संस्कृति का महत्त्वपूर्ण पहलू होती है और कला का समाज से एक गहरा रिश्ता होता है। समाज एवं संस्कृति की बात की जाए तो संगीत कला का नाम सबसे पहले आता है। संगीत कला के दो भेदों शास्त्रीय संगीत एवं लोक संगीत में से लोक संगीत को समाज एवं संस्कृति का एक अटूट अंग माना जाता है। खास कर जब पंजाबी लोक-संगीत की बात की जाती है तो उत्तर भारतीय संगीत के परिपेक्ष में पंजाबी लोक संगीत बहुत सी विलक्षणताएं एवं विशेषताएं रखता है। इसका सबसे बड़ा कारण है पंजाबी लोक-संगीत में भाव अभिव्यकित का खुलापन।

इसी अध्याय में लोक-गीतों को सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिपेक्ष के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। इसी आधार पर गुरमीत बावा के गाए हुए प्रत्येक गीत का सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष से अध्ययन किया गया । परिणामस्वरूप यह तथ्य सामने आया कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक आधार पर वर्गीकृत किए गए लोक गीतों के भेदों में से कोई भी पक्ष ऐसा नहीं जिससे संबंधित कोई गीत गुरमीत बावा ने नहीं गाया। गुरमीत बावा का गाया हुआ प्रत्येक गीत सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिपेक्ष से जुड़ा हुआ है। इसी अध्याय में गुरमीत बावा के गाए हुए कुछ ऐसे गीत भी सामने आए जो जन साधारण की जुबाँ पर तो नहीं आ सके परंतु हमारे समाज एवं संस्कृति से जुड़े हुए हैं। जैसे कि;

1. बाबला चिट्टीयां चिट्टीयां कूँजां तेरे देस चों उडदीयां आईयां

2. छम छम अखीयां चों वगदा ई नीर वे लोहड़ी दा महीना आया मिल जाईं वीर वे

3. छन्ना भरिया दुध दा मेरा गुग्गा माड़ी विच कुददा मैं वारी गुग्गे तों

सांगीतिक अध्ययन के अंतर्गत गुरमीत बावा के कुछ सुप्रसिद्ध गीतों को स्वरलिपिबद्ध किया गया जिस से यह तथ्य सामने आया कि गुरमीत बावा के गाए हुए लगभग सभी गीत लोक-गीत की परिभाषा की कसौटी पर खरे उतरते हैं। सरल शब्दावली एवं चार पाँच स्वरों के इर्द गिर्द घूमने वाले यह गीत लोक मन की पूरी तरह से अभिव्यक्ति करते हैं। इन गीतों की स्वरलिपियां आने वाली युवा पीढ़ी के लिए काफी मददगार सिद्ध हो सकती हैं।

शोध प्रबंध का पंचम अध्याय गुरमीत बावा के गाए हुए गीतों का समाज एवं संस्कृति पर पड़े प्रभाव से संबंधित है। समाज एवं संस्कृति में भी आदिकाल से ही परिवर्तन होता रहा है। बहुत से ऐसे तत्त्व हैं जो शुरू से ही समाज एवं संस्कृति को प्रभावित करते रहे हैं। वर्तमान पंजाब का समाज एवं संस्कृति पश्चिमीकरण से प्रभावित हो रहा है। किंतु ऐसे समय में गुरमीत बावा जैसी महान गायिका ने अपनी गायकी के माध्यम से पंजाब के समाज एवं संस्कृति को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में प्रभावित किया है। पंजाबी लोक संगीत को संपूर्ण विश्व में प्रचारित एवं प्रसारित करने का श्रेय केवल गुरमीत बावा जी को ही जाता है। इसी के परिणामस्वरूप आज युवक मेलों में लोक-कलाएं सम्मिलित की गई है। आज के पंजाबी गायक गुरमीत बावा की गायकी से प्रभावित हो कर परंपरागत वाद्यों का प्रयोग करने लगे हैं। पंजाब के भिन्न-भिन्न ज़िलों में विरासती गाँव अथवा केंद्रों की स्थापना हो रही है जहां गुरमीत बावा के लोक-गीत गूँजते हैं। आज विवाह समारोहों में डी.जे. की जगह लेडीज़ संगीत ने ले ली है जिसमें सुहाग, घोड़ियां गाई जाती है। महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में लोक-संगीत से संबंधित संगोष्ठियों एवं कार्यशालाएं लगाई जाती है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि गुरमीत बावा ने नारी का एक बदलता हुआ स्वरूप हमारे समाज के समक्ष प्रस्तुत

किया है। आज गायकी के क्षेत्र में पुरूषों की बजाय स्त्रियां ज़्यादा बढ़ कर आगे आ रही हैं। इस बात का श्रेय भी कहीं ना कहीं गुरमीत बावा जी को ही जाता है।

समाज एवं संस्कृति पर गुरमीत बावा का प्रभाव दर्शाने के लिए प्रश्नौत्तरी सर्वेक्षण का प्रयोग किया गया। इस सर्वेक्षण में कुल 110 प्रश्नौत्तरियां उम्र, लिंग एवं क्षेत्र के आधार पर भिन्न-भिन्न प्रतिवादियों को बांटी गईं। इन तीनों वर्गों के आधार पर गुरमीत बावा एवं उनकी लोक-गायकी की लोकप्रियता के संबंध में भिन्न-भिन्न परिणाम मिले। समस्त रूप से मिले परिणामों से यह तथ्य हमारे समक्ष आया कि अधिकतर प्रतिशत संख्या में लोग लोक-संगीत में बहुत ज़्यादा रूचि रखते हैं। सुरिंदर कौर, गुरमीत बावा, नरिंदर बीबा एवं रणजीत कौर में से अधिकतर लोगों की मन भावन लोक गायिका गुरमीत बावा है। यह सब लोक इस बात से बहुत ज़्यादा सहमत हैं कि गुरमीत बावा पंजाब की एक महान एवं विलक्षण लोक गायिका है एवं उनकी गायकी अन्य लोक-गायिकाओं से बहुत ज़्यादा भिन्न एवं विलक्षण है। प्रश्नौत्तरी सर्वेक्षण के आधार पर यह परिणाम भी प्राप्त हुआ कि पंजाब एवं पंजाब से बाहर रहने वाले लोगों में अधिकतर लोग यह जानकारी रखते हैं कि गुरमीत बावा ने अल्गोज़ा, ढोल, घुंगरू, मट्टियां एवं ढोलक इत्यादि सभी लोक वाद्यों का अपनी गायकी में प्रयोग किया। इन सब से विचारानुसार गुरमीत बावा ने सुहाग, घोड़ीयां, लोक बोलीयां एवं लोक-गाथाएं सभी प्रकार के लोक गीतों को गाया। गुरमीत बावा की गायन शैली की बहुत सारी विशेषताओं में से लंबी हेक उनकी ऐसी विशेषता है जिसने उनको पंजाबी लोक-गायकी में एक विशिष्ट पहचान दी। पंजाबी एवं प्रवासी पंजाबी इस बात से बहुत ज़्यादा सहमत है कि गुरमीत बावा की गायकी हमारे समाज एवं संस्कृति पर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव छोड़ रही है। गुरमीत बावा ने अपनी गायकी के माध्यम से हमारे समाज में पनप रही लगभग सभी समस्याओं जैसे कि दहेज प्रथा, नारी की निम्न दशा, कन्या भ्रूण हत्या एवं नैतिक मूल्यों में गिरावट इत्यादि के विरोध में आवाज़ उठाई। अधिकतर लोग इस बात में भी बहुत ज़्यादा सहमति रखते हैं कि गुरमीत बावा

के गाए हुए गीत हमारे समाज एवं संस्कृति का प्रतिबिंब प्रस्तुत करते हैं एवं युवा वर्ग का मार्ग दर्शन करने में सक्षम है। परिणामस्वरूप सभी यह मानते हैं कि पश्चिमी प्रभावों के बावजूद गुरमीत बावा ने अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है।

इन सब लोगों के द्वारा प्रश्नौत्तरी के अंत में कुछ सुझाव भी दिए गए। इन के विचारानुसार हमारी शैक्षणिक संस्थाओं में लोक-गायकी के प्रति छात्रों को जागृत करने की आवश्यकता है। हमारी सरकार को भी लोक-गायकी एवं लोक गायक कलाकारों को प्रोत्साहित करना चाहिए एवं लोक-गायक कलाकारों को अर्थहीन गीतों से परहेज़ कर, लोक-गीतों को प्रचारित एवं प्रसारित करना चाहिए।

शोध प्रबंध के छठे अथवा अंतिम अध्याय में गुरमीत बावा की गायकी एवं गायन शैली का उनकी समकालीन गायिकाओं सुरिंदर कौर, जगमोहन कौर, नरिंदर बीबा, रणजीत कौर एवं सरबजीत कौर से तुल्नात्मक अध्ययन किया गया है। इस अध्याय में पंजाब की लोक गायन शैलियों एवं लोक-गायक कलाकारों का विवरण देते हुए लोक-गायिकाओं के जीवन वृत्त एवं व्यक्तित्व के बारे में विस्तृत विवरण दिया गया है। गुरमीत बावा एवं इन सभी लोक-गायिकाओं की परस्पर तुलना करने से पता चलता है कि गुरमीत बावा की लंबी हेकदार एवं जोशपूर्ण गायकी उनको अन्य गायिकाओं से भिन्न करती है। गायकी में सुरीलापन होने के साथ-साथ सरलता एवं खुलापन उनकी गायन शैली की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। अपनी गायकी में केवल परंपरागत लोक-वाद्यों का प्रयोग करने वाली गुरमीत बावा ने सदैव वास्तविकता एवं मौलिकता को कायम रखा एवं आज तक रख रही हैं। यही कारण है कि अन्य लोक-गायिकाओं की तुलना में गुरमीत बावा की अपनी एक विशिष्ट पहचान है।

शोध की सीमाएं

किसी भी शोध कार्य को सफलतापूर्वक संपूर्ण करने के पीछे शोधकर्ता की मेहनत एवं संघर्ष होता है। प्रस्तुत शोधकार्य को संपूर्ण करने में भी बहुत सारी कठिनाईयां एवं संघर्ष से निकलना पड़ा। प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में इन कठिनाईयों ने शोधकार्य की प्रगति को अवरूद्ध करने का प्रयास किया जिनका उल्लेख करना यहां अपेक्षित है। सबसे बड़ी कठिनाई सुप्रसिद्ध कलाकारों, साहित्यकारों एवं गीतकारों से मौखिक रूप में साक्षातकार करने में आई जब उनसे कुछ अनचाहे वाक्य प्रकट हुए। इस प्रकार शोध के विषय को और भी शुद्ध एवं स्पष्ट करने के लिए गहनता से विशलेषण किया गया जिसके फलस्वरूप गुणीजनों के गुणों के साथ साथ अवगुणों को भी समझने का मौका मिला। कहीं कहीं तो गुणीजनों के नकारात्मक रवैये का भी सामना करना पड़ा। प्रश्नौत्तरी सर्वेक्षण में भी कुछ इस तरह के ही नकारात्मक रवैये देखने को मिले। शोध के दौरान दूसरी बड़ी कठिनाई यह थी कि शोध कार्य के विषय से संबंधित कोई भी साहित्य अथवा लेखन कार्य उपलब्ध नहीं है इसलिए सभी तथ्य अथवा जानकारी प्राथमिक स्रोतों से ही संग्रहित की गई।

भविष्य की संभावनाएं

शोध कार्य को अंतिम रूप देते हुए यह निष्कर्ष निकलकर सामने आता है कि गुरमीत बावा पंजाब की एक ऐसी महान लोक-गायिका हैं जिन्होंने पंजाबी लोक विरासत को संभाल कर रखा हुआ है। लोक गायकी की वास्तविकता एवं मौलिकता को कायम रखने का श्रेय केवल गुरमीत बावा को जाता है। सर्वेक्षण के आधार पर पता चला कि गुरमीत बावा हमारे समाज, संस्कृति एवं लोक-गायकी के बीच में एक अटूट बंधन की तरह है। युवा वर्ग में लोक-गायकी की लोकपिय्रता कम होने की वजह से युवाओं को लोक-गायकी अथवा गुरमीत बावा जैसी गायिकाओं की कम जानकारी है। किंतु यह शोध कार्य लोक-गायकी एवं युवा वर्ग से संबंधित शोध का आधार बन सकता है

क्योंकि हमारे समाज में युवाओं की प्रगति का आधार ही लोक विरासत रही है। इस शोध कार्य के आधार पर पश्चिमी अथवा हिंदी फिल्म संगीत में प्रयोग की जाने वाली परंपरागत लोक धुनों एवं लोक-वाद्यों पर शोध की जा सकती है। हमारी लोक-कलाओं को प्रोत्साहित करने के लिए संगोष्ठियां एवं कार्यशालाएं महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। इनको शोध का आधार बना कर लोक-गायकी को प्रोत्साहित किया जा सकता है। इस तरह इस शोध कार्य का विषय असीमित है अथवा अत्यंत व्यापक है। उपरोक्त विषयों पर समग्र चिंतन करके व्यापक दृष्टिकोण अपनाने की आज अत्यंत आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

हिंदी की पुस्तकें

1. परमार श्याम डॉ, भारतीय लोक साहित्य; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1954
2. त्रिपाठी राम नरेश, कविता कौमुदी, भाग-5, हिन्दी मंदिर, प्रयाग, 1986
3. माल, प्यारे लाल, शास्त्रीय एवं लोकसंगीत पर एक तुलनात्मक दृष्टि, निबंध संगीत, दूसरा संकलन, संगीत कार्यालय हाथरस, यू.पी., 1989
4. मोहन नरेन्द्र डॉ,पंजाब के लोक गाथा गीत, पब्लिकेशन डिवीजन, (Ministry of Information and Broadcasting India), 1989
5. गर्ग लक्ष्मी नारायण, निबंध संगीत, संगीत कार्यालय हाथरस, यू.पी. 1989.
6. शर्मा अमित कुमार, भारतीय संस्कृति का स्वरूप, कौटिल्य प्रकाशन दिल्ली, 2006
7. कु. आकांक्षी भारतीय संगीत और वैश्वीकरण, कनिष्क पब्लिशर्ज नई दिल्ली, 2011
8. कुमार अविनाश डॉ, लोक गीतों का संपादन एवं मूल्याकंन --------
9. गुप्ता एस.पी. फंडामैंटलस ऑफ सोश्योलोजी, भारत प्रकाशन जालंधर, तिथिहीन

पंजाबी की पुस्तकें

1. सेखो संत सिंह, विश्व सभ्यता दा इतिहास अनु., 1966
2. रंधावा महेन्द्र सिंह, सत्यारथी देवेंद्र, पंजाबी लोक गीत, नवयुग प्रकाशन दिल्ली, 1970
3. बेदी सोहिंदर सिंह डॉ, पंजाब दी लोकधारा, नैशनल बुक टरस्ट, इंडिया, दिल्ली 1973
4. खहिरा भूपिंदर सिंह डॉ, लोकधारा; भाषा ते सभ्याचार, पैप्सू बुक डिपो पटियाला, 1986

5. गुरनाम सिंह डा., संगीत निबंधावली, पब्लिकेशनज ब्यूरो पंजाबी यूनीवर्सिटी पटियाला,1991
6. थिंद करनैल सिंह डॉ, लोकयान ते मधकालीन पंजाबी साहित, नानक सिंह पुस्तकमाला, अमृतसर, 1995
7. सविंदरजीत कौर, समाज विज्ञान नाल जाण पछाण, पब्लिकेशनज ब्यूरो, पंजाबी यूनी. पटियाला, 1997
8. फ्रैंक गुरबखश सिहं, सभ्याचार अते पंजाबी सभ्याचार, वारिस शाह फाउंडेशन अमृतसर, 1997
9. जोशी जीत सिंह डॉ सभ्याचार अते लोकधारा, वारिस शाह फाउंडेशन अमृतसर, 1999
10. थिंद करनैल सिंह डॉ, पंजाब दा लोक विरसा, भाग-1, पब्लिकेशनज़ ब्यूरो, पंजाबी यूनी. पटियाला, 2002
11. जसविंदर सिंह डा., पंजाबी लोक साहित शास्त्र, पब्लिकेशन्ज़ ब्यूरो पंजाबी यूनीवर्सिटी पटियाला, 2003
12. विनोद टी. आर.,संस्कति सिद्धांत अते विहार, लोक गीत प्रकाशन, सरहंद 2004
13. जोशी जीत सिंह डा. सभ्याचार ते लोकधारा दे मूल सरोकार, लाहौर बुक शॉप लुधियाना 2004
14. गुरनाम सिंह डा.,पंजाबी संगीतकार, पब्लिकेशन्ज़ ब्यूरो पंजाबी यूनीवर्सिटी पटियाला, 2005
15. गुरनाम सिंह डा. पंजाबी लोक संगीत विरासत, भाग 1, पब्लिकेशन्ज़ ब्यूरो पंजाबी यूनीवर्सिटी पटियाला, 2005
16. घुगियाणवी निंदर, साडीयां लोक गायिकावां, पब्लिकेशन्ज़ ब्यूरो पंजाबी यूनीवर्सिटी पटियाला, 2008

17. पूनी बलबीर सिंह डा., पंजाब दी लोकधारा अते सभ्याचार, वारिस शाह फाउंडेशन, अमतसर 2010
18. सिमीप्रीत कौर, गुरमीत बावा लम्मी हेक दी मलिका, चेतना प्रकाशन, पंजाबी भवन लुधियाना, 2015
19. यशपाल शर्मा डा., गायन कला, पब्लिकेशन्ज़ ब्यूरो पंजाबी यूनीवर्सिटी पटियाला,

अंग्रेज़ी की पुस्तकें

1. Tylor E. B., Primitive culture, Bretano's vol. 1 Newyork 1924
2. Levy Hyman, H. Spalding, Literature for an age of science, London, 1952
3. Herskovitz J.Melville, Cultural Anthropology, Newyork, 1955
4. Ranade G.H., Hindustani music-its physics and aesthetics, Popular prakashan, Bombay 1971
5. Adolpho Sanchez Vasquez, Art and society, Merlin press, 1974
6. Fast Howard, Literature and reality, Open road media, 201

पत्रिकाएं एवं शोध पत्रिकाएं

1. संगीत पत्रिका, लोक संगीत अंक, संगीत कार्यालय हाथरस यू.पी. 1966
2. साथी निरंजन सिंह, महिरम, मासिक पत्रिका, अप्रैल 1989
3. वर्मा पी.पी., सोवीनार, प्रकाश कला संगम मोहाली, 1991
4. सभ्याचार पत्रिका, लोक संगीत विशेशांक, अंक 12, पब्लिकेशन्ज़ ब्यूरो पंजाबी यूनीवर्सिटी पटियाला, 2013

शोध प्रबंध

1. मलविंदर सिंह डा., दोआबा क्षेत्र के गायक कलाकारों का संगीत के प्रसार में योगदान-एक विश्लेशणातमक अध्ययन, पंजाब यूनीवर्सिटी चंडीगढ़, 2013

शब्द कोश एवं विश्व कोश

1. नाभा काहन सिंह भा., गुर्शबद रत्नाकर महान कोश, पब्लिकेशन्ज़ ब्यूरो पंजाबी यूनीवर्सिटी पटियाला, 1960
2. जग्गी रतन सिंह, साहित कोश, पब्लिकेशन्ज़ ब्यूरो पंजाबी यूनीवर्सिटी पटियाला, 1989
3. वणजारा बेदी, पंजाबी लोकधारा विश्वकोश, भाग 8, नैश्नल बुक ट्रस्ट, दिल्ली 2006
4. बाहरी हरदेव, ब्रहत हिंदी कोश, ग्यान मंडल वाराणसी, 2010

English Dictionaries and Encyclopedias

1. The Macmillan Encyclopedia of Music and Musicians, The Macmillan Company, Newyork 1938
2. Encyclopedia Americana, vol.8, American Corporation, USA, 1944
3. Bhide V.V., A Concise Sanskrit English Dictionary of Indo Aryan Languages, Oxford University Publishers, London, 1966
4. English and Punjabi Dictionary(edt), Balbir Singh Sandhu, Punjab State University Textbook Board, Chandigarh, 1990
5. Encyclopedia Britannica, vol.10, London, 2002

Other Sources (internet)

1. Definition of Folk Music, Internarional Folk Music Council, London, mfolkie.tripod.com
2. Rhodes, mfolkie.tripod.com
3. Folk Music, www.thefreedictionary.com
4. Folk Music, www.theoxforddictionaries.com
5. Hanjawalia Brajesh, Hum Aur Humara Samaj, Akhil Bharatiya Ragar Samaj, www.theragarsamaj.com

परिशिश्ठ

साक्षातकार

डा. इंद्रजीत सिंह

रजिस्टरार पी.टी.यू कैम्पस, होशियारपुर

डा. सुरजीत पातर

पंजाबी कवि एवं साहित्यकार

हंस राज हंस

पंजाबी लोक गायक

प्रो. निर्मल जौड़ा

पंजाब यूनीवर्सिटी चंडीगढ़

डा. लखविंदर जौहल

डायरेक्टर दूरदर्शन केंद्र जालंधर

सतिंदर सत्ती

पंजाबी स्टेज शोज़ एंकर एवं गायिका

डा. अरविंद शर्मा

पंजाब यूनीवर्सिटी चंडीगढ़

चन्न गोरायां वाला

पंजाबी गीतकार एवं कवि

डा. सतीश वर्मा

डीन यूथ वेल्फंयर, पंजाबी यूनीवर्सिटी

पटियाला

पम्मी बाई

सुप्रसिद्ध पंजाबी लोक गायक

श्री पूरन चंद वडाली

सुप्रसिद्ध पंजाबी लोक एवं सूफी गायक

स.शमशेर सिंह संधु

सुप्रसिद्ध पंजाबी गीतकार एवं कवि

प्रो. यशपाल शर्मा

संगीत विभागाध्यक्ष

पंजाबी यूनीवर्सिटी पटियाला

गुरमीत बावा

पंजाबी लोक गायिका

साक्षातकार करने हेतु बनाई गई प्रश्नसूची

प्र.1:- पंजाबी लोक गायकी के बारे में आपके क्या विचार हैं?

प्र.2:- आज के युग में सही अर्थों में लोक गीत की परिभाषा क्या है?

प्र.3:- क्या वर्तमान लोक गायक अपने गीतों द्वारा समाज को सही दिशा प्रदान कर रहे हैं?

प्र.4:- आपके विचारानुसार पहले समय के लोक गायक कलाकार एवं वर्तमान गायक कलाकारों की गायन शैली एवं गीतों में क्या भिन्नता है?

प्र.5:- सुप्रसिद्ध लोक गायक कलाकारों में से आपका मनभावन लोक गायक एवं लोक गायिका कौन सी है जिसकी गायन शैली बिल्कुल भिन्न एवं विलक्षण है?

प्र.6:- गुरमीत बावा जी की गायकी के बारे में आपके क्या विचार हैं?

प्र.7:- गुरमीत बावा जी के गाए हुए गीत समाज का किस प्रकार का प्रतिबिंब प्रस्तुत करते हैं?

प्र.8:- गुरमीत बावा जी की गायकी उनकी समकालीन गायिकाओं की तुल्ना में क्या विशेषता एवं विलक्षणता रखती है?

प्र.9:- उनकी गायकी का हमारे समाज एवं संस्कृति पर कया कोई प्रभाव नज़र आता है? यदि आता है तो किस संदर्भ में?

प्र.10:- गुरमीत बावा के इलावा क्या कोई एसा गायक अथवा गायिका है जिसकी गायकी में हमें लोक तत्त्व देखने को मिलता है?

प्र.11:- आपके विचारानुसार पंजाबी लोक गायकी का भविष्य क्या नज़र आता है?

प्र.12:- गुरमीत बावा जैसी परंपरागत लोक गायकी को सुरक्षित रखने के लिए हमारी सरकार एवं शैक्षणिक संस्थाओं का क्या योगदान हो सकता है?